

कवीन्द्र परमानन्दकृत

# श्रीशिवभारत

(हिन्दी भाषांतर सहित)

सम्पादक

संजय दीक्षित

विनय कृष्ण चतुर्वेदी 'तुफ़ैल'

अनुवादक

सत्यकाम आर्य

शब्दसंयोजक

शिवदेव आर्य

## श्रीशिवभारत

उदारशब्दसन्दर्भं भूरिभावार्थमद्भुतम् ।

माधुर्यादिगुणोपेतमलङ्कारैरलंकृतम् ॥ १७ ॥

निचितं धर्मशास्त्रार्थैरर्थशास्त्रसमन्वितम् ।

विश्रुतं सर्वलोकेषु पुराणमिव नूतनम् ॥ १८ ॥

प्रणिपत्य प्रवक्ष्यामि महाराजस्य धीमतः ।

चरितं शिवराजस्य भरतस्येव भारतम् ॥ २२ ॥

अध्याय १

## श्रीशिवाजी महाराज

उष्णीषेणैव शुचिना व्यभादुत्तंसधारिणा।

कश्मीरजपृषद्वर्षरांजतेनांगिकेन च ॥ १९ ॥

शिववर्मा भृशबलः संवृतः शिववर्मणा।

तस्य वज्रशरीरस्य किं कार्यं तेन वर्मणा ॥ २० ॥

कृपाणं पाणिनैकेन बिभ्राणोन्येन पट्टिशम्।

स नन्दकगदाहस्तः साक्षाद्धरिरुदैक्ष्यत ॥ २१ ॥

शिवभारत अध्याय २१

## प्राक्कथन

श्री शिवभारत से मेरा परिचय स्वर्गीय सुमन्त टेकड़े ने करवाया था। नियति देखिए कि उनका असमय अवसान हो गया। छत्रपति शिवाजी राजे की जीवनी श्री शिवभारत को पढ़ते ही मुझे आश्चर्य हुआ कि इस मूल संस्कृत ग्रंथ का मराठी अनुवाद 1927 में ही हो पाया - मूल रचना के लगभग २५० वर्ष बाद। इस से भी अधिक आश्चर्य मुझे तब हुआ जब गहन शोध के पश्चात मुझे ज्ञात हुआ कि हिंदी में इसके अनुवाद का प्रयास हुआ ही नहीं।

कवीन्द्र परमानन्द छत्रपति शिवाजी महाराज के समकालीन थे. ऐसा कहा जाता है कि संभवतः वे शिवाजी राजे के मित्र भी थे. वैसे इस ग्रन्थ में उनका स्वयं का परिचय भी विस्तार पूर्वक दिया हुआ है. इस ग्रन्थ से परिचय होते ही मेरे मन में उत्कंठा जागी कि इस ग्रंथ से हिंदी भाषियों का परिचय कराया जाना भी अत्यावश्यक है. इस इच्छा को मूर्त रूप देने के लिए विनय कृष्ण चतुर्वेदी 'तुफ़ैल' जी ने सत्यकाम जी से परिचय कराया और इस समग्र उद्योग का फल आपके समक्ष इस हिंदी अनुवाद के रूप में प्रस्तुत है.

इस अनुवाद में मराठी अनुवाद की लम्बी प्रस्तावना उपयोग में नहीं लाई गई है. अनुवाद सरल हिंदी में है, जो कवीन्द्र परमानन्द की सरल संस्कृत के अनुरूप ही है.

मैं इस पुस्तक को स्वर्गीय सुमन्त टेकड़े को समर्पित करता हूं जिनकी प्रेरणा से इसका निर्माण संभव हुआ.

- संजय दीक्षित

## शिवभारतम्

### अध्यायः-१

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीसांबसदाशिवाय नमः।

श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः।

वन्दारुविबुधोदारमौलिमन्दारदामभिः।

स्विद्यत्पदारविन्दाय गोविन्दाय नमो नमः॥१

वन्दन करने वाले, देवश्रेष्ठ के सिर पर स्थित मंदार पुष्प की माला से जिनके पैर रूपी कमलों का पसीना छूट गया है। ऐसे विष्णु को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ।

कदाचित् परमानन्दशर्मा ब्राह्मणसत्तमः।

तीर्थयात्राप्रसंगेन पुरीं वाराणसीं ययौ॥२

किसी समय परमानंद शर्मा नाम का श्रेष्ठ ब्राह्मण तीर्थ यात्रा करने के लिए वाराणसी गया।

मुच्यन्ते यत्र सर्वेऽपि मुक्तिरेव न मुच्यते।

यत्रोपदिशति ब्रह्म तारकं स्वयमीश्वरः॥३

तत्र तीर्थविधिं कृत्वा दृष्ट्वा देवं महेश्वरम्।

पुण्ये भागीरथीतीरे निषसाद स धर्मवित्॥४

जिस वाराणसी में जाकर सभी व्यक्ति मुक्त हो जाते हैं, किंतु मुक्ति का मोक्ष नहीं होता है अर्थात्! जहां मुक्ति सदा वास करती है और जहां पर स्वयं शंकर तारक रूप ब्रह्मा का उपदेश करते हैं ऐसे उस काशी में तीर्थ विधि करके तथा महादेव के दर्शन करके वह धर्मज्ञ ब्राह्मण पवित्र भागीरथी के तट पर रहने लगा।

तं वै पद्मासनासीनं विस्फुरद्ब्रह्मवर्चसम्।  
वेत्तारं सर्वशास्त्राणां वित्तमध्यात्मवित्तमम्॥५  
पौराणिकानां प्रवरं भट्टगोविन्दनन्दनम्।  
एकवीराप्रसादेन लब्धवाक्सिद्धिवैभवम्॥ ६  
कवीन्द्रं परमानन्दं परमानन्दविग्रहम्।  
दृष्ट्वा प्रमुदितास्तत्र विज्ञाः काशीनिवासिनः॥७

भागीरथी के तट पर पद्मासन में बैठे हुए, विद्या के तेज से शोभायमान, सभी शास्त्रों को जानने वाले, तथा विख्यात श्रेष्ठ अध्यात्म विद्या को जाननेवाले, पौराणिक लोगों के लिए मुकुट मणि, एकवीरा देवी की कृपा से वाक् सिद्धि रूपी धन को प्राप्त करने वाले, परमानंद की प्रतिमूर्ति जो गोविंद भट्ट के पुत्र हैं ऐसे कवियों में श्रेष्ठ सर्वगुण संपन्न परमानंद को देखकर काशी के निवासी पंडितों को अत्यंत हर्ष हुआ।

स तानुदारचरितान् प्रत्युत्थायाभिवाद्य च।

पूजयामास विधिवत् संप्राप्तानतिथीनिवा॥८

उन उदार चरित पंडितों का उसने उठकर अभिवादन किया और घर में आए हुए अतिथि के समान उनका विधि पूर्वक सम्मान किया।

परिवार्योपविविशुस्ते सर्वे तं द्विजोत्तमाः।

शुश्रूषमाणाश्चरितं प्रथितं शिवभूपतेः॥९

वे सभी काशी के निवासी श्रेष्ठ ब्राह्मण शिवाजी महाराज के प्रसिद्ध चरित्र को सुनने की इच्छा से उनके चारों तरफ बैठ गए।

ततः प्रमनसस्सर्वे तमूचुस्ते मनीषिणः।

कर्तारं चारुकाव्यानामवतारं बृहस्पतेः॥१०

तत्पश्चात् प्रसन्न चित्त सभी पंडित सुंदर काव्य के कर्ता तथा बृहस्पति के अवतार उस परमानंद को बोले।

मनीषिण ऊचुः –

यः शास्ति वसुधामेतां राजा राजगिरीश्वरः।  
तुलजायाः प्रसादेन लब्धराज्यो महातपाः॥११  
विष्णोरंशो विशेषेण लोकपालांशसंभवः।  
मनस्वी सुप्रसन्नात्मा प्रतापी विजितेन्द्रियः॥१२  
भीमादपि महाभीमः सीमा सर्वधनुर्भृताम्।  
धीमानुदारचरितः श्रीमानद्भुतविक्रमः॥१३  
कृती कृतज्ञः सुकृती कृतात्मा कृतलक्षणः।  
वक्ता वाक्यस्य सत्यस्य श्रोता चातिविचक्षणः॥१४  
देवद्विजगवां गोप्ता दुर्दान्तयवनान्तकः।  
प्रपन्नानां परित्राता प्रजानां प्रियकारकः॥१५  
तस्यास्य चरितं ब्रह्मन्नेकाध्यायगर्भितम्।  
भगवत्याः प्रसादेन भवता यत् प्रकाशितम्॥१६  
उदारशब्दसन्दर्भं भूरिभावार्थमद्भुतम्।  
माधुर्यादिगुणोपेतमलंकारैरलंकृतम्॥१७  
निचितं धर्मशास्त्रार्थैरर्थशास्त्रसमन्वितम्।  
विश्रुतं सर्वलोकेषु पुराणमिव नूतनम्॥१८  
समस्तदोषरहितं सहितं लक्षणैर्निजैः।  
तदशेषमशेषज्ञं शंस नः शंसितव्रत॥१९

पंडित ने कहा-

जो राजगढ़ का अधिपति राजा इस पृथ्वी पर शासन कर रहा है, जिसको तुलजाभवानी की कृपा से राज्य प्राप्त हुआ है, जो महान तपस्वी, विशेष रूप से विष्णु का अंश और अष्ट लोकपालों के अंश से उत्पन्न है, जो बुद्धिमान, प्रसन्नचित्त, पराक्रमी, जितेंद्रिय, भीम की तुलना में अत्यधिक भयंकर और जो सभी धनुर्धारियों का मुकुटमणि,

बुद्धिमान, उदार चरित्र, गौरवशाली, अद्भुत पराक्रमी, ,कृतज्ञ, सुकार्य करनेवाला, आत्मसंयमी और जो अपने सद्गुणों से सुविख्यात है, जो सत्यवक्ता एवं अत्यधिक चतुरता से सुननेवाला, देव, ब्राह्मण तथा गायों का रक्षक, अदम्य यवनों के लिए साक्षात् यमराज, शरणागत की रक्षा करनेवाला तथा जो प्रजाप्रिय है ऐसे शिवाजी राजा का सारगर्भित चरित्र जो अनेक अध्यायों में आपने भगवती देवी की कृपा से प्रकाशित किया है, जिसका शब्द-विन्यास उत्कृष्ट, अद्भुत, अर्थगांभीर्य से ...

इति वाराणसीस्थेन मण्डलेन मनीषिणाम्।

प्रोक्तः प्रोवाच धर्मात्मा कवीन्द्रो वदतां वरः॥२०

काशी पंडितों के अनुरोध पर धर्मात्मा और वक्ताओं में श्रेष्ठ उस कविद्र ने इस प्रकार कहा ।

एकवीरां भगवतीं गणेशं च सरस्वतीम्।

सद्गुरुं च महासिद्धं सिद्धानामपि सिद्धिदम्॥२१

प्रणिपत्य प्रवक्ष्यामि महाराजस्य धीमतः।

चरितं शिवराजस्य भरतस्येव भारतम्॥२२

भगवती एकवीरा, गणपति, सरस्वती, और सिद्ध लोगों को भी सिद्धि प्रदान करनेवाले महासिद्ध सद्गुरु को प्रणाम करके, भरतवंश के भारत के समान बुद्धिमान शिवाजी महाराज के चरित्र का वर्णन करता हूं।

कलिकल्मषहारीणि हारीणि जनचेतसाम्।

यशांसि शिवराजस्य श्रोतव्यानि मनीषिभिः॥२३

कलियुग के पापों का नाश करने वाली और लोगों के मनों का हरण करनेवाली शिवराज की यशोगाथा हमें सुननी चाहिए।



योऽयं विजयते वीरः पर्वतानामधीश्वरः।

दाक्षिणात्यो महाराजः शाहराजात्मजः शिवः॥२४

साक्षान्नारायणस्यांशस्त्रिदशद्वेषिदारणः।

स एकदात्मनिष्ठं मा प्रसाद्येदमभाषत॥२५

यानि यानि चारित्राणि विहितानि मया भुवि।

विधीयन्ते च सुमते तानि सर्वाणि वर्णय॥२६

मालभूपमुपक्रम्य प्रथितं मत्पितामहम्।

कथामेतां महाभाग महनीयां निरूपय॥२७

जो यह वीर, गढ़ों का स्वामी, दक्षिण का महाराजा, साक्षात् विष्णु का अवतार, यवनों का वध करने वाला, शाहजी राजा का पुत्र, शिवाजी विजयी हुआ है, वह एक बार मुझ ब्रह्मनिष्ठ से निवेदन करते हुए बोला की, हे सुमते! जो जो कार्य मेरे द्वारा किए गए और पृथ्वी पर किए जा रहे उन सभी कार्यों का वर्णन करें। मेरे प्रसिद्ध दादा मालोजी राजे से शुरू करते हुए, हे महाभाग्यशाली! आप ही इस महान कहानी का वर्णन करो।

तस्येमां वाचमनधामभिनन्द्य द्विजोत्तमाः।

प्रतिश्रुत्य गृहानेत्य स्वयमेतदचिन्तयम्॥२८

अहो कथमहं कुर्यां भारतप्रतिमं महत्।

अमानुषचरित्रस्य शिवस्यैतत् समीहितम्॥२९

इति संचिन्तयन्तं मां चिरमुत्थिरचेतसम्।

देवी भगवती साक्षात् समेत्येदमवोचत॥३०

हे ब्राह्मणों! उनके इन पवित्र वचनों का आदर करते हुए मैंने उसे स्वीकार कर लिया और जब मैं घर आया, तो मैं स्वयं से विचार करने लगा कि भारत के समान इस महान अलौकिक चरित्र की रचना मेरे हाथों से हो, ऐसी शिवाजी की इच्छा किस प्रकार पूर्ण हो सकती है? इस प्रकार बहुत देर तक एकाग्रता से विचार करने पर स्वयं भगवती एकवीरा देवी ने साक्षात् दर्शन देकर मेरे से इस प्रकार कहा।

देव्युवाच-

कवीन्द्र कुरु मा चिन्तामनुकूलास्म्यहं तव।  
ममादेशादयं राजा त्वामिदं कार्यमादिशत्॥३१  
एवमाश्वासयन्ती मां कृपालुः कुलदेवता।  
चतुर्भुजा भगवती हृदयं मे समाविशत्॥३२

देवी ने कहा –

हे कविश्रेष्ठ! तुम चिन्ता मत करो, मैं आपसे प्रसन्न हूँ। मेरी आज्ञा से शिवराजा ने तुम्हें यह कार्य बताया है। इस प्रकार मुझे धैर्य प्रदान करते हुए, उस कृपालु कुलदेवता चतुर्भुजा एकवीरा देवी ने मेरे हृदय में प्रवेश कर लिया।

तदाप्रभृति वाग्ब्रह्म समग्रं पश्यतो मम।  
जागर्त्यर्थेन सहितं रसनाग्रमधिष्ठितम्॥३३

तब से देखते हुए वह संपूर्ण वाग्ब्रह्म अर्थ के साथ मेरी जीभ पर स्थित होकर जाग रहा है।

अनागतानां भावानामतीतानां च सर्वशः।  
साक्षात् सन्दर्शनेनाहममानुष इवाभवम्॥३४

अतीत और भविष्य की सभी चीजें मुझे प्रत्यक्ष दिखाई देने से मानों मैं एक अलौकिक व्यक्ति की तरह बन गया हूँ।

कृतकृत्यमथात्मानं मन्यमानेन वै मया।  
कृतमेतन्महापुण्यमाख्यानमनघब्रताः॥३५

हे विद्वान् पंडितों, मैंने स्वयं को धन्य समझकर फिर यह अत्यंत पवित्र, पुण्यशाली इतिहास रचा।

यत्रास्ते महिमा शंभोर्महादेवस्य वर्णितः।  
दुर्वृत्तासुरमर्दिन्यास्तुलजायास्तथैव च॥३६  
धर्मस्यार्थस्थ कामस्य मोक्षस्य च यथायथम्।  
तीर्थानामपि माहात्म्यं यत्र सम्यङ्निरूपितम्॥३७

यत्र युद्धान्यनेकानि शिवस्य यवनैः सह।  
तेषामेव विनाशार्थमवतीर्णस्य भूतले॥३८  
देवानां ब्राह्मणानां च गवां च महिमाधिकम्।  
पवित्राणि विचित्राणि चरित्राणि च भूभुजाम्॥३९  
गजानां तुरगाणां च दुर्गाणां लक्षणानि च।  
निरूपितान्यशेषेण राजनीतिश्च शाश्वती॥४०  
तं सूर्यवंशमनघं कथ्यमानं मयादितः।  
सर्वेऽप्यवहितात्मानः शृणुध्वं शृण्वतां वराः॥४१

जिसमें शंभू महादेव की और दुष्ट राक्षसों का नाश करने वाली तुलजाभवानी की महिमा का वर्णन किया गया है। जहां पर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों का और तीर्थों की महानता का भी अच्छी तरह उल्लेख किया गया है। इस पृथ्वी पर जिनका अवतार यवनों के विनाश हेतु ही हुआ ऐसे शिवाजी ने यवनों के साथ किए गए युद्धों का वर्णन जिसमें वर्णित है। देव, ब्राह्मणों तथा गायों की महिमा का और पवित्र एवं अद्भुत राजाओं के चरित्रों का वर्णन जिसमें वर्णित है। हाथियों, घोड़ों और किलों के सम्पूर्ण लक्षण और शाश्वत राजनीति के चरित्र का जिसमें वर्णन है, ऐसे पवित्र सूर्यवंश के प्रारंभ से लेकर मेरे द्वारा वर्णित चरित्र को, हे श्रोताओं! हम सभी को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।

दक्षिणस्यां दिशि श्रीमान् मालवर्मा नरेश्वरः।  
बभूव वंशे सूर्यस्य स्वयं सूर्य इवौजसा॥४२  
महाराष्ट्रं जनपदं महाराष्ट्रस्य भूमिपः।  
प्रशशास प्रसन्नात्मा निजधर्मधुरंधरः॥४३

दक्षिण में स्वयं सूर्य के समान उज्ज्वल श्रीमान् मालवर्मा राजा सूर्यवंश में हुआ था। क्षत्रधर्म धुरिन और हंसमुख ऐसा वह मराठा राजा महाराष्ट्र में शासन कर रहा था।

कमलायतनेत्रोऽसौ कमलापतिविक्रमः।  
शुशुभे गुणगम्भीरः प्रजारंजनमाचरन्॥४४

जो विष्णु के समान शक्तिशाली और कमल की तरह बड़ी आंखों वाला, वह गुण गंभीर राजा अपनी प्रजा को सुख देने से उनकी कीर्ति चारों ओर फैलाने लगी।

स पुण्यदेशे धर्मात्मा निवासं स्वमकल्पयत्।

तन्वन् सौराज्यमधिकं नदीं भीमरथीमनु॥४५

उस धर्मात्मा ने पुणे प्रांत में अपना निवास स्थान बनाया और भीम नदी के किनारे राज्य का विस्तार किया।

त्वंगत्तुरंगमखुरक्षुण्णभीमरथीतटः।

समुद्यद्दुन्धुभिध्वानविभ्रमक्षोभितार्णवः॥४६

प्रतापतापिताऽरातिधराधिपतिमण्डलः।

सह्याद्रिखण्डमखिलं बुभुजे स बली बलात्॥४७

जिसने अपने सरपट दौड़ते घोड़ों के खुरों से भीमा नदी के तटीय क्षेत्रों को रौंदा, जिसके दुंदुभी से उठती ध्वनि की लहरों ने समुद्र को हिला दिया, जिसने अपने प्रताप से शत्रु राजाओं को परास्त कर दिया ऐसा वह बलशाली राजा अपने ही बल से समस्त सह्याद्री प्रदेश का स्वामी हो गया।

द्विषद्भिर्दुस्सहः सोऽभूद् धुर्यः सर्वधनुष्मताम्।

नारायणांशसंभूतो धनंजय इवापरः॥४८

विष्णु के अंश से उत्पन्न, सभी धनुर्धारियों का नेता, मानो दुसरा अर्जुन ही हो, ऐसा वह महाराजा शत्रुओं के लिये अपराजेय हो गया।

महावंशसमुद्भूतामुमां नाम यशस्विनीम्।

उपयेमे स विधिना सावित्रीं सत्यवानिव॥४९

जिस प्रकार सत्यवान ने सावित्री के साथ विवाह किया, उसी प्रकार उस राजा ने उच्च कुल में पैदा हुई उमा नाम की यशस्वी कन्या के साथ विधिपूर्वक विवाह किया।

अथासौ बहु मेने तामनुरूपगुणान्विताम्।

अजो रघुसुतश्श्रीमान् साध्वीमिन्दुमतीमिव॥५०

फिर, वह रघुराज का पुत्र अज जैसे साध्वी इंदुमति को मानता था, वैसे ही वह मालवर्मा राजा अनुरूप गुणों से सुशोभित अपनी पत्नी को बहुत मानने लगा।

प्रसादमिव पार्वत्या दत्तमात्मीयमात्मना।

उमेति भूषयामास नामधेयमुमा सती॥५१

मानो, पार्वती ने स्वयं प्रसाद रूप में दिए हुए अपने उमा इस नाम को, वह साध्वी उमा सुशोभित करने लगी।

अथ श्रीदसमृद्धश्रीः स तया सुदृशान्वितः।

समाचचार मतिमान् कृती धर्माननेकधा॥५२

तत्पश्चात्, कुबेर के समान धन संपन्न, बुद्धिमान और ज्ञानवान उस राजा ने अपने रूपवती पत्नी के साथ अनेक प्रकार के धर्म कार्य किए।

अग्निहोत्राणि सत्राणि यज्ञास्सुबहुदक्षिणाः।

महादानान्यपि तथा राष्ट्रे तस्य सदाऽभवन्॥५३

अग्निहोत्र, सत्रयज्ञ, अत्यधिक दक्षिणा वाले यज्ञ और उसी प्रकार महादान भी उसके राज्य में सदा चलते रहते थे।

स शंभुप्रीतये शंभोर्भक्तस्सागरनन्निभम्।

मधुरं खानयामास तडागं शंभुपर्वते॥५४

उस शिवभक्त राजा ने शंकर को प्रसन्न करने के लिए सागर के समान विशाल मधुर जल वाले तालाब को शंभू पर्वत पर खुदवाया।

सुवर्णसानुप्रतिमान् प्रासादानुच्चतोरणान्।

आरामानभिरामांश्च भूरिभूरुहभूषितान्॥५५

दीर्घाश्च दीर्घिकाः स्वर्णसोपानपथभूषिताः।

धर्मात्मा कारयामास प्रपाशालाश्च भूरिशः॥५६

उस धर्मात्मा ने, ऊंचे बाहरी दरवाजों से युक्त मेरुपर्वत जैसे महलों का, अनेक वृक्षों से सुशोभित सुन्दर बगीचों का, सोने की सीढ़ियों से युक्त बड़े-बड़े कुओं का, अनेक जल-कुंडों का तथा धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।

तमन्वगात् सुमहती चतुरंगा पताकिनी।

महासत्त्वं महासत्त्वा स्वर्णदीव भगीरथम्॥५७

जैसे गंगा भागीरथी का अनुसरण करती थी, उसी तरह एक शक्तिशाली और विशाल चतुरंग सेना उस शक्तिशाली राजा का अनुसरण करती थी।

तमुन्नतं नमन्ति स्म सामन्ताः पृथिवीभृतः।

समीरणसमुद्रेलं वंजुला इव वारिधिम्॥५८

जैसे लहरें हवा के कारण किनारे से उठती हुई समुद्र को नमन करतीं (झुकती) हैं, वैसे ही उन सामन्त राजाओं ने उस समृद्ध मालवर्मा राजा को नमन किया।

एतस्मिन्नेव समये दुर्गं देवगिरि श्रयन्।

निजामशाहो धर्मात्मा पालयामास मेदिनीम्॥५९

तमसेवन्त सततं यवनानामधीश्वरम्।

सर्वे यादवराजाद्या दाक्षिणात्याः क्षमाभुजः॥६०

उसी समय, देवगिरी (दौलताबाद) में आश्रय लेकर धर्मपरायण निजाम शाह पृथ्वी पर शासन कर रहा था। यादवादि दक्षिण के सभी राजा सदैव उस यवनाधिपति राजा की सेवा में लगे रहते थे।

तदा येदिलशाहोऽपि पत्तने विजयाह्वये।

निवसन् राज्यमकरोद्यवनो यवनैर्वृतः॥६१

उस समय यवनों से घिरा हुआ आदिलशाही यवन बीजापुर में रहते हुए शासन कर रहा था।

अथ केनाऽपि कालेन निमित्तेन बलीयसा।

येदिलेन निजामस्य विरोधस्सुमहानभूत्॥६२

कुछ समय बाद किसी कारण आदिलशाह और निजाम शाह के बीच बड़ी लड़ाई छिड़ गई।

तदा तं मालभूपालं कालं प्रतिमहीभृताम्।

श्रुत्वा निजामो मेधावी साहाय्ये समकल्पयत्॥६३

तब बुद्धिमान निजाम शाह ने ऐसा सुना कि मालवर्मा राजा दुश्मनों के लिए काल के समान है, इसलिए उसने अपनी मदद के लिए उसे बुलाया।

ततस्तस्य प्रियं तत्र कर्तुमप्रतिमद्युतिः।

गत्वा देवगिरिं मालमहीपतिरुवास ह॥६४

तब वह उसका (निजामशाही) प्रिय करने के लिए अद्वितीय, गौरवशाली मालवर्मा राजा देवगिरी में जाकर रहने लगा।

अथ विठ्ठलराजोऽस्य भ्राता भीमपराक्रमः।

समेतस्त्वपताकिन्या भेजे धारागिरीश्वरम्॥६५

उसका भीम के समान पराक्रमी विठ्ठल नाम का भाई भी अपनी सेना के साथ आकर निजामशाह के साथ मिल गया।

प्रीतात्मा च निजामोऽपि निजमन्तिकमागतौ।

तावुभौ पूजयामास सामदानेन भूयसा॥६६

उनके आगमन से संतुष्ट होकर निजामशाह ने भी उन्हें साम, दान इत्यादि से उन दोनों को सम्मानित किया।

ये ये निजामशाहस्य प्राभवन् परिपन्थिनः।

तांस्तानुत्सादयामास मालवर्मा महाभुजः॥६७

शक्तिशाली मालवर्मा राजा ने निजामशाह के जो जो शत्रु हुए, उन सभी का उसने सफाया कर दिया।

तथा विठ्ठलराजोऽपि निजामस्य चिकीर्षितम्।

सहायीभूय सततं चक्रे शक्रपराक्रमः॥६८

इंद्र के समान शक्तिशाली विठ्ठल राजा ने भी निजामशाह की मदद करके उनकी आकांक्षाओं को पूरा किया।

यद्यप्यासन्निजामस्य सहायास्तत्र भूरिशः।

तथापि मालवर्मेव सर्वेभ्योऽभ्यधिकोऽभवत्॥६९

वहां निजाम शाह के कई अन्य समर्थक विद्यमान थे, लेकिन उनमें मालवर्मा ही सबसे श्रेष्ठ थे।

कुलक्रमागतं राज्यं निधाय निजमन्त्रिषु।

दत्तं निजामशाहेन देशमन्यं शशास सः॥७०

उसने अपने मंत्रियों को पैतृक राज्य सौंप दिया और निजाम शाह द्वारा दिए गए राज्य पर वह शासन करने लगा।

अथ तस्य सभार्यस्य सुतजन्मसमुज्ज्वलाम्।

श्रियं समीहमानस्य दिनानि सुबहून्ययुः॥७१

अपने को पुत्र प्राप्ति होने से इस राजलक्ष्मी को शोभा प्राप्त होगी, इस आशा के साथ उन्होंने अपनी पत्नी के साथ कई दिन बिताए।

सन्तानार्थी स नृपतिर्धर्मपत्नीसमन्वितः।

देवदेवं महादेवमारराध महाव्रतः॥७२

तब वह पुत्र-प्राप्ति का इच्छुक राजा अपनी धर्मपत्नी के साथ बड़े व्रतों का आचरण करते हुए, देवाधिदेव महादेव की पूजा करने लगा।

अथ कालेन महता देवी तस्य महौजसः।

आनन्दयन्ती दयितं ससत्त्वा समजायत॥७३

तत्पश्चात्, बहुत दिनों के बाद, गौरवशाली मालवर्मा की पत्नी गर्भवती हुई और अपने पति को खुशी प्रदान की।

ततः सा दशमे मासि प्रस्फुरद्राजलक्षणम्।

सुमुखं शुभवेलायां सुषुवे सुतमद्भुतम्॥७४

दसवें महीने में राजचिह्नों से सुशोभित, सुंदर एवं अलौकिक पुत्र उसको शुभ मुहूर्त में उत्पन्न हुआ।



सुनसं सुविशालाक्षं सुभालं श्लक्ष्णकुन्तलम्।

विस्तीर्णवक्षसं दीर्घभुजमानद्धकन्धरम्॥७५

सुवर्णवर्णमरुणस्निग्धपाणिपदांबुजम्।

प्रोद्धासयन्तं भवनं प्रभूतेन स्वतेजसा॥७६

उसकी नाक सीधी, आँखें बड़ी, माथा चौड़ा, बाल घुंघराले एवं अल्प, छाती चौड़ी, बाहें लंबी, गर्दन भरी हुई, रंग सोने जैसा और उसके हाथ, पैर लाल एवं कोमल थे, और उसकी प्रचुर चमक ने घर को रोशन कर दिया।

तं दृष्ट्वा मुदितास्तत्र धात्र्यः संजातसंभ्रमाः।

राज्ञे निवेदयामासुर्जनैश्शुद्धान्तचारिभिः॥७७

दाइयों को उसे देखकर प्रसन्नता हुई, और उन्होंने जल्दी से राजा को अपने रनिवास नौकरों के माध्यम से यह खबर सुनाई।

ततस्तमुत्सवं श्रुत्वा सुतजन्मसमुद्भवम्।

पीयूषवर्षसंसिक्तप्रतीक इव सोऽभवत्॥७८

पुत्र के जन्म की खुशखबरी सुनकर मानो उसका पूरा शरीर अमृत की वर्षा से सिंचित हो गया हो। (इतना वह हर्षित हुआ)

ततः समुत्सुकोऽभ्येत्य नृपतिर्द्रुतमाप्लुतः।

आननं सुकुमारस्य कुमारस्य व्यलोकत॥७९

तब आनंद के सागर में तैरनेवाला एवं अपने पुत्र को देखने के लिए उत्सुक वह राजा जल्दी से रनिवास में चला गया; और उसने अपने सुकोमल पुत्र का मुख देखा।

अथ प्रमुदितस्तत्र समेतः स्वपुरोधसा।

चकार जातकर्मास्य स्वस्तिवाचनपूर्वकम्॥८०

जाते राजकुमारेऽस्मिन् कुमारसमतेजसि।

नेदुर्मगलवाद्यानि ननृतुर्वारयोषितः॥८१

स्वरेण स्निग्धतारेण जगुर्गीतानि गायनाः।

पेठुश्च प्रस्थितामुच्चैर्वन्दिनो बिरुदावलिम्॥८२

अमोघाभिस्तथाशीर्भिरभ्यनन्दन् द्विजोत्तमाः।

गृहे गृहे विशेषेण ववृधे स महोत्सवः॥८३

तब प्रसन्न राजा ने अपने पुरोहित के साथ स्वास्तिवाचन-पूर्वक उस बालक का जातकर्म संस्कार किया। कार्तिक कुमार जैसे प्रतापी राजकुमार के जन्म के अवसर पर मंगल वाद्य बजने लगे। वारयोषिताओं ने नृत्य करना शुरू किया, गायक मधुर और उच्च धुन के साथ गीत गाने लगे; भाटों ने प्रसिद्ध बिरुदावली का उच्च स्वर में पाठ करना शुरू किया; द्विजश्रेष्ठों ने अपने फलदायी आशीर्वाद के साथ उनको बधाई देना शुरू किया; और घर-घर में उस त्योहार को विशेष अंदाज में मनाया गया।

महामुक्ताः प्रवालानि रत्नालंकरणानि च।

स्वर्णानि स्वर्णवासांसि गास्तुरंगान् गजानपि॥८४

जनाय याचमानाय ददानः स तदा प्रभुः।

ददृशे मनुजैस्साक्षात् कल्पद्रुम इवापरः॥८५

उसने याचकों को बहुमूल्य मोती, रत्नजडित आभूषण और मोतियों से अलंकृत जवाहरात, और वस्त्र, गाय, घोड़े और हाथी दिए। उस समय वह लोगों को कल्पवृक्ष के समान प्रतीत हुआ।

अथ मौहूर्तिकादिष्टे विध्युक्तेऽहनि शोभने।

पिता चक्रे कुमारस्य नाम शाह इति स्वयम्॥८६

ज्योतिषियों द्वारा बताए गए और धर्म का अनुसरण करने वाले शुभ दिन के अवसर पर मालवर्मा ने अपने पुत्र का नाम शाहजी रखा।

दिने दिने स ववृधे शिशुः सरसिजाननः।

पित्रोस्संवर्धयन् स्वाभिर्लीलाभिर्लोचनोत्सवम्॥८७

कमल के समान सुन्दर मुख वाला वह बालक दिन-ब-दिन बड़ा होता गया और साथ ही वह अपने माता-पिता के दृष्टि को आनन्द देने वाली अपनी लीलाओं से आनंदित करने लगा।

अथ वर्षद्वयेऽतीते द्वितीयमपि नन्दनम्।

लेभे महीपतेः पत्नी मर्तिमन्तमिवोत्सवम्॥८८

दो साल बाद मूर्तिमत उत्सव-आनंद के समान उसे एक और बेटा पैदा हुआ।

तस्य जातस्य हि विधिं संविधाय बुधैस्सह।

शरीफ इति सिद्धोक्तं नामधेयं व्यधाद्विभुः॥८९

पंडितों की मदद से उसका यथाविधि संस्कार करके सिद्ध पुरुषों द्वारा बताएं गए नाम के अनुसार उनका नाम शरीफजी रखा गया।

तौ शाहश्च शरीफश्च सिद्धनामांकितावुभौ।

ववृधाते श्रिया सार्धं कुमारौ कुलदीपकौ॥९०

सिद्ध पुरुषों के नाम को धारण करने वाले ऐसे वे कुल के दीपक, पुत्र शहाजी और शरीफजी बड़े होने लग गए और उनके साथ उनकी संपत्ति भी बढ़ने लगी।

अथ समुदितराजलक्षणाभ्यामुदितमनाः स्वजनान्वितः स ताभ्याम्।

नृपतिकुलवतंसमात्मवंशं भुवमधिपल्लवितं प्रभूयमेने॥९१

तत्पश्चात् वह राजगुणों युक्त पुत्रों के कारण राजा अपने रिश्तेदारों के साथ आनन्दित हुआ, और यह मानने लगा कि उसका वंश पृथ्वी पर बढ़ गया है।

कथितमिति मया जगत्प्रतीतं शुभमिहराजकुमारजन्म तावत्।

कलिकलुषहरं निशम्य धीमाननु पवात स्वसमीहितानि सद्यः॥९२

कलियुग के पाप का नाश करने वाले और लोकप्रसिद्ध मेरे द्वारा किए गए इन राजकुमारों के जन्म वर्णन को सुनकर बुद्धिमान व्यक्ति को लगता है कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां कुमारप्रभवो नाम प्रथमोऽध्यायः

## अध्याय:-२

कवीन्द्र उवाच -

प्रपेदे पंचमं वर्षं शरीफस्याग्रजो यदा।  
तदा महोदारवर्मा मालवर्मा महीपतिः॥१  
महत्या सेनया सार्धं दधानोभ्यर्हितं धनुः।  
प्रस्थापितो निजामेन समरायेंदिरापुरम्॥२

कवीन्द्र ने कहा-

जब शाहजी अपने पांचवें वर्ष में थे, राजा मालवर्मा ने एक बड़ा और बढ़िया कवच तथा अपने पसंदीदा धनुष के साथ, निजाम शाह के आदेश पर एक बड़ी सेना के साथ इंदौर पर चढ़ाई की।

तत्रात्यर्थे युध्यमानः सबलैरभियायिभिः।  
प्रभूतैः परिधीभूतैर्हन्यमानस्समंततः॥३  
पदातिमत्तमातंगहयकीलालवाहिनीम्।  
प्रवप्रवर्त्या तीव्र महतीं तीव्रवेगां तरंगिणीम्॥४  
कृतांत इव संक्रुद्धः समृद्धस्स्वेन तेजसा।  
पुरोधाय प्रतिभटान् प्रययावमरावतीम्॥५

वहां चारों ओर से घेरकर प्रहार करनेवाले कई शक्तिशाली सैनिकों के साथ संपूर्ण शक्ति से युद्ध करते हुए उसने पैदल सेना, मदमस्त हाथियों और घोड़ों के खून की एक बड़ी एवं तीव्रगामी नदी को बहा दिया। यम की तरह क्रोधित एवं तेजस्वी, मालवर्मा ने शत्रु के योद्धाओं को पहले स्वर्ग भेजकर और उनका अनुसरण करते हुए वह भी स्वर्ग को प्राप्त हो गया।

वज्रपातमिवाकर्ण्य तमुदंतमुमा सती।  
पपात वाताभिहता कदलीव महीतले॥६

वज्रपात की तरह उस भयानक खबर को सुनकर साध्वी उमा हवा से उखड़े केले की तरह जमीन पर गिर पड़ी।

दिनेश्वरेण विधुरा दिनश्रीरिव सा तदा।

बतावलंबराहिता मज्जति स्म तमोबुधौ॥७

सूर्य के वियोग में जैसे दिनश्री अंधकार में डूब जाती है वैसे ही आधारहीन उमा दुख के सागर में डूब गई।

अथ विट्टलराजस्तां भ्रातृभार्या तथाविधाम्।

भर्तृशोकमराकांतां क्रन्दन्तीं कुररीमिव॥८

समाधतुमनास्तत्र क्षरद्वाष्पेक्षणः स्वयम्।

निजगाद महाबुद्धिर्गद्गदस्वरया गिरा॥९

विध्यनित्यमिमं लोकं शोकं त्यज महाशये।

पतिस्तव गतः स्वर्गं स्ववर्गं परिमुच्य वै॥१०

एष वै प्रार्थितः पन्थाः शूराणामनिवर्तिनाम्।

परशस्त्राभिघाताद्यन्मरणं रणमूर्धनि॥११

सुधां पिपासतां सद्यः सुरलोकं यियासताम्।

न नूनमात्मवर्गस्य प्रणयः स्वार्थदर्शिनाम्॥१२

हा विहाय महासाध्वीं भवतीं बालमातरम्।

प्रस्थितस्य परं लोकं पत्युस्ते पुरुषं मनः॥१३

असंशयं नश्वराणि शरीराणि शरीरिणाम्।

रक्षितान्यपि यत्नेन क्षीयन्ते ह्यायुषः क्षये॥१४

फिर, उनकी स्वयं की आँखें आँसू से परिपूर्ण होने पर भी वे महान बुद्धिमान विट्टल जी पतिशोक से भयभीत तथा चकवी पक्षी की तरह विलाप कर रही, अपने भाई की पत्नी को सांत्वना देने के लिए दबी आवाज में कहा, हे महान मन वाली स्त्री, यह विधि निर्मित नश्वर संसार अनित्य है यह जानकर शोक मत करो। तुम्हारा पति अपना परिवार छोड़कर स्वर्ग चला गया है। शत्रु को पीठ न दिखाने वाले वीर योद्धा युद्ध में शत्रु के शस्त्रों से मरना चाहते हैं। जो वीर शीघ्र स्वर्ग जाकर अमृत पीना चाहते हैं, उनकी स्वार्थदृष्टि को वास्तव में रिश्तेदारों का प्रेम नहीं रोक सकता। हाय हाय! जब छोटे बच्चों सहित आप साध्वी को छोड़कर तुम्हारा पति परलोक चला गया उस समय उनका दिल कठोर होना

चाहिए। वास्तव में, मानव शरीर नश्वर हैं, और भले ही वे महान प्रयास से सुरक्षित किए गए हो, लेकिन जीवन की रस्सी टूट जाने पर वे नष्ट हो जाते हैं!

बतैतदगदंकारैरूपचीर्णमनामयम्।

मृदुचीनैस्समीचीनैः सिचयैः परिधापितम्॥१५

हृद्यैर्हितावहैर्वृष्यैश्चोष्यादिभिरनेकधा।

लघुभिस्सिन्धुधमधुरैराहारैरुपचायितम्॥१६

कालागुरुक्षोदलिप्तधूपवर्तिसुधूपिते।

रम्ये हर्म्यतले दीव्यन्मणिदीधितिदीपिते॥१७

शिरीषपुष्पमृदुले शयनीये सुशोभने।

शायितं नीरशिशिराशीरव्यजनवीजितम्॥१८

सुन्दरीभिः शयांभोजसंवाहितपदं पुनः।

बहूपकृतत्युच्चैर्यत्नेन धृतमात्मना॥१९

कृतघ्नतामिव दधद्वपुष्मन्तमये वपुः।

नानुयाति जगत्यस्मिन् तस्मात् कश्चिन्न कस्यचित्॥२०

उन्होंने डाक्टरों से इलाज कराकर शरीर को स्वस्थ रखा, महीन और मुलायम रेशमी कपड़े और सिचय से उन्हें ढँक दिया; हल्का, चिकना, मीठा, प्रिय, हितकारी, पौष्टिक, रसीलें पेय, आदि, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों द्वारा उन्हें पुष्ट किया; काले चन्दन के चूर्ण से बनी अगरबत्ती की सुगन्ध से सुगन्धित और दिव्य रत्नों से अलंकृत रमणीय महल में शिरीष के फूल की तरह कोमल सुन्दर शय्या पर शयन कराया और जल छिड़के हुए शीतल शिशु के पंखे से हवा की। सुंदरियों ने उनके पैरों को बार बार अपने करकमलों से रगड़ा, इस प्रकार उन पर अनेक प्रकार के उत्तम उपचार करके उनकी रक्षा की, लेकिन, मानो कृतघ्नता के कारण यह शरीर किसी के साथ नहीं जाता! इसलिए इस संसार में कोई किसी का नहीं होता है यही सत्य है।

कलत्राण्यनुकूलानि पुत्राश्च कृतलक्षणाः।

तौ मातापितरौ तद्वद्भ्रातरः सोदरा अपि॥२१

मित्राणि शत्रवश्चापि संपदो विपदोपि च।

भवन्ति तावदेवास्य यावदस्ति कलेवरम्॥२२

अनुकूल पत्नियां, गुणी पुत्र, प्रेममय माता-पिता, सहोदर भाई, मित्र, शत्रु, संपत्ति, और विपत्ति ये सभी तक विद्यमान होते हैं, जब तक यह देह विद्यमान रहता है।

एष शाहूः शरीफश्च तव देवि सुताबुभौ।

तेजस्विनौ विराजेते पुष्पवन्ताविवोदितौ॥२३

हे देवी, शाहजी और शरीफजी, आपके दोनों तेजस्वी पुत्र उदित होते हुए सूर्य तथा चन्द्रमा के समान सुशोभित हो रहे हैं।

आभ्यां वंशवतंसाभ्यां भविष्यत्युज्ज्वलं यशः।

सर्वस्मिन्नपि संसारे वीरमातुस्तवाद्भुतम्॥२४

क्षीरकण्ठाविमौ वत्सौ बत त्वन्मयजीवितौ।

मनागपि जगत्यत्र त्वां विना स्थास्यतः कथम्॥२५

तस्मात्त्वं बिभृहि प्राणांस्त्राणार्थमनयोर्द्वयोः।

दधती धैर्यमधुना वचनेनामुना मम॥२६

वीर माता के गर्भ में जन्में कुलदीपक ये दोनों पुत्र विश्व भर में अद्भुत और दीप्तिमान सफलता बिखेरेंगे। वे दोनों दुध पीते बच्चे की तरह बहुत छोटे हैं और उनका जीवन आप पर निर्भर है। ये लोग आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकते। तो अब यदि आप मेरे अनुरोध का पालन करते हैं, तो धैर्य रखें और उन दोनों को बचाने के लिए अपने प्राणों की रक्षा करें।

इति विट्ठलराजस्तां पर्याश्वासयदात्मनः।

स्थित्यर्थमन्ववायस्य राज्यस्य च विशेषतः॥२७

विट्ठल जी ने उसे इस तरह से उसके वंश और विशेष रूप से राज्य की भलाई के लिए सांत्वना दी।

दत्तदृष्टिस्तु सा देवी वात्सल्यात्तनयद्वये।

अपास्य शोकमनघा बभार बत जीवितम्॥२८

सदाचारिणी रानी उमाबाई ने अपने दो पुत्रों को देखकर, विलाप छोड़ दिया और अपने आप को जीवित रखा।  
(सती जाने का विचार छोड़ दिया)

महान्तमपि तं शोकं निगृह्य स महामतिः।

अकारयद्विधिं भ्रातुः सकलं पारलौकिकम्॥२९

हालाँकि महाबुद्धिमान विठ्ठलजी को बहुत दुख हुआ, लेकिन उन्होंने उसे नियंत्रित किया और अपने भाई के संपूर्ण अंत्येष्टि विधि को किया।

ततःशाहं शरीफं च पुरस्कृत्य प्रतापिना।

चक्रे विठ्ठलराजेन राज्यं तदखिलं स्थिरम्॥३०

बाद में प्रतापी विठ्ठलजी ने शाहजी और शरीफजी के नाम पर राज्य पर शासन किया और संपूर्ण राज्य में स्थिरता लाई।

निशम्यैतत्रिजामोपि निधनं मालवर्मणः।

पक्षहीनामिव निजां बत मेने पताकिनीम्॥३१

मालवर्मा के निधन की खबर सुनकर निजामशाह को भी लगने लगा कि उनकी सेना के पंख टूट गए हो।

ततः शाहशरीफाह्वौ मालवर्मसुतावुभौ।

समं विठ्ठलराजेन समनाय्य महामनाः॥३२

सान्त्वयित्वा स्वयं दत्त्वा ताभ्यां तत् पितृवैभवम्।

सत्कृत्य हेमाभरणैर्वासोभिश्च मनोहरैः॥३३

अनर्घ्यमणिमालाभिस्तथा च गजवाजिभिः।

विसृष्टवान् गृहानेतौ तुष्टो धारागिरीश्वरः॥३४

तब मालवर्मा के दोनों पुत्रों शाहजी और शरीफ जी को विठ्ठलजी के साथ बुलाकर उदार निजामशाह ने उन्हें स्वयं सांत्वना दी और अपने पिता की संपत्ति को भी उन्हें सौंप दिया। उसने सोने के गहने, सुंदर कपड़े, कीमती रत्न और हाथी, घोड़ों से उनका सम्मान किया और उन्हें संतोष के साथ विदा किया।



अथ तेन पितृव्येण परिपालितयोस्तयोः।

वपुषी बाल्यसंपृक्ते परां पुपुषतुः श्रियम्॥३५

उनके चचेरे भाई विठ्ठलजी ने उन दोनों का पालन पोषण किया और फिर उनके शरीर पर एक विशेष तेज चमकने लगा।

प्रशस्तलक्षणोपेते निकेते सर्वसंपदाम्।

सोदरेऽथ शरीफस्य राजशब्दो व्यराजत॥३६

शरीफजी के भाई शाहजी, जो उत्तम गुणों से संपन्न थे और जो सभी धनों के प्रतीक थे, उन्हें 'राजा' शब्द से पुकारने लगे। (वह राजा बन गये)

तं बालमपि भूपालमणयस्सर्व एव ते।

मानयन्तो नमन्ति स्म महाभुजमुमात्मजम्॥३७

वे महाबाहु उमा के पुत्र शाहजी आयु से छोटे थे, लेकिन सभी सरदार उनको सम्मान के साथ नमस्कार करने लगे।

ततश्शरीरं शाहस्य प्रविष्टे नवयौवने।

ससंबाधेव शिशुता संचुकोच शनैश्शनैः॥३८

जैसे ही शाहजी के शरीर में किशोरावस्था आने लगी, मानो बाल्यावस्था कुछ कठिनाईयों को पाकर धीरे-धीरे हिचकिचाने लगी हो।

करिपोतमिवोदंचन्मदराजिविराजितम्।

व्यक्तीभवन्नवश्मश्रुलेखं लेखमनोहरम्॥३९

जैसे हाथी का झुंड गण्डस्थल के मदस्राव की धारा से सुशोभित होता है, वैसे ही नई फूटती हुई दाढ़ी से शाहजी का चेहरा, देवों के समान सुशोभित होने लगा।

सुवर्णविस्फुरद्वर्णमाकर्णायतलोचनम्।

कृतकीरकुलत्रासनासावंशमनोहरम्॥४०

इनकी कांति सोने की तरह थी, इनकी आंखें बड़ी थी और इनकी खूबसूरत नाक बहुत घुमावदार थी, जो तोतों के मन में भय पैदा कर रही थी।

कलाधरतिरस्कारि मनोहारि मुखं पुनः।

जानुपर्यन्तविश्रान्तभुजमद्भुतविग्रहम्॥४१

शाहजी का मनोहारी मुख चंद्रमा को भी तिरस्कृत करनेवाला था। उनकी भुजाएँ घुटने तक लंबी थी तथा उनका शरीर दिव्य था।

दानवीरं दयावीरं युद्धवीरं महौजसम्।

मालभूपसुतं शाहं वरलक्षणलक्षितम्॥४२

दृष्ट्वा यादवराजेन राजराजसमश्रिया।

दिष्टे दैवज्ञसंदिष्टे विशिष्टेभिमतैर्ग्रहैः॥४३

कुलकन्या कुले धन्या कन्या कुवलयेक्षणा।

दत्ता सदक्षिणा तस्मै जिजूर्विजयलक्षणा॥४४

उत्तम गुणों से संपन्न, उदार, दयालु, युद्धकुशल, महाप्रतापी, वर के लक्षणों से संपन्न, मालवर्मा के पुत्र शाहजी राजा को देखकर, कुबेर की तरह धनी यादव राजा ने, अनुकूल ग्रहों वाले ज्योतिषी द्वारा बताए गए क्षण में अपनी विजयलक्षणा, कमलनेत्रा और कुल की शोभा को बढ़ाने वाली, कुलीना पुत्री जीजाजी को दहेज के साथ अर्पित किया।

सा तं महाशयं प्राप्य बिभ्रती वपुरुज्वलम्।

गंगेव गुणगंभीरा व्यराजत महोदधिम्॥४५

जैसे शुभ्र एवं गहरी गंगा समुद्र से सुशोभित होती हैं, वैसे ही तेज पुंज से शोभायमान शरीरवाली गुणवती जीजाबाई, गुण गंभीर शाहजी को प्राप्त करके सुशोभित होने लगीं।

स च तां प्रेयसीं लब्ध्वा पद्महस्तां भुवः श्रियम्।

लावण्यवैभववतीमतीव महितान्वयाम्॥४६

नितंबप्रान्तविश्रान्तस्निग्धश्यामलकुन्तलाम्।  
चन्द्रार्धभ्रांतिकृद्भालां शरासनसमभ्रुवम्॥४७  
सत्तामिव मनोजस्य लसत्तामरसेक्षणाम्।  
सुवर्णशुक्तिप्रतिमश्रुतिं सरलनासिकाम्॥४८  
प्रत्यग्रतरकुन्दाग्रदन्तीं शोणरदच्छदाम्।  
विकस्वरांभोजमुखीं कंबुकण्ठीं पिकस्वराम्॥४९  
मृणाळकोमळभुजां नवांकुरितयौवनाम्।  
व्याकोशांभोरुहशयां लसत्किसलयांगुलिम्॥५०  
स्निग्धारुणनखश्रेणिं निम्ननाभिं तनूदरीम्।  
रंभास्तंभाभिरामोरूं गूढगुल्फां यशस्विनीम्॥५१  
राजरेखांकितपदां प्रशस्तिं सर्वसंपदाम्।  
नानालंकारसंभारसंदृब्धस्निग्धवेणिकाम्॥५२  
मुक्तामणिश्रेणिकांतसीमन्तप्रान्तवर्तिना।  
स्फुरितारुणवर्णेन शिरःपुष्पेण शोभिताम्॥५३  
सुवृन्ते स्वर्णताटंके पर्यन्तप्रोतमौक्तिके।  
दधतीं दीधितिमतीं सरत्नां च ललाटिकाम्॥५४  
पृथुमुक्तामणिमयोदारहारमनोहराम्।  
रत्नमुक्तांचितानेकगुच्छगुच्छार्धधारिणीम्॥५५  
केयूरकान्तिकिर्मीरसरत्नकरकंकणाम्।  
कृशावलग्नसंलग्नसप्तकीसंभृतश्रियम्॥५६  
कलहंसगतिं शिजन्मणिमंजीरशालिनीम्।  
अनर्घ्यरत्नाभरणप्रसाधितपदांगुलिम्॥५७  
सुवर्णतन्तुसंतानविलसद्वसनावृताम्।

रत्नमुक्तामणिव्रातस्फुरत्कूर्पासकान्विताम्॥५८

पश्यन् प्रसन्नवदनां प्रसन्नवदनः स्वयम्।

सूर्यवंशमणिस्तूर्यघोषेण गृहमाविशत्॥५९

उस उच्च कुल की सुंदरी के कमल की तरह हाथ मानो धरती की शोभा हो। उसके चिकने, सुन्दर, काले बाल नितंब तक लुढ़क रहे थे। उसके भाल को देखकर ऐसा लग रहा था मानो अर्धचंद्राकार हो तथा उसकी भौहें धनुष की तरह थीं। मानो वह मदन की असली शक्ति हो, उसकी आँखें कमल की तरह जलयुक्त, कान सुनहरे सीपों की तरह, नाक सीधी, दाँत कुंद के ताजे फूलों की तरह सफेद, होंठ लाल, मुँह खिले हुए कमल के समान, कंठ शंख की तरह, और आवाज कोयल की तरह थी। नवयौवन में प्रवेश किए हुए, उसकी भुजाएं कमल के कोमल तंतुओं की तरह नाजुक, उंगलियां एक विकसित कमल के समान लाल, नाखून चिकने और लाल, नाभि गहरी, पेट पतला, जांघें केले के खंभे के समान सुंदर, टखने अंदर छिपे हुए, और पैरों पर राजलक्ष्मी का निशान दिखाई दे रहा था। वह सभी धनों की निधि थी तथा उसकी चोटी विभिन्न गहनों से भरी हुई, सिर विभिन्न प्रकार के लाल चमकीले मोतियों एवं रत्नों की मालाओं एवं फूलों से सुशोभित, माथे पर लटकते हुए रत्न, कानों के पास दिखाई देते मोतियों से गुंथे हुए कुंडल, धारण किए गए मोतियों एवं रत्नों के बड़े हार एवं गुच्छे, भुजाओं में बाजूबंद, हाथों में रत्नों से युक्त कंगन थे। पतली कमर पर कमरबंद, पैरों में आवाज करते पायजेब, पैरों की उंगलियों में मूल्यवान रत्नों के आभूषण, शरीर पर चमकने वाले रेशमी कपड़े तथा रत्नों से युक्त रेशमी चोली को धारण करने वाली उस प्रसन्नवदना जीजाबाई को स्वयं प्रेममयी दृष्टि से देखता हुआ वह सूर्यवंश का दीपक और प्रसन्नवदन शहाजी, वाद्ययंत्रों के घोषों के साथ अपने घर लेके आया।

समागतां समं तेन पत्या प्रश्रयसंश्रयाम्।

श्रियं नारायणेनेव प्रविशन्ती निकेतनम्॥६०

जब वह विनयशील जीजाबाई अपने पति के साथ घर में प्रविष्ट हुई तो वे दोनों लक्ष्मीनारायण की जोड़ी की तरह शोभा को धारण कर रहे थे।

संभूयाशु समेताभिः पश्यन्तीभिस्सविभ्रमम्।

सुभगाभिः पुरन्ध्रीभिः कृतनीराजनाविधिम्॥६१

जल्दी से इकट्ठी हुई तथा विस्मय से देखने वाली सुवासिनी स्त्रियों ने नीराजनविधि से उनकी आरती की।

वन्दमानाममोघाभिराशीर्भिरभिनन्दिताम्।

स्नुषामिमामथ श्वश्रूः सकौतुकमलोकत॥६२

जब उसने अभिवादन किया, तो उसको अनेक प्रकार के फलदायी आशीर्वाद मिलें। उस समय सास ने अपनी बहू को बड़ी कौतूहल की दृष्टि से उसकी ओर देखा।

श्वश्रूशुश्रूषणपरां पतिप्रियतरोत्तराम्।

शीलसंरक्षणे सज्जां लज्जां मूर्तिमतीमिव॥६३

साध्वीजनाध्वमर्यादामन्वयद्वयसम्मताम्।

जनीं नन्दपरिजनामभ्यनन्दन्सतीजनाः॥६४

जो अपनी सास की सेवा में तत्पर, पति से प्रेम पूर्वक वार्तालाप करनेवाली, चरित्र की रक्षा करने में दक्ष, विनय की प्रतिमूर्ति, पतिव्रता स्त्रियों की पथ प्रदर्शिका, दोनों परिवारजनों द्वारा मान्य तथा अपने परिजनों को आनंदित करनेवाली, ऐसी बहू का साध्वी स्त्रियों ने अतिशय अभिनंदन किया।

सुतां विश्वासराजस्य दुर्गां नाम्नाथ सद्गुणाम्।

शरीफोपि महाबाहुर्भव्यां भार्यामविन्दत॥६५

विश्वासनामक राजा की दुर्गा नाम की सुंदर एवं सद्गुणी बेटी शक्तिशाली शरीफजी को पत्नीरूपेण प्राप्त हुई।

स तया च तया तन्व्या स्नुषया सेवितान्वहम्।

विनीताभ्यां च पुत्राभ्यामुमा लेभे परां मुदम्॥६६

सेवा करनेवाली दुर्गा एवं सुंदर जिजाबाई, इन दोनों बहुओं से तथा अपने दोनों विनयशील बेटों से उमा को अतिशय आनंद की प्राप्ति होने लगी।

अगणितगुणभाजौ भ्रातरौ तावमूभ्याम्।

निरवधिकगुणाभ्यां भ्राजमानौ वधूभ्याम्॥

सपदि निजयशोभिः शोभामानामशेषाम्।

भुवमपि जनयित्रीं नन्दयामासतुः स्वाम्॥६७

अमूल्य गुणों से सुशोभित दोनों बहुओं के संयोग से शोभायमान ये दोनों गुणी भाई अपनी यश एवं सफलता से तुरन्त ही संपूर्ण पृथ्वी को और अपनी माता को आनन्द देने लगे।

सार्धं तेनानुजनाप्रतिहतगतिना मारुतेनेव शुष्मा ।

भीष्मादत्युग्रकर्मा युधि युधि विजयी विश्रुतः शाहवर्मा।

कर्तुं नित्यं निजामप्रियमतुलबलः काण्डकोदण्डपाणिः॥

सर्वेषां पार्थिवानां पृथुरिव पृथिवीवासवश्शासकोभूत्॥६८

जैसे तेज हवा से आग तेज हो जाती है, वैसे ही अपने पराक्रमी भाई के साथ भीष्म से भी अधिक उग्र कर्म करनेवाला, प्रत्येक युद्ध का विजेता, धनुष-बाण को धारण करने वाला, अतुल बलवान शहाजीराजे, निजामशाह का प्रिय करने वाले सभी राजाओं से श्रेष्ठ , पृथुराजा की तरह पृथ्वी पर शासन करने लगा।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिवासकरपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां शाहशरीफपरिणयो नाम  
द्वितीयोऽध्यायः।

## अध्याय:-३

कवीन्द्र उवाच -

अथ विट्टलराजे स्वे पितृव्येपि दिवं गते।

नृपतीतिविधिज्ञेन मातुर्वचनवर्तिना॥१

महावीरेण धीरेण शाहराजेन धीमता।

राज्यभारस्स हि महान् दध्रे बत निजे भुजे॥२

कविन्द्र कहते हैं:- बाद में अपने चाचा विट्टलजी के भी परलोक चले जाने पर, अपनी माता की आज्ञा का पालन करने वाले, राजनीतिज्ञ, पराक्रमी, धैर्यवान और बुद्धिमान उस शाहजी राजा ने राज्य का भारी बोझ अपनी हाथों में ले लिया।

संभः खेलश्च मल्लश्च मंबो नागश्च पर्शुकः।

त्र्यंबकश्चापि वक्कश्च भ्रातरस्सोदरा अमी॥३

पुत्रा विट्टलराजस्य सुत्रामसमविक्रमाः।

मालभूपात्मजौ शाहशरीफौ च प्रभाविणौ॥४

विट्टलजी राजा के पुत्र संभाजी, खेलजी, मल्लजी, मंबाजी, नागोजी, पर्शुकजी, त्र्यम्बकजी और वक्कजी ये सभी सहोदर भाई इंद्र के समान शक्तिशाली थे और राजा मालवर्मा के शाहजी और शरीफजी दो प्रभावशाली पुत्र थे।

एते क्षोणिजये सक्ताः शक्तास्समरकर्मणि।

निजामस्य प्रियकराः कराकृष्टशरासनाः॥५

पर्वतप्रांशुवपुषः सहस्रांशुसमत्विषः।

भूयसा भुजसारेण भूरिणाभिजनेन च॥६

सैन्येन च गुणैश्चान्यैरनन्य समतेजसः।

परं न गणयामासुरंबरस्य मते स्थिताः॥७

पृथ्वी पर विजय पाने के लिए आतुर, युद्ध कार्य में सक्षम, निजामशाह से प्रेम करने वाले, सदैव हाथ में धनुष धारण करने वाले, पर्वत की तरह उन्नत शरीर वाले, सूर्य की तरह तेजस्वी, अपने अतिशय भुजा बल तथा विशाल परिवार, सेना और अन्य गुणों से अद्वितीय पराक्रम को प्राप्त ये सभी भाई मलिकंबर द्वारा संशोधित (गणिमा कावा) युद्ध तंत्र का उपयोग करते थे और किसी शत्रु को समरांगन में टिकने नहीं देते थे।

एकदान्तः पुरादाप्तभृत्यामात्यनिषेवितम्।

निजामशाहमास्थानीमेत्य सिंहासने स्थितम्॥८

दृष्ट्वा यादवराजाद्याः प्रणिपत्य यथाक्रमम्।

प्रचलन्ति स्म तरसा सर्वे स्वं स्वं निवेशनम्॥९

एक बार रनिवास से अपने विश्वस्त विद्वानों मंत्रियों और सेवकों के साथ निजामशाह सभागृह में आकर सिंहासन पर बैठे हुए थे तब यादवराज जैसे सभी सरदार उनसे मिलजुलकर और मुजरा देकर शीघ्रता से अपने घर जाने लगे।

ततः प्रचलतां तेषामन्योन्यस्पर्धिचेतसाम्।

संमर्दः सुमहानासीदास्यानीतोरणाद्वहिः॥१०

एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने वाले वे सभी राजा जैसे ही जाने लगे, तो सभागृह के द्वार के बाहर अचानक अत्यंत भीड़ हो गई।

तत्र वेत्रधरैर्दारादुत्सारितजनाः पुरः।

परिपीनोन्नतस्कन्धाः सन्नद्धाः पृथुवक्षसः॥११

किरीटिनः कुण्डलिनः कवचच्छन्नविग्रहाः।

मुक्तामणिमयोदारहाराः केयूरधारिणः॥१२

सुलक्षणाः क्षोणिभुजः पद्मपत्रायतेक्षणाः।

स्वैः स्वैः सैन्यैः परिवृताः पुरः प्रोच्छ्रायितध्वजैः॥१३

हयानन्ये गजानन्ये याप्ययानानि चापरे।

समारुह्याप्रतिहतप्रभावाः संप्रतस्थिरे॥१४



वहां मौजूद भाला धारियों ने लोगों को एक तरफ हटाना शुरू कर दिया और वे अतुलनीय शक्ति वाले राजा, कुछ घोड़े पर, कुछ हाथियों पर, कुछ पालकियों पर बैठकर जानें लगे। उन राजाओं के कंधे ऊंचे और मजबूत थे। उनकी छाती चौड़ी थी और वे (हमेशा) अच्छी तरह तैयार थे। उन सुन्दर राजाओं की आंखें कमल के समान दीर्घ, मुकुट, कुंडल, मोतियों के बड़े हार और केयूर धारण किए हुए, और शरीर पर कवच पहना हुआ था तथा वे अपनी-अपनी सेनाओं से घिरे हुए थे और उनके आगे झण्डा फहर रहा था।

ततः खण्डार्गलाख्यस्य नृपस्याग्रेसरः करी।

मर्दयन्नन्यसैन्यानि प्रचचाल बलाद्वली॥१५

उस समय खण्डार्गल नामक राजा का अग्रणी बलवान हाथी अन्य राजाओं की सेनाओं को रौंदता हुआ वेगपूर्वक निकल गया।

पदे पदेकुशाघातैर्निषिद्धोपि निषादिना।

स सिन्धुरः सैनिकानां चकार कदनं महत्॥१६

महावत के द्वारा अंकुश चुभोकर पग-पग पर नियंत्रित करने पर भी उस मदमस्त हाथी ने अनेक सैनिकों को मार दिया।

तं मृन्दन्तमनीकानि गजन्तमकुतोभयम्।

प्रलयांभोधरनिभं रोद्धुं शेकुर्न केचन॥१७

सेना को कुचलने वाले, निडरता से गरजने वाले और प्रलयकाल के बादल की तरह प्रतीत होने वाले उस हाथी को कोई नहीं रोक पाया।

अथ यादवराजस्थ दत्तवर्मादिभिस्सुतैः।

न सेहे गर्जतस्तस्य गर्जः प्रतिगजैरिवा॥१८

जब किसी एक हाथी के दहाड़ने पर जैसे दूसरे झण्ड के हाथी उसे सहन नहीं कर पाते; उसी तरह इस हाथी की दहाड़ यादवराजा के पुत्र दत्तवर्मा आदि को सहन नहीं हुई।

ततो दत्तसमादिष्टाः सुभटास्तं मदोत्कटम्।

निजघ्नुश्शरनिस्त्रिंशकुन्ततोमरशक्तिभिः॥१९

बाद में, दत्तवर्मा के आदेश पर, वीर योद्धाओं ने मदमस्त हाथी पर तीर, तलवार, भाले, तोमर और शक्तियों से हमला शुरू कर दिया।

स भिन्नवर्मा बहुभिर्घोरकर्मा मदद्विपः।

विकर्षन् पुष्करेणोच्चैः सहसा हयसादिनः॥२०

करेण कांश्चिदादाय क्षिपन् कांश्चिदपातयत्।

कांश्चिन्निपात्य चरणैस्तत्तलैर्निष्पिपेष च॥२१

हालांकि सैनिकों के द्वारा उस मदमस्त और भीषण कार्यों को करनेवाले हाथी को बेध देने पर भी उसने अनेक घुड़सवारों को अपनी सूंड से खींचकर नीचे गिरा दिया और बहुतों को उसने पैरों से गिराकर अपने तलवों से रौंद दिया।

दत्तवर्माऽथ तं दृष्ट्वा स्वसैन्यस्य पराभवम्।

तं दन्तिनमभीयाय हर्यक्ष इव लक्षयन्॥२२

अपनी सेना को इस प्रकार पराजित देखकर दत्तावर्मा, सिंह की तरह हाथी की ओर दृष्टिपात करके चल दिया।

तदा तेनातिरभसात्स बतायुधसादितः।

विधुन्वानः स्वमूर्धानं रराण रणमूर्धनि॥२३

तत्पश्चात्, उसने जोर से शस्त्र प्रहार करके घायल किया हुआ वह हाथी अपना सिर हिलाता हुआ रण प्रमुखों के सामने आवाज करने लगा।

ततो विट्ठलराजस्य संभखेलावुभौ सुतौ।

खण्डार्गळस्य साहाय्यं विधातुं समुपस्थितौ॥२४

तब विट्ठलवर्मा के दो पुत्र संभाजी और खेलोजी खण्डार्गल राजा की सहायता के लिए दौड़कर आए।

तौ तं लोहितलिप्तागं धातुमन्तमिवाचलम्।

पर्यपालयतां तत्र दत्तराजवशं गतम्॥२५

वे दत्तवर्मा के चंगुल में फंसे हुए खून से लथपथ और गेरू के पहाड़ जैसे दिखनेवाले हाथी की रक्षा करने लगे।

दत्तराजस्तु तं हित्वा विहस्तं मदहस्तिनम्।

अनुजं प्रतिजग्राह संभराजं महाभुजम्॥२६

तब दत्तावर्मा ने टूटी हुई सूंड वाले उस मदमस्त हाथी को छोड़कर छोटे भाई, जो शक्तिशाली संभाजी थे, उन पर हमला कर दिया।

तयोः कुपितयोस्तत्र द्वन्द्वयुद्धे समुद्यते।

आवर्तस्सुमहानासीत् योधानामभिधावताम्॥२७

हस्ताहस्ति ततो युद्धमुभयोः सेनयोरभूत्।

दत्तवर्माणमभ्येते संभे जंभारितेजसि॥२८

यादवानां तदद्वापि सांबंधिकमलक्षयन्।

ररक्ष पक्षं संभस्य भ्राता शाहमहीपतिः॥२९

क्रोधित हुए उन दोनों योद्धाओं के बीच चल रहे द्वंद्व युद्ध के दौरान, कई योद्धा दौड़ते हुए आए और अचानक एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। तभी दोनों सेनाओं के बीच हाथों-पैरों से भयंकर युद्ध प्रारंभ हो गया। जहां इंद्र की तरह शक्तिशाली संभाजी ने दत्तवर्मा पर दौड़कर आक्रमण किया, वहीं संभाजी के भाई शाहजी राजा ने यादव के रिश्ते की खुलकर अनदेखी करते हुए संभाजी के भाई शाहजी राजा का पक्ष संभाल लिया।

ततश्चर्मधरस्तत्र दत्तराजः प्रतापवान्।

व्यधत्त मण्डलाग्रेण परिवेषमिवात्मनः॥३०

तब हाथ में ढाल लिए हुए पराक्रमी दत्तवर्मा ने अपनी तलवार को घुमाकर मानो अपने चारों ओर एक तेजोमय मण्डल बना दिया हो।

तस्मिन्नाकस्मिके युद्धे शूराणां सन्निपेतुषाम्।

क्ष्वेडितास्फोटितभरैर्बभूवुर्बधिरा दिशः॥३१

उस अचानक हुई लड़ाई में वीरों की गर्जना ने और भुजाओं पर ताल ठोकने की आवाज ने दिशाओं को बहरा कर दिया।

तदा स्वमण्डलाग्रेण मण्डलानि वितन्वता।

ननृते तेन वीरेण रणरंगे महीयसि॥३२

तब वीर दत्तवर्मा अपने तेजोमय मण्डलों से मण्डलों का विस्तार करता हुआ वह विशाल युद्ध के मैदान पर नृत्य करने लगा।

लुठत्सु वरवीराणां सकिरीटेषु मूर्धसु।

असिभिः खण्ड्यमानेषु सकोदण्डेषु बाहुषु॥३३

कृपाणबाणपरशुप्रासभिन्नेषु वर्मसु।

शितचक्रनिकृत्तेषु सशरेषु करेषु च॥३४

तुरंगमत्तमातंगपत्रिसंघातजन्मभिः।

स्फुटं रुधिरधाराभिः शान्तेषु रणरेणुषु॥३५

ध्वजांशुकपरीतासु समराजिरभूमिषु।

शराचितशरीरेषु नरेषु निपतत्सु च॥३६

तेन यादववीरेण धीरेणामित्रघातिना।

संभराजं समासाद्य बिभिदे मित्रमण्डलम्॥३७

महान वीरों के मुकुट युक्त सिर ज़मीन पर लुढ़कने लगे, तलवार से धनुष सहित भुजाएं टूटने लगी; तलवार, तीर, परशु, भाले से कवच छिन्न-भिन्न होने लगे, तीव्र चक्रों से बाण सहित हाथ टूटने लगे, घोड़ों और मदमस्त हाथियों के शरीर में बाणों के प्रविष्ट होने से बहनेवाली खून की धाराओं से धूल अच्छी तरह शांत हो गई। समरांगन झंडों के निशान से आच्छादित हो गया; बाणों से मनुष्यों के शरीर छिन्न होकर नीचे गिरने लगे और ऐसे समय में उस वीर शत्रु संहारक यादव की संभाजी के साथ मुलाकात हुई और वे मर गये।

तमप्रतिमकर्माणं दत्तवर्माणमाहवे।

शृण्वानस्संभनिहतं यादवेन्द्रस्वमात्मजम्॥३८

पुरोगच्छन्नर्धपथादतिरोषारुणेक्षणः।

परावृत्तो महाराजः संभराजजिघांसया॥३९

अद्वितीय कार्य करनेवाला अपना पुत्र दत्तवर्मा संभाजी द्वारा युद्ध में मारा गया है ,जब यह खबर आगे गए हुए यादवराज को पता लगी तो उसकी आंखें क्रोध से लाल हो गईं और वह संभाजी को मारने के लिए आधे रास्ते से ही वापस लौट गया।

तस्मिन् रोषसमाविष्टे यादवानामधीश्वरे।

सपर्वतवनद्वीपा वसुधा समकंपत॥४०

उस यादवराज को क्रोधित देखकर धरती, पहाड़, जंगल, द्वीप आदि भी कांपने लगे।

असुतोप्यधिको येन हतो जाल्मेन मे सुतः।

तमहं निहनिष्यामि करिष्यामि समीहितम्॥४१

मैं उस दुष्ट को मारकर ही अपनी इच्छा (बदला) पूरी करूंगा, जिसने मेरे प्राण से प्रिय पुत्र को मार डाला है।

इत्यमर्षवशीभूतं श्वशुरं सुरविक्रमम्।

स्वपक्षरक्षणाकांक्षी शाहराजोऽभ्ययुध्यत॥४२

इस प्रकार क्रोधित और देवता के समान पराक्रमी, अपने ससुर यादवराज के साथ शाहजी अपने पक्ष की रक्षा हेतु युद्ध करने लगा।

युध्यमानममुं वीक्ष्य जामातरमरिन्दमः॥

जघान साहसी शाहं भुजगेन्द्रसमे भुजे॥४३

मेरे दामाद युद्ध कर रहे हैं, ऐसा देखकर शत्रु का नाश करनेवाले साहसिक यादवराज ने वासुकी की तरह शाहजी के भुजा पर जोर से प्रहार किया।

शाहस्तेनासिपातेन श्रयन् मूर्च्छां महीयसीम्।

कथंचिदपि धैर्येण धारयामास जीवितम्॥४४

उस तलवार के प्रहार से शाहजी बेहोश हो गए और उन्होंने बहादुरी से किसी तरह अपनी जान बचाई।

ततः खेलं पराभूय न्यक्कृत्यान्यांश्च पार्थिवान्।

निर्जित्य च निजामस्य श्यामाननमयीं चमूम्॥४५

गाढमुष्टिर्गाढमुष्टिं समुद्यम्य स यादवः।

संरब्धोभ्यपतत्तूर्णं संभं समरदुर्जयम्॥४६

ततस्संभः प्रसन्नात्मा परं परिहसन्निव।

अरं व्यापारयामास करं कौक्षेयके निजे॥४७

उस समय खेलोजी को, अन्य राजाओं को, निजामशाह की शिद्दी सेना को पराजित करके क्रोधित हुए गाढमुष्टि यादवराज ने तलवार निकालकर समरांगन में अपराजेय उस संभाजी पर वेगपूर्वक प्रहार किया। तब प्रसन्नवदन संभाजी ने मानो शत्रु का उपहास करते हुए अपने तलवार पर वेगपूर्वक हाथ रख दिया।

तयोस्मदाभवद्युद्धं मिथो विस्पर्धमानयोः।

साध्वसावहमन्येषां मत्तयोर्द्विपयोरिव॥४८

जिस तरह दो मदमस्त हाथियों में परस्पर भयंकर युद्ध होता है उसी तरह परस्पर प्रतिस्पर्धा करनेवाले उन दोनों में लोगों के दिलों को चौंकाने वाली लड़ाई हुई।

ततोऽसिपातान् बहुशः सोद्वा संभस्य यादवः।

तं जगत्यां जितारातिरसिनैव न्यपातयत्॥४९

उस शत्रु के विजेता यादवराज ने संभाजी की तलवार के कई वार सहे और फिर उन्हें अपनी तलवार से जमीन पर पटक दिया।

तं सुतस्य निहंतारं निपात्य वसुधातले।

तेन यादववीरेण वैरनिर्यातनं कृतम्॥५०

यादवराज ने अपने पुत्र की हत्या करने वाले संभाजी को जमीन पर पटककर अपना बदला ले लिया।

तदा यादवराजेन महाराजेन संयति।

सुते विट्ठलराजस्य बत ज्येष्ठे निपातिते॥५१

तत्र प्रतिक्रियां कांचिदपि कर्तुमशक्नुवत्।

निजामस्याखिलं सैन्यमवसन्नमजायत्॥५२

जब यादवराज ने युद्ध में विट्ठल राजा के ज्येष्ठ पुत्र का वध किया तो निजामशाह की पूरी सेना किसी बात का विरोध नहीं कर सकी, क्योंकि उनका साहस समाप्त हो गया था।

स्वामिनाथ निजामेन सांत्वयित्वा निवारिते।

ते सेने प्रसभोद्धृते निवृत्ते कलहान्मिथः॥५३

रणांगणादुपादाय वर्ष्मणी संभदत्तयोः।

शोचमाने हतोत्साहं स्वं स्वं शिविरमीयतुः॥५४

जब स्वामी निजामशाह ने दोनों क्रोधित सेनाओं को सांत्वना देकर हटाया, तो वे परस्पर के झगड़े से मुक्त हो गये और युद्ध के मैदान से संभाजी और दत्तवर्मा की लाशों को लेकर खिन्न होते हुए अपने अपने शिविर में चले गए।

लिषण्णमनसस्सर्वे खेलकर्णादयोऽनुजाः।

ततस्तमन्वशोचंत ज्येष्ठं भ्रातरमात्मनः॥५५

खेलकर्ण प्रभृति संभाजी के छोटे भाई दुःखी होकर अपने बड़े भाई के लिए विलाप करने लगे।

सुतस्य कारयामास यादवः कार्यमुत्तरम्।

भ्रातुर्ज्येष्ठस्य विधिवत् खेलकर्णस्तदुत्तरम्॥५६

यादवराज ने अपने बेटे की और खेलकर्ण ने भी अपने बड़े भाई की विधिवत् उत्तरविधि की।

सांबंधिकस्य महतः सुतरां विरुद्धम्।

स्पर्धिष्णुभिर्भृशबलै यदभूद्धि युद्धम्॥

तद्यादवेन सुधिया हृदि सावलेपे।

जानीमहे किमपि चिन्तयतानुतेपे॥५७

घनिष्ठ संबंध के विपरीत, प्रतिस्पर्धा करनेवाले भोंसले के साथ जो युद्ध हुआ, उसका अपने गर्वित हृदय में

कुछ विचार किया तो उस समय उसे पश्चाताप हुआ था, ऐसा हमें लगता है।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिवासकरपरमानन्दकवीन्द्र प्रकाशितायामाकस्मिकास्कन्दनो नाम तृतीयोऽध्यायः।

## अध्याय:-४

कवीन्द्र उवाच -

अथो विठ्ठलराजस्य पुत्रेष्वद्भुतकर्मसु।  
खेलकर्णप्रभृतिषु प्रभुणा पक्षपातिना॥१  
प्रभूताभिजनं भूरिबलौघपरिवारितम्।  
प्रतिपक्षज्यानिपरं पविपाणिमिवापरम्॥२  
अतीव दुर्धरतरं जानता यादवेश्वरम्।  
निजे हृदि निजामेन न्यधीयत परं छलम्॥३

कविन्द्र ने कहा - बाद में विठ्ठल राजा के खेलकर्ण प्रभृति अतुलनीय वीर पुत्रों के पक्षपाती स्वामी निजामशाह ने बड़े परिवार वाले, विशाल सेना से युक्त, विपक्ष का नाश करने वाले, मानो वे साक्षात् इंद्र ही हो, ऐसे यादवराज अत्यंत अपराजेय है, यह जानकर उसने अपने मन में एक महान धोखा देने की योजना बनाई।

तस्य दुर्मन्त्रितं बुध्वा यादवानां धुरंधरः।  
प्रस्थाय स महाबाहुर्दिल्लीश्वरमुपाश्रयत्॥४

उसके दुष्ट विचार को जानकर वह महाबलशाली कुलश्रेष्ठ यादवराज दिल्ली के सम्राट से जाकर मिल गया।

निजामविषयं हित्वा गतो यदुपतिर्यदा।  
येदिलोतरमासाद्य तदेव मुमुदे तदा॥५

जब यादवराज ने निजामशाह का देश छोड़ा तो आदिलशाह इस अवसर को देखकर खुश हुआ।

स हि पूर्व निजामेन परिभूतः पदे पदे।  
तदा ताम्राधिपतिना सार्धं संधि स्वयं व्यधात्॥६

क्योंकि पूर्व में जब निजामशाह से वह कदम कदम पर पराजित हुआ तो उसने स्वयं मुगल बादशाह से सन्धि की थी।



चिरस्पर्धी निजामस्य दिल्लीपतिरुदारधीः।

येदिलस्येहितं सद्यः प्रतिजज्ञे प्रतापवान्॥७

लंबे समय तक निजामशाह से ईर्ष्या करने वाला, उदार और गौरवशाली दिल्ली का बादशाह, आदिलशाह की इच्छा को पूरा करने के लिए शीघ्र ही तैयार हो गया।

जहानगीरस्ताम्राणामधिपस्तीव्रविक्रमः।

इभरामहितार्थाय प्रजिघाय पताकिनीम्॥८

शक्तिशाली मुगल बादशाह जहांगीर ने इब्राहिम आदिलशाह की मदद के लिए एक सेना भेजी।

तां वै ताम्राननमयीं प्रतिपद्य पताकिनीम्।

येदिलस्तृणयामास निजामं निजवैरिणम्॥९

मुगल सेना के आकर मिलते ही आदिलशाह को अपना शत्रु निजामशाह कपटी लगने लगा।

ततश्शाहनरेन्द्रेण शरीफेण च धन्विना।

खेलकर्णेन वीरेण वर्णनीयगुणश्रिया॥१०

बलिना मल्लराजेन राज्ञा मंबाभिधेन च।

नागराजाह्वयेनापि नागराजसमौजसा॥११

तथा परशुरामेण त्र्यंबकेण च भूभृता।

कक्काख्येनापि संग्रामविख्यातभुजतेजसा॥१२

चाहुबाणेन हम्मीरराजेन विजितद्विषा।

मुधाभिधेन च फलस्थानाधिपतिना तथा॥१३

नृसिंहराजप्रमुखैर्निषादैस्समरोन्मुखैः।

तैरेवान्यैश्च बहुभिर्बल्लाळत्रिपदादिभिः॥१४

तथा विठ्ठलराजेन काण्टिकेनानुभाविना।

दत्ताजीनागनाथेन मंभेन च यशस्विना॥१५

द्विजातिना नृसिंहेन पिंगळोपाभिधाभृता।

जगद्देवतनूजेन सुन्दरेण च भूभुजा॥१६  
तथा सारथिना खानयाकुतेनाभिमानिना।  
मनसूरेण शूरेण सुरूपेणोग्रकर्मणा॥१७  
तथा जोहरखानेन हमीदेन च दर्पिणा।  
आतसेन च वीरेण हुताशनसमत्विषा॥१८  
बर्बरेणांबरमणिप्रतापेनांबरेण च।  
तत्सुतेनोग्रगतिना फत्तेखानेन मानिना॥१९  
सुतैरामदखानस्य तथातिगुणविश्रुतैः।  
अन्यैरपि महासैन्यैस्समन्तादभिरक्षितः॥२०  
विद्विषद्धृन्दविध्वंसी स्वबाहुबलदर्पितः।  
परं न गणयामास निजामो ज्वलनोपमः॥२१

फिर शाहजी राजा, धनुर्धारी शरीफजी, बहादुर एवं मेधावी खेलकर्ण, बलवान मल्लराव तथा मंबाजी राजा, हाथी के समान बलवान नागराज, परशुराम, राजा त्र्यंबकराज, युद्ध में अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध राजा कक्क, शत्रुजेता हम्मीरराज, मुधोजी फलटणकर, युद्ध के लिए उत्साहित निषाद, उनसे अन्य कई नृसिंहराज, बल्लाळ त्रिपद आदि सेनापति, वैसे ही गौरवशाली विठ्ठलराज कांटे, दत्ताजी जगन्नाथ, यशस्वी मंबराजा, ब्राह्मण नृसिंह पिंगले, जगदेव के पुत्र सुंदरराज, अभिमानी सारथी याकुतखान, शूर, सुंदर एवं उग्रकर्मा मनसूरखान तथा जोहरखान, अभिमानी हमीदखान, अग्नि के समान तेजस्वी वीर आतसखान, सूर्य के समान तेजस्वी अंबरखान बर्बर, उनका पुत्र स्वाभिमानी फतेहखान, आदमखान के यशस्वी पुत्र तथा अन्य बड़े बड़े सेनानायकों के द्वारा सभी ओर संरक्षित निजामशाह था, ऐसी स्थिति में वह दुश्मन समूह का विनाशक, अपने बाहुबलियों के प्रति अभिमानी, आग की तरह प्रखर निजामशाह अपने दुश्मनों को तिनके के समान समझने लगा।

येदिलः स तु दिल्लीन्द्रं सहायं समुपाश्रयन्।  
स्वयं निजामशाहेन सार्धं योद्धुमर्थैहत्॥२२  
जलालश्च जहानश्च खंजीरश्च सिकंदरः।

करमुल्लाखलेलश्च सुजानश्च हि सामदः॥२३

एते बहादुरयुता म्लेच्छास्सर्वे प्रतापिनः।

राजा दुदाभिधानश्च संपरायपरायणः॥२४

उदाररामश्चाग्रजन्मा ख्यातः क्षात्रेण कर्मणा।

दादाजी विश्वनाथश्च भारद्वाज इवाजिषु॥२५

राघवश्चाचलश्चापि जसवंतबहादुरौ।

एते यादवराजस्य सुतास्स च महाभुजः॥२६

सर्वे लश्करखानेन सेनाधिपतिना समम्।

दिल्लीन्द्रेणाभ्यनुज्ञाताः संप्राप्ता दक्षिणां दिशम्॥२७

लेकिन आदिलशाह दिल्ली के बहाशाह की मदद के लिए निजामशाह के साथ युद्ध की तैयारी करने लगा। जलालखान, जहानखान, खंजीरखान, सिकंदरखान, करमुल्लाखलेलखान, सुजानखान सामदखान, ये सभी गौरवशाली मुसलमान बहादुर खान के साथ आए। युद्धप्रिय दुदराज, क्षत्रकर्म के लिए प्रसिद्ध ब्राह्मण उदारराम, युद्ध में भारद्वाज जैसा शक्तिशाली दादा विश्वनाथ, राघव, अचल, बहादुर जसवंत तथा यादवराज के सभी पुत्र और स्वयं बलवान यादवराज, ये सभी लष्करखान सेनापति के साथ दिल्ली के बादशाह की आज्ञा से दक्षिण में प्राप्त हुए थे।

अव्याहताशुगमनाः पवना इव पुष्करम्।

आचक्रमुर्निजामस्य नीवृतं कृतविक्रमाः॥२८

जैसे निर्बाध और शीघ्र गति वायु आकाश पर आक्रमण करती है, वैसे ही उस शक्तिशाली सेनापति ने निजाम के मुलूख पर आक्रमण कर दिया।

मुस्तफाख्यो मसूदश्च फरादश्च दिलावरः।

सरजायाकुतश्चापि खैरतश्च तथांबरः॥२९

अंकुशश्चेति यवना अन्येष्यतुलविक्रमाः।

इभरामस्य बहवः सुहृदश्चानुजीविनः॥३०

द्विजन्मा दुंढिनामा च तज्जातिश्चापि रुस्तुमः।

घाण्टिकाद्याश्च बहवो महाराष्ट्रा महीभुजः॥३१

मुल्लामहमदं नाम पुरस्कृत्य प्रभाविणम्।

येदिलानीकपतयोप्यथाजगुर्यथाक्रमम्॥३२

मुस्तफाखान, मसूदखान, फरादखान, दिलावरखान, सरजायाकुतखान, खैरतखान, अंबरखान, अंकुशखान ये सभी मुसलमान और आदिलशाह के अतुल पराक्रमी कई अन्य मित्र और सेवक तथा हुंदिराज नाम का ब्राह्मण, उनकी जाति का रुस्तम, घांटगे आदि महाराष्ट्रीयन राजा, ये सभी आदिलशाह के बलशाली सरदार मुल्लामहमद के नेतृत्व को क्रमपूर्वक स्वीकार करने लगे।

अथ ताम्रानुत्तरतस्तथा दक्षिणतः परान्।

अभियातानभीयाय निजामप्रहितोऽबरः॥३३

बाद में, जब मुगल सेना उत्तर से और आदिलशाह की सेना दक्षिण से आगे बढ़ रही थी, तो निजाम शाह द्वारा भेजे गये अंबर ने उन पर आक्रमण किया।

तं पर्यवारयंस्तत्र शाहवर्मादयो नृपाः।

तारकासुरसंग्रामे महासेनमिवामराः॥३४

जिस प्रकार तारकासुर के साथ युद्ध में देवता कार्तिकेय के चारों ओर एकत्रित हुए, उसी प्रकार शाहजी प्रभृति राजा मलिकंबर के चारों ओर एकत्रित हुए।

ततोऽभूद्धैरवं युद्धमंबरस्य परैस्सह।

पिशाचभूतवेताळनिशाचरसुखावहम्॥३५

बाद में, मलिकंबर ने दुश्मन के साथ भीषण लड़ाई लड़ी, जिसके परिणामस्वरूप पिशाच, भूत, वेताल और निशाचर प्राणियों का सुख छीन गया।

धावद्ध्यखुरोद्धूतधूलिधूसरमण्डलः।

चण्डांशुरन्वभूद् व्योम्नि तदा घनघटावृत्तिम्॥३६

दौड़ते घोड़ों के खुरों से उड़ी हुई धूल से सूर्य वृत्त के निस्तेज होने से ऐसा लग रहा था मानो सूर्य आसमान में बादलों से आच्छादित हो गया हो।

श्रेणी धरणिरेणूनां भृशमभ्रंकषा बभौ।

निश्रोणिरिव वीराणां सद्यो द्यामारुरुक्षताम्॥३७

पृथ्वी से उड़नेवाली धूल की, आसमान को छूनेवाली एक विशाल श्रेणी बनी और मानो वह शीघ्र ही स्वर्गारोहण करनेवाले वीरों के लिए सीढ़ी सी प्रतीत हो रही थी।

हेषाभिरथवाहनां कुंजरणां च गर्जितैः।

सिंहनादेन वीराणां भेरीणां निनदेन च॥३८

शरासनानां सज्जानां टंकारेण महीयसा।

स्फुरन्तीनां पताकानां मर्मरेण च भूयसा॥३९

घनगंभीरकण्ठानां पाठैश्च जयबन्दिनाम्।

प्रसभं प्रतिदध्वान परिपूरितमंबरम्॥४०

प्रधावतामथान्योन्यं शूराणां शस्त्रधारिणाम्।

पदाघातेन महता शतधा वसुधाभवत्॥४१

घोड़ों की हिनहिनाहट, हाथियों की दहाड़, वीरों की सिंह जैसी गर्जना, दुंदुभी की ध्वनि, तत्पर धनुषों की भीषण टंकार, वायु से फड़कने वाले झंडों की तेज फड़फड़ाहट, मेघ के समान गंभीर आवाज वाले भाटो का जयघोष, इन सबसे परिपूर्ण होकर आकाश प्रतिध्वनि करने लगा और एक दूसरे पर दौड़कर जाने वाले पराक्रमी शूरवीर योद्धाओं के भीषण पदाघात से शतधा पृथ्वी विदीर्ण हो गई।

हंतालक्षितसंपातैर्निशातैर्नतपर्वभिः।

शरैः शिरांस्यपात्यन्त योधिभिः प्रतियोधिनाम्॥४२

अरे ! एक पक्ष के योद्धाओं ने शत्रु योद्धाओं के सिरों पैरों को काट दिया और अचानक जाकर गिरने वाले नुकीले बाणों से उन्हें छेद दिया।

शोणितक्लिन्नकेशानि तत्र शोणेक्षणानि च।

दष्टाधराणि शूराणां शिरांसि क्षितिमाययुः॥४३

जिनके बाल खून से लथपथ हो गये हैं, जिनकी आंखें लाल हो गई हैं और जिनके दांत उनके होठों को काट रहे हैं, ऐसे उन वीर योद्धाओं के सिर जमीन पर गिरने लगे।

दन्तावलानां दन्तेषु दंभोळिदृढमुर्तिषु।

योधानां गाढमुष्टीनां निपेतुर्गाढमुष्टयः॥४४

वज्र के समान मजबूत हाथी के दांतों पर योद्धाओं की मजबूत पकड़ वाली तलवारें गिरने लगीं।

असिना प्रतियोद्धारं विधाय सपदि द्विधा।

निपपात क्षणादूर्ध्वमपमूर्धकळेवरम्॥४५

शत्रुपक्ष के योद्धाओं के तलवार से दो टुकड़े करके प्रत्येक क्षण में एक वीर का सिर विहीन शरीर जमीन पर गिरने लगा।

किरन्तो रुधिरं भूरितरं सह मदांभसा।

बभुशशरशताविद्धतटाः करटिनां कटाः॥४६

सैकड़ों बाणों से विदीर्ण हाथी की गंडस्थली से मद रस के साथ-साथ काफी खून बहने लगा जिससे पृथ्वी शोभायमान होने लगी।

नराश्वकरिकीलालमयीं वीचिमतींमनु।

महानिद्रां महावीराः श्रान्ता इव सिषेविरे॥४७

पुरुषों, घोड़ों, हाथियों के खून की नदी के किनारे, मानो महान वीर योद्धा महानिद्रा ले रहे हो, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

कृतहस्तैः कुन्तहस्तै वीरैर्विध्वस्तसादिनः।

भूरिसंरंभसन्तप्ताः सप्तयः परिबभ्रमुः॥४८

निशानेबाजी में दक्ष और हाथ में भाला धारण करने वाले वीरों ने शत्रुपक्ष के घुड़सवार को मार दिया जिससे घोड़े अत्यंत क्रोध से चिढ़कर इधर उधर दौड़ने लगे।

ततश्शाहशरीफाभ्यां खेलेन च महौजसा।

श्यामाननैश्च यवनैरंबरप्रियकारिभिः॥४९

तथा हम्मीरराजाद्यैर्महार्वीरैः प्रतापिभिः।

क्षुरप्रचक्रनिस्त्रिंशकुन्तपट्टिशपाणिभिः॥५०

हन्यमानमशेषेण ताम्राननबलं महत्।

रयात् भयातुरं भेजे जिजीविषु दिशो दश॥५१

बाद में, शाहजी, शरीफजी, महाबलवान खेलोजी और कृष्णमुखी यवन तथा हम्मीराज प्रभृति जैसे अन्य शक्तिशाली वीरों ने अपने हाथों में तीर, चक्र, तलवार, भाले और पट्टे लेकर मुसलमानों के विशाल सेना का वध करना शुरू किया। तब वे भयभीत होकर अपनी जान बचाने के लिए दसों दिशाओं में भागने लगे।

अथापयातामालोक्य तां वै ताम्रपताकिनीम्।

येदिलस्यापि पृतना कान्दिशीकतमाभवत्॥५२

मुगलों की सेना को जाते देख इब्राहिम आदिलशाह भी अपनी सेना के साथ भयभीत होकर भाग गया।

मतैर्दन्तावलैर्दृप्तस्ताम्रास्यो मनचेहरः।

द्रवतस्तस्य सैन्यस्य स्वयं पार्ष्णिग्रहोऽभवत्॥५३

उस मदमस्त हाथी के बल पर मनचेहर नाम का एक अभिमानी मुगल, उस दौड़ती हुई सेना के पृष्ठभाग की रक्षा करने लगा।

तमन्तरा स्थिरं दर्पादन्तरायं जयश्रियाम्।

पुरः पन्थानमावृत्य स्थितं विन्ध्यमिवापरम्॥५४

दृष्ट्वा शाहशरीफाद्यास्सर्वे भृशबळान्वयाः।

चक्रिरे विक्रमपराः संप्रहर्तुमुपक्रमम्॥५५

अभिमान से मार्ग अवरूद्ध करके बीच में खड़ा वह मानो दूसरा विन्ध्याचल पर्वत हो, ऐसे उस विजय में बाधक बनकर आये हुए मनचेहर को देखकर शहाजी और शरीफजी आदि सभी पराक्रमी योद्धाओं ने उनका संहार करना शुरू किया।

महामहीधराकरकरिप्राकारवर्तिना।

तेन ते समयुध्यन्त गुरुगर्वेण वर्मिणः॥५६

विशाल पर्वत के समान विशालकाय हाथी की दीवार के आश्रय में खड़े हुए उस अत्यंत गर्वित मनचेहर से कवचधारी वीर लड़ने लगे।

भ्रामयन् भल्लमभ्रान्तस्तीव्रमभ्रांतमानसः।

तज्जघान गजानीकं शरीफस्संगरोद्धतः॥५७

तब निडर और युद्धप्रिय, शरीफजी ने एकाग्रचित्त होकर अपने तेज भाले के प्रहार से हाथियों की सेना को मार डाला।

त्रिशूलकाण्डकोदण्डगदापरिधधारिणः।

तमग्रयायिनं धीरं रुरुधुगर्जयोधिनः॥५८

त्रिशूल, धनुष, बाण, गदा, परिघ (लोहे बद्ध दंड) ऐसे शस्त्रों को धारण करने वाली गज सेना ने आगे बढ़ते हुए शरीफजी को रोक दिया।

तं युध्यमानमभितः क्रुध्यन्तमभिमानिनम्।

शरीफं पातमासुस्ततस्ते निशितैः शरैः॥५९

बाद में चारों दिशाओं में लड़ने वाले एवं क्रोधित उस अभिमानी शरीफजी को, उन्होंने अपने तीखे बाणों से मार गिराया।

तस्मिन्नवरजे वीरे विध्वस्तपरकुंजरे।

सपत्नशरानिर्भिन्ने गते वीरगतिं प्रति॥६०

तरसा खेलकर्णाद्यैर्भ्रातृभिः परिवारितः।

शाहः क्रुद्धोऽभिदुद्राव ससैन्यं मनचेहरम्॥६१

शत्रु के हाथियों का विध्वंस करके, शत्रु के बाण से विदीर्ण होकर वीरगति को प्राप्त, अपने शूरवीर छोटे भाई को धरातल पर गिरा हुआ देखकर क्रोधित शहाजीराजे खेलकर्ण आदि अपने बंधुओं के साथ मनचेहर एवं उसकी सेना पर वेगपूर्वक चढ़ाई की।

ततः प्रासवरत्रासपराहतमदद्विपः।

प्रतापी ताम्रवदनः स पराचीनतां ययौ॥६२



तब वह प्रतापी मुगल, शत्रु के उत्कृष्ट भाले के भय से अपने मदमस्त हाथियों को पीछे हटता हुआ देखकर वह स्वयं पीछे हट गया।

अपक्रामति संग्रामात् तस्मिन्नछिन्नकुंजे।

सैनिकास्तु निजामस्य सिंहनादान् वितेनिरे॥६३

जैसे ही वह सुरक्षित हाथियों के साथ युद्ध के मैदान से भागने लगा तो निजामशाह की सेना सिंह गर्जना करने लगी।

तदोदीचीमपाचीं च प्राचीमपि च रंहसा।

संश्रित्य विद्रवन्ति स्म ते निजामस्य विद्विषः॥६४

तब वे मुगल कुछ उत्तर की ओर, कुछ पश्चिम की ओर और कुछ पूर्व की ओर तेजी से भागने लगी।

ततः प्रसन्नमनसः शाहराजादयो नृपाः।

द्रवतस्तानुद्रुत्य सर्वान्निजगृहर्बलात्॥६५

बाद में, आनन्दित होकर, शाहजी प्रभृति राजाओं ने भागते हुए शत्रु का पीछा किया और उन्हें बलपूर्वक पकड़ लिया।

६६६६६६६६

युद्ध में भयानक ऐसे कई मुगलों की और अन्य वीरों की भुजाओं में जबरन हथकड़ी पहनाकर उनको मलिकंवर के सामने लाकर खड़ा किया।

इति जितरिपुरंवरः प्रतापी भृशबलबाहुबलावलंबनेन।

पटहरवविमिश्रतूर्यघोषैः सपदि जगाम निजामदर्शनार्थम्॥६७

इस प्रकार अत्यधिक बलशाली भोंसलों के बाहुबल की मदद से दुश्मन को जीतकर प्रतापी मलिकंवर ढोल और नगाड़ों के जयकार के साथ तुरंत निजामशाह से मिलने गया।६७

दिल्लींद्रस्य प्रतापाद्भुतविभवभृतः सैन्यमन्यैरजय्यम्।

सद्यस्तद्येदिलस्याप्यतुलबलमथोज्जासयित्वा जवेन॥

बंदीकृत्योरुदर्पानपि च युधि चमूनायकानुग्रकर्मा।

सेनानीरंबरोऽसौ भृशबलसहितस्तं निजामं ननाम॥६८

प्रतापी एवं अद्भूत महिमान्वित ऐसी उस दिलीपति की अजेय सेना, उसी प्रकार आदिलशाह की अतुल सामर्थ्यवान अजेय सेना, इनकी सहायता से पराजित करके और युद्ध में अभिमानी सेनापतियों को बंदी बनाकर, वह उग्रकर्मा सेनापति मलिकंबर भोंसले के साथ निजामशाह को प्रणाम किया।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिवासकरकवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतससाहस्र्यां संहितायां निजामप्रकर्षो  
नाम चतुर्थोऽध्यायः

## अध्याय:-५

कवीन्द्र उवाच-

अथ विट्तराजस्य खेलकर्णादयस्सुताः।

धीरेण धर्मराजेन धृतराष्ट्रात्मजा इव॥१

प्रसभं शाहराजेन स्पर्धमानाः पदे पदे।

द्विषन्त इव विद्वेषं दायादत्वाददर्शयन्॥२

१-२. जैसे धृतराष्ट्र के पुत्र शांतवृत्ति धर्मराज से ईर्ष्या करते थे, वैसे ही विट्ठलजी राजा के खेलकर्ण आदि पुत्र अपने भाईचारे के कारण शाहजी राजा से कदम-कदम पर अत्यधिक द्वेष करने लगे।

ते मन्त्रिणं निजामस्य म्लेच्छमंबरनायकम्।

स्वशेमुषीविशेषेण वशीकृतमहीतलम्॥३

श्रयणीयं संश्रयन्तः स्पृहयन्तः श्रियेऽन्वहम्।

न सेहिरे महाबाहुं शाहं सूर्यसमौजसम्॥४

३-४. जिन्होंने अपनी अलौकिक बुद्धि से पृथ्वी पर विजय प्राप्त की और आश्रय करने के लिए योग्य निजामशाह के मलिकंबर प्रधान, तथा उनका वैभव स्वयं को प्राप्त हो ऐसी अभिलाषा करने वाले विट्ठलजी के पुत्रों ने उनकी शरण ली। सूर्य के समान तेजस्वी शहाजीराजे उनकी आंखों में चुभने लगे।

तमन्तर्भेदमुद्धूतमात्मीयकुलसंभवम्।

परिज्ञायेंगितज्ञेन सुधिया शाहवर्मणा॥५

तमम्बरं निजामं च दायादांस्तांश्च दुर्मदान्।

पटुनात्मप्रतापेन न्यक्कृत्य निकृतिस्थितान्॥६

स्वीयसैन्यसमेतेन निकेतेन जयश्रियाम्।

महासन्नाहयुक्तेन महोत्साहेन मानिना॥७

स्कन्धविन्यस्तकुन्तेन शकुन्तेशानशक्तिना।

आनीयताचिरेणैव निजदेशस्सदेशाताम्॥८

५-८. अपने कुल में भेदभाव उत्पन्न हो गया है, यह उस संकेतों को जाननेवाले बुद्धिमान शाहजी ने पहचान लिया और मलिकंबर, निजामशाह और अपने विरुद्ध छल कपट करनेवाले अपने दुष्ट चचेरे भाइयों का तिरस्कार करके अत्यंत उत्साही, स्वाभिमानी, चील के समान पराक्रमी, विजयश्री का घर और कंधे पर भाला लिए हुए शाहजी ने, अपनी सेना और प्रचुर युद्ध सामग्री के साथ जल्दी से अपने देश की ओर प्रस्थान किया।

तं प्रस्थितं प्रभावेण स्थितं जनपदे निजे।

नैव मन्त्री निजामस्य वशीकर्तुं शशाक सः॥९

९. वहाँ से जाने के बाद अपने नगर में धन-धान्य परिपूर्ण होकर रहते हुए उस शहाजीराजे को निजामशाह का एक भी मंत्री अपने वश में नहीं कर सका।

तदा तेन विना तिग्मद्युतिनेव द्यमण्डलम्।

अपि प्राज्यं निजामस्य राज्यं तन्न व्यराजत॥१०

१०. जिस प्रकार सूर्य के बिना आकाश सुंदर नहीं लगता है, उसी प्रकार शाहजी के चले जाने पर निजाम का राज्य समृद्ध होने के बावजूद भी शोभायमान प्रतीत नहीं हो रहा था।

येदिलस्तमथोद्वीक्ष्य भेदयोग्यमनेहसम्।

अमुं शाहं महाबाहुं महोत्साहं महाशयम्॥११

साहाय्यार्थं समानाय्य महाभृत्यैर्महामतिः।

स्पर्धी निजामशाहस्य स्वं दुर्धर्षममन्यत॥१२

११-१२. दोनों के बीच भेद करने के लिए यह संधि योग्य है ऐसा देखकर उस महाबुद्धिमान एवं निजामशाह के प्रतिस्पर्धी आदिलशाह ने अपने प्रमुखों द्वारा, महाबलशाली, अति उत्साहीत एवं उदारमना उस शहाजीराजे को सहायतार्थ बुलाकर, वह ( आदिलशाह) अपने आपको अजेय मानने लगा।

येदिलस्तमथासाद्य दवानल इवानिलम्।

ववृधे वैरिसैन्यानि विपिनानि विनिर्दहन्॥१३

१३. जैसे वायु की सहायता से दावानल वनों को जलाकर वृद्धि को प्राप्त होती है, वैसे ही शहाजीराजे की सहायता मिलने से आदिलशाह दुश्मन सेना को नष्ट करके उत्कर्ष को प्राप्त हो गया।

तपन्नात्मप्रतापेन परितस्तपनोपमः।

स जिगाय महाबाहुदरग्रहमंबरम्॥१४

१४. अपने तेज से सर्वत्र चमकता हुआ सूर्य जिस प्रकार सुंदर ग्रहों से युक्त आकाश पर आक्रमण करता है, उसी प्रकार महाबाहु शाहजी ने अपनी महिमा से उस कुलीन मलिकाम्बर को जीत लिया।

गतिमुत्कर्षिणीं बिभ्रत् प्रभञ्जन इव द्रुमम्।

बद्धमूलं निजामस्य भुजदम्भं बभञ्ज सः॥१५

१५. जैसे तेज बहने वाली तूफानी हवा जड़ों से युक्त पेड़ों को उखाड़ देती है, वैसे ही उत्कृष्टता को प्राप्त होने वाले शाहजी ने निजामशाह के बाहुबल के गर्व को नष्ट कर दिया।

ततस्तेनेभरामेण तस्मै विध्वस्तविद्विषे।

मन्ये सन्तुष्य शाहाय निजमर्धपदं ददे॥१६

१६. तब उस इब्राहिम आदिलशाह ने संतुष्ट होकर अपने शत्रुओं का नाश करनेवाले शाहजी राजा को अपना आधा पद दे दिया, ऐसा मुझे लगता है।

विरुद्धमिभरामस्य समृद्धजनसेवितम्।

मुधाभिधं फलस्थानपुराधिपतिमुद्धतम्॥१७

प्रतिप्रस्थाय सन्नाहशाली शैलमिवोन्नतम्।

स भूपः प्रसभं भूरिप्रभावं पर्यभावयत्॥१८

१७-१८. समृद्ध लोगों द्वारा सेवित, पर्वत के समान ऊँचा, पराक्रमी और अभिमानी ऐसा वह मुधोजी फलटणकर, इब्राहिम आदिलशाह के खिलाफ होने से उस पर शाहाजीराजे ने पूरी तरह तैयारी के साथ आक्रमण करके उसको बुरी तरह से पराजित किया।

निर्जित्य केरळान् क्रूरकर्मा कार्णाटकानपि।

स कोषभिभरामस्य पुपोष बहुतोषकृत्॥१९

१९. कर्नाटक और केरल पर विजय प्राप्त करके प्रतापी शाहजी ने इब्राहिम शाह के खजाने में इजाफा करके उसे बहुत संतुष्ट किया।

सोऽन्यानपि नृपानुग्रान् निगृह्य निजनीतिभिः।

तद्राज्यभिभरामस्य रामराज्यमिवाकरोत्॥२०

२०. उसने अन्य शक्तिशाली राजाओं को अपनी नीतियों के माध्यम से अधीन कर लिया और इब्राहिमशाह के राज्य को राम के राज्य के समान बना दिया।

तमिन्दुसुन्दरमुखी सुदती यदुवंशजा।

उपाचरन्महाराजं गौरीव वृषभध्वजम्॥२१

२१. जैसे पार्वती ने शंकर की सेवा की, वैसे ही जाधव कुल में उत्पन्न चंद्रमा जैसी सुंदर मुख वाली एवं सुंदर दांतों वाली उस जीजाबाई ने शाहजी महाराज की सेवा की।

सा भृशं विभ्रमवती प्रसादाभिमुखी सती।

देवी सफलयामास पत्युस्तत्तदभीप्सितम्॥२२

२२. वह अत्यंत विलासिनी एवं प्रसन्नवदना साध्वी रानी अपने पति की हर इच्छा को पूर्ण करती थी।

तस्य तस्यामजायन्त पुत्राण्ड् शुभलक्षणाः।

तेषां मध्ये शंभुशिवौ द्वावेवान्वयवर्धनौ॥२३

२३. उनको जीजाबाई से शुभ लक्षणों से युक्त छः बेटे हुए, उनमें से शंभू और शिवाजी दो ही वंशवर्धक हुए।

शिवस्तु वैष्णवं तेजोऽवतीर्य क्षोणिमण्डलम्।

समस्तभूभृतां नेता विनेता प्रतिभूभृताम्॥२४

तथाहमभिधास्यामि शृणुत द्विजसत्तमाः॥२५

२४-२५. लेकिन विष्णु का अंश शिवाजी पृथ्वी पर अवतरित होकर वह सभी राजाओं का नेता और दुश्मनों का विनेता कैसे हुआ, यह मैं बताऊंगा, हे द्विज श्रेष्ठों आप ध्यान से सुनो।

पुरा पुरारिमाराध्य तीव्रेण तपसान्वहम्।

निषेधाच्छ्रुतिशास्त्राणां कालः कलिरवर्धत॥२६

२६. प्राचीन काल में प्रतिदिन की घोर तपस्या से शंकर को प्रसन्न करके, वैदिक शास्त्रों का प्रतिषेध करने से कलिकाल बलवान हो गया।

हितावहमसाधूनां साधूनामहितावहम्।

दैत्यास्ततस्तमासाद्य पापीयांसमनेहसम्॥२७

छद्मिनो म्लेच्छरूपेण देवभूदेवविद्विषः।

अवातरन्वसुमतीमधिविप्लावहेतवः॥२८

२७-२८. फिर दुष्टों के लिए हितकारी एवं सज्जनों के लिए अहितकर ऐसे उस पापमय कलिकाल को प्राप्त करके कपटी, देव, ब्राह्मण-विरोधी और विध्वंसकारी राक्षस, म्लेच्छों के रूप में धरती पर अवतरित हुए।

प्रतीचीं ककुभं तावदुदीचीं तदनन्तरम्।

जगृहुस्ते बलात् प्राचीमपाचीमपि दुर्ग्रहाम्॥२९

२९. पहले उन्होंने पश्चिम दिशा को, फिर उत्तर, पूर्व एवं अजेय दक्षिण को भी बल से जीत लिया।

तेषां निजनयज्ञानां न यज्ञानां प्रवृत्तयः।

तथापि तिष्यस्य बलात् भृशं बवृधिरे श्रियः॥३०

३०. अपने धर्म को जानते हुए भी उन लोगों में यज्ञ करने की प्रवृत्ति नहीं थी; तथापि कलियुग के प्रभाव से उनकी संपत्ति में तेजी से वृद्धि हुई।

उत्थाप्य स्थापिताः केचित् केचिद्युद्धे निपातिताः।

बलिभिस्तैस्ततः प्रायः क्षत्रियाः क्षीणतां गताः॥३१

३१. उन बलशाली म्लेच्छों ने कुछ लोगों को उठाकर राजगद्दी पर बिठा दिया और कुछ लोगों को युद्ध में मार डाला।  
तब से प्रायः सभी क्षत्रियों का नाश हुआ।

ततो विश्वम्भरा देवी म्लेच्छभारभरार्दिता।

प्रत्यपद्यत लोकेशं शरण्यं शरणैषिणी॥३२

३२. तब म्लेच्छों की पीड़ा से पीड़िता विश्वम्भरा देवी अपनी रक्षा के लिए रक्षणकर्ता ब्रह्मदेव के पास गई।

परितापेन महता मलिना नलिनासनम्।

सा ववन्दे त्रयस्त्रिंशत्कोटिऋदशवन्दितम्॥३३

३३. भयानक पीड़ा से तेज हीना हुई उस विश्वम्भरा देवी ने, जिनकी वंदना तैंतीस करोड़ देवता करते हैं ऐसे उस ब्रह्मदेव को वंदना की।

निवेदयित्री निर्वेदवती खेदमनेकधा।

सा निबद्धाञ्जलिपुटा प्रोवाच परमेष्ठिनम्॥३४

३४. दुखियारी विश्वम्भरा देवी! हाथ जोड़कर अपने अनेक प्रकार के दुःखों को निवेदित करने के लिए ब्रह्मदेव से बोली।

त्वं पिता सर्वलोकस्य त्रयीधर्मस्थितिप्रियः।

लोकेश मां तमोऽभोधौ मज्जन्तीं किमुपेक्षसे॥३५

३५. हे ब्रह्मदेव! तुम ही तीनों लोकों के पिता हो एवं वैदिक धर्म की रक्षा करना तुम्हें प्रिय होते हुए भी, मैं इस दुःख सागर में डूब रही हूँ, फिर भी तुम मेरी उपेक्षा क्यों कर रहे हो?

त्वया विरचितं विश्वं विरिचे यच्चराचरम्।

दनुजैर्म्लेच्छतनुभिः तदद्य बत सीदति॥३६

३६. हे ब्रह्मदेव! आपके द्वारा विरचित जो ये चराचर जगत हैं, वह म्लेच्छरूपी राक्षसों के कारण हाय ! आज डूब रहा है।

ये हताः प्रथमं देवैर्दुर्मदास्त्रिदशद्विषः।

ते मां तुदन्ति तिष्येऽस्मिन् उपेत्य म्लेच्छरूपताम्॥३७



३७. जिन दुष्ट राक्षसों का देवों ने पहले संहार किया, वे ही इस कलियुग में म्लेच्छरूप धारण करके मुझे पीड़ा दे रहे हैं।

दुष्टदैत्यान्तके कृष्णे निजं धामाधितिष्ठति।

बुद्धावतारे भगवत्यपि मौनावलम्बिनि॥३८

दुर्जना यवनास्तात वृजितानि वितन्वते।

त्रातारं नाधिगच्छामि नियच्छेयं कथं व्यथाम्॥३९

३८-३९. दुष्ट राक्षसों का नाश करने वाले भगवान श्रीकृष्ण अपने घर चलें गये है एवं भगवान बुद्ध ने मौन धारण कर लिया है. ऐसे समय में दुष्ट यवन पाप करने लगे और मुझे कोई रक्षक नहीं मिला, तो मैं इन दुःखों का निवारण कैसे करूँ ??

नाहूयन्ते दिविषदो न हूयन्ते हुताशनाः।

न वेदा अप्यधीयन्ते नाभ्यर्च्यन्ते द्विजातयः॥४०

न सत्राणि प्रवर्तन्ते तथैव च मखक्रियाः।

न दानानि विधीयन्ते विहीयन्ते व्रतानि च॥४१

खिद्यन्ते साधवस्सर्वे भिद्यन्ते धर्मसेतवः।

म्लेच्छधर्माः प्रवर्धन्ते हन्यन्ते धेनवोऽपि च॥४२

सज्जना यान्ति विलयं व्रजन्ति क्षत्रियाः क्षयम्।

प्रादुर्भूतमिदानीं मे यवनेभ्यो महद्भयम्॥४३

४०-४३. कोई देवों का आवाहन नहीं करते है, यज्ञ नहीं करते हैं, वेदों का अध्ययन नहीं होता है, ब्राह्मणों का सम्मान भी बंद हो गया है, उसी तरह यज्ञ की क्रिया तथा सत्रयज्ञ भी नहीं चलते हैं, दान और व्रत सभी बन्द हो गये है, सज्जनों को दुःख प्राप्त होता है, धर्म के बंधन तोड़ दिये है, म्लेच्छों का धर्म वृद्धि को प्राप्त हो रहा है, गो हत्याएं हो रही है, साधुओं का नाश हो रहा है, क्षत्रिय समाज नष्ट हो रहा है, इस प्रकार मुझे यवनों से अत्यधिक भय उत्पन्न हो गया है।

विहसन्ति तथा सर्वे मां म्लेच्छवशवर्तिनीम्।

स्थितां यथागतमुखे श्रुतिं श्रुतिविदो यथा॥४४

४४. जैसे वेद पारंगत लोग मूर्ख के मुंह से वेद का मजाक उड़ाते हैं, वैसे ही सभी लोग मुझे म्लेच्छ के कब्जे में देखकर मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।

उदभूत् पूर्वदेवेभ्यो भयं मम यदा यदा।

तदा तदा प्रभवता भवता ह्यवितास्म्यहम्॥४५

४५. जब जब मुझे राक्षसों से भय उत्पन्न हुआ, तब तब तुम शक्तिमान ने मेरी रक्षा की है।

इदं निगद्य जगती जगतीनामधीश्वरम्।

बभूव तूष्णीमित्युष्णं निश्चसन्त्यश्रुलोचना॥४६

४६. इस प्रकार ब्रह्मदेव को बताकर, आंसुओं से युक्त विश्वभरा, गरम श्वास लेकर चुप हो गई।

पितामहस्तामालोक्य विहस्तामस्थिरां स्थिराम्।

एवमाश्वासयामास विश्वविश्वासवासभूः॥४७

४७. जो विश्व के विश्वास के निवासस्थान है ऐसे ब्रह्मदेव ने उस विश्वभरा को व्याकुल एवं अस्थिर देखकर इस तरह आश्वासन दिया।

मा भैषीर्भीरु भव्यं ते भविताशु वसुन्धरे।

स्वस्था स्वं स्थानमास्थाय स्थिरे स्थिरतरा भवा॥४८

४८. ब्रह्मदेव बोलें हे वसुन्धरे! तू डर मत, तेरा शीघ्र ही कल्याण होगा, अपने स्थान पर रहकर हे पृथ्वी ! तू स्वस्थ एवं स्थिर रहो।

मया पुरा मुरारातिस्त्वन्निमित्तं दयाम्बुधिः।

प्रार्थितः परया भक्त्या स्वयमेतदुवाच माम्॥४९

४९. दया के सागर विष्णु की मैंने पहले परम भक्ति से प्रार्थना की थी, तब वे स्वयं मुझसे बोलें।

विधे विधेहि मा चिन्तामवधेहि वचो मम।

भवतोऽभिमतं तावदचिरेण भविष्यति॥५०

५०. विष्णु बोले, हे ब्रह्मदेव! तुम चिन्ता मत करो, मेरा कहना मानो, तुम्हारी अभीष्ट वस्तु शीघ्र ही पूर्ण होगी।

मालवर्मात्मजश्शाहवर्मा यः पार्थिवोत्तमः।

दाक्षिणात्यो महाराजः कृतकर्मा सुलक्षणः॥५१

तरसा मारुतसमस्तेजसा तपनोपमः।

वर्वर्ति विश्वविजयी पुण्यात्मा पृथुविक्रमः॥५२

तस्य भार्या महासाध्वी जिजूर्विजयवर्धिनी।

नन्दिनी यादवेन्द्रस्य जागर्ति जगतीतले॥५३

५१-५३. मालवर्मा का पुत्र जो कृतकार्य, शुभ लक्षणों वाला, वायु के समान वेगवान्, सूर्य के समान तेजस्वी, विश्व विजेता, पुण्यात्मा, पराक्रमी, ऐसा शहाजीराजा दक्षिण का बड़ा प्रसिद्ध नृपश्रेष्ठ है, उनकी पत्नी महासाध्वी, यशस्विनी, यादवेन्द्र की पुत्री जीजाबाई पृथ्वी पर जागरूक हैं।

सा मां तेजोमयं देवी स्वोदरे धारयिष्यति।

तत्पुत्रतां प्रपद्याहं करिष्यामि तव प्रियम्॥५४

५४. ऐसी वह तेजस्विनी रानी मुझे अपने गर्भ में धारण करेगी और उसका पुत्र बनकर मैं उसका प्रिय करूंगा।

स्थापयिष्यामि धर्मस्य मर्यादां भुवि शाश्वतीम्।

यवनान् सादयिष्यामि पालयिष्यामि देवताः॥५५

पुनः प्रवर्तयिष्यामि सप्ततन्त्रादिकाः क्रियाः।

क्षेमं गवां विधास्यामि स्थितिं चापि द्विजन्मनाम्॥५६

प्रतिज्ञायेति भगवान् सत्यलोकाय मां विभुः।

समनुज्ञातवान् भद्रे स्वयं भूतभविष्यवित्॥५७

५५-५७. मैं पृथ्वी पर शाश्वत धर्म मर्यादाओं को स्थापित करूंगा, यवनों का नाश करूंगा, देवों की रक्षा करूंगा, यज्ञादि कर्म को पुनः स्थापित करूंगा, गायों एवं ब्राह्मणों का पालन करूंगा ऐसा मुझे वचन देकर, हे कल्याणी! भूत, भविष्य को जाननेवाले भगवान् ने मुझे सत्यलोक जाने की अनुमति प्रदान की।

अभिधायेति वसुधां समाधाय पितामहः।

विससर्ज स्वयं सापि स्वकं लोकमलोकत॥५८

५८. ऐसा बोलकर ब्रह्मदेव ने पृथ्वी का समाधान किया और उसको जाने के लिए बोला तो वह भी अपने घर चली गई।

तां वाचं भूतधात्री त्रिभुवनसुहितां हृत्समाधेर्विधात्रीम्,

वैधात्रीं न्यस्य चित्ते तमभिमतमथानेहसं प्रेक्षमाणा।

म्लेच्छच्छद्वासुरेभ्योऽभ्युदितमतितरामुज्झती भीतिभारम्,

हंत ब्रह्मर्षि देवद्विजकुलसहिता निर्भरं नन्दति स्म॥५९

५९. त्रिभुवन के लिए अत्यंत कल्याणकारी एवं हृदय को आनंद देनेवाली ब्रह्मदेव की वाणी को सुनकर म्लेच्छरूपी राक्षसों से उत्पन्न हुए भय को भुलाकर, वह अनुकूल समय की प्रतीक्षा करनेवाली पृथ्वी, ब्रह्मर्षि, देव एवं ब्राह्मण के कुल के साथ आनंद को प्राप्त हुई।

हरिरपि भुवमुच्चैर्भूरिभारायमाण-

त्रिदशरिपुसहस्राकान्तरूपामजस्रम्।

सपदि सदयचित्तस्त्रातुकामः समग्रां

बत निरुपममूर्तिमार्नुषं भावमैच्छत्॥६०

६०. अत्यंत पीड़ादायक हुए हजारों राक्षसों से व्याप्त संपूर्ण पृथ्वी को शीघ्र मुक्त करने की इच्छा करनेवाले कृपालु एवं अनुपम विष्णु ने सुंदर मनुष्य रूप धारण करने की इच्छा प्रकट की।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रविरचिते पंचमोऽध्यायः विष्णववतारकथनम्।

## अध्याय:-६

कवीन्द्र उवाच-

अथो विवक्षुस्तत्कुक्षिं स्वयं योगेश्वरो हरिः।

शाहपत्न्यै प्रसन्नात्मा स्वमात्मानमदर्शयत्॥१

१. कवीन्द्र बोलें – शहाजीराजे की पत्नी जीजाबाई के गर्भ से उत्पन्न होने के इच्छुक योगेश्वर विष्णु ने प्रसन्न होकर अपने दर्शन दिए।

सैकदा सुतनुः स्वप्ने दिविषट्पद्वन्द्वन्दितम्।

शंखचक्रगदपद्मपाणिं श्यामं चतुर्भुजम्॥२

श्रीवत्सवक्षसं कण्ठविनिवेशितकौस्तुभम्।

वैजयन्तीकृतावासं पीतकौशेयवाससम्॥३

विलसद्रत्नमुकुटं स्फुरन्मकरकुण्ठलम्।

मन्दस्मितोल्लसद्गण्डं प्रसन्नमुखमण्डलम्॥४

पुण्डरीकायतदृशं सुनसं शुभलक्षणम्।

प्रतिप्रतीकलावण्यलीलानिलयमद्भुतम्॥५

समाश्लिष्टं कमलया शोभितं वनमालया।

सर्वदेवमयं देवं सर्वाभरणभूषितम्॥६

वज्ररेखाध्वजच्छत्रचिह्नितांग्रिसरोरुहम्।

बाललीलाधरं देवी स्वांकस्थितमलोकत॥७

२-७. एक बार उस सुंदर रानी ने स्वप्न में देवगणों के द्वारा पूजित एवं बाल लीलाओं को धारण करने वाले विष्णु बेटे को अपनी गोद में बैठा हुआ देखा। उसका रंग सांवला था, उसके हाथों में शंख, चक्र, गदा और कमल था, छाती पर

श्रीवत्स नाम का चिह्न था, गले में कौस्तुभमणि धारण किया था, छाती पर वैजयंती माला लटक रही थी, उसने पीले कपड़े पहन रखे थे, सिर पर रत्नों से जड़ित मुकुट था, कानों में मकर की कुंडलें चमक रही थी, गालों पर मंद मुस्कान थी, मुख मण्डल पर प्रसन्नता थी, आंखें कमल जैसी आरक्त एवं बड़ी थी, सुंदर नाक और वह शुभ लक्षणों से संपन्न था, उसका प्रत्येक अवयव सुंदरता का लीलास्थान था, गले में वनमाला से सुशोभित लक्ष्मी उसके समीपस्थ थी, वह सभी आभूषणों से विभूषिता थी, उसके पद कमलों पर वज्र, रेखा, ध्वज, और छत्र के चिह्न थे।

ततोऽचिरेण सा गर्भे पत्नी शाहमहीपतेः।

प्रभविष्णुं महाविष्णुमंशमूर्तिमदीधरत्॥८

८. उसके बाद शीघ्र ही उस शहाजीराजे की पत्नी ने सामर्थ्यवान विष्णु के अंश को गर्भ में धारण किया।

महता महसा तेन निजगर्भगतेन सा।

व्यभाद्विभाकरेणैव शरदंभोदमण्डली॥९

९. जिस प्रकार शारदीय मेघ मंडल सूर्य के योग से सुशोभित होता है उसी प्रकार अपने गर्भस्थ उस महान तेज के कारण वह सुशोभित होने लगी।

तं वै तेजोमयं गर्भं तदा बिभ्राणया तया।

यादवेन्द्रस्य सुतया भूषितं बत भूतलम्॥१०

१०. वह तेजोमय गर्भ को धारण करने वाली उस यादवेन्द्र की पुत्री ने उस समय उस भू-तल को विभूषित किया।

अथोद्यद्दोहदरसा गर्भभारभरालसा।

अमंस्त पृथुलश्रोणीभारमाभरणानि सा॥११

११. बाद में उसको उल्टियां होने लगी, गर्भ के भार के कारण उसकी गति मंद हुई, तब उसके मोटे कटि प्रदेश पर आभूषण भी भारी लगने लगे।

तदाननं पाण्डिमानं दधानमतुलं तदा।

उपाहसत् प्रसादेन शारदं शशिमण्डलम्॥१२

१२. तब अनुपम गौरवर्ण को धारण करने वाले उसके मुंह ने शुभ्रता में शारदीय चंद्रमा का भी उपहास किया।

न तत् चित्रं श्रिता यत्सा सुतनुस्तनुगौरवम्।

देवो जगदुर्यस्याः साक्षात्कुक्षिमवीविशत्॥१३

१३. प्रत्यक्ष जगत प्रभु विष्णु देव ने जिसके गर्भ में प्रवेश किया ऐसी उस सुंदरी के शरीर में भारीपन आने में क्या आश्चर्य है ?

परिपाण्डुमुखीं सत्ववतीमथ सखीजनः।

तामज्ञासीत्पार्श्वसेवी देवीमन्यादृशीमिव॥१४

१४. उसके पास रहकर उसकी सेवा करनेवाली सखियों को वह पाण्डुमुखी गर्भवती रानी अलग ही प्रतीत हो रही थी।

अथाभ्यासनमद्रीणां द्विपानां द्वीपिनां तथा।

स्वर्णसिंहासने स्थैर्यं सितच्छत्रतलेऽपि च॥१५

केतनोन्नमनं चोच्चैश्चारुचामरवीजनम्।

श्रुतिर्दुन्दुभिशब्दानां कृतिः संगरकर्मणाम्॥१६

धारणं काण्डकोदण्डशक्तिनिस्त्रिंशवर्मणाम्।

प्रसाधनं पर्वतानां साधनं विजयश्रियाम्॥१७

महादानेष्वभिरतिर्धर्मस्य स्थापने मतिः।

समभूवन्नमून्यस्यां दोहदानि दिने दिने॥१८

१५-१८. हाथी पर, बाघों पर और किलों पर आरोहण कीजिए, सफेद छत्रों के नीचे स्थित स्वर्ण के सिंहासन पर स्थिरता से अधिष्ठित हो जाइए, ऊंचे झंडे को खड़ा कीजिए, सुंदर चामर से हवा करवाईए, दुंदुभी के ध्वनियों को सुनिए, धनुष-बाण, भाले, तलवार, और कवच को धारण करके युद्ध कर्म को कीजिए, किलों पर अधिकार कीजिए, विजयश्री प्राप्त कीजिए, बड़े बड़े दान दीजिए, धर्म की स्थापना में बुद्धि लगाइए ऐसी अनेक प्रकार की इच्छाएं उसको प्रतिदिन होने लगीं।

ततः कुमारभृत्यासु कुशलाभिरहर्निशम्।

कुलशील समृद्धाभिर्वृद्धाभिः समुपासिते॥१९

चित्तानुसारिभिर्नित्यमत्यर्थं हितकारिभिः।

जनैः सहचरीणां च लब्धवर्णैर्निषेविते॥२०

गर्भिणीपरिचर्यायां प्रौढैः पीयूषपाणिभिः।

आप्तैर्भिषग्भिरश्रान्तमधिदेहलि संश्रिते॥२१

सुधालेपोल्लसद्भित्तिनिर्मित स्वस्तिकाभ्दुते।

स्फुरद्वितानपर्यन्तलुलन्मौक्तिक जालके॥२२

प्रत्यग्रपल्लवोपेते विकीर्णश्चेतसर्षपे।

सद्यः सलिलसम्पूर्णसुवर्णकलशान्विते॥२३

द्वारदेशोभयप्रान्तलिखितोचितदैवते।

परितः स्थापितानेकदीप्तमंगलदीपके॥२४

विहितौपयिकद्रव्यसंग्रहे सूतिकागृहे।

दिव्य-तेजोमयी देवी दिव्यरूपा व्यराजत॥२५

१९-२५. फिर वह दिव्य तेजोमय एवं दिव्य रूपवती रानी प्रसूतिगृह में सुशोभित होने लगी। वहां पर प्रसूति कार्य में कुशल एवं कुल तथा व्यवहार से समृद्ध वृद्ध स्त्रियां रात-दिन उसकी सेवा में तत्पर थी, प्रतिदिन स्वेच्छा से व्यवहार करनेवाली एवं अतिशय ध्यान रखनेवाली प्रसिद्ध सखियों द्वारा वह सेवित थी, गर्भवती के उपचार करने में अनुभवी, चिकित्सीय हस्तकला में निपुण और ईमानदार वैद्य बिना थके उसके देहली पर बैठे हुए थे, सफेदी करने से चमकतीं हुई उस दीवार पर स्वस्तिक चिन्ह निकाला गया था, सफेद छत के किनारे मोतियों की जालियां लटक रही थी, ताजे नये पत्तों से उसको सुशोभित किया गया था, सफेद सरसों को वहां सर्वत्र बिखेरा गया था, वहां पर ताजे पानी से भरे हुए घड़े रखे गये थे, दरवाजों के दोनों ओर उचित देवताओं की आकृतियां निकाली गई थी, चारों ओर अनेक चमकते हुए मंगल दीप रखे गये थे, ऐसी सभी योग्य वस्तुओं का संग्रह वहां पर किया गया था।

भूबाणप्राणचन्द्राद्वैः सम्मिले शालिवाहने।

शके संवत्सरे शुक्ले प्रवृत्तेचोत्तरायणे॥२६

शिशिरर्तौ वर्तमाने प्रशस्ते मासि फाल्गुने।



कृष्णपक्षे तृतीयायां निशि लग्ने सुशोभने॥२७

अनुकूलतरैस्तुङ्गसंश्रयैः पञ्चभिर्ग्रहैः।

व्यञ्जिताशेषजगतीस्थिरसाम्राज्यवैभवम्॥२८

अपारलावण्यमयं स्वर्णवर्णमनामयम्।

कमनीयतमग्रीवमुन्नतस्कन्धमण्डलम्॥२९

अलिकान्तमिलत्कान्तकुन्तलाग्रविराजितम्।

सरोजसुन्दरदृशं नवकिंशुकनासिकम्॥३०

सहजस्मेरवदनं धनगम्भीरनिस्वनम्।

महोरस्कं महाबाहुं सुषुवे साद्भुतं सुतम्॥३१

२६-३१. शालिवाहन शके १५५१ शुल्क नामक संवत्सर, उत्तरायण, शिशिर ऋतु में चलायमान फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि तथा रात्रि के शुभ मुहूर्त पर, अखिल विश्व के साम्राज्य वैभव को प्रकट करने वाले पांच ग्रहों की अनुकूल स्थिति में एवं तुंग संश्रय होने पर उसने अलौकिक पुत्र रत्न को जन्म दिया। उसकी अपार सुंदरता, सुवर्ण जैसा रंग, शरीर निरोगी, गर्दन अत्यंत सुंदर एवं उन्नत कन्धे थे, उसके माथे पर सुंदर पड़े हुए घुंघराले बाल मनोहर लग रहे थे, उसकी कमल जैसी सुंदर आंखें, नाक नये पलाश के फूलों की तरह, मुख स्वभावतः हंसमुख, आवाज बादल की तरह गंभीर, छाती विशाल एवं मोटी भुजाएं थीं।

तदा मुदा मानुषाणां सुराणां च सहस्रशः।

समं दुन्दुभयस्तस्य नादेन नदतोऽभवन्॥३२

वादित्राण्यप्यवाद्यन्त विविधानि गृहे गृहे।

प्रसीदन्ति स्म हरितः समस्ताः सरितस्तथा॥३३

शनैः शनैस्तथा वाता वाताः सुरभिशीतलाः।

हुतं हविरुपादत्त प्रसन्नश्च हुताशनः॥३४

३२-३४. तब देवों एवं मनुष्यों की प्रसन्नता के कारण से उनके हजारों नगाड़ों की आवाज एक साथ बजने लगीं, प्रत्येक घर में भिन्न भिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र बजने लगे, सभी दिशाएं एवं नदियां स्वच्छ हो गईं, सुगंधित एवं शीतल वायु बहने लगी और आग प्रसन्न होकर आहुत हवि को स्वीकार करने लगी।

श्रुतिस्मृतिर्धृतिर्मैधाः कान्तिः शान्तिक्षमादया।

नीतिः प्रीतिः कृतिः कीर्तिः सिद्धिः श्रीश्च सरस्वती॥३५

तुष्टिः पुष्टिश्च शक्तिश्च ह्रीश्च विद्या च सन्नतिः।

तं देवं देवता एताः समेताः पर्यवारयन्॥३६

३५-३६. श्रुति (वेद), स्मृति, धृति (धैर्य), कान्ति, शान्ति, क्षमा, दया, नीति, प्रेम, कार्य, सिद्धि, लक्ष्मी, सरस्वती, संतुष्टि, पुष्टि, शक्ति, लज्जा, विद्या, और सद्ब्रंदन, ये सभी देवता उस देव के चारों ओर इकट्ठे हो गए।

योद्धुमद्धापठानेन दर्याखानेन मानिता।

शाहराजे महाराजे प्रयाते विषयान्तरम्॥३७

अनुग्रहाय देवानां दैत्यानां निग्रहाय च।

प्रभुः स जगतां प्रादुरभूद् भृशबलान्वये॥३८

३७-३८. घमण्डी दर्याखान पठान के साथ युद्ध करने के लिए शहाजीराजे के दूसरे प्रांत में चले जाने पर, देवों पर कृपा एवं राक्षसों का निग्रह करने के लिए उस जगत प्रभु ने भोंसले कुल में अवतार लिया।

अतोऽजस्यापि जातस्य जातकर्म तदञ्जसा।

व्यधीयत विधिज्ञेन यथाविधि पुरोधसा॥३९

३९. तब अजन्मा होते हुए भी जन्म लिए हुए उस प्रभु का तुरंत विधिज्ञ पुरोहितों ने यथाविधि जातकर्म संस्कार किया।

यः स्वयं सर्वलोकस्य स्थित्यर्थमभवद्विभुः।

सूक्तैः सूक्तविदस्तस्याप्याचरन् स्वस्तिवाचनम्॥४०

४०. जो स्वयं में संपूर्ण संसार के रक्षण के लिए समर्थ होने पर भी सूक्तज्ञों ने उसका सूक्तों के द्वारा स्वस्तिवाचन किया।

तदा तत्रावतीर्णस्य विष्णोर्मानुषवर्ष्मणः।

तेजोभरेण महता निशापि दिवसायिता॥४१

४१. तब मनुष्य रूप में अवतरित हुए विष्णु के अतिशय तेज से रात्रि भी दिन की तरह प्रकाशमान हो गई।

आदित्या वसवो विश्वे रुद्राश्च समरुद्रणाः।

यक्षाः साध्याश्च गन्धर्वास्तथा विद्याधरा अपि॥४२

नन्दिनी प्रमुखा गावो नागाश्चैरावतादयः।

सुरर्षयो नारदाद्याः संभूयाप्सरसस्तथा॥४३

इन्द्रोऽग्निर्धर्मराजश्च महेशश्च दिगीश्वरः।

पृषदश्चो धनेशश्च महेशश्च दिगीश्वराः॥४४

अष्टाविमेऽश्विनौ देवौ सूर्याचन्द्रमसौ तथा।

अन्येऽपि च सनक्षत्रा ग्रहाः सुभगविग्रहाः॥४५

घटीमुहूर्ताहोरात्रपक्षमासर्तुवत्सराः।

युगानि दिव्यादिव्यानि तथा मन्वन्तराणि च॥४६

भुवो भारमपाकर्तुमवतीर्णे जगत्पतौ।

संनिधाय स्वयं तत्र स्वस्तिवाचनमाचरन्॥४७

४२-४७. आदित्य, वसु, विश्व, रुद्र, मरुद्गण, यक्ष, साध्या, गंधर्व, विद्याधर, नन्दिनी प्रमुख गाएं, ऐरावतादि हाथी, नारदादि देवर्षि और सभी अप्सराएं, इंद्र, अग्नि, धर्मराज, नैर्ऋत, वरुण, वायु, अश्व, कुबेर, शंकर, ये आठ दिक्पाल, अश्विनीकुमार, सूर्य चन्द्र देव, तेजोमय ग्रह और नक्षत्र, घटी, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, वर्ष, मनुष्य युग, देवयुग, और मन्वंतर इन सभी ने पृथ्वी का भार कम करने के लिए अवतीर्ण हुए उस जगतपति के समीप आकर उसका स्वस्तिवाचन किया।

गणेशं जन्मदां षष्ठीं देवीं जीवन्तिकामपि।

स्कन्दं नारायणं वंशं बलदेवं च लाङ्गलम्॥४८

शरासनं शरान् खड्गं विविधान्यायुधानि च।

तत्तन्मन्त्रैः समभ्यर्च्य सूतिकागृहमन्तरा॥४९

प्रयतः पञ्चमे षष्ठेऽप्यष्टमे नवमेऽहनि।

रक्षन्तु बालमित्युक्त्वा प्रणम्य च पुरोहितः॥५०

क्षेत्रपालाय भूतेभ्यो राक्षसेभ्यो गृहाद्वहिः।

बलीनदाद्योगिनीभ्यो दिक्पालेभ्योऽप्यनेकधा॥५१

४८-५१. गणेश, जन्मदात्री षष्ठी देवी, जीवन्तिका, स्कन्द ( कार्तिकस्वामी), नारायण, बांसुरी, बलराम, हल, धनुष, बाण, तलवार और अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र इन सब की उन पुरोहितों ने पवित्र होकर पांचवें, आठवें और नौवें दिन उचित मंत्रों से प्रसूतिगृह में पूजा की। इस बालक की रक्षा कीजिए ऐसा कहकर नमस्कार किया और क्षेत्रपाल, भूत, राक्षस, योगिनी, दिक्पाल, इनकी घर से बाहर अनेक बार बलि दी गई।

त्रिजगज्जागरुकस्य जाते षष्ठी प्रजागरे।

जने जनिविशेषेण दशमेहि महात्मनः॥५२

ताम्रापर्ण्यथ कावेरी तुङ्गभद्रा मलापहा।

कृष्णा ककुद्घती वेणा नीरा भीमरथी तथा॥५३

गोदावरी च गायत्री प्रवरा वञ्जुला पुनः।

पूर्णा पयोष्णी तापी च नर्मदा च महानदी॥५४

क्षिप्रा चर्मण्वती मद्रा यमुना वेत्रवत्यपि।

भागीरथी चन्द्रभागा गोमती गण्डकी तथा॥५५

इरावती विपाशा च शतद्रुश्च सरस्वती।

वितस्ता सरयूश्चापि तमसाच वधूसरा॥५६

सिन्धुघर्घरशोणाद्यैर्नदैर्निश्रेयसः प्रदैः।

पुष्कराद्यैः सरोभिश्च सागरैश्च समन्विताः॥५७

अलक्षितेन रूपेण नद्यः पुण्यतमा इमाः।

तदा तस्या भिषेकाय सोत्सवाः समुपागमन्॥५८

५२-५८. तिनों लोकों में जागरूक उसके षष्ठी के जागृत हो जाने पर, लोगों में उस महात्मा का जन्म महत्त्वपूर्ण होने के कारण उसके दसवें दिन ताम्रपर्णी, कावेरी, तुंगभद्रा, मलप्रभा, कृष्णा, कोयना, वेणा, नीरा, भीमा, गोदावरी, गायत्री, प्रवरा, वंजुला, पूर्णा, पयोष्णी, तापी, नर्मदा, महानदी, क्षिप्रा, चंबल, मद्रा, यमुना, वेत्रवती, भागीरथी, चंद्रभागा, गोमती, गंडकी, इरावती, (रावी) विपाशा, शतद्रु ( शतलज) सरस्वती, वितस्ता (झेलम), सरयू, तमसा, वधूसरा, ये अत्यधिक पवित्र नदियां, सिंधु, घर्घर, शोण इत्यादि मोक्षदायक नद, पुष्करादि सरोवर एवं समुद्र आदि के साथ अदृश्य रूप से ये सभी पुण्यदाई नदियां बड़े आनंद के साथ उसके अभिषेक के लिए एकत्रित हो गईं।

देवसेना शची स्वाहा समृद्धिः सर्वमङ्गला।

अदितिर्विनता संज्ञा सावित्री चाप्यरुन्धती॥५९

तां युक्तां तत्र बालेन तेनाप्रतिममूर्तिना।

प्रसूतिकामस्नपयन् मिलिताः कुलयोषितः॥६०

५९-६०. वहां पर देवसेना, शची, स्वाहा, समृद्धि, पार्वती, अदिति, विनता, संज्ञा, सावित्री, अरुन्धति इन कुलस्त्रियों ने मिलकर उस अप्रतिम लावण्यमय बालक के साथ उस गर्भवती को भी स्नान कराया।

जननी रजनीरागरञ्जितांशुकधारिणीम्।

अलङ्कारवतीमङ्कविनिवेशितबालकाम्॥६१

दिनश्रियमिवोदारां नवोदितदिवाकराम्।

नीराजनाभिः सुभगाः सुभ्रुवः समभावयन्॥६२

६१-६२. शरीर पर पीले वस्त्र धारण की हुई, अलंकार धारण की हुई, गोद में बालक को ली हुई और नवोदित सूर्य के दिनश्री के समान सुंदर शोभायमान उस बालक की मां की सुवासिनियों ने आरती की।

यतः शिवगिरेर्मूर्ध्नि जातः स पुरुषोत्तमः।

ततः प्रसिद्धा लोकेऽस्य शिव इत्याभिधाऽभवत्॥६३

६३. शिवनेरी किले पर इस पुरुषोत्तम का जन्म होने के कारण उसका "शिव" यह नाम लोक में प्रसिद्ध हो गया।

करिष्यत्येष बलवानिह कर्मातिमानुषम्।

म्लेच्छान्निहत्य महतीं कीर्तिं विस्तारयिष्यति॥६४

जित्वावाच्यांश्च पाश्चात्यान् प्राच्यांश्च भुजतेजसा।

तथोदीत्यांश्च विजयी स्वराज्यं संविधास्यति॥६५

साहसी सागरमपि वश्यतामानयिष्यति।

बली बलैर्दिगन्तेभ्यो वलीनानाययिष्यति॥६६

प्रभावी गिरिदुर्गाणि वनदुर्गाणिचाप्ययम्।

तथा सलिलदुर्गाणि स्थलदुर्गाणि गोप्स्याति॥६७

बत दिल्लीपतेर्मूध्नप्रतापेन तपन्नयम्।

निजं चरणमाधाय जगदाज्ञापयिष्यति॥६८

६४-६८. यह बलवान बालक इस लोक में अलौकिक कर्म करेगा, म्लेच्छों का नाश करके अपनी अतुल कीर्ति को फैलायेगा, दक्षिण, पश्चिम, पूर्व और उत्तर इन दिशाओं को अपने बाहुबल से जीतकर यह विजयी पुत्र स्वराज्य की स्थापना करेगा, यह साहसी बालक समुद्र को भी अपने अधीन करेगा और अपने सेना की सहायता से सभी दिशाओं से कर वसूल करेगा, यह प्रतापी बालक गिरिदुर्ग, जलदुर्ग, वनदुर्ग और स्थलदुर्ग का रक्षण करेगा और वह अपने पराक्रम से दिल्लीपति मस्तक पर पैर रखकर संपूर्ण संसार पर आधिपत्य स्थापित करेगा।

सुदुर्गमेषु मार्गेषु गहनेषु गिरिष्वपि।

सरित्सुच समुद्रेषु यस्याप्रतिहता गतिः॥६९

स एष पाण्ड्यद्रविड लाटकणाटकेरळान्।

करहाटवैराटान्ध्रमालवाभीरगुर्जरान्॥७०

आर्यावर्ताश्च दुर्म्लच्छकृतावर्तमाननेकशः।

कुरुजांगलसौवीरधन्वसौराष्ट्रकोसलान्॥७१

वाह्नीकमद्रगान्धारत्रिगर्तानर्तसैन्धवान्।

कलिङ्गकामरुपाङ्गवङ्गकाम्बोजकेकयान्॥७२

पारसीकान् शिबीन् शाल्वान्पुलिन्दारदृबर्बरान्।

काश्मीरमत्स्यमगधविदेहोत्कलटङ्कणान्॥७३

किरातकाशिपाञ्चालचेदीनापि च कुन्तलान्।

खशांश्चशूरसेनांश्च हूणान् हैमवतानपि॥७४

उण्ड्रान्पुण्ड्रान् ललित्थांश्च महितेन स्वतेजसा।

चिरजीवी विनिर्जित्य महाराजो भविष्यति॥७५

६९-७५. दुर्गम मार्ग, गहन पहाड़ी, नदी और समुद्र के बीच जिसकी गति अव्यवहित है ऐसा यह शूर राजा, पाण्ड्य, द्रविड़, लाट, कर्णाट, केरल, कराड, वैराट, आंध्र, मालवा, आभीर, गुजरात और दुष्ट यवनों द्वारा अनेक बार अधिग्रहीत आर्यावर्त, कुरूजांगल, सौवीर ( मुल्तान), धन्व ( मारवाड़), सौराष्ट्र ( काठेवाड) कोसल ( अयोध्या) बाल्हीक, मद्र, गान्धार, त्रिगर्त, द्वारका, सिंध, कलिंग, कामरूप ( असम) अंग ( बिहार) बंगाल, कांबोज, केकय, पारसी, शिबि, शाल्व, पुलिंद, बर्बर, कश्मीर, मत्स्य, मगध, विदेह, उत्कल, टंकण, किरात, काशी, पांचाल, चेदि, कुन्तल, खश, शूरसेन, हूण, हैमवत, उंड्र, पुंड्र, ललित्थ, ये सभी देश अपने उज्ज्वल पराक्रम से जीतकर यह चिरंजीवी महाराजा होगा।

यथा पृथुरभूत्पूर्वं यथा राजा पुरुरवाः।

अम्बरीषोऽपि च यथा शिबिश्चौशीनरो यथा॥७६

यथा जनिष्ठ मान्धाता यथा च निषधाधिपः।

यथा बभूव भरतो यथा भूपो भगीरथः॥७७

हरिश्चन्द्रः स च यथा रामो दाशरथिर्यथा।

यथा च मिथिलाधीशो ययातिर्नहुषो यथा॥७८

यथा धर्मधनोराजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।

भविष्यति तथैवायं शाहराजसुतः शिवः॥७९

मध्येसभं दैवविदः सर्वसिद्धान्तपारगाः।

एवमस्य कुमारस्य जन्मवेलामविदन्॥८०

७६-८०. पृथु, पुरुरवा, अंबरीष, उशीनर का पुत्र शिबि, मांधाता, नल, भरत, भगीरथ, हरिश्चंद्र, दशरथ का पुत्र राम, जनक, ययाति, नहुष, धर्मराज युधिष्ठिर इन पहले हुए राजाओं की तरह शहाजीराजे का पुत्र शिवाजी भी वैसा ही होगा, यह भविष्यवाणी सभी सिद्धांतों में पारंगत ज्योतिषियों ने उस बालक की जातक सभा में बतायी।

प्रचीयमानावयवव्यक्तविग्रहभूषणम्।

स्थितिप्रवीणलावण्यलब्धसौभाग्यवैभवम्॥८१

विचित्रमणियुक्ताभिर्मुक्ताभिर्मञ्जुलात्मना।

विभ्राजमानं हैमेन मुकुटेन शिरःस्पृशा॥८२

लीलाचलाचलं भाले हैमं चलदलच्छदम्।

दधानं विस्फुरन्मुक्तामणिसूत्रान्तलम्बितम्॥८३

अनर्घ्यहीरकिम्मीरपद्मरागमरीचिभिः।

संभृतश्रीभरोदग्रे बिभ्राणं भुजभूषणे॥८४

गुरुत्मद्रत्नसंपृक्तसाग्रवयाघ्नखश्रिया।

विन्यस्तयाभ्राजमानं कृष्णकाचमणिस्रजा॥८५

सद्रत्ननिकरोदञ्चत् काञ्चनप्रतिमात्मिकाम्।

देवीं जीवन्तिकामनाम्नीमाबिभ्राणं भुजान्तरे॥८६

प्रवाळनीलसम्मिश्रसुवर्णमणिनिर्मिते।

वलये ललिताकारे कलयन्तं करद्वये॥८७

बतानन्दमयं दिव्यसूत्रसम्बद्धमध्यमम्।

विस्फुरद्गुल्फवलयं विलसन्मणिनूपुरम्॥८८

विदग्धामिः स्वयं स्निग्धलोचकाञ्चितलोचनम्।



भालान्तरालविन्यस्त चित्रकज्जलचित्रकम्॥८९

कमनीयतमस्वर्णकञ्चुकावृतविग्रहम्।

धात्र्यः स्मेरमुखं प्रीतास्तम्बालं पर्यपालयन्॥९०

८९/९०. उसके शरीर के अवयवों के अत्यधिक व्यक्त होने से उसमें सुंदरता आई; स्थिर लावण्य के संयोग से वह विलक्षण मनोहारी लगने लगा, अनेक प्रकार के रत्नों एवं मोतियों से जड़ित सोने की मंजुलाएं सोने के मुकुट पर चमक रही थी, चमकदार मोतियों की मणि माला के अंतिम भाग में लटकने वाले सुवर्णमय पीपल के पत्ते खेलते समय उसके मस्तक पर हिल रहे थे, अमूल्य हीरे एवं विचित्र पद्मराग के किरणों की विलक्षण चमक से युक्त आभूषण बाहु में धारण किए हुए थे, भारी रत्नों से जड़ित नुकीले बाघ के नखों की आकृति को जिसमें पिरोया गया है ऐसी काली काचमणि की माला गले में पहनने से वह शोभित हो रहा था, उत्तम रत्नों के समूह से उत्कर्ष को प्राप्त हुई जीवंतिका देवी की सुवर्ण प्रतिमा उसके छाती पर पड़ी हुई थी, प्रवाल एवं नील रंग से सम्मिश्रित सुवर्णमणि से निर्मित सुंदर कंकण हाथों में धारण किए हुए थे, अहो! वह आनंद की प्रतिमूर्ति था, उसके कमर में दिव्य मेखला थी, पैरों में मणि जड़ित चमकदार नूपुर थे, विदग्ध स्त्रियों ने आंखों में चमकदार काजल डालीं हुई थी, अत्यंत सुंदर सोने का कुर्ता पहना हुआ था। इस प्रकार हंसमुख बालक को धाइयां अत्यधिक प्रेम से संभाल रही थी।

अन्तर्बहिःश्वरोप्येष बहिर्विहितनिष्क्रमः।

व्यधादसूर्यं पश्यायाः शिशुः सूर्यस्य दर्शनम्॥९१

९१. राजपत्नी का वह बालक, अंदर और बाहर सर्वत्र विचरण कर्ता एवं सर्वव्यापी होने के बाद भी उसको बाहर ले जाकर सूर्य के दर्शन करवाये।

उपवेशनमप्यन्नप्राशनं च यथविधि।

अस्य राजकुमारस्य क्रमेण समजायत॥९२

९२. उस राजकुमार के उपवेशन एवं अन्नप्राशन ये संस्कार यथाविधि और क्रमपूर्वक किए गए।

दर्याखानं शरैर्भित्वा नीत्वा निरवलेपताम्।

विजयी शहराजोऽपि शिवंगिरिमथाव्रजत्॥९३

९३. उसके बाद दर्याखान को अपने बाणों से विदीर्ण करके और उसके घमण्ड का हरण करके विजयी शहाजीराजे भी शिवनेरी आ गये।

स तत्र सोदरं शम्भोरम्भोजस्यमलोचनम्।

व्यलोकत मुदोपेतः सदोदितपराक्रमः॥९४

९४. संभाजी का छोटा भाई जो कमलनेत्र शिवाजी ने सदा पराक्रमी शहाजीराजा के मुख का आनंद से अवलोकन किया।

गाः काञ्चनानिकरिणस्तुरगांश्च राजा।

रत्नानि च प्रमुदितो व्यतरत्तदानीम्॥

सद्यो यथात्र निरमुच्यत भूरि कालम्।

सर्वोऽथिनामपि जनोऽन्यजनार्थनाभ्यः॥९५

९५. उस समय उस राजा ने आनंदित होकर शीघ्रता से इतना दान किया की सभी याचकों को दूसरों के मदद की बहुत दिनों तक आवश्यकता ही नहीं पड़ी।

अथ धराणिमघोनः सूनुरुच्चैर्धरित्रीम्।

अधि सरसिजहस्तः संचरल्लोकबन्धुः॥

निखिलतिमिरहारी बालसूर्योपमानः।

प्रसभमभृतशोभां वर्धमानः क्रमेण॥९६

९६. अपनी किरणें कमल पर बिखेर कर उसको विकसित करते हुए सूर्य पृथ्वी पर अत्यधिक विचरण करता है, उसी तरह यह बाल सूर्य राजपुत्र अखिल अंधकार को नष्ट करते हुए धीरे-धीरे वृद्धि को प्राप्त होने लगा तो वह अतिशय सुंदर दिखने लगा।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिनिवासकरकवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां

संहितायां शिवराजप्रभवो नाम षष्ठोऽध्यायः॥६॥

## अध्याय:-७

कवीन्द्र उवाच-

अथ तं शिशुरूपेण ललन्तं ललितद्युतिम्।

नजानीतः स्म पितरावमानुषमुरुक्रमम्॥१

१. कवीन्द्र बोला - उस बाल रूप में खेलने वाले उस सुंदर एवं अनुपम लीलाओं से युक्त बालक, यह अमानुषिक विष्णु है, यह उस माता-पिता को समझ नहीं आया।

अवतीर्णः क्षितितलं क्षोणीभारापनुत्तये।

विहरन् बालरूपेण शाहगजनिकेतने॥२

जनयित्रीं जनं चापि रञ्जयन् निजया श्रिया।

अचेष्टत स सर्वात्मा तत्र तत्तद्विचेष्टितम्॥३

२-३. पृथ्वी के भार को कम करने के लिए भू-तल पर अवतरित होकर शहाजीराजे के घर में बालरूप में विहार करने वाला और अपनी शोभा से जन्मदात्री मां एवं अन्य लोगों का मनोरंजन करने वाला वह सर्वात्मा विष्णु वहां अनेक प्रकार की लीलाएं करने लगा।

सुत्रामकांक्षितं कर्तुं दितेः पुत्राननेकशः।

संगरे संगरे हत्वा चतुर्बाहुरुदायुधः॥४

यः श्रान्त इव निद्राति मध्ये दुग्धमहोदधेः।

जननीस्तन्यपानाय व्यतानीद्रुदितानि सः॥५

४-५. इंद्र के इच्छित कार्य को करने के लिए प्रत्येक युद्ध में राक्षसों को अनेक बार मार करके शस्त्र उठाया हुआ वह विष्णु मानो थककर क्षीरसागर में सो रहा है, ऐसा वह मां का दूध पीने के लिए रो रहा था।

शिशुलीलाधरो रिङ्गन्स हरिन्मणिभूमिषु।

प्रतिबिम्बितमात्मानं बलेनदातुमैहत॥६

६. बाललीला करने वाला वह बालक मरकतमणि युक्त भूमि पर रेंगते समय उस पर पड़े हुए अपने प्रतिबिंब को देखकर बल से उसको पकड़ने लगा।

जानुभ्यां रिङ्गतस्तस्य पदाम्बुजतलत्विषा।

पद्मरागश्रियं प्रापुः प्राङ्गणस्थास्सितोपलाः॥७

७. वह घुटने से रेंगते समय उसके पद कमल रूपी तलवे की लालीमा की चमक से प्रांगण में स्थित स्फटिकमणि माणिक जैसी दिख रही थी।

धूलिधूसरिताङ्गस्य रिङ्गतोस्य गृहाङ्गणे।

रञ्जयामास जननीं मणिमञ्जीर हीञ्जितम्॥८

८. धूल से धूसरित शरीर वाला वह घर के आंगन में रेंगते हुए, पैरों के मणि जड़ित नुपूरों की छुमछुम आवाज से माता को मनोरंजित कर रहा था।

स लीलातरलस्तत्ररिङ्गन्मणिमयेगणे।

बतात्मप्रतिबिम्बेन प्रास्पर्धत पदे पदे॥९

९. रत्नमय प्रांगण में खेलते समय जल्द रेंगनेवाला वह बालक अपने प्रतिबिंब से पग-पग पर प्रतिस्पर्धा कर रहा था।

अपिबन्यत्प्रसादेन सुधां सर्वे सुधान्धसः।

अहो सोपि मुदं प्रापदास्वाद्य मृदुलां मृदम्॥१०

१०. अहो! जिसकी कृपा से सभी देवों ने अमृत पान किया, ऐसा वह स्वयं कोमल मिट्टी खा करके आनंदित हो तो इसमें क्या आश्चर्य है?।

छलयन् यो बलिलोकांस्त्रीन्ललंघे त्रिभिः क्रमैः।

बतालंघत यत्नेन सदेवो गेह देहलीम्॥११

११. जिसने बलि के साथ छल करके तीनों लोकों को तीन पगों में लांग दिया, अहो! ऐसे उस देव को अपने घर की देहली को लांघने के लिए प्रयत्न करना पड़ रहा है।

सप्तानामपि लोकानां योवलम्बः स्वयं प्रभुः।

उदतिष्ठदहो धृत्वा सोपि धात्रीकराङ्गुलिम्॥१२

१२. जो प्रभु स्वयं सातों लोकों का आधार है, अहो! फिर भी वह दाईं के उंगलियों को पकड़कर उठता था।

धवलोलपलबद्धासु भित्तिषु प्रतिबिम्बितम्।

बिम्बमंशुमतो वीक्ष्य तर्जन्यग्रेणदर्शयन्॥१३

आदाय निजहस्तेन मह्यं देहीत्यहोरुदन्।

समुग्ध इव मौग्ध्येन मातरं पर्यहासयत्॥१४

१३-१४. स्फटिकमणि से युक्त दीवार पर पड़े हुए सूर्य के प्रतिबिम्ब को देखकर, वह तर्जनी उंगली से मां को दिखाकर " तू अपने हाथ से लाकर मुझे दे" ऐसा कहकर वह रोने लगा और अपने इस पागलपन से मां को पागल की तरह हंसाने लगा।

स्वहस्तपुष्करोद्धृत धूलिधूसरमस्तकम्।

उद्भिद्यमानन्दताग्र कुंदकुड्मल भूषितम्॥१५

ललन्तं निलयद्वारि द्विरदस्येव शावकम्।

विनेतुमागताधात्री विलोक्य स्तिमिताभवत्॥१६

१५-१६. जिनको अभी नवीन दांत निकल रहें हैं ऐसे हाथी के बच्चों का मस्तक अपने शृङ्ग से उड़ाई हुई धूल से जैसे धूसरित हो जाता है वैसे ही कुंद की कलियों जैसे शोभायमान नवीन दांत जिसके अभी निकल रहें हैं और अपने हाथों से धूल को उड़ाकर घर के दरवाजे के आगे खेलते हुए बालक को अनुशासित करने आई हुई धाइयां, उसको देखकर स्तब्ध हो गई।

स धात्री करतालीभिः संवर्धितकुतूहलः।

कुरुते स्म स्मेरमुखो लास्यलीलामनेकधा॥१७

१७. दाइयों की तालियों से कुतूहल को प्राप्त हुआ वह प्रसन्नवदन बालक अनेक प्रकार से नृत्य करने लगा।

अपाठयद्विधातारं निगमान्यः सलक्षणान्।

सोपि धात्रीमुखात्तत्तन्नामधेयमपीपठत्॥१८

१८. जिसने विधाता को लक्षणों सहित चारों वेदों को पढ़ाया था वह भी स्वयं दाइयों के मुंह से भिन्न भिन्न नामों को पढ़ने लगा।

उत्तार्योत्तार्य तरसात्सममर्धकः।

व्यश्राणयदलङ्कारान् धात्रीभ्यस्स्वशरीरतः॥१९

१९. सभी इच्छित कामनाओं को पूर्ण करने वाला वह विष्णु अपने शरीर पर पहने हुए आभूषणों को शीघ्र उतार उतारकर दाइयों देता था।

अनादृत्यपितुस्तांस्तान् द्विपान्दृष्ट्वांस्तथाहयान्।

प्रभुर्मृतुममन्तुञ्च बह्वमंस्त स मृन्मयान्॥२०

२०. पिता के मदमस्त हाथी एवं घोड़ों को पसंद नापसंद करने में वह स्वयं स्वामी होने के कारण उनका अनादर करके वह मिट्टी के हाथी एवं घोड़ों को पसंद करता था।

स्पृहयालुशिखण्डेभ्यः शोभमानशिखण्डकः।

अन्वधावदहोडिम्भः सखण्डानिशिखण्डिनाम्॥२१

२१. शिखा से शोभायमान वह बालक मोरों के पंखों को लेने की इच्छा से मोरों के बच्चों के पीछे दौड़ रहा था।

शिखिनां च शुकानां च पिकानां च रुतान्यसौ।

विकुर्वाणोनुकुर्वाणस्तत्तद् भ्रमकरोभवत्॥२२

२२. मोर, तोता और कोयल इनके आवाज की तरह आवाज का अनुकरण करने से ऐसा प्रतीत होता था कि साक्षात् वह पक्षी ही आवाज कर रहा हो।

स एष किल कुर्वाणः शिशुशार्दूल शाब्दितम्।

पार्श्ववर्ती स्नेहपात्रीमपिधात्रीमभीषयत्॥२३

२३. वह समीपवर्ती बालक एकदम बाघ जैसी गरजना करके अपने से स्नेह करने वाली दाइयों को भी डराता था।

अभ्रान्तोपिभ्रमरवद् भ्रमिं भ्रान्तः कदाचन।

हृष्टो हय इवहेषामह्लेषत कदाचन॥२४

२४. वह भ्रम रहित होते हुए भी कभी भौर के समान भ्रांत होकर घूमता था, प्रसन्नचित्त होने पर वह कभी घोड़े की तरह जोर से हंसता था।

उच्चैरुदचरेदन्ति बृंहितानि कदाचन॥२५

कभी हाथी के उच्च चीत्कार के समान जोर से चीत्कार करता था।

पूरयद्धिर्धरान्धां च गभीरमधुरस्वरैः।

सोभिमानपरोभेरीमन्वकार्षीत् कदाचन॥२६

२६. अपने गंभीर एवं मधुर स्वर से आकाश और पृथ्वी को ध्वनि युक्त करता हुआ वह कभी अभिमान से दुंदुभी जैसी आवाज करता था।

मृत्कूटान्यपि तुङ्गानि कारयन् स किशोरकैः।

इमानि मम दुर्गाणीत्यवोचत कदाचन॥२७

२७. कभी वह अन्य बच्चों से मिट्टी के ऊंचे टीले बनवाकर कहता था कि "यह मेरे किले हैं"।

निलीनः सद्यनः कोणे दृडनिमीलनकेलिषु।

अन्विष्य सखिभिः स्पृष्टो सहति स्म कदाचन॥२८

२८. कभी लुकाछिपी का खेल खेलते समय वह घर के कोने में छिपकर बैठ जाता तो उसके मित्र उसको ढूंढकर जब स्पर्श करते थे तो वह हंसता था।

पतितं पाणिना हस्तादुत्पततं मुहुर्मुहुः।

अताडयत् पातयितुं कन्दुकं च कदाचन॥२९

२९. कभी कभी, हाथ से छूटी हुई गेंद बार बार उछलती है तो उसको पुनः नीचे गिराने के लिए वह हाथ से मारता था।

आत्मनोत्पातितन्दूरात् पतन्तं व्योममण्डलात्।

कन्दुकं कृष्णसाराक्षः पश्यन्नवहितोन्मुखः॥३०

नृत्यन्निव पदद्वन्द्वं तलताडितभूतलः।

प्रोत्तानिताभ्यां पाणिभ्यामग्रहीत्स कदाचन॥३१

३०-३१. कभी, कृष्णसार की तरह आंखों वाला वह स्वयं उच्च फेंकी हुई गेंद को, आकाश से नीचे आते समय ऊपर मुंह करके ऐसे ध्यानपूर्वक देखता था कि मानो भूमि पर हाथों को ऊंचा करके वह नाचते हुए पकड़ेगा।

दृष्टो हरति यस्तूर्णं जन्मिनां जननभ्रमम्।

अभ्रामयदहोदारुभ्रमं स कदाचन॥३२

३२. जिसके दर्शन करते ही प्राणियों को जन्म मरण के बंधन से शीघ्र मुक्ति मिल जाती है। अहो! कभी उसने स्वयं लकड़ी से निर्मित भौर को घूमाया था।

प्रतिषिद्धोपिधात्रीभिस्तर्जनी तर्जनादिना।

शाहसिंहशिशुस्तांस्तां शिशुलीलां व्यगाहत्॥३३

३३. दाइयों ने तर्जनी उंगली से डांटकर मना करने पर भी वह शहाजी का पुत्र उस उसकी बाललीला में नकल करता था।

भुङ्क्ष्वेत्युक्तोपिनाभुंक्त पिबेत्युक्तो पिनापिबत्।

अनुनीय स धात्रीभिः शेष्वेत्युक्तोपिनास्वपत्॥३४

३४. खाने के लिए बोलने पर वह खाता नहीं था, पीने के लिए बोलने पर वह पीता नहीं था और यदि दाइयों ने उसको प्यार से सोने के लिए बोलने पर भी वह सोता नहीं था।

तत्तद् खेलावसक्तात्मा स आत्मा जगतः परः।

समाहूतो जनन्यापि व्यधाहूरमपाक्रमम्॥३५

३५. उन-उन खेलों में आसक्त वह श्रेष्ठ संसार की आत्मा, मां के बुलाने पर भी दूर भाग जाती थी।

यत्रयत्राव्रजद् बाललीला रसवशः शिवः।



तमन्वपालयंस्तत्र तत्रदेवास्सवासवाः॥३६

३६. बालपन के खेलों के वशीभूत होकर वह शिवाजी जहां जहां जाता वहां वहां पर इंद्र आदि सभी देव उसकी रक्षा करते थे।

यः श्रीमान् करुणानिधिः सुमनसामाधारभूतः स्वयम्,

संजातः किल शाहभूपभवने हर्तुं धरित्रीभयम्।

वेदांतैः पठितः पुराणपुरुषः ख्यातः पुराणेषु य-

स्तं प्राप्य श्रियमावभार महतीं बाल्याभिधानं वयः॥३७

३७. जो श्रीमान दया के सागर, देवों के आधारभूत, वेदों में वर्णित, पुराणों में विख्यात है ऐसे भगवान विष्णु ने पृथ्वी के भय को हरण करने के लिए शहाजीराजे के घर पर स्वयं अवतार लिया और उनको बालपन की शोभा के प्राप्त होने से वे अत्यधिक सुशोभित होने लगे।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दविरचिते

शिशुलीलावर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः॥ ७ ॥

## अध्याय:-८

मनीषिण उचुः -

शिवनेरीगिरौ जातः शिवराज इति त्वया।

परमानन्द संप्रोक्तमस्ति नस्तत्र संशयः॥१

१. पंडित बोलें- परमानंद शिवाजी राजा ने शिवनेरी किले पर जन्म लिया, इस प्रकार जो हमने बोला था उस पर हमें संशय है।

स हि शैलो निजामस्य प्रियकारी महायशाः।

प्रतापी प्रथितो लोके धारागिरिरिवापरः॥२

अभूदागमनं तत्र यथा शाहमहीपतेः।

तथा कथय नः सर्वं भट्टगोविन्दनन्दन॥३

२-३. क्योंकि वह किला निजामशाह का हितकारी, यशस्वी एवं मजबूत था। मानो कि वह दूसरे धारागिरी (दौलताबाद) के रूप में लोक में विख्यात हो। जैसी ही वहां पर शाहजीराजे का आगमन होता है वैसे ही हम सभी भाट गोविंद नन्दन कहने लगे।

कवीन्द्र उवाच -

सुधामिवातिमाधुर्यवतीं पुण्यवतीमिमाम्।

कथां शाहनरेन्द्रस्य शृणुत द्विजसत्तमाः॥४

४. कवींद्र बोलें- अरे द्विजश्रेष्ठों! यह अमृत के समान अत्यंत मधुर एवं पवित्र इस शहाजीराजे की कथा का श्रवण करो।

अस्तङ्गतेऽम्बरमणिप्रतापे बर्बरऽम्बरे।

निर्मन्त्रिणि निजामे च स्थितिसंजातसंशये॥५

दिवङ्गते दैवयोगादिभरामेऽनुभाविनि।

तत्सुते महमूदे च दृष्टे तत्पदवर्तिनि॥६

सैन्ये साहिजहानस्य दिल्लीन्द्रत्वमुपेयुषः।

दक्षिणां दिशमादातुमवलेपादुपागते॥७

प्रतनेनानुबन्धेन निजामोपचिकीर्षया।

शाहराजो महाबाहुर्विजयाह्वं पुरं जहौ॥८

५-८. सूर्य की तरह प्रतापी बर्बर मणिकंवर के अस्त हो जाने पर निजामशाह को दूसरे अच्छे मंत्री के न मिलने से उसके राज्य की स्थिति में संशय उत्पन्न हो गया। भाग्यवश अनुभवी इब्राहिम आदिलशाह के दिवंगत हो जाने पर उसके उनमुक्त बेटे महमूद ने उसकी राजगद्दी संभाली। शाहजहां यह दिल्ली का बादशाह बन गया और उसकी सेना दक्षिण जीतने के लिए बड़े अभिमान के साथ आई। ऐसे समय पर अपना पुराना संबंध पहचानकर निजामशाह की कल्याण करने की इच्छा से महाबलशाली शहाजीराजे बीजापुर छोड़कर उसके पास गये।

अथ यादवराजोऽपि हित्वा ताम्रानुयायिताम्।

पक्षपाती निजामस्य धारगिरिमुपागमत्॥९

९. बाद में यादवराज भी मुगलों की अधीनता को छोड़कर दौलताबाद में निजामशाह के पक्ष में आकर मिल गया।

अत्रान्तरे निजामस्य भृशं विश्रम्भभाजनम्।

वंश्यो विश्वासराजस्य शिवभक्तो महाव्रतः॥१०

तनयः सिद्धपालस्य सुप्रसिद्धोऽतिवैभवः।

शिवनेरिगिरिस्थायी नृपतिर्विजयाह्वयः॥११

वराय शम्भुराजाय शाहराजसुताय वै।

जयन्तीमात्मतनयामनुरुपाममन्यत॥१२

१०-१२. इस बीच में विश्वासराज कुल वंशज सिद्धपाल के बेटे शिवभक्त, महाव्रती, सुप्रसिद्ध एवं अत्यंत वैभवशाली विजयराज ये निजामशाह के अत्यंत विश्वासपात्र थे और वे शिवनेरी किले पर रहते थे। उनको अपनी जयंती नाम की पुत्री शहाजीराजे के पुत्र संभाजी के लिए अनुरूप प्रतीत हुई।

शाहराजोऽपि सम्बन्धं तं सुश्लाघ्यतमं भुवि।

संविचिन्त्य स्नुषात्वेन जयन्तीं तमयाचत॥१३

१३. शहाजीराजे को भी वह संबंध पृथ्वी पर अत्यंत प्रशंसनीय लगा और उसने अपने पुत्र के लिए बहु रूप में जयंती की मांग की।

ततो विजयराजस्य शाहराजस्य चोभयोः।

अभूद्यथोक्तसंबन्धमुप्रयुक्तो महोत्सवः॥१४

१४. बाद में विजयराज और शहाजीराजे इन दोनों के संबंध को सुस्थापित करने के लिए महोत्सव हुआ।

विश्वासराजवंश्यानां भूपानां भूरितेजसाम्।

तथा भृशबलानां च समवायो महानभूत्॥१५

१५. विश्वासराज कुल वंशजों के अत्यंत तेजस्वी राजाओं की और भोंसले वंशजों की बड़ी बारात इकट्ठी हुई।

स तयोः श्लाघ्यगुणयोर्जयन्तीशम्भुराजयोः।

शिवनेरिगिरावासीत्पाणिग्रहमहो महान्॥१६

१६. जयंती और संभाजी इन प्रशंसनीय गुणयुक्त जोड़ी का विवाह कार्यक्रम शिवनेरी किले पर बड़े आनंद के साथ संपूर्ण हुआ।

अथो कतिपयाहोभिस्तं समाप्य महोत्सवम्।

तस्यैवच गिरेर्मूर्ध्नि स्वजनेन समन्विताम्॥१७

सम्बन्ध्यनुमतः पत्नीमन्तर्वत्नीं निधाय ताम्।

प्रतस्थे शाहनृपतिर्दर्याखानजिगीषया॥१८

१७-१८. उस महोत्सव की समाप्ति के कुछ दिनों बाद उसके संबंधियों की अनुमति से अपनी गर्भवती पत्नी को अपने सगे-संबंधियों के साथ उस किले पर छोड़कर शहाजीराजे दर्याखान को जीतने के लिए निकल गये।

शिवनेरिगिरौ ह्यासीच्छाहस्यागमनं यथा।

तथा कथितवानस्मि किमथ श्रोतुमिच्छथ॥१९

१९. शिवनेरी किले पर शहाजीराजे का आगमन किस प्रकार हुआ यह मैंने बता दिया है और क्या आप सुनना चाहते हैं ?

मनीषिण उचुः -

सद्यो दिल्लीश्वरं हित्वा पक्षपातिन्युपागते।

महाव्रते महाराजे यदुराजे महाभुजे॥२०

अभिक्रमपरैस्ताम्रमुखैर्योद्धुं समुद्यते।

अभीप्समानः स्वाभीष्टं निजामः किमचेष्टत॥२१

२०-२१. पंडित बोलें - दिल्ली के बादशाह को अचानक छोड़कर निजामशाह के पक्ष में महाव्रती, एवं महाबलशाली महाराजा यादवराज आकर मिल गये और पराक्रमी मुगलों के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गए किन्तु ऐसी स्थिति में अपने अभीष्ट के इच्छुक निजामशाह ने क्या किया ?

कवीन्द्र उवाच -

अथ दैवान्निजामस्य विषयाविष्टचेतसः।

हन्त दुर्मन्त्रिणो योगाज्जज्ञे मतिविपर्ययः॥२२

२२. कवीन्द्र बोलें- भाग्यवश विषयों में आसक्त हुए निजामशाह की बुद्धि को दुष्ट मंत्रियों ने मिलकर घूमा दिया।

तस्य मत्तस्य सविधे ययौ साधुरसाधुताम्।

प्रियवादपरोऽत्यर्थमसाधुरपि साधुताम्॥२३

विपरीतदृशा तेन गुरवोऽपि लघूकृताः।

गुणोपेताश्च गुरवो नीताः शीघ्रमगौरवम्॥२४

२३-२४. उस उनमुक्त बादशाह को सज्जन दुर्जन की तरह प्रतीत होने लगे एवं प्रियवादी अत्यंत दुष्ट पुरुष भी सज्जन प्रतीत होने लगे। उसको विपरीत बुद्धि युक्त गुरुजन भी तुच्छ प्रतीत होने लगे और सलाहकारी गुरुजनों के प्रति उसकी आदर बुद्धि नष्ट हो गई।

अव्यवस्थितचित्तस्य मत्तस्य मधुनान्वहम्।

अवद्यवादिनस्तस्य बत राष्ट्रमहीयत॥२५

२५. अव्यवस्थित मन से युक्त एवं प्रतिदिन दारू पीने से उनमुक्त होकर निंदनीय भाषण करनेवाले उस निजामशाह का राज्य नष्ट हो रहा था।

अथ प्रणन्तुमायातमतीवप्रतिभान्वितम्।

निजामो यादवाधीशमवमेने सुदुर्मतिः॥२६

२६. ऐसी स्थिति में एकबार अत्यंत तेजस्वी यादवराज उसको नमस्कार करने के लिए आया तो उस दुर्बुद्धि निजामशाह ने उसका अपमान कर दिया।

अवज्ञातो निजामेन महामांसी महामनाः।

यदुराजस्तदा वीररसावेशवशोऽभवत्॥२७

२७. निजामशाह से इस प्रकार का अपमान हो जाने से उस महामना एवं अभिमानी यादवराज को बहुत दुःख प्राप्त हुआ।

अथ सेनाधिपतयो हमीदाद्यास्सुदुर्मदाः।

दुर्मन्त्रिते निजामेन पूर्वमेव प्रबोधिताः॥२८

साभिमानं परावर्तमानं मत्तमिव द्विपम्।

आस्थानीतोरणोपान्ते रुरुधुर्यादवेश्वरम्॥२९

२८-२९. हमीदादि दुष्ट सेनापतियों को निजामशाह ने यह योजना पहले ही बता दी थी फिर उन्होंने मदमस्त हाथी की तरह दुःख की पीड़ा से वापस जाते हुए यादवराज को सभागृह के द्वार पर ही घेर लिया।

स तत्र बहुभिर्युध्यन् सुपुत्रामात्यबान्धवः।

प्रत्युद्यातः सुरगणैः सुरलोकमलोकत॥३०

३०. वह अपने पुत्र, अमात्य, बांधवों एवं अनेक अन्य लोगों के साथ लड़ते लड़ते स्वर्गलोक चला गया।

यथा मेरोर्विपर्यासः पातो भानुमतो यथा।

यथा ह्यन्तः कृतान्तस्य दाहः पत्युरपां यथा॥३१

तथा यादवराजस्य तदा तत्र बतात्ययः।

सप्तानामपिलोकानामभूदल्पहितावहः॥३२

३१-३२. मेरू पर्वत का उल्टा हो जाना या सूर्य का नीचे गिर जाना या यमराज का अंत हो जाना या फिर वरुणदेव का जल जाना जैसा अहितकर है वैसे ही वहां पर यादवराज की मृत्यु का होना सातों लोकों के लिए अत्यंत अहितकर है।

तदवस्थमथ श्रुत्वा श्वशुरं यादवेश्वरम्।

शाहो निजामसाहाय्याद्विरराम महायशः॥३३

३३. अपने श्वसुर यादवराज की उस अवस्था को सुनकर यशस्वी शहाजीराजे ने निजामशाह की सहायता करना छोड़ दिया।

अथ तापीतटात्तूर्णमेत्य ताम्रपताकिनी।

अधिष्ठितं निजामेन धारागिरिमवेष्टयत्॥३४

३४. फिर तापी नदी के तट से जल्द ही मुगलों की सेना वहां आई और निजामशाह की दौलताबाद राजधानी को चारों ओर से घेर लिया।

समुह्य स्वां महामानी मदानीमेव येदिलः।

पृतनां प्रेषयामास लुब्धो धारागिरिं प्रति॥३५

३५. उसी समय अभिमानी एवं लोभी आदिलशाह ने अपनी सेना को इकट्ठा करके दौलताबाद की ओर भेज दिया।

सैन्यं साहिजहानस्य महमूदस्य चान्वहम्।

अयुध्येतां मिथस्तत्र धारागिरिजिघृक्षया॥३६

३६. दौलताबाद पर अधिकार करने की इच्छा से शाहजहां एवं महमूद आदिलशाह की सेनाओं में परस्पर प्रतिदिन युद्ध होने लगा।

स्वयं निजामशाहोऽपि धारागिरिशिरस्थितः।

तदा ताभ्यामपि द्वाभ्यामनीकाभ्यामयुध्यत॥३७

३७. स्वयं निजामशाह भी दौलताबाद किले के माथे पर स्थित होकर उन दोनों सेनाओं के साथ लड़ने लगा।

ततोऽतिबलिभिस्ताम्रबलैर्युध्याद्धिरञ्जसा।

महमूदस्य चानीकैर्निजामः पर्यभूयत॥३८

३८. उसके बाद अत्यंत बलशाली मुगलों की सेना से और महमूद आदिलशाह की सेना से निजामशाह तभी पराजित हो गया था।

ततः स तेन शैलेन सैन्येन विविधेन च।

यथाजातेन च तथा फतेखानेन मन्त्रिणा॥३९

परिग्रहेण सर्वेण कोषेण च महीयसा।

ममज्ज सहितस्तत्र ताम्राननबलार्णवे॥४०

३९-४०. तब वह निजामशाह विविध सेनाओं, मूर्ख मंत्री फतेहखान, संपूर्ण परिजन, विशाल खजाना एवं किले के साथ मुगलों की सेना रूपी समुद्र में डूब गया।

मनीषिण उचुः -

यस्याशीतिसहस्राणि तुरगाणां तरस्विनाम्।

अशीतिरद्रिदुर्गाणां चतुर्भिरधिका पुनः॥४१

स्थले जले च यस्यासन् बत दुर्गाण्यनेकशः।

समृद्धो विषयो यस्य वशे विद्वेषि दुर्ग्रहः॥४२

येन येदिलशाहस्य दिल्लीन्द्रस्य च मानिनः।

पदे पदे बलं सर्वं जीवग्राहं व्यसृज्यत॥४३

यस्याकस्मिकझषस्य श्येनस्येवोत्पत्तिष्यतः।

प्रभावेण न्यलीयन्त परिपंथिविहंगमाः॥४४

स निजामस्तदा येन हेतुना विलयं गतः।

शुश्रूषमाणान् नः सर्वान् कवीन्द्र तमुदीरय॥४५



४१-४५. पंडित बोलें- जिसके पास अस्सी हजार गतिमान घोड़े, चौरासी गिरीदुर्ग एवं जिसके पास अनेक स्थलदुर्ग एवं जलदुर्ग थे, जिसके अधीन समृद्ध एवं शत्रुओं के लिए अजेय देश था, जिसने आदिलशाह की और अभिमानी दिल्लीपति की सेना को पग-पग पर पराजित किया था, बाज के आकस्मिक झड़प के समान जिसके आकस्मिक छापों से शत्रु रूपी पक्षी छिपकर बैठते थे ऐसे उस निजामशाह का नाश किस कारण से हुआ, हे कवींद्र उस कारण को सुनने की हमारी इच्छा है उसको आप बताइए।

कवीन्द्र उवाच -

समस्तपालनपरे पितर्युपरतेऽम्बरे।

भवितव्यानुसारेण फत्तेखानोऽल्पचेतनः॥४६

अमात्यतां निजामस्य प्रतिपद्य प्रतापवान्।

तापयामास जनतां कृतान्त इव निष्कृपः॥४७

४६-४७. कवींद्र बोलें- सभी का पालन करने वाले पिता मलिकंबर की मृत्यु हो जाने पर उसका क्षुद्र बुद्धि फत्तेखान को भाग्यवश निजामशाह का अमात्य पद मिल गया और वह इस प्रकार क्रूर एवं प्रतापी फत्तेखान, यमराज की तरह जनता को पीड़ा देने लगा।

निजामस्तस्य मन्त्रेण हमीदस्य च दुर्मतेः।

यदाप्रभृति राजन्यं यदुराजं न्यधातयत्॥४८

शाहराजप्रभृतयः तदाप्रभृति भूभृतः।

सर्वे विमनसो भूत्वा म्लेच्छाश्च पृतनाभृतः॥४९

अविश्रम्भादमर्षाच्च साध्वसाच्च समाकुलाः।

शिश्निर्युर्देहिलं केऽपि केऽपि दिल्लीन्द्रमश्रयन्॥५०

केचिच्च क्रूरमनसो विरुद्धत्वमुपाचरन्।

तटस्थमिव चात्मानं बत केचिददर्शयन्॥५१

४८-५१. फत्तेखान एवं दुष्ट हमीदखान की सलाह से जब निजामशाह ने यादवराज को मरवा दिया तब से शहाजी आदि सभी राजा एवं मुगल सरदार उससे नाराज हो गये। विश्वास उड़ जाने से, क्रोध से एवं भय के कारण से कुछ राजा

आदिलशाह से जाकर मिल गये, कुछ ने दिल्ली के बादशाह का आश्रय लिया और क्रूर मन वाले कुछ लोगों ने उसका विरोध किया एवं कुछ लोगों ने उसके प्रति तटस्थता दिखाई।

तेन तेन तदा तस्य दुर्नयेन दुरात्मनः।

अवृष्टिरजनिष्टोच्चैरनिष्टाय शरीरिणाम्॥५२

५२. उस दुराचारी दुष्ट निजामशाह के इस प्रकार के अनेक दुष्कर्मों के कारण भयंकर अवर्षण होने से प्राणियों का अनिष्ट होने लगा।

चिरस्य विषये तस्य न ववर्ष वृषा यदा।

सस्यं सुदुर्लभमभूत्स्वर्णं तु सुलभं तदा॥५३

५३. बहुत समय तक उसके देश में बारिश न होने के कारण से धान्य अत्यधिक मंहगा हो गया एवं सोना सस्ता हो गया था।

प्रस्थमात्राणि रत्नानि विनिमय्य धनीजनः।

कथञ्चन समादत्त कुलत्थान्प्रस्थसम्मितान्॥५४

५४. धनाढ्य लोग प्रस्थमात्र रत्नों को देकर बड़े प्रयत्न से प्रस्थमात्र कुलत्थी प्राप्त करते थे।

आहाराभावतोऽत्यर्थं हाहाभूताः परस्परम्।

पशून्वै पशवो जक्षुर्मानुषा अपि मानुषान्॥५५

५५. खाने को कुछ न मिलने के कारण आकस्मिक हाहाकार मच गया और परस्पर पशु पशुओं को एवं मनुष्य मनुष्यों को खाने लगे।

तेनावर्षेण महता परचक्रागमेन च।

अभावेन च मौलानामनीकस्य च भूयसः॥५६

अनुक्षणं क्षीयमाणस्ताम्रास्यैरनुभाविभिः।

धृतो धारागिरिपतिः फत्तेखानश्च दुर्मतिः॥५७

५६-५७. उस भयंकर अकाल के कारण से तथा परचक्र के आगमन से और अनुभवी पुराने सेनापतियों एवं विपुल सेना के अभाव के कारण से प्रत्येक क्षण क्षीणता को प्राप्त होता हुआ निजामशाह और उसके साथ दुष्ट फतेखान बलवान मुगलों के हाथ पकड़े गए।

अनुकूलेन कालेन सर्वं धत्तेऽनुकूलताम्।

प्रतिकूलेन तेनैव सकलं प्रतिकूलताम्॥५८

५८. यदि समय अनुकूल हो तो सब अनुकूल ही होगा और जब वही प्रतिकूल हो तो सब कुछ प्रतिकूल होगा।

यस्यानुकूलो भगवान् काल एष सनातनः।

अनायासेन सिध्यन्ति तस्य कार्याणि देहिनः॥५९

५९. जिस मनुष्य का यह सनातन भगवान् काल अनुकूल होता है उसके सभी कार्य अनायास ही सिद्ध हो जाते हैं।

जनिस्सत्त च वृद्धिश्च विपाकोऽपचयोऽपि च।

क्षयश्च षडमी भावाः विकाराः कालनिर्मिताः॥६०

६०. उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धि, परिपक्वता, क्षय और नाश ये काल निर्मित छह अवस्था हैं।

जयः पराजयो वापि वैरं मन्त्रिबलाबले।

सविद्यत्वमविद्यत्वमुदारत्वं कदर्यता॥६१

प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च स्वातन्त्र्यं परतन्त्रता।

समृद्धिरसमृद्धिश्च जायन्ते कालपर्ययात्॥६२

६१-६२. विजय या पराजय, शत्रुत्व, मंत्री बल या उसका अभाव, विद्वत्ता या अविद्वत्ता, दानशीलता या कृपणता, प्रवृत्ति या निवृत्ति, स्वतंत्रता या परतंत्रता, समृद्धि या निर्धनता ये सब काल की विपरितता एवं अनुकूलता से उत्पन्न होते हैं।

मृत्युजन्मवयश्चापि तिस्रोऽवस्थाश्च तस्य ताः।

कालादेवप्रवर्तन्ते तथा यज्ञादिकाः क्रियाः॥६३

६३. जन्म, आयु और मृत्यु ये तीनों अवस्थाएं एवं यज्ञादिक क्रियाएं काल के कारण ही उत्पन्न होती हैं।

न कालेन विना बीजं न कालेन विनांकुरः।

न कालेन विना पुष्पं न कालेन विना फलम्॥६४

न कालेन विना तीर्थं न कालेन विना तपः।

न कालेन विना सिद्धिः न कालेन विना जयः॥६५

न कालेन विना भान्ति शशांकशुचिभास्कराः।

न कालेन विना वृद्धिमवृद्धिं चैति सागरः॥६६

न कालेन विना गंगामाजहार भगीरथः।

न कालेन विना कार्कलास्यान्मुक्तो नृगो नृपः॥६७

न कालेन विना रामो निजघान दशाननम्।

न कालेन विना लंकां प्रतिपेदे बिभीषणः॥६८

न कालेन विना कृष्णो गोवर्धनमदीधरत्।

न कालेन विना पार्थो वैकर्तनमजीघतत्॥६९

सुखानामसुखानां च काल एव हि कारणम्।

कालमेवेश्वरं मन्ये सर्गस्थित्यन्तकारिणम्॥७०

६४-७०. काल के बिना बीज नहीं होता है, काल के बिना अंकुर नहीं होता है, काल के बिना फूल नहीं होता है, काल के बिना फल नहीं होता है, काल के बिना तीर्थ नहीं होता है, काल के बिना तपस्या नहीं होती है, काल के बिना सिद्धि नहीं प्राप्त होती, काल के बिना विजय प्राप्त नहीं होती है, काल के बिना अग्नि चंद्र एवं सूर्य चमकते नहीं हैं, काल के बिना समुद्र ज्वारभाटे को भी प्राप्त नहीं होता है, काल के बिना भागीरथी गंगा को नहीं ला सकते, नृगराजा काल के बिना छिपकली की योनि से मुक्त नहीं हो सकते थे, काल के बिना राम रावण को नहीं मार सकते थे, काल के बिना बिभीषण को लंका प्राप्त नहीं हो सकती थी, काल के बिना श्रीकृष्ण गोवर्धन पर्वत को उठा नहीं सकते थे, काल के बिना अर्जुन कर्ण को मार नहीं सकते थे, सुख एवं दुःख का कारण काल ही है इसलिए उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय करने वाले काल को ही मैं भगवान समझता हूं।

सङ्गरे भङ्गमासाद्य निजामो विलयं गतः।

लब्ध्वा दैवगिरिं दैत्यो दिल्लीन्द्रो मुदमागतः॥७१

यथा येदिलशाहोऽपि सैन्यभङ्गात् विलज्जितः।

तदेतदखिलं कालाज्जात जानीत भो द्विजाः॥७२

७१-७२. युद्ध में पराजित होने से निजामशाह का नाश हो गया, दैवगिरि को प्राप्त करके राक्षस रूपी दिल्ली का बादशाह आनंदित हुआ और अपनी सेना के पराजित होने से आदिलशाह लज्जित हो गया, ये सब काल के प्रभाव से हुआ ऐसा तुम द्विजश्रेष्ठों! समझो।

निरुध्य धारागिरिदुर्गमुग्रम्।

ताम्राननैस्तत्र धृते निजामे।

गताभिमाना विहितापयाना।

बभूव सेना किल येदिलस्य॥७३

७३. देवगिरी के उग्र किले को मुगलों ने घेरकर निजामशाह को पकड़ लिया तब आदिलशाह की सेना हतबल होकर वहां से वापस लौट गई।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दविरचिते

अष्टमोऽध्यायः॥८॥

## अध्याय:-९

कवीन्द्र उवाच-

अथ देवगिरिं प्राप्य दिल्लीन्द्रे मुदितात्मनि।

दुर्मदे महमूदे च सन्नसैन्ये विषादिनि॥१

शाहो निजामशाहस्य शैलदुर्गाण्यनेकशः।

शिवनेरिमुखान्याशु बलेन वशमानयत्॥२

१-२. कवीन्द्र बोलें- उसके बाद देवगिरी प्राप्त हो जाने से दिल्ली के बादशाह को आनंद हुआ तथा उन्मुक्त महमूद को अपनी सेना के पराजित होने से दुःख हुआ इसी बीच शहाजीराजे ने निजामशाह के शिवनेरी आदि अनेक प्रमुख किले शीघ्र ही अपने अधीन कर लिए।

गोदावरीं महापुण्यां प्रवरां च प्रभाविणीम्।

नीरां क्षीरधिसक्षीरां भीमां भीमरथीमपि॥३

श्रितं जनपदं सर्वं समाक्रम्य क्रमेण च।

स्ववशे स्थापयामास सद्यः सह्यं च पर्वतम्॥४

३-४. उसी प्रकार अत्यंत पवित्र गोदावरी और प्रभावशाली प्रवरा, क्षीर सागर के जैसे जल वाली नीरा, भयंकर भीमा नदी इन नदियों के तटवर्ती सभी जनपदों पर क्रमशः आक्रमण करके उसने शीघ्र ही सह्याद्रि को भी अपने अधीन कर लिया।

शक्रप्रस्थस्य शक्रेण विरुद्धोऽयमभूद्यदा।

महाराजममुं भेजुर्महाराष्ट्रनृपास्तदा॥५

घाण्टिकाः काण्टिकास्तद्वद्रोकपाटाश्च कांकटाः।

तोमराश्चाहुबाणाश्च महिताश्च महाद्रिकाः॥६

खराटाः पाण्डरास्तद्वद्व्याघ्रघोरफटादयः।

तदा शाहनरेन्द्रेण पृतनापतयः कृताः॥७

५-७. जब शहाजीराजे को दिल्ली के बादशाह के विरुद्ध हुआ देखा तब घाटगे, कांटे, ठोमरे, चव्हाण, मोहिते, महाडीक, खराटे, पांढरे, वाघ, घोरपड़े आदि महाराष्ट्रीयन राजा उसको आकर मिलें और तब शहाजीराजे ने उन सबको सेनापति बना दिया।

अथ शाहजयापेक्षी जहानगिरनन्दनः।

समं येदिलशाहेन सद्यः सन्धिमयोजयत्॥८

ततो राजतुरासाहं शाहं युधि जिगीवतोः।

तयोस्समभवत्सीमा भीमा नाम महानदी॥९

८-९. फिर शहाजीराजे को जीतने के इच्छुक शहाजहा ने आदिलशाह के साथ तुरंत सन्धि कर ली। उसके बाद राजेंद्र शहाजी को जीतने की इच्छुक उन दोनों ने भीमा नाम की महानदी से परस्पर राज्यों के मध्य की सीमा निश्चित की।

मनीषिण उचुः -

शाहः शाहिजहानस्य सेनया येदिलस्य च।

साहसी सिंहविक्रान्तः कति वर्षाण्युद्धत॥१०

कथं च सन्धिमकरोत् ताभ्यां द्वाभ्यामपि प्रभुः।

कवीन्द्र भवतः श्रोतुमिदमीहामहे वयम्॥११

११. पंडित बोलें- साहसी एवं शेर के समान पराक्रमी शहाजीराजे ने आदिलशाह और शहाजहा की सेना के साथ कितने वर्षों तक युद्ध किया? फिर उन दोनों में सन्धि किस प्रकार हुई? हे कवीन्द्र! ये आपसे सुनने की हमारी इच्छा है।

कवीन्द्र उवाच -

शाहः साहिजहानस्य येदिलस्य च सेनया।

अयुध्यत समास्तिस्रः सहस्रकरविक्रमः॥१२

१२. कवीन्द्र बोलें- सूर्य की तरह पराक्रमी शहाजीराजे ने शहाजहा और आदिलशाह की सेना के साथ तीन वर्षों तक युद्ध किया।

ततो स्वप्नपतिः स्वप्ने धूर्जटिस्तेन वन्दितः।

तदृशौ दशनोद्योतैर्दीपयंस्तमवोचत॥१३

१३. उसके बाद उसको स्वप्न में स्वप्नपति शंकर के दर्शन हो गए और उसने उनको नमन किया, तब अपने दांतों की कांति से उसकी आंखों को प्रदीप्त करते हुए बोलें।

धूर्जटिरुवाच -

अतीव दुर्जयो लोके दिल्लीन्द्रोऽसौ महाद्युतिः।

तस्मादायोधनावेशात् विरम त्वं महामते॥१४

यदनेन पुरा चीर्णं तपस्तीव्रं दुरात्मना।

तद्यावदस्त्यसौ तावन्न विनाशमुपैष्यति॥१५

सर्वेऽपि यवनास्तात पूर्वदेवान्वया इमे।

देवांश्च भूमिदेवांश्च विद्विषन्ति पदे पदे॥१६

यो हन्तुं यवनानेतानेतां भुवमवातरत्।

स एष भगवान् विष्णुः शिवसंज्ञः शिशुस्तव॥१७

करिष्यत्यचिरेणैव तदेतत्त्वच्चिकीर्षितम्।

तस्मादनेहसं कञ्चित् प्रतीक्षस्व महाभुज॥१८

१४-१८. शंकर बोलें- यह महातेजस्वी दिल्लीपति पृथ्वी पर अजेय है, इसलिए हे बुद्धिमान राजा! तुम इस युद्ध कार्य से ठहर जाओ। इस दुराचारी ने पहले की हुई तीव्र तपस्या के समाप्त होने तक इसका नाश नहीं होगा। तात! ये सभी यवन वंशी हैं और वे देव एवं ब्राह्मणों से पग-पग पर द्वेष करते हैं। इन यवनों का विनाश करने के लिए जो पृथ्वी पर अवतरित हुआ है वह भगवान् विष्णु, शिव नामधारी तेरा बेटा है। वह तेरे इष्टकार्य को शीघ्र ही पूर्ण करेगा इसलिए हे महाबलशाली! तुम कुछ समय प्रतीक्षा करो।



एवमुक्तवति प्रीतिमति देवे कपर्दिनि।

प्राबुध्यत प्रसन्नात्मा प्रभाते पृथिवीपतिः॥१९

१९. इस प्रकार उस प्रेममय शंकर देव के कहने पर राजा प्रसन्नचित्त होकर सबेरे जागृत हुआ।

ततो निजामविषयं शाहः स्वविषयं विना।

दिल्लीन्द्राय ददौ कञ्चित् येदिलाय च कञ्चना॥२०

२०. तब शहाजीराजे ने अपने राज्य को छोड़कर, निजामशाह राज्य के कुछ राज्य दिल्ली के बादशाह को एवं कुछ राज्य आदिलशाह को दे दिए।

हठशीलोऽपि तं शाहः प्रहाय हठमात्मनः।

व्यधाद्येदिलताम्राभ्यां सन्धिं त्रिनयनाज्ञया॥२१

२१. जिद्दी स्वभाव के होते हुए भी शहाजीराजे ने अपने जिद्दीपन को छोड़कर शंकर की आज्ञानुसार दिल्ली के बादशाह एवं आदिलशाह के साथ सन्धि कर ली।

ततो निजामविषयं सम्प्राप्य मुदितात्मसु।

परावृत्तेषु ताम्रेषु पराक्रमणकारिषु॥२२

असमर्थमिवात्मानं मन्यमानो महामतिः।

तदिदं चिन्तयामास येदिलो निजचेतसि॥२३

समर्थैः समराम्भोधौ निजामो यैर्निमज्जितः।

तेऽमी ताम्राननाः प्रायो मज्जयिष्यन्ति मामपि॥२४

तस्मादमुं महाबाहुं मालवर्मात्मजं नृपम्।

साहाय्ये स्वे निधास्यामि विधास्यामि विधित्सितम्॥२५

२२-२५. निजाम शाह का राज्य मिल जाने के कारण प्रसन्नचित्त, दूसरों के राज्य पर आक्रमण करने वाले मुगलों के वापस लौट जाने पर, बुद्धिमान आदिलशाह को, हम दुर्बल हैं ऐसा प्रतीत होने लग गया और उसने अपने मन में विचार

किया कि जिस सामर्थ्यवान मुगलों ने निजाम शाह को युद्ध रूपी समुद्र में डूबा दिया है, प्रायः वे मुझे भी डूबा देंगे। इसलिए इस महाबाहु शाहजी को अपनी सहायता के लिए साथ लेकर मैं अपने इच्छित कार्यों को सिद्ध कर लूंगा।

पूर्वमस्यैवावलम्बादिभरामः पिता मम।

विध्वस्तारातिरध्यास्त निर्विशङ्कः स्वमानसम्॥२६

सहसावमतः सोऽयं मतिमन्दतया मया।

मामुपेक्ष्य गतो मानादिभरामादनन्तरम्॥२७

महामानी महाबाहुरसौ शाहमहीपतिः।

कृत्वा मदधिकं स्नेहमिभरामेण वर्धितः॥२८

२६-२८. पहले मेरे पिता इब्राहिम शाह इसकी सहायता से ही शत्रुओं का विध्वंस करके मन से निश्चिंत होकर रहते थे। फिर उनकी मृत्यु के बाद मेरी मूर्खता के कारण मैंने उसका अपमान किया जिसके कारण वह अभिमानी शाहजी मुझे छोड़कर चला गया। इब्राहिम शाह ने इस स्वाभिमानी एवं पराक्रमी शाहजी पर मेरे से अधिक प्रेम करके उसका पालन पोषण किया था।

इति चेतसि सञ्चिन्त्य महमूदो महाद्युतिः।

अमात्यान् प्रेषयामास सद्यः शाहनृपं प्रति॥२९

२९. इस प्रकार मन में विचार करके उस तेजस्वी महमूदशाह ने तुरंत ही शाहजी के पास अपने अमात्य को भेज दिया।

अनुनीतः स तैस्तत्र मन्त्रिभिर्मन्त्रवेदिभिः।

प्रतिजज्ञे महाबाहुर्येदिलस्य सहायताम्॥३०

३०. उस नीति निपुण अमात्य ने शाहजी से विनम्रता पूर्वक निवेदन किया और उस पराक्रमी शाहजी ने भी आदिलशाह को सहायता करने का वचन दे दिया।

अथ शाहमहीपालमबलम्ब्यावलम्बदम्।

बत प्रतिपदं लेभे महमूदो महामुदम्॥३१

३१. सहायता करने वाले शहाजी राजा का आधार मिल जाने के कारण से महमूदशाह को पग-पग पर बड़ा आनंद होने लगा।

अथो फरादखानस्य सुतं समर्थवहम्।

निखिलानीकिनीमान्यं सेनान्यं रणदुलहम्॥३२

बलिना शाहराजेन महाराजेन संयुतम्।

प्रतापी प्रेषयामास जेतुं कर्णाटनीवृतम्॥३३

३२-३३. बाद में उस प्रतापी महमूदशाह ने संपूर्ण सेना के प्रिय एवं रणधुरंधर फरादखान के पुत्र सेनापति रणदुल्लाखान को, पराक्रमी शाहजी राजा के साथ कर्नाटक राज्य को जीतने के लिए भेज दिया।

तदा फरादखानेन याकुतेनाङ्कुशेन च।

हशेन्यम्बरखानेन मसूदेन तथा पुनः॥३४

प्रवारघाण्टिकेङ्गालगाढघोरफटादिभिः।

सुभटैस्सहितैस्तैस्तैः प्रतस्थे रणदूलहः॥३५

३४-३५. तब फरादखान, याकूतखान, अंकुशखान हुसैन, अंबरखान, मसाऊदखान, वैसे ही पवार, घाटगे, इंगले, गाढ़े, घोरपड़े आदि बड़े-बड़े योद्धाओं के साथ रणदुल्लाखान युद्ध के लिए निकल गया।

अथ सेनाधिपतिना सार्धं तेन महामनाः।

बली भृशबलो राजा प्राप कार्णाटमण्डलम्॥३६

३६. उस सेनापति के साथ महामना एवं बलशाली भोसले राजा भी कर्नाटक चला गया।

ततो बिन्दुपुराधीशं वीरभद्रं महौजसम्।

वृषपत्तनपालं च प्रसिद्धं केङ्गनायकम्॥३७

कावेरीपत्तनपतिं जगद्देवं महाभुजम्।

श्रीरङ्गपत्तनेन्द्रं च क्रूरं कण्ठीरवाभिधम्॥३८

तञ्जापुरप्रभुं चापि वीरं विजयराघवम्।

तथा तञ्जीपरिवृढं प्रौढं वेङ्कटनायकम्॥३९

त्रिमल्लनायकाह्वं च मधुरानाथमुद्धतम्।

पीलुगण्डाखण्डलं च बिकटं वेङ्कटाह्वयम्॥४०

धीरं श्रीरङ्गराजं च विद्यानगरनायकम्।

प्रसिद्धं तम्मगौडं च हंसकूटपुरेश्वरम्॥४१

वशीकृत्य प्रतापेन तथान्यानपि पार्थिवान्।

शाहः सन्तोषयामास सेनान्यं रणदूलहम्॥४२

३७-४२. बिंदुपुर के राजा महा तेजस्वी वीरभद्र, वृषपत्तन का राजा प्रसिद्ध केंग नाइक, कावेरी पत्तन का राजा महाबाहु जगदेव, श्रीरंगपट्टन का राजा क्रूर कंठीरव, तंजावर का राजा वीर विजयराघव, तंजी का राजा प्रौढ वेङ्कटनायक, मदुरई का राजा घमंडी त्रिमलनायक, पीलूगंडा का राजा उनमुक्त वेङ्कटप्पा, विद्यानगर का राजा जिद्दी श्रीरंगराजा, हंसकूट का राजा प्रसिद्ध तम्मगौड़ा इनको और अन्य राजाओं को शाहजी ने अपने पराक्रम से अधीन करके सेनापति रणदुल्लाखान को संतुष्ट किया।

कृत्वाऽथ वीरसंहारकारियुद्धमहर्दिवम्।

युद्धशौण्डात् किम्पगौण्डात् गृहीतं सुमनोहरम्॥४३

रणदूलहखानेन पारिबर्हमिवार्पितम्।

सोऽध्यास्त विजयी राजा बिंगरुळाभिधं पुरम्॥४४

४३-४४. फिर रात दिन वीरों का संहार करने वाले शाहजी ने युद्ध करके युद्ध निपुण किंपगौंडा के पास से अतिशय रमणीय बेंगलुरु नाम का शहर छिन लिया। रणदुल्लाखान ने भी शाहजी को पारितोषिक के रूप में वह नगर दे दिया और फिर उसी जगह वह विजय राजा रहने लगा।

अथ तस्मिन् पुरवरे पटुप्राकारगोपुरे।

सुधावदातसौधाग्रपताकाल्लिखिताम्बरे॥४५

तत्तत्कारुकलाकीर्णरर्म्यहर्म्यमयान्तरे।

विटङ्कस्थितबंहिष्ठपारावतकृतस्वरे॥४६

वातायनोत्पतन्नीलकण्ठकूजितपूतिते।

विस्तीर्णापणविन्यस्तपण्यवस्तुसमन्विते॥४७

प्रतिसद्योल्लसत्कूपे विकसद्दीर्घदीर्घिके।

नैकशृंगाटकोदञ्चज्जलयन्त्रोच्छल्लज्जले॥४८

प्रफुल्लनिष्कुटकुटच्छायच्छन्नमहीतले।

भित्तिविन्यस्तसच्चित्रलुभ्यल्लोकविलोचने॥४९

नानावर्णाश्मसम्बद्धस्निग्धसुन्दरमदुरे।

विसङ्कटपुरद्वारकूटकुट्टिममपण्डिते॥५०

चयाट्टमस्तकन्यस्तनालायन्त्रसुदुर्गमे।

समीकनिपुणानीकप्रकरप्रतिपालिते॥५१

समन्तादतलस्पर्शपरिखावारिभासुरे।

अपारसागराकारकासारपरिशीलिते॥५२

अनिलोल्लासितलताललितोद्यानमण्डले।

कनकाचलसंकाशदेवतायतनाञ्चिते॥५३

संवसन् वासवसमः स एष नृपसत्तमः।

निजैः परिजनैः सार्धं विविधं मुदमाददे॥५४

स कदाचिन्मृगयया कदाचित् साधुसेवया।

कदाचिदर्चया शम्भोः कदाचित् काव्यचर्चया॥५५

४५-५५. उस नगर की सीमा एवं नगर द्वार मजबूत थे। सफेदी से सफेद किए हुए महल के शिखर पर स्थित पताका गगन भेदी थी और वह महल सभी प्रकार के शिल्पकलाओं से परिपूर्ण रमणीय हवेलियों से व्याप्त था, पक्षी गृह में बैठे हुए असंख्य कबूतर वहां घूमते थे, खिड़की से उड़ने वाले मोरों की केका आवाज से वह महल मनोहर था, विस्तीर्ण दुकानों में बेचने के लिए वस्तुएं रखी गई थी, वहां प्रत्येक घर में कुएं और उस शहर में सुंदर एवं विस्तीर्ण बावड़ियां थी, उसी प्रकार वहां अनेक चौक थे और उनमें स्थित फव्वारों से पानी उड़ता था, गृह उद्यान के विकसित पेड़ों की छाया से भूमि आच्छादित थी, महल की दीवार पर चित्रित उत्कृष्ट चित्रों से लोगों की आंखें लुब्ध हो जाया करती थी, अनेक प्रकार के रंगों से युक्त पत्थरों से बांधी हुई सुंदर अश्वशाला थी, बड़े-बड़े नगर द्वारों के शिखर पाषाणों से सुशोभित थे, महल के मस्तक पर रखे हुए तोपों से वह अत्यंत दुर्गम हो गया था, युद्ध में निपुण सेना के समूह ने उसकी रक्षा की थी, चारों ओर गहरे पानी की खाइयों से वह सुशोभित दिख रहा था, अपार समुद्र के समान विस्तीर्ण तालाब से वह शोभित हो रहा था, वहां वायु के वेग से हिलने डुलने वाली लताओं युक्त सुंदर बगीचे थे, मेरुपर्वत के समान मंदिरों से वह शहर मंडित था, इस प्रकार उस नगर में निवास करने वाला इंद्र जैसा वह नृपश्रेष्ठ अपने परिजनों के साथ आनंद को प्राप्त कर रहा था।

कदाचिन्नर्तकीनृत्यदर्शनोत्सवंलीलया।

कदाचिन्नैकविधया शरसन्धानशिक्षया॥५६

कदाचिदायुधागारविन्यस्तायुधवीक्षया।

कदाचिदात्मसंग्राह्यतत्तत्सैन्यपरीक्षया॥५७

कदाचित् पुष्पितोद्दामनगरोद्यानयात्रया।

कदाचित् सारसाक्षीभिः शृङ्गाररसदीक्षया॥५८

कदाचिद्योगशास्त्रोक्तकलया योगमुद्रया।

प्रभुस्तत्तद्रसमयं समयं समनीनयत्॥५९

५६-५९. कभी नृत्यांगनाओं के नृत्य के दर्शन से आनंदित होकर तो कभी अनेक प्रकार के शरसंधान की शिक्षा से, कभी शस्त्रागार में रखे हुए शस्त्रों को देखने से, कभी अपनी सेना के लिए सैनिकों की सैन्य परीक्षा से, कभी फूलों से सुगंधित नगर के उद्यान में भ्रमण से, कभी सुंदर स्त्रियों के साथ शृंगार रस के आस्वादन से और कभी योगशास्त्र में कथित पद्धति वाली योग मुद्रा से, इस प्रकार वह राजा सभी प्रकार का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत कर रहा था।

जननी शम्भुशिवयोस्तत्र यादवनन्दिनी।

जग्राह हृदयं पत्युः शुद्धान्ते सुमहत्यपि॥६०

६०. शाहजी की अनेक पत्नियां थीं किंतु जो संभाजी और शिवाजी की मां एवं यादवराज की पुत्री थी, उसने अपने पति के शुद्ध हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया था।

हलिना हरिणा चापि वसुदेवो यथान्वहम्।

व्यराजत तथा शाहः शम्भुना च शिवेन च॥६१

६१. जैसे बलराम और श्रीकृष्ण के संयोग से वसुदेव प्रतिदिन सुशोभित होता था वैसे ही शिवाजी और संभाजी के संयोग से शाहजी सुशोभित हो रहा था।

स तु शम्भोः कनीयांसं गरीयांसं गुणश्रिया।

बहु मेने महाराजः शिवशर्माणमात्मजम्॥६२

६२. संभाजी से आयु में छोटे किंतु गुणों में बड़े अपने पुत्र शिवाजी से शाहजीराजे अत्यंत प्रेम करते थे।

यदाप्रभृति सञ्जातः स एष तनयः शिवः।

तदाप्रभृति शाहस्य समृद्धाः सर्वसम्पदः॥६३

६३. जब पुत्र शिवाजी का जन्म हुआ, तब से ही शाहजीराजे के सभी ऐश्वर्य वृद्धि को प्राप्त होते गए।

अतिष्ठन् द्वारि बहुशो मन्दराचलसुन्दराः।

विजिताम्भोरुहरुचो मदवारिमुचो गजाः॥६४

६४. मंदार पर्वत के समान सुंदर, कमल की शोभा को जिसने जीत लिया है, जिसके गंडस्थल से मदजल नीचे गिर रहा है ऐसे अनेक हाथी उसके द्वार पर खड़े थे।

आसन् सहस्रशश्चापि मन्दुरायां मनोहराः।

वातो इवाशुगतयः सैन्धवाः समरोद्धुराः॥६५

६५. वायु की तरह वेगवान और युद्ध में अडिग रहने वाले हजारों घोड़े उसके अश्वशाला में विद्यमान थे।

ववृधे चाधिकं कोषस्तोषेण सह नित्यशः।

प्रतापः पप्रथेऽत्यर्थं प्रभावश्च दिने दिने॥ ६६

६६. उसके सन्तोष के साथ साथ उसका क्रोध भी प्रतिदिन अत्यधिक बढ़ने लगा एवं उसके साथ प्रताप एवं प्रभाव भी प्रतिदिन अतिशय वृद्धि को प्राप्त होने लगे।

दुर्ग्रहाण्यपि दुर्गाणि सुग्रहत्वं प्रपेदिरे।

विजयस्सर्वदैवासीत् स्वप्नेऽपि न पराभवः॥६७

६७. दुर्जेय किले भी उसके लिए सुलभ होने लगे, उसका सर्वदा ही विजय होने लगा और सपने में भी उसकी पराजय नहीं होती थी।

पुष्पाणां च फलानां च सस्यानां चाभिवृद्धयः।

साधनेन विना सिद्धिमीयुस्सर्वाश्च सिद्धयः॥६८

६८. फल, फूल एवं धान्यों की वृद्धि होने लगी और साधनों के बिना ही उसके सारे मनोरथ सिद्धि को प्राप्त होने लगे।

एवं समृद्धतां नीतः पुराणपुरुषात्मना।

सुतेन तेन सुतरां मुमुदे मालनन्दनः॥६९

६९. इस प्रकार विष्णु रूपी पुत्र के संयोग से वृद्धि को प्राप्त हुआ मालोजी का पुत्र शाहजी अपने पुत्र को देखकर अत्यंत आनंदित होने लगा।

ततस्तं तनयं वीक्ष्य सगुणं सप्तहायनम्।

लिपिग्रहणयोग्योऽयमिति भूपो व्यचिन्तयत्॥७०

७०. फिर उस गुणवान पुत्र को सात वर्ष का हुआ देखा तो, वह अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के लिए योग्य है ऐसा राजा को प्रतीत होने लगा।

स तं पुत्रं मन्त्रिपुत्रैः सवयोभिः समन्वितम्।

न्यवेशयत् गुर्वङ्के मेधाविनमलोहलम्॥७१



७१. मंत्रियों के सम वयस्क पुत्रों के साथ बुद्धिमान एवं स्पष्ट उच्चारण करने वाले उस पुत्र को गुरु के गोद में बिठाया।

आख्याति लिखितुं यावदाचार्यो वर्णमादिमम्।

तावद् द्वितीयमप्येष विलिख्य तमदर्शयत्॥७२

७२. गुरुजी, जब उसको पहला अक्षर लिखने के लिए बोलते थे तो उसके साथ वह दूसरे अक्षर को भी लिखकर दिखा देता था।

सर्वासामपि विद्यानां द्वारभावमुपागताम्।

लिपिं यथावदखिलां ग्राहयामास तं गुरुः॥७३

७३. सर्व विद्याओं का जो द्वार है ऐसे मुलाक्षरों को गुरुजी ने उसको उत्तम रीति से पढ़ा दिए थे।

तमथ सहजमेधाशालिनं सुस्वभावं।

नृपमृगपतिशावं वागगम्यानुभावम्।

गुरुपचितचित्तः शिक्षितानां समूहे।

द्रुतधृतलिपिविद्यं वीक्ष्य वैलक्ष्यमेहे॥७४

तब स्वभाव से बुद्धिमान, अच्छे स्वभाव वाला और अनुपम प्रभाव से युक्त शाहजी के पुत्र को सभी विद्यार्थियों के बीच इतने जल्द मुलाक्षरों सिखा हुआ जानकर गुरु को अत्यंत अभिमान हुआ और यह कुछ विलक्षण बालक है ऐसी उसके प्रति पहचान बना ली।

इत्यनुपुराणे निवासकरपरमानन्दप्रकाशितायां

संहितायां नवमोऽध्यायः॥९॥

## अध्याय:-१०

कवीन्द्र उवाच -

शिववर्मा यदा वर्षं द्वादशं प्रत्यपद्यत।

तदा नृपशशाहवर्मा नियोगेन पिनाकिनः॥१

अमुं शम्भुकनीयां समाहूय शिवलक्षणम्।

अर्कद्युतिमदर्कजः पुण्यदेशेश्वरं व्यधात्॥२

१-२. कवीन्द्र बोलें- जब शिवाजी को बारहवां वर्ष चालू हो गया तब शाहजीराजे ने शंकर की आज्ञा से सूर्य के समान तेजस्वी एवं शुभ लक्षणों से युक्त संभाजी के छोटे भाई को बुलाकर पुणे प्रांत का अधिकार सौंप दिया।

मनीषिण उचुः -

यथा देशात् भगवतो देवस्य त्रिपुरद्विषः।

पुण्यदेशं प्रति नृपः प्रेषयामास तं शिवम्॥३

यथा च पुण्यविषयं प्राप्तस्स पितुराज्ञया।

कवीन्द्र परमानन्द तथा त्वमभिधेहि नः॥४

३-४. पंडित बोलें- भगवान शंकर की आज्ञा से शिवाजी को शहाजी ने पुणे कैसे भेजा? और पिता की आज्ञा से वह शिवाजी पुणे कैसे गया? हे कविश्रेष्ठ! परमानंद हमें बताओ।

कवीन्द्र उवाच -

एकदाभ्यर्च्य भवने भगवन्तं वृषध्वजम्।

शयानस्सुखशय्यायां सुकृती शाहभूपतिः॥५

प्रसन्नपञ्चवदनं दशहस्तं त्रिलोचनम्।

मन्दाकिनीजलस्निग्धजटाजूटमनोहरम्॥६

शीतांशुशकलोत्तंसं त्रिपुण्ड्रललितद्युतिम्।

हरिन्मणिनिभग्रीवं सरीसृपविभूषणम्॥७

वराभयप्रदं वीरं विविधायुधधारिणम्।

द्वीपिचर्मोत्तरासङ्गं द्विपचर्माधराम्बरम्॥८

निदानं सर्वमुक्तीनां निधानं सकलश्रियाम्।

योगिनं योगिनामिद्रमिन्द्रोपेन्द्रादिवन्दितम्॥९

समस्तलोकसहितं सहितं गिरिकन्यया।

अपश्यद्विस्मितः स्वप्ने पुरस्तात्त्रिपुरद्विषम्॥१०

५-१०. कवीन्द्र बोलें- एक बार भगवान शंकर की पूजा करके पुण्यवान शाहजी राजा सुखशय्या पर सो रहे थे तब जिसके पंचमुख प्रसन्न है, जिसको दस हाथ एवं तीन आंखें हैं, जो गंगाजल से स्निग्धता को प्राप्त हुई जटा के संयोग से मनोहर दिख रहा है, जिसके मस्तक पर अर्धचंद्राकार दिख रहा है, जिसके कपाल को त्रिपुंड्र के संयोग से शोभा प्राप्त हुई है, जिसका कंठ मरकतमणि के सामान हरा है, जिसने सांपों के आभूषण पहन रखे हैं, जिसने अनेक प्रकार के शस्त्रों को धारण किया हुआ है, जो वरदाता, अभयदाता एवं बलशाली है, जिसने व्याघ्र चर्म को ओढ़ रखा है एवं गज चर्म को पहन रखा है, जो सर्व मुक्ति का आदि कारण है और सभी ऐश्वर्यों का खजाना है, जिसको इंद्र विष्णु आदि देव नमन करते हैं, योगियों में सर्वश्रेष्ठ योगी है ऐसे त्रिपुरारी शंकर को सभी लोकों के साथ एवं पार्वती के साथ स्वप्न में वर्तमान देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया।

दृष्ट्वा तमीश्वरं साक्षात् स्वयं समभिवन्द्य सः।

पुरोबद्धाञ्जलिपुटस्तिष्ठति स्मातिनिर्वृतः॥११

११. उस शंकर को प्रत्यक्ष देखकर स्वयं ने उसका वंदन किया और अतिशय आनंद को प्राप्त होता हुआ वह हाथ जोड़कर उसके सामने खड़ा हो गया।

ततः स भगवान् भर्गः स्वभक्तमवनीश्वरम्।

वचनेनानुजग्राह निरवग्रहशक्तिभृत्॥१२

१२. तत्पश्चात् अप्रतिष्ठित शक्ति वाले शंकर अपने भक्त शाहजीराजे पर अनुग्रह करके बोलें।

ईश्वर उवाच -

सूर्यवंश्य महाबाहो शहाराज महामते।

समाकर्णय मद्वाचमिमां कुशलमस्तिते॥१३

य एष भ्राजतेभ्यर्णे कनीयांस्तनयस्तव।

तमेनं लक्षणोपेतमवेहि पुरुषोत्तमम्॥१४

वर्धमानः क्रमेणैव त्वत्पुत्रोयमुरुक्रमः।

समाक्रम्यावनीं सर्वां यवनान्निहनिष्यति॥१५

इयं भगवती देवी गिरिजा भक्तवत्सला।

समये समयेभ्येत्य तमिमं पालयिष्यति॥१६

हर्ता धरित्रीभारख्य संहर्ता प्रतिभूभृताम्।

मद्भक्त एष सर्वेषामप्यधृष्यो भविष्यति॥१७

तस्मादमुं महाबाहुं महाशयशिवाह्वयम्।

पुण्यदेशाधिपत्येन महनीयेन योजय॥१८

१३-१८. हे सूर्यवंशी महाबाहु, बुद्धिमान शाहजीराजा! मेरे इन वचनों को ध्यान से सुनो इसमें ही तुम्हारा कल्याण है। यह जो तेरा छोटा बेटा तेरे समीप सुशोभित हो रहा है उसको शुभ लक्षणों से युक्त भगवान विष्णु है ऐसा जानो। यह तेरा पुत्र विष्णु धीरे-धीरे वृद्धि को प्राप्त होता हुआ संपूर्ण पृथ्वी पर आक्रमण करके यवनों का संहार करेगा और यह भक्तवत्सला पार्वती देवी समय-समय पर समीप आकर उसकी रक्षा करेगी। पृथ्वी के भार का हरण करने वाला एवं शत्रु पक्ष के राजाओं का संहार करने वाला यह मेरा भक्त सभी के लिए अजेय होगा इसलिए हे महाशय! इस शिवाजी नाम के महाबहु को पुणे प्रांत की बड़ी जिम्मेदारी सौंप दो।

तमित्युक्त्वा महेशानस्तदा मुक्तामयीं स्रजम्।

तस्य राजकुमारस्य कण्ठे स्वयमयोजयत्॥१९

१९. उसको इस प्रकार बोलकर, शंकर ने मोतियों की माला को स्वयं उस राजकुमार के गले में डाल दिया।

एवमाविर्भवद्भार्दभरे देवे कपर्दिनि।

प्राबुध्यत धरापालो मुहूर्ते ब्रह्मदैवते॥२०

२०. इस प्रकार शंकर के अंतःकरण में प्रेम के आविर्भूत होने से वह राजा ब्रह्म मुहूर्त में ही जागृत हो गया।

विशिष्टः स्वेन तपसा विस्मयाविष्टमानसः।

तामेव मूर्तिमीशस्य ध्यायन्नेष मुहुर्मुहुः॥२१

प्रातः प्रभाकरन्नाम प्रभाकरसमप्रभम्।

पुरोहितं समानाय्य शशंस स्वप्नमात्मनः॥२२

२१-२२. स्वयं की तपस्या से विशिष्ट ऐसा वह विस्मय युक्त राजा शंकर की मूर्ति का बारंबार ध्यान करते हुए सवेरे सूर्य के समान तेजस्वी प्रभाकर नाम के पुरोहित को बुलाकर अपने सपने में घटित घटना को बताया।

अथानुमोदितस्तेन प्रहृष्टेन पुरोधसा।

पुण्यदेशाधिपत्येन शाहः शिवमयोजयत्॥२३

२३. तब आनंदित होकर उस पुरोहित के अनुमोदन करने पर शहाजी ने शिवाजी को पुणे प्रांत का अधिपति नियुक्त किया।

अथ तस्मिन्नाधिपत्ये पित्रादत्ते प्रतापिना।

प्रयातुकामः स्वं राष्ट्रं शिवराजो व्यराजत॥२४

२४. प्रतापी पिता के द्वारा उसको आधिपत्य देने पर, स्वदेश जाने की इच्छा वाला वह शिवाजी विशेष सुशोभित हो रहा था।

ततः कतिपयैरेव गजवाजिपदातिभिः।

मौलैराप्तैरमात्यैश्च ख्यातैरध्यापकैरपि॥२५

बिरुदैश्च ध्वजैरुच्चैः कोषेणापि च भूयसा।

तथा परिजनैरन्यैरनन्यसमकर्मभिः॥२६

समवेतममुं शाहभूपतिश्शोभने दिने।

प्राहिणोत्पुण्यदेशाय पुण्यकारिणमात्मजम्॥२७

२५-२७. तत्पश्चात् कुछ हाथी, घोड़े एवं पैदल सेना, पीढ़ी प्राप्त विश्वासपात्र अमात्य, विख्यात अध्यापक, उच्च ध्वज, विपुल कोष तथा अद्वितीय कर्मों को करने वाले अन्य परिजन इन सबके साथ उस पुण्यशील बेटे को शाहजी राजे ने शुभ दिन पर पुणे भेज दिया।

ततः कतिपर्यैरेव दिनैर्दिनकृदन्वयः।

अयादेशं महाराष्ट्रं तस्मात् कर्णाटमण्डलात्॥२८

२८. फिर कुछ दिनों बाद वह सूर्यवंशी शिवाजी राजा कर्नाटक प्रांत से महाराष्ट्र के लिए चल दिया।

सशक्तित्रितयोपेतः समेतस्सैन्यसञ्चयैः।

शिवस्स्वया श्रिया सार्धं पुण्याहं पुरमासदत्॥२९

२९. प्रभाव, उत्साह एवं मंत्र इन तीन शक्तियों से युक्त तथा सेना समूह एवं स्वयं की राजलक्ष्मी से युक्त वह शिवाजी राजा पुणे शहर पहुंच गया।

चक्रप्रियकरः सद्यः समुल्लासितमण्डलम्।

नावेदयदमुं लोकबन्धुं लोको व्यलोकत॥३०

३०. राष्ट्र का हित करने वाले एवं राष्ट्र को प्रकाशित करने वाले उस लोक मित्र को लोगों ने देखा किंतु पहचान नहीं पाए।

ततोनुकूलप्रकृतिः कुर्वन् प्रकृतिरञ्जनम्।

अवर्धत क्रमेणैष विक्रमी यशसा सह॥३१

३१. तत्पश्चात् अनुकूल मंत्रियों के सहायता से प्रजाओं को आनंद देता हुआ वह शिवाजी अपने यश के साथ क्रमशः वृद्धि को प्राप्त होने लगा।

महाराष्ट्रो जनपदस्तदानीं तत्समाश्रयात्।

अन्वर्थतामन्वभवत् समृद्धजनतान्वितः॥३२

३२. तब उसके साम्राज्य में महाराष्ट्र राज्य की प्रजा समृद्ध हुई और महाराष्ट्र यह नाम सार्थक सिद्ध हुआ।

श्रयन्तः प्रश्रयोपेतं गुरवस्तं गुणैस्मह।

अनन्यनिष्ठमनसः समगच्छन् कृतार्थताम्॥३३

३३. उस विनयशील एवं गुणवान शिवाजी के अधीनस्थ गुरुजन कृतार्थ हो गए क्योंकि उनके द्वारा सिखाई हुई, सर्व विद्याओं एवं कलाओं में वह शिवाजी निपुण हो गया।

श्रुतिस्मृतिपुराणेषु भारते दण्डनीतिषु।

समस्तेष्वपि शास्त्रेषु काव्ये रामायणे तथा॥ ३४

व्यायामे वास्तुविद्यायां होरासु गणितेष्वपि।

धनुर्वेदचिकित्सायां मते सामुद्रिके पुनः॥३५

तासु तासु च भाषासु छन्दस्सु च सुभाषिते।

चर्यास्त्रिभरथाश्चानां तथा तल्लक्षणेष्वापि॥३६

आरोहणे प्रतरणे चक्रमे च विघलने।

कृपाणचापचकेषु प्रासपट्टिशशक्तिषु॥३७

युद्धे नियुद्धे दुर्गाणां दुर्गमीकरणेषु च।

दुर्लक्ष्यलक्ष्यवेधेषु दुर्गमाभिगमेष्वापि॥३८

इङ्गितेषु च मायासु विषनिर्हरणादिषु।

तत्तद्रत्नपरीक्षायामवधाने लिपिष्वपि॥३९

प्रवीणः स स्वयं तांस्तान् गूरून् गुरुयशोभरैः।

अयोजयत् भृशं तत्तत् प्रत्यभिज्ञानवान् विभुः॥४०

३४-४०. श्रुति, स्मृति, पुराणों, भारत, राजनीति, सभी शास्त्र, काव्य, रामायण तथा व्यायाम, वास्तु विद्या, फलित ज्योतिष, अंगों सहित धनुर्वेद, उसी प्रकार सामुद्रिक शास्त्र, अनेक प्रकार की भाषाएं, पद्य, सुभाषित, हाथी घोड़े एवं रथ की सवारी तथा उनके लक्षणों में, चढ़ना, उतरना, दौड़ना एवं छलांग लगाना, तलवार, धनुष, चक्र, भाला, पट्टा एवं शक्तियों, युद्ध, बाहुयुद्ध, किलों को अभेद्य बनाना, दुर्लभ लक्ष्यों पर निशाना लगाना, दुर्गम स्थानों से निकलना, इशारों को समझना, जादूगिरी, विष को उतारना, अनेक प्रकार के रत्नों की परीक्षा, लिपियों का ज्ञान इन सभी शास्त्रों एवं कलाओं में स्वयं निपुण होकर सभी गुरुजनों को बड़ा यश प्रदान किया और उसने ज्ञानपूर्वक उनका बारंबार उपयोग भी किया।

स एष यौवनारम्भे दधानोऽभिनवां श्रियम्।

व्यभाद्यथा वासन्तविभवे सुरुभूरुहः॥४१

४१. वसंत ऋतु के वैभव से देवतरु जैसे सुशोभित होता है वैसे ही यह शिवाजी नव यौवन के आरंभ में अभिनव शोभा से सुशोभित होने लगा।

तमुल्लंघितकौमारमुद्भवन्नवयौवनम्।

मीनकेतनलावण्यश्रीविलासमनोहरम्॥४२

सती शीलवती रम्यरूपा चातिगुणोज्ज्वला।

अभजद् भूपतिं भार्या प्रवारकुलसम्भवा॥४३

४२-४३. कौमार अवस्था की समाप्ति पर जिसमें नवयौवन प्रस्फुटित हो रहा है और जिसके अंग कामदेव जैसे लावण्य विलसित होकर मनोहर हैं ऐसे उस शिवाजी राजा को सती, शीलवती, रमणीय रूपवती एवं अत्यंत गुण शालिनी पवार कुल में उत्पन्न पत्नी प्राप्त हुई।

पूर्वजन्मप्रणयिनीं स इमां वरवर्णिनीम्।

लब्ध्वा मुदमुपादत्त श्रीकृष्ण इव रुक्मिणीम्॥४४

४४. रुक्मिणी की प्राप्ति से श्रीकृष्ण जैसे आनंदित हुए, वैसे ही पूर्वजन्म की इस सुंदर पत्नी को प्राप्त करके शिवाजी आनंदित हुए।



प्रादुर्भवत् प्राग्भवसंस्तवाभ्याम्।

मिथोनुकूलत्वमुपगताभ्याम्॥

अधत्त ताभ्यामथदम्पतीभ्याम्।

संभूय शोभां महतीं त्रिवर्गः॥४५

४५. पूर्व जन्म से ही परिचित होने से एवं पुनः इस युगल के एकत्र आ जाने से उन दोनों में परस्पर प्रेम उत्पन्न हो गया और फिर धर्म अर्थ एवं काम इन तीन पुरुषार्थों के भी इस युगल में एकत्र आ जाने से वे अत्यधिक सुशोभित होने लगे।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निवासकरपरमानन्दप्रकाशितायां

संहितायां दशमोऽध्यायः॥ १० ॥

## अध्याय:-११

मनीषिण उचुः

संप्रेष्य पुण्यविषयं सनयं तनयं शिवम्।

शाहराजः किमकरोत् कर्णाटविषये वसन्॥१

पंडित बोले – अपने बुद्धिमान शिवाजी बेटे को पुणे प्रांत भेजकर शाहजी राजे ने कर्नाटक में रहकर क्या किया?

कथं च महमूदोऽपि तस्मिन् विजितविद्विषि।

प्रसिद्धायोधनोत्साहे शाहे स्वयमवर्तत॥२

जिसने शत्रुओं को जीत लिया है एवं जिसके युद्ध का पराक्रम प्रसिद्ध है ऐसे शहाजी के साथ स्वयं महमूदशाह किस प्रकार का व्यवहार करता था?

कवीन्द्र उवाच -

षाड्गुण्यस्य प्रयोगेण तत्तन्मन्त्रबलेन च।

वशीचकार सकलं शाहः कर्णाटमण्डलम्॥३

कविंद्र बोले- संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय एवं द्वैध इन षाड्गुण्यों का प्रयोग करके तथा विविध प्रकार की कूट नीतियों के बल पर शाह जी ने संपूर्ण कर्नाटक को अपने अधीन कर लिया था।

प्रसूनमिव संप्राप्य प्रणयी प्रणतिस्पृशा।

शिरसा प्रतिजग्राह जगद्देवोऽस्य शासनम्॥४

शरणागत जगद्देव ने प्रणाम करके इसके शासन को फूलों की तरह सिर पर धारण किया।

दुर्धर्षोऽपि विधेयोऽस्य बभूव मधुराधिपः।

प्रतिपदे महाशूरपतिरप्यस्य वश्यताम्॥५

मदुरई का अजेय राजा भी इसके आदेशों का पालन करने लगा एवं मैसूर के राजा ने भी इसकी अधीनता को स्वीकार कर लिया।

रणदूलहखानेन खलेनोपहतं बलात्।

भद्रासनं स्वमध्यास्त वीरभद्रोऽस्य संश्रयात्॥६

दुष्ट रणदुल्लाखान के द्वारा बलात लिए गए अपने सिंहासन पर शिवाजी के आश्रय से वीरभद्र पुनः बैठ गया।

तं तं मन्त्रं तत्र तत्र प्रयुञ्जानस्य धीमतः।

बहवोऽस्यानुभावेन जहुर्यवनजं भयम्॥७

प्रसंगानुसार नीतियों का प्रयोग करनेवाले बुद्धिमान शाहजी के प्रभाव से अनेक राजाओं ने यवनों के भय को त्याग दिया था।

शाहराजस्य मन्त्रेण भवन्नन्यसुदुःसहः।

सर्वाणि स्वामिकार्याणि चकार रणदूलहः॥८

अन्यों के लिए कठोर रणदुल्लाखान, अपने सभी स्वामी के कार्यों को शाहजी की सलाह से करने लगा।

अथ कालगतिं प्राप्ते सेनान्यां रणदूलहे।

कार्णाटकान् नरपतीन् स्ववशीकर्तुमञ्जसा॥९

यं यं सेनापतिं तत्र प्राहिणोत् किल येदिलः।

स स तत्कांक्षिताकांक्षी शाहमेवान्ववर्तत॥१०

बाद में सेनापति रणदुल्लाखान की मृत्यु हो जाने पर कर्नाटक के राजाओं को शीघ्र अपने अधीन करने के लिए जिन जिन सेनापतियों को आदिलशाह ने वहां भेजा, वे सब सेनापति, उनके अभीष्ट कार्यों की सिद्धि हेतु शाहजी के नीतियों का अनुसरण करने लगे।

ततो भृशबलं भूपं नियन्तुमनयं स्पृशन्।

इभरामसुतो दर्पात् मुस्तुफाखानमादिशत्॥११

तब अनैतिकता का आश्रय लेने वाले इब्राहिम आदिलशाह के पुत्र ने अभिमान से भोसले राजा को कैद करने का मुस्तफाखान को आदेश दिया।

अथानकनिनादेन सागरं प्रतिगर्जयन्।

जयशब्देन योधानां दिङ्गमुखानि प्रपूरयन्॥१२

तरलाभिः पताकाभिस्तडितः परितर्जयन्।

उदग्रैश्शुंडिशुण्डाग्रैर्मुदिरान् प्रतिसारयन्॥१३

पांसुभिस्तुरगोद्धूतस्सप्तसप्तिं विलोपयन्।

वाहिनीनिवहैरध्ववाहिनीः परिशोषयन्॥१४

निम्नोन्नतां वसुमतीमतीव समतां नयन्।

प्रपेदे सप्रतिभटैर्वृतं कर्णाटनीवृतम्॥१५

फिर दुंदुभी ध्वनि से समुद्र को प्रतिध्वनित करता हुआ, योद्धा के जय शब्द से दिशाओं को संपूरित करते हुए, चंचल ध्वजों से आकाशीय विद्युत को तिरस्कृत करते हुए, हाथियों के सूंड के अग्रभाग से बादलों को हटाते हुए, घोड़ों के द्वारा उड़ाई हुई धूल से सूर्य को छुपाते हुए, सेना समूहों से मार्गस्थ नदियों के जल को समाप्त करते हुए, उच्चावच भूमि को समतल करते हुए, वह मुस्तफाखान, शत्रु योद्धाओं से व्याप्त कर्नाटक पहुंच गया।

ततः श्रुत्वा तमायान्तमनेकानीकपान्वितम्।

प्राप्तसेनापतिपदं येदिलप्रत्ययास्पदम्॥१६

प्रथितं मुस्तफाखानं महामानं महान्वयम्।

कपटानोकहभुवां खुरासानभुवां वरम्॥१७

अविश्रब्धोऽपि विश्रम्भमात्मनः संप्रदर्शयन्।

प्रत्युज्जगाम संरभात् ससैन्यश्शाहभूपतिः॥१८

सेनापति पद को प्राप्त हुआ, आदिलशाह का विश्वासपात्र, कपट रूपी वृक्ष की भूमि, खुरासान प्रांत का अर्क, महामानी, उच्च कुल में उत्पन्न, प्रसिद्ध मुस्तफाखान, यह अनेक सेनापतियों के साथ आ रहा है, इस प्रकार सुनकर अपना अविश्वासी होते हुए भी विश्वास दिखाते हुए, शाहजी राजा अपनी सेना के साथ जल्दी से उसके सामने गया।

अथाधिकाधिकं स्नेहं मिथो दर्शयतोस्तयोः।

सख्योरिव महान् जज्ञे पथि संदर्शनोत्सवः॥१९

परस्पर अत्यधिक स्नेह दिखाने वाले उन दोनों के मिलन का कार्यक्रम, दो मित्रों के मिलन के समान मार्ग में बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

उभावपि तदा तत्र वस्त्राण्याभरणानि च।

कुंजरास्तुरगांश्चोच्चैरन्योन्यमुपजहतुः॥२०

उस समय उन दोनों ने वहां वस्त्र, आभूषण, हाथी, घोड़े, ये सब परस्पर विपुल मात्रा में अर्पित किए।

तदानीं मुस्तुफानीकनिवेशस्यांतिके निजाम्।

सेनां निवेशयामास भूभृत् भृशबलो बली॥२१

उस समय मुस्तफाखान की सेना के निवास स्थल के समीप ही बलशाली शहाजीराजे भोसले ने अपनी सेना का निवास स्थल बनाया।

अद्राक्षीन्मुस्तुफाखानच्छिद्रान्वेषी यदा यदा।

सन्नद्धमेव सुतरां शाहराजं तदा तदा॥२२

दोषदर्शी मुस्तफाखान जब जब देखता था तब तब उसको शाहजी राजा अत्यंत तैयारी में दिखा।

प्रत्याययितुमात्मानं परिदर्शितसौहृदः।

स तत्तत्कार्यकरणे शाहमेव पुरो व्यधात्॥२३

अपने विषय में विश्वास जगाने के लिए प्रेम दिखाकर मुस्तफाखान शाहजी राजा को सभी कार्यों में आगे करता था।

प्रत्युत्थाने तरसा दूरप्रत्युद्गमेन च।

हस्ताश्लेषेण हर्षेण हस्तसंधारणेन च॥२४

अर्धासुनप्रदानेन संमुखीभवनेन च।

स्मितपूर्वेण वचसा तथा प्रीतिस्पृशा दृशा॥२५

तत्तन्मन्त्रप्रयोगाणां प्रकाशकरणेन च।

तेषु तेषु च कार्येषु पुरस्कारेण भूयसा॥२६

अर्हेण परिबर्हेण संस्तवेन स्तवेन च।

परिहास रसेनोच्चैरध्यात्मकथनेन च।

परिहास रसेनोच्चैरध्यात्मकथनेन च॥२७

हिताहंतोद्भावेन स्ववृत्तावेदनेन च।

यवनः सोऽन्वहं तस्मै प्रत्ययं समदर्शयत्॥२८

वेगपूर्वक खड़े होकर, दूर से सम्मुख जाकर, हाथ पकड़ कर, आनंदित होकर, हाथों में हाथ डालकर, उपमा आधा आसन देकर, उसकी तरफ मुंह करके मंद हास्य से बोलकर, प्रीति पूर्वक देखकर, अनेक प्रकार के गुप्त बातों को प्रकाशित करके, सभी कार्यों में पुरस्कारों से पुरस्कृत करके, मूल्यवान उपहारों को देकर, प्रशंसा करके, अत्यंत हंसी-मजाक करके, आध्यात्मिक कथाओं का कथन करके, हितकारी विषयों में अभिमान जागृत करके या अपना वृत्तांत बता करके, वह प्रतिदिन उस पर अपना विश्वास दिखाता था।

ततः स पृतनापालः समस्तान् पृतनापतीन्।

आनाय्य न्यायनिपुणो विविक्ते वाक्यमब्रवीत्॥२९

तत्पश्चात्, वह न्याय कार्य में निपुण सेनापति ने समस्त सेनापतियों को एकांत में बुलाकर ये वाक्य कहे।

मुस्तुफाखान उवाच -

यस्यान्नं भुज्यते येन मनुजेनानुजीविना।

तस्य यो स भवेदात्मा नादसीयः कदाचन॥३०

मुस्तुफाखान बोला- जो सेवक जिसके अन्न को खाता है, उस सेवक का वह अन्न ही प्राण हैं, उस सेवक का स्वयं का प्राण उसका प्राण नहीं है।

न महत्त्वं विना विद्यां न काव्यं प्रतिभां विना।

कदाचिदपि नाभीष्टं दृष्टं स्वामिकृपां विना॥३१

विद्या के बिना महानता नहीं, प्रतिभा के बिना काव्य नहीं, उसी प्रकार स्वामी की कृपा के बिना अभीष्ट कार्य की सिद्धि नहीं देखी।

तस्माद् यः स्वामिनोऽर्थाय त्यजत्यात्मानमात्मनः।

तमेव धन्यमित्याहुर्नीतितन्त्रविदो जनाः॥३२

अतः जो नौकर स्वामी के कार्य के लिए अपने प्राणों को त्याग देता है, वहीं धन्य पुरुष होता है ऐसा नीतिशास्त्रज्ञ कहते हैं।

न बांधवो न च सखा न संबंधी न सोदरः।

न पिताप्यनुरोद्धव्यः स्वामिसेवापरात्मभिः॥३३

स्वामी की सेवा में आसक्त लोगों के द्वारा संबधियों, मित्रों, बांधवों, सगे भाई एवं पिता का भी अवधान नहीं करना चाहिए।

यस्मिंस्तुष्टे तुष्टिमेति यस्मिन् रुष्टेऽस्तमेति च।

तमनन्येन मनसा न विषेवेत कः पुमान्॥३४

जिसके संतुष्ट होने पर संतुष्ट होता है, जिसके दुःखी होने पर दुःखी होता है, ऐसे स्वामी की सेवा कौन-सा पुरुष एकनिष्ठ होकर नहीं करता है?

सर्वेऽपि वयमेतर्हि नियमे महति स्थिताः।

संभूय महमूदस्य हिताय प्रयतेमहि॥३५

हम सब लोग इस समय पूर्णतः उसके अधीन हैं तो सब मिलकर महमूद के हित के लिए प्रयत्न करेंगे।

यदद्य स्वामिना स्वेन महमूदेन मानिना।

निग्राह्यश्शाह इति वै संदेश्यावेदितं मयि॥३६

बली भृशबलो भूपः स यावन्नावबुध्यते।

तावत्तद्धि विधातव्यमस्माभिः स्वहितार्थिभिः॥३७

अपने अभिमानी, धनवान्, महमूदशाह ने "शाहाजी को कैद करो" ऐसा आज संदेश भेजकर मुझे बताया है, तो हम स्वहित के इच्छुक लोगों के द्वारा बलशाली शहाजीराजा भोसलें जब तक जागृत नहीं होते हैं तब तक यह कार्य करना चाहिए।

निशीथिनीमतीत्येमां महत्युषसि संहसाः।

सहिताः सैनिकै स्वैः स्वैस्तन्निगृहीत पार्थिवम्॥३८

आज की रात्रि के बीत जाने पर उषाकाल में अपने-अपने सैनिकों के साथ इकट्ठे होकर उस राजा को पकड़ लो।

इत्थमावेदितास्तेन मुस्तुफेनार्थसिद्धये।

पृतनापतयः स्वं स्वं शिविरं प्रतिपेदिरे॥३९

इस प्रकार उस मुस्तुफाखान के सेनानायकों से कार्य सिद्धि हेतु निवेदन करने पर वे अपने-अपने शिविरों में चले गये।

मन्त्रमेतदविद्धास्ते निशि यस्यामन्त्रयन्।

तस्यामेव महोत्पाताः शाहस्य शिविरेऽभवन्॥४०

यह मन्त्रणा उन यवनों ने जिस रात्रि में की थी, उसी रात्रि में शहाजी के शिविर में बड़ा उत्पात मच गया था।

सप्तयो दृक्पयोऽमुञ्चन्नरण्यं करुणं गजाः।

अतर्कितमभ्यन्तं कूरारवकृतो ध्वजाः॥४१

घोड़े आंसु बहाने लगे, हाथी करुण स्वर निकालने लगे, ध्वज कड़कड़ ध्वनि करके अचानक टूटने लगे।

चक्रिरे नाहता एव पटहाः क्रूरमारवम्।

रजसा सहस्रावर्तं वितेने वातमण्डली॥४२

बिना बजायें ही नगाड़े भयंकर आवाज करने लगे, अचानक चक्रवाक धूलसहित गोल-गोल घूमने लगी।

अभ्रोदराद्विनैवाभ्रं करकाः परितोऽपतन्।

विनैवाभोधरं व्योम्नः प्रादुरासीदिरम्मदः॥४३

बादलों के बिना ही आकाश से ओले चारों ओर गिरने लगे, बादलों के बिना ही आकाश में आकाशीय विद्युत चमकने लगी।



न प्रदीपनवेलायां प्रदीपाः प्रदिदीपिरे।

न प्रसेदुर्मनुष्याणां वदनानि मनांसि च॥४४

दीपक प्रज्वलित करने के समय में प्रज्वलित नहीं हुए तथा मनुष्यों के मुख एवं मन मलिन हो गये।

अकारि पृतनोपान्ते शिवाभिरशिवो रवः।

श्वभिरूर्ध्वमुखीभूय चक्रन्दे चातिनिन्दितम्॥४५

सेना के समीप ही भालु अशुभ आवाज निकालने लगे, कुत्ते ऊपर मुंह करके अत्यन्त निन्दित आवाज करने लगे।

मुहुरभ्यर्णमभ्येत्य घूको घूत्कारमातनीत्।

तथा वृकगणः क्रूरमारवं सहसाकरोत्॥४६

बारंबार अत्यन्त समीप आकर उल्लु घूत्कार की आवाज करने लगे, उसी प्रकार लोमडियां अचानक भयंकर आवाज करने लगी।

चकम्पिरे सुमनसां प्रतिमाः प्रतिमन्दिरम्।

अकस्मादर्धरात्रे च गौश्चक्रन्द निकेतगा॥४७

प्रत्येक मन्दिर में देवों की मूर्तियां कम्पित होने लगी, मध्यरात्रि में अचानक गाये ऊंची आवाज करने लगी।

इमान्यासन्निमित्तानि भयशंसीनि भूरिशः।

तथाप्यवहितो नाभूत् भूपः स नियतेर्वशः॥४८

इस प्रकार की भय सूचक चिह्न अनेक हुए तथापि वह शहाजी राजा दुर्भाग्य से जागृत नहीं हुआ।

सज्जीभूय निजे निजेऽद्य शिबिरे तिष्ठन्त्यनीकधिपाः,

सार्धं यैर्व्यदधन्निशार्धसमये मन्त्रं चिरं मुस्तुफः।

आगत्येति निवेदितं प्रणिधिभिः श्रुत्वातिसत्त्वाधिको।

दैवायत्ततया न शाहनृपतिश्चक्रे तदात्वोचितम्॥४९

जिनके साथ मध्यरात्रि में मुस्तुफाखान ने बहुत समय तक मन्त्रणा की थी, वे सेनानायक अपने-अपने शिविरों में तैयार होकर स्थित हैं, इस प्रकार गुप्तचरों के द्वारा आकर बताने पर उसको सुनकर भी अत्यन्त बलशाली शहाजी राजा ने दुर्भाग्य से तत्काल उचित कार्य नहीं किया।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां संहितायां एकादशोऽध्यायः॥ १२ ॥

## अध्याय:-१२

अथ कोकवियोगार्तिहरेबंधूकभास्वरे।  
पूर्वपर्वतश्रृंगाग्रमारुक्षतिभास्करे॥१  
प्रभातसंध्यारागेण रंजिते गगनाङ्गने।  
तमस्तमीचरमुखप्रमुक्ते ककुभाङ्गणे॥२  
दरांदोलितपम्पाम्भः कणसंपर्कशीतले।  
फुल्लदम्भोरुहामोदमधुरे वाति मारुते॥३  
दिलावरो मसूदश्च सरजा याकुतोऽम्बरः।  
आदवन्याधिनाथश्च तथा कर्णपुराधिपः॥४  
फरादः कैरतश्चोभौ तथा याकुतसारभिः।  
आजमो बहुलोलश्च मानी मलिकराहनः॥५  
राघवो मम्बतनयो वेदजिद्धास्करात्मजः।  
सुतो हैबतराजस्य बल्लाळश्च महाबलः॥६  
त्रयोऽप्येतेऽग्रजन्मानः सैनिकाग्न्याः सुदुर्मदाः।  
प्रवारौ सिद्धभम्बाह्वौ मम्बो भृशबलस्तथा॥७  
अन्येऽप्यनीकपतयः तत्तदन्वयसंभवाः।  
यदा युद्धमदावेशवशात्मानो महायुधाः॥८  
कम्पयन्त इवाकाशं पताकापटमण्डलैः।

क्षोदयन्त इव क्षोणीं चलैर्हयखुरांचलैः॥९

दिधक्षन्त इवाशेषां त्रिलोकीं तेजसां चयैः।

प्राकारमिव कुर्वन्तः परितः प्रबलैर्बलैः॥१०

पावका इव दीव्यन्त कृतान्त इव निर्भयाः।

शिविरं शाहराजस्य रुधुर्मुस्तुफाज्ञया॥११

चक्रवाक, पक्षी के वियोग से उत्पन्न दुःख को हरन करनेवाला, कांतिमान सूर्य के उदयांचल शिखर के अग्रभाग पर आरूढ होने के लिए आतुर होने पर, प्रभात के संध्याराग से गगनरूपी आंगन में लालिमा के आने पर, अंधकाररूपी निशाचर से सभी दिशाओं के मुक्त होने पर, मानो भय से आंदोलित पंपासरोवर के जलकणों के संपर्क से शीतल एवं विकसित कमलों की सुगंधि से आह्लाददायी वायु बह रही थी। ऐसे समय पर दिलावरखान, मसूदखान, सरजाखान याकुखान, अंबरखान, अदवनी का राजा, कर्णपूर का राजा फरादखान एवं कैरातखान ये दोनो, उसी प्रकार याकुतसार, आजमखान एवं बहुलोल अभिमानी मलिक शहनखान, राघव मंबाजी, वेदोजी भास्कर, और हैवत राजा का पुत्र महाबलशाली बल्लाल, इस प्रकार तीनों मदोन्मत्त ब्राह्मण सेनापति सिधोजी एवं मंबाजी पवार, मंबाजी भोसले और भिन्न-भिन्न कुलों के दूसरे सेनापतियों के शरीर में युद्ध का जोश व्याप्त होने से बड़े बड़े शस्त्रों को धारण करके अपने ध्वजों के समूहों से आकाश को कंपाते हुए, घोड़ों के खुरों के अग्रभाग से मानों पृथ्वी को चूर्ण करते हुए, अपने तेजोमय कांति से संपूर्ण त्रिभुवन को मानो जलाते हुए, प्रबल सैन्यबल से मानों चारों ओर अभेद्य दीवार बनाते हुए, अग्नि के समान तेजस्वी एवं यमराज के समान निर्भय ऐसे इन सेनापतियों ने मुस्तुफाखान की आज्ञा से शहाजी राजा के शिविर को चारों ओर से घेर लिया।

असन्नाहितमातङ्गमपल्याणितसैन्धवम्।

असज्जयोधसंदोहमसुप्तोत्थितनायकम्॥१२

यामिनीजागरोद्दामक्लमनिद्राणयामिकम्।

शिविरं तत्तदातंक वशाद्वैहस्त्यमाददे॥१३

इधर शहाजी के शिविर में हाथी पर जीन चढाए नहीं थे, घोड़े को काठी नहीं पहनाई थी, सैनिकों के दल सज्ज नहीं थे, सेनापति अभी अभी सो कर उठे थे, रात्रि के जागरण से चौकीदार अतिशय तन्द्रा में थे, इस कारण अनेक प्रकार से भयभीत होकर अचानक उस शिविर में भगदड मच गई।

परिवेषेण महता बिम्बमंशुमतो यथा।

शुशुभे प्रतिसैन्येन शाहस्य शिबिरं तथा॥१४

बड़े परिधि से जैसे सूर्य का बिंब दिखता नहीं हैं, उस प्रकार ही शत्रु की सेना से शहाजी का शिबिर उस समय प्रतीत होने लगा.

सर्वतस्तस्य सैन्यस्य सागरस्येव गर्जतः।

पार्ष्णिग्राहः स्वयमभून्मुस्तुफो वाहिनीश्वरः॥१५

समुद्र के समान गर्जन करती हुई उस सेना के पृष्ठभाग का संपूर्ण संरक्षण सेनापति मुस्तुफाखान स्वयं कर रहा था।

अथ खण्डजिता चांबुजिता मानजिता तथा।

सहितो बन्धुभिश्चान्यैः सैनिकैश्च समन्ततः॥१६

चन्द्रहासधरैश्चापधरैः प्रासधरैरपि।

अग्नियन्त्रधरैश्चक्रधरैश्च पुरुषैर्वृतः॥१७

घोरकर्मा घोरफटो बाजराजो महाभुजः।

वाडवो जसवन्तश्च वाडवाग्निरिवापरः॥१८

मल्लजिन्नरपालश्च प्रवारकुळदीपकः।

ख्यातश्च तळजिन्नाम नृपो भृशबलान्वयः॥१९

अध्यासितसगर्वावखुरक्षुण्णवसुन्धराः।

विविशुः शाहशिबिरं सर्वेऽमी बलिना वराः॥२०

तत्पश्चात् खंडोजी, अंबाजी, मनाजी ये मित्र तथा अन्य सैनिकों सहित, ओर तलवारों, धनुषों, भालों, बंदूकों एवं चक्रों को धारण करने वाले पुरुषों से घिरा हुआ वह घोरकर्मा महाबाहु बाजराज घोरपडे, मानो दूसरा वडवानल ही हो ऐसा यशवंतराव वाडवे, पवार कुल के दीपक मालोजी राजा, विख्यात तुकोजी राजा, राजा भोसले ऐसे वे सभी बलिष्ठ सेनापति अपने बैठे हुए घोडों के घुरों से पृथ्वी को चूर्ण करते हुए शहाजी के शिबिर में प्रविष्ट हुए।

ते तदातीव गर्जन्तो जिगीषन्तो महामदाः।

सुप्तं प्रबोधयामासुः शाहं सिंहमिव द्विपाः॥२१

हाथी सिंह को जैसे जागृत करता है, वैसे ही उस समय उन मदमस्त जीतने के इच्छुक एवं अतिशय गर्जना करने वाले सेनापतियों ने सोये हुए शहाजी को जगाया।

शाहः प्रबुद्धमात्रस्तु निशम्यागमनं द्विषाम्।

सज्जमानः शशासोच्चैः सज्जध्वमिति सैनिकान्॥२२

शत्रुओं के आगमन को सुनते ही जागृत होकर स्वयं सज्ज होते हुए शहाजी ने 'तैयार हो जाओ' ऐसा सभी सैनिकों को जोर से आदेश दिया।

अश्वोऽश्वोऽसिरसिः प्रासः प्रास इत्यादयस्तदा।

आरवाः समजायन्त शिबिरे शाहभूभृतः॥२३

तब 'घोडा घोडा, तलवार तलवार, भाला भाला, इस प्रकार शहाजी के शिबिर में अचानक आवाज गुंजने लगी।

अथ शाहे महाबाहौ सज्जमाने महौजसि।

अदसीये महासैन्येऽप्याकस्मिकभयस्पृशि॥२४

कण्ठीरव इवाकुण्ठगतिः संयति संयति।

खण्डपाटल एवैको ययौ घोरफटान् प्रति॥२५

महाबाहु एवं महाबलशाली शहाजी राजा तैयार हो रहा है, एवं उसकी बड़ी सेना आकस्मिक भय से ग्रसित हो गई। इतने में ही प्रत्येक युद्ध में सिंह के समान अकुण्ठितगति वाला खंडोजी पाटील अकेला ही घोरपडे पर आक्रमण करने के लिए गया।

आमुक्तकवचः श्रीमानभेद्यफलकोद्भुरः।

कृतहस्तः कुन्तधरः कृपाणी कर्मकोविदः॥२६

स तूर्णं तुरगारुढो रणाङ्गणमगाद्यदा।

सिंहनादं नदन्ति स्म वाजराजादयस्तदा॥२७

शरीर पर कवच धारण किया हुआ, दृढ़ ढाल के कारण अभेद्य, भाला धारण करनेवाला, उत्तम धनुर्धर, तलवार से युक्त, युद्धकुशल ऐसा प्रख्यात खंडोजी जब शीघ्र घोड़े पर बैठकर रणभूमि पर गया तब बाजी घोरपड़े आदि ने सिंह जैसी गर्जना की।

ततो घोरफटानीकपतयोऽतिरयोद्धताः।

तं पाटलं कुलोत्तंसं रुषा रुरुधिरेऽभितः॥२८

फिर अत्यन्त वेगवान घोरपड़े सेनापतियों ने उस कुल आभूषण पाटील को क्रोध से दोनों ओर से घेर लिया।

स तदाभ्रंलिहं भल्लं भ्रामयामास भासुरः।

कारयामास चाश्वेन मण्डलानि सहस्रशः॥२९

तब उस तेजस्वी खंडोजी पाटील ने मेघों से स्पर्श करनेवाले अपने भाले घूमाकर अपने घोड़े से हजारों गोलाकार निकलवाये।

तद्भ्रामितस्य भल्लस्य परिभ्रान्ता नभोऽन्तरा।

दिनेशमण्डलाकारा दिदीपे द्युतिमण्डली॥३०

उसके द्वारा गोल घुमाये हुए भालें, अंतरिक्ष में गोल घूमनेवाले तेजोवलय सूर्य के बिंब के समान चमकने लगी।

तैस्तैः प्रहरणैस्तत्र प्रहरन्तो महायुधाः।

खण्डशः खण्डशः क्रोधात् तेन भल्लभृता कृताः॥३१

अनेक प्रकार के शस्त्रों से प्रहार करनेवाले, बड़े-बड़े आयुधों को धारण करनेवाले वीरों के, क्रोध से उस भालाधारी ने तुकड़े तुकड़े कर दिए।

कुप्यता पविहस्तेन पर्वता इव पातिताः।

प्रतिप्रतीकं त्रुट्यन्तः पेतुरुर्ब्यामनेकशः॥३२

क्रोधित इंद्र ने अपने वज्र से गिराये हुए पर्वत के समान, प्रत्येक योद्धाओं के अवयव टुटकर भूमि पर गिरने लगे।

रोषदष्टाधरैर्द्धीरिरायोधनपरैः परैः।

प्रसभं प्रहतोप्येष पौरुषं स्वमदर्शयत्॥३३

क्रोध से दांत एवं ओंठो को चबाकर युद्धकुशल धीर शत्रुओं द्वारा इस पर जोर से प्रहार करने पर इसने अपना पराक्रम दिखाया।

स ततः स्वेन भल्लेन निशितेनायतेन च।

जहार कस्यचित्तस्य शिरोऽद्रिशिखिरोपमम्॥३४

तत्पश्चात् उसने अपने तीक्ष्ण एवं लंबे भाले से उस बलशाली ने किसी के पर्वत के शिखर के समान शिर को काट दिया।

तथैव कस्यचिद्वक्षः शिलातलमिवायतम्।

अभेद्यमपि संरम्भात् बिभेद बलिनां वरः॥३५

उसी तरह किसी की चट्टान की तरह विस्तृत एवं अभेद्य छाती को क्रोध से छिन्न भिन्न कर दिया।

सभल्लफलकाघात पतिताश्चस्य कस्यचित्।

कुंभि कुंभोपमं सद्यः स्कंधकूटमपातयत्॥३६

उसने किसी के घोड़े को भाले के पटल से प्रहार करके व उसके हाथी के गंडस्थल के समान उच्च कंधे को अचानक नीचे गिरा दिया।

कस्यचिच्चरणद्वन्द्वं वलग्नं चापि कस्यचित्।

कस्यचित् कण्ठनालं च चिच्छेद किल खण्डजित्॥३७

उस खंडोजी ने किसी के पैरों को, किसी के कटिप्रदेश को, और किसी के गले को काट दिया।

उत्पत्योप्तत्य भल्लेन पातयन् परितः परान्।

एकोपि पाटलः प्राप तत्र चित्रमनेकताम्॥३८

उछल उछलकर अपने भाले से चारों ओर शत्रुओं को नीचे गिराने वाला वह पाटील अकेला होते हुए भी वहां वह अनेकों की तरह प्रतीत होने लगा।

अभियातारि संघात शतहेति शताहतः।



स भिन्नवारबाणोरिवारणान् प्रत्यवारयत्॥३९

आक्रमण करने वाले शत्रुसमूहों के सैकड़ों शस्त्रों के प्रहार से उसका कवच छिन्न भिन्न हो गया था, ऐसे उस पाटील ने शत्रुरूपी हाथियों को वापिस लौटा दिया था।

सविपक्षविनिर्मुक्तविशिखक्षतविग्रहः।

शुशुभे लोहिताद्रांगो लोहिताङ्ग इव अहः॥४०

शत्रुओं के द्वारा छोड़े गए बाणों से जिसका शरीर क्षत विक्षत हो गया है, ऐसा खून से सना हुआ वह मंगलग्रह के समान सुशोभित होने लगा।

युध्यतः पाटलस्यास्य दृष्ट्वा पाटवमद्भुतम्।

क्ष्वेडितास्फोटितं चक्रुर्बाजरादयो भटाः॥४१

युद्ध करनेवाले उस पाटील के आश्चर्यकारी कुशलता को देखकर बाजराज घोरपडे आदि सैनिक गर्जना करने लगे एवं भुजाओं को बजाने लगे।

परमानजिता मानजिता भल्लभृता युधि।

भिन्नभल्लस्य जग्राह करे क्रूरां कृपाणिकाम्॥४२

युद्ध में शत्रुओं के अभिमान का हरण करनेवाले मानाजी ने अपने भाले से उसके भाले को तोड़ देने पर उसने एक तीक्ष्ण तलवार हाथ में ले ली।

कृतहस्तं खड्गहस्तं ततस्तं प्रेक्ष्यसस्मितः।

बाजराजो महाबाहुराजुहाव महाहवे॥४३

तब युद्ध निपुण उस तलवारधारी खंडोजी को देखकर महाबलवान बाजराज ने मुस्कराकर युद्ध के लिए आह्वान किया।

कालदण्डकरालेन करवालेन पाटलः।

तदा प्रहारमकरोत् बालराजस्य वक्षसि॥४४

तब खंडोजी पाटील ने यमराज के दंड के समान भयंकर तलवार से बाजराज घोरपडे की छाती पर प्रहार किया।

तेनाघातेन महता प्रहृतायतवक्षसि।

बाजराजे महाबाहौ मोहमुद्रामुपेयुषि॥४५

अंबुजित् परिधं घोरं मानजिन्मुद्गरं तथा।

मल्लजिच्च सितां शक्तिं शिखां शेखावतीमिव॥४६

बलजित् भल्लमतुलं जसवन्तश्च सायकम्।

खंडजिच्च प्रचिक्षेप खड्गं खञ्जितं प्रति॥४७

विशाल छाती पर किए गए उस जोर के प्रहार से महाबाहु बाजराज घोरपडे के मूर्च्छित होने पर अंबाजी ने भयंकर लोहबद्ध दंडा, मानाजी ने मुद्गर, मालोजी ने अग्नि के लपेटों जैसी कालीशक्ति, बालाजी ने अप्रतिम भाला, जसवंत ने बाण और खंडोजी ने तलवार ऐसे ये शस्त्र खंडोजी पाटील के शरीर पर फेंक दिये।

स भीमेन समस्तानि समस्तानि समन्ततः।

आपतंत्यायुधीयानामायुधानि समन्ततः॥४८

द्विधा चक्रेऽसिना स्वेन कानिचिच्च त्रिधा त्रिधा।

कानिचित् पञ्चधा चापि नवधा दशधा तथा॥४९

चारों तरफ से योद्धाओं के द्वारा फेंके गए सभी शस्त्र जब शरीर पर आकर गिरने लगे तो उनमें से अपने भयंकर तलवार से किसी के दो तुकड़े, किसी के तीन-तीन तुकड़े, किसी के पांच उसी प्रकार किसी के नौ, किसी के दस तुकड़े किये।

बाजराजः क्षणं मूर्च्छा क्षणं सर्वविलक्षणम्।

अनुभूय स्वयं भूयः प्रत्ययुध्यत पाटलम्॥५०

बाजराज ने क्षणमात्र मूर्च्छा का एवं क्षणभर अत्यंत विलक्षण स्थिति का स्वयं अनुभव करके वह पाटील के साथ युद्ध करने लगा।

अथ स्वया प्रतिभया परप्रतिभयाकृतिम्।

बाजराजो गदामुर्वी पातयामास पाटले॥५१

जिसकी आकृति शत्रुओं के लिए भयानक थी, ऐसे प्रचंड गदा से बाजराज ने अपनी प्रतिभा से पाटिल की जंघा पर प्रहार किया।

क्रूरया कार्तिकेयस्य शक्त्येव क्रौंचपर्वते।

बाजराजस्य गदया तथा भित्वा निपातिते॥५२

त्रिदशस्यन्दनारूढे सुभटे खंडपाटले।

हन्यमानेन सैन्येन स्वसैन्ये चाति-विह्वले॥५३

हतसंबद्धशीर्षण्यस्रस्तोष्णीषपटाञ्चलः।

चर्मवान् वर्मवानुच्चः शरासनवतां वरः॥५४

कुन्तयोधी मण्डलाग्रमण्डलीकारपाशः।

शाहराजो महाबाहुर्महाराजो महाहवः॥५५

अधिरुह्य महावाहमंबुवाहमिवाम्बुदः।

सपदि प्रतिजग्राह बाजराजं जिघांसया॥५६

कार्तिकेय की तीक्ष्ण शक्ति क्रौंच पर्वत पर जैसे गिर जाती है, वैसे ही बाजराज की गदा से भिन्न होकर गिर जाने पर, उस उत्कृष्ट खंडोजी पाटील का स्वर्गवास हो गया। तब शत्रुसेनाओं द्वारा पीडित होकर अपने सेना के अत्यधिक अधीर हो जाने पर शिरस्त्राण को मजबूत बांधकर, पगडी के पट्टे को खुला छोड़कर, ढाल को लेकर, कवच पहनकर, उन्नत, उत्कृष्ट धनुर्धर, भाला फेंकने में एवं क्रीडा में निपुण, ऐसा युद्ध कुशल महाबाहु शहाजी महाराज जैसे बादल पर बादल आरुढ़ होता है, वैसे ही एक बड़े घोड़े पर सवार होकर बाजराज घोरपडे को मारने की इच्छा से शीघ्र उस पर आक्रमण किया।

आभीरराजो दशजिह्वादिगजकारकः।

योगजिच्च धनुःकाण्डधरो भाण्डकरान्वयः॥५७

गुञ्जावटकरः सन्तो मेघजिह्वकुरस्तथा।

भ्राता त्र्यंबकराजश्च दत्तराजश्च दर्पितः॥५८

अन्येऽप्यनीकपतयः शाहराजं समन्ततः।

जुगुपुः शतशस्तत्र पृष्ठगोपाश्च भूरिशः॥५९

दसों दिशाओं का विजेता, ग्वालों का राजा दसोजी, धनुष एवं बाण को धारण करनेवाला योगाजी भाडकर, संताजी गुंजावटकर, मेघाजी ठाकूर, भाई त्र्यंबकराज एवं अभिमानी दत्तराज, इन्होंने एवं अन्य सैकड़ों सेनापतियों ने एवं अनेक पृष्ठभाग के रक्षकों ने चारों ओर से शहाजी राजा की रक्षा की।

तमथाकृष्टकोदण्डटङ्कारोट्टंकिताम्बरम्।

वीरं कण्ठीरवग्रीवं वृषस्कन्धं महौजसम्॥६०

दत्तत्र्यंबकराजाभ्यां भ्रातृभ्यां परिवारितम्।

सैनिकैः स्वैः परिवृत्तं सुरैरिव शतक्रतुम्॥६१

मरुता प्रतिकूलेन सपदि प्रतिवारितम्।

ददृशुश्शसाहनृपतिं बाजराजादयो नृपाः॥६२

खींचे हुए धनुष की टंकार से आकाश को प्रतिध्वनित करनेवाला, सिंह जैसी गर्दन एवं बलवान जैसे कंधो वाला, त्र्यंबकराज एवं दत्तराज भाईयों द्वारा रक्षित, देवों ने जैसे इन्द्र की रक्षा की वैसे ही अपनी सेनाओं द्वारा रक्षित, प्रतिकूल वायु के प्रहार से शीघ्र ही हटाये गये उस वीर एवं बलशाली शहाजी राजा को बाजराज आदि ने देख लिया।

शाहराजोभ्यभिप्रक्ष्य प्रतिपक्षानुदायुधान्।

नादयन् मेहिनीं द्यां च सिंहनादमनीनदत्॥६३

शस्त्र उठाये हुए शत्रुओं को अपने समीप देखकर शहाजी राजा ने सिंह की तरह गर्जना करके पृथ्वी एवं आकाश को प्रतिध्वनित कर दिया।

शाहस्य तेन नादेन पूरिताः ककुभोऽभवन्।

प्रतिदध्या न चाम्भोधिः सपदि क्षुभितोऽभवत्॥६४

शहाजी के उस गर्जना से दिशाएं पूरित हो गईं एवं समुद्र से भी उसकी प्रतिध्वनि निकलने से वह अचानक क्षुब्ध हो गया।

न सेहे बाजराजेन शाहराजस्य गर्जितम् ।

प्रमत्तेन द्विपेनेव प्रमत्ताद्वपबृंहितम् ॥ ६५ ॥

मदमस्त हाथी की गर्जना को जैसे मदमस्त हाथी सहन नहीं करता है, उसी प्रकार बाजराज घोरपडे को शहाजी राजा की गर्जना सहन नहीं हुई।

अथ घोरपटैर्घोरवज्रनिर्घोषघोषिभिः ।

अभ्येत्य ज्ञापितस्वस्वनामभिः प्रौढधामभिः ॥ ६६ ॥

चारुचर्मभिरामुक्तवर्मभिः कृतकर्मभिः ।

परिवब्रेतरां शाहस्तोयदैरिव चंद्रमाः ॥ ६७ ॥

आकाशीय विद्युत की भयंकर कड़कडाहट के समान गर्जना करते हुए समीप जाकर, अपने अपने नाम बताकर चमकदार एवं सुंदर ढाल को धारण किए हुए, कवचधारी, युद्धकुशल, घोरपडे आदि सेनापतियों ने जैसे बादल चंद्रमा को घेरता है उसी प्रकार उन्होंने पूरी तरह शहाजी को घेर लिया।

तदा त्र्यंबकदत्ताह्नौ राजानौ दशजित्ता ।

मेघजिच्च महाबाहुर्महासेनसमप्रभः ॥ ६८ ॥

योगजिच्च तथान्येऽपि गुञ्जावटकरादयः ।

प्रत्यगृह्णन् प्रतिभटान् शाहराजपरीप्सया ॥ ६९ ॥

तब त्र्यंबकराज एवं दत्तराज, दसाजी एवं कार्तिकेय के समान तेजस्वी महाबाहु मेघाजी, योगाजी एवं गुंजावट आदि दूसरे वीरों ने शहाजी राजा की रक्षा करने की इच्छा से शत्रु योद्धाओं पर आक्रमण किया।

ततः त्र्यंबकराजेन चापहस्तेन मानजित् ।

खलखंडजिता दत्तराजेनापि च खंडजित् ॥ ७० ॥

प्रतिमल्लजिता योगजिता च सहमल्लजित् ।

तथा मेघजिता मेघनादसाम्यभृतांबुजित् ॥ ७१ ॥

युयुधे शाहराजेन बाजराजः पराक्रमी ।

अन्ये चान्यैश्च बहवो बहुभिर्दीर्घबाहुभिः ॥ ७२ ॥

तत्पश्चात् धनुर्धारी त्र्यंबकराज के साथ मानाजी, दुष्टों को जीतने वाला दत्तराज के साथ खंडोजी, शत्रु योद्धाओं को जीतने वाला योगाजी के साथ मालोजी, उसी प्रकार इंद्रजित के समान मेघाजी के साथ अंबाजी और शहाजी के साथ पराक्रमी बाजराज और दूसरे अनेक दीर्घबाहु वीरों के साथ दूसरे अनेक वीर लड़ने लगे।

टंकार्य चापमन्योन्यं जिगीषन्तो मदोत्कटाः ।

रणरङ्गे नटन्ति स्म वटा इव महाभटाः ॥ ७३ ॥

परस्पर जीतने की इच्छा वाले वे मदमस्त महावीर धनुष की टंकार करके रणभूमि पर चमगादड़ की तरह नाचने लगे।

पत्तिभिः पत्तयस्तत्र सप्तिभिस्सप्तयस्तथा ।

द्विपैर्द्विपाश्च बहवः ससंजुर्विजिगीषया ॥ ७४ ॥

पदातियों के साथ पदाति, घुड़सवारों के साथ घुड़सवार, महावतों के साथ महावत, ऐसे अनेक योद्धा विजय की इच्छा से परस्पर भीड़ गये।

शक्तिभिश्शक्तयो गाढमुष्टिभिर्गाढमुष्टयः ।

परिघाः परिघैर्घोरैर्मुद्गरैर्मुद्गरास्तथा ॥ ७५ ॥

पट्टिशाः पट्टिशैस्तीव्रैस्तोमरैरपितोमराः ।

गदाभिश्च गदाश्चक्रैश्चक्राणि च सहस्रशः ॥ ७६ ॥

सायकाः सायकैस्तीक्ष्णैः कटारैश्च कटारकाः ।

तदानीमभ्यहन्यन्त भल्लैर्भल्लाश्च भूरिशः ॥ ७७ ॥

शक्तियों के शक्तियों पर, गाढमुष्टिवालों के गाढमुष्टिवालों पर, लोहबद्ध दंडवालों के लोहबद्ध दंडों पर, मुद्गरों के मुद्गरों पर, पट्टों के पट्टों पर, तोमरों के तीव्र तोमरों पर, गदा वालों के गदा वालों पर, हजारों चक्रों के चक्रों पर, बाणों के बाणों पर, कटार के कटार पर, भालों के भालों पर, इस प्रकार उस समय अनेक प्रहार होने लगे।

शिरांसि सशिरस्त्राणि सतनुत्राण्युरांसि च ।

पाणयस्सतलत्राश्च सकेयूराश्च बाहवः ॥ ७८ ॥

सपताको ध्वजश्चापि सशरं च शरासनम् ।

हयश्च सहयारोहः करी च सनियन्तकः ॥ ७९ ॥

इमानि द्विषदुन्मुक्तशस्त्रच्छिन्नान्यनेकशः ।

तदानीमपतन् भूमौ पक्षयोरुभयोरपि ॥ ८० ॥

शिरस्त्राणों सहित सिर, कवचों के साथ वक्षःस्थल, दस्तानों सहित हाथ, केयूर सहित भुजाएं, पताकों के सहित ध्वज, बाणों के साथ धनुष, घुडसवारों सहित घोड़े, महावतों सहित हाथी, ये दोनों पक्षों के अनेक मनुष्य, शत्रुओं के द्वारा फेंके गये अनेक शस्त्रों से छिन्न-भिन्न होकर उस समय भूमि पर गिरने लगे।

शरासनानि कर्षतः सांगुलीयकपाणयः ।

पृथुस्कंधाः कबन्धाश्च प्रत्यधावन्नितस्ततः ॥ ८१ ॥

धनुष को खींचने वाले, जिनके हाथ में अंगुठियां थी, जिनके विस्तृत कन्धे थे, ऐसे राक्षसविशेष इधर उधर एक दूसरे पर दौड़ने लगे।

यस्य येन शिरश्छिन्नं यद्यदङ्गमपात्यत ।

तस्य तत्तत्तदोत्पत्य बत तं प्रत्यधावत ॥ ८२ ॥

जिसका जिसने सिर एवं जो जो अवयव तोड़कर नीचे गिराया, उसका वह वह अवयव उस समय उड़कर उस तोड़ने वाले पर दौड़कर गया।

अथाश्वेभ्यः करिभ्यश्च नरेभ्यश्च शितैश्शरैः ।

कर्त्यमानशरीरेभ्यः प्रवृत्ते रुधिरहृदे ॥ ८३ ॥

मज्जामांसवसामेदोमेदुरे मेदिनीतले ।

नटन्तीभिः पिशाचीभिः प्रहृष्टे डाकिनीकुले ॥ ८४ ॥

तत्तत्पताकिनीपालकपालकृतकुण्डले ।

भैरवीभिस्समं भूरिमत्ते भैरवमण्डले ॥ ८५ ॥

चण्डदीधितिभिर्वीरमुण्डमालामनोहरे ।

भूतैस्समुदिते चातिमुदिते चंद्रशेखरे ॥ ८६ ॥

राज्ञा खंडजिता तत्र दत्तराजे विहस्तिते ।

बत त्र्यंबकराजे च राज्ञा मानजिता जिते ॥ ८७ ॥

तद्वदम्बुजिदुन्मुक्त हेतिपातपराहते ।

भीते मेघजिति द्वी(?) ते दशजित्यपि विद्रुते ॥ ८८ ॥

अन्यस्मिन्नपि सैन्ये स्वे हीयमाने जयाकूले ।

कुम्भोद्भवेन मुनिना पीयमान इवार्णवे ॥ ८९ ॥

तथा मल्लजितः काण्डकुलैर्भांडकरदिते ।

शाहराजशिशैर्बाणैर्बाजराजमवाकिरत् ॥ ९० ॥

तीक्ष्ण बाणों से छिन्न भिन्न हुए घोड़ों के, हाथियों के, और मनुष्यों के कटे हुए शरीर से निकले रक्त का तालाब बन गया, मज्जा, मांस, चरबी, मेद, इनका पृथ्वी पर किचड बन गया, नाचनेवाले पिशाचियों के साथ डाकिनी के कुल को अत्यंत हर्ष हुआ, अनेक सेनापतियों के कुंडलों को धारण करने वाला भैरवमंडल भैरवी के साथ अत्यंत मदमस्त हो गया, सूर्य के किरणों को भेद करके वीरों के मस्तकों की माला से सुशोभित शंकर को भूतगणों के साथ अत्यंत आनंद हुआ, खंडोजी राजा ने दत्तराज के हाथ तोड़ दिये, अहो! त्र्यंबकराज को मानाजी ने जीत लिया, उसी प्रकार अंबाजी के द्वारा किए गए प्रहार से भयभीत मेघाजी पीछे हट गया, दसाजी भी भाग गया, अगस्त्य मुनि द्वारा पीये हुए समुद्र की तरह अन्य सैन्य भय से आकुल होकर नष्ट हो गया, उसी प्रकार मलोजी के बाणों से भांडकर पीडित हो गया, ऐसी अवस्था देखकर शहाजी राजा ने बाजराज घोरपडे पर अपने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा की।

बाजराजस्तु विक्रान्तस्तैर्नितान्तशितैश्शरैः।

शीर्यमाणशरीरोपि न मुमोह महोर्मिभिः॥९१

परंतु पराक्रमी बाजराज, उस अत्यंत तीक्ष्ण एवं वेगवान् बाणों की वर्षा से छिन्न भिन्न होते हुए भी मूर्च्छित नहीं हुआ।

ततस्स तत्र संप्रेक्ष्य प्रस्फुरद्वर्म सांतरम्।

ताडयामास भल्लेन शाहराजभुजान्तरम्॥९२

तत्पश्चात् उस समय चमकदार कवच पहने हुए शहाजीराजा को देखकर उसके छाती पर अपने भाले से प्रहार किया।



कुशलो युद्धविद्यायां कुलिशाभेद्यविग्रहः।

तेन मल्लाभिघातेन शाहराजो न विव्यथे॥९३

युद्ध विद्या में कुशल एवं वज्र के लिए भी अभेद्य शरीरवाला वह शहाजी राजा उस भाले के प्रहार से व्यथित नहीं हुआ।

अथ प्रकटितक्रोधैर्योधैर्मानजिदादिभिः।

शरशक्तिगदाखड्गभल्लाद्यायुधधारिभिः॥९४

बाजराजं पालयद्भिर्दर्शयद्भिस्सपौरुषम्।

परिवत्रे महाराजः शाहराजः पराक्रमी॥९५

तब बाण, शक्ति, गदा, तलवार, भाले, आदि शस्त्रों को धारण करने वाले, क्रोधित एवं अपने पराक्रम को दिखाने वाले, बाजराज की रक्षा करनेवाले मानाजी आदि योद्धाओं ने पराक्रमी शहाजी राजा को घेर लिया।

तत्र कालानलज्वालासमस्पर्शधरैश्शरैः।

तापयामास तान् सर्वान् प्रतापी स महीपतिः॥९६

वहां प्रलयाग्नि ज्वाला के समान स्पर्श करने वाले तीक्ष्ण बाणों से सब को प्रतापी शहाजी राजा ने त्रस्त कर दिया।

तदानीं शाहराजेन शरैः स्वैः शकलीकृताः।

स्रस्तबाहुलतास्तत्र स्रवल्लोहितलोहिताः॥९७

चण्डवाताहतास्सद्यः पुष्पिता इव किंशुकाः।

शतशस्सैनिकाः पेतुः बाजराजस्य पश्यतः॥९८

उस समय शहाजी राजा ने अपने बाणों से जिसके तुकड़े तुकड़े कर दिये थे, जिनकी भुजाएं टुटकर गिर गई थी, जो शरीर से बहने वाले खून से लथपथ थे, ऐसे सैकड़ों सैनिक, जैसे प्रचंड वायु के प्रहार से सद्यः पुष्पित पलस के वृक्ष उखड़कर गिर जाते उसी प्रकार सैनिक बाजराज के सामने गिर गये।

उत्पतत्तुर्गारुढो यत्र यत्रोत्पपात सः।

तत्र तत्र परित्रस्य प्रतिवीरास्सहस्रशः॥९९

पर्वता इव संशीर्णाः पविपातपराहताः।

समजायन्त दशधा शतधा च सहस्रधा॥१००

दौडते हुए घोड़े पर बैठा हुआ वह शहाजी राजा जहां जहां गया वहां वहां भयभीत हजारों शत्रुवीरों का वज्रप्रहार से विदीर्ण हुए पर्वत के समान दश ,सौ, तुकड़े किये।

ततः परिचरं कश्चित् कश्चित् सहचरं पुनः।

वर्म चाप्रतिमं कश्चित् कश्चिच्चर्म सचन्द्रकम्॥१०१

ततो घोरपटः कश्चिदिषुधिं च शरासनम्।

चिच्छेद शाहराजस्य कश्चिच्च ध्वजमुन्नतम्॥१०२

तत्पश्चात् किसी ने शहाजी राजा के नौकर को, किसने उसके मित्र को, किसी ने उसके अप्रतिम कवच को, किसी ने उसके चंद्र युक्त ढाल को, फिर किसी घोरपडे ने धनुष एवं बाणों को, किसी ने उसकी उच्च ध्वजा को तोड़ दिया।

अथारिपातितापारहेतिपातपतापतान्।

तूर्णमुत्पत्य तुरगादुरगारातिचेष्टिते॥१०३

शराचितशरीरोत्थलोहितद्रवलोहिते।

प्रभूतप्रधनोद्भूतपरिश्रमविमोहिते॥१०४

महाराजे महाबाहौ परिरब्धमहीतले।

क्ष्वेडितास्फोटितावेशपरे च परमण्डले॥१०५

हाहाकारस्तदात्युच्चैरभूद्भार्शबले बले।

तत्र धर्मधनं धीरं धर्मराजसमश्रियम्॥१०६

शीघ्र ही घोड़े से कूदकर गरुड की तरह झड़प करने वाले तथा बाणों से विदीर्ण हुए शरीर से बहनेवाले रक्त से लथपथ एवं बहुत देर तक युद्ध करने के परिश्रम से मूर्च्छा को प्राप्त हुए, ऐसे महाबाहु शहाजी राजा के भूमि का आलिङ्गन करने पर, शत्रुसमूह गर्जना करने लगा एवं भुजाओं को बजाने लगा और भोसले के सैनिकों में बड़ा हाहाकार मच गया।

सर्वस्वमिव लोकस्य सर्वस्यापि समाश्रयम्।

तं महीतलसंलग्नं मग्नं मोहमहोर्मिषु॥१०७

दैवादिवस्तटादेवं दिवाकरमिव च्युतम्।

रयाद्धयादवप्लुत्य बान्धवत्वं प्रकाशयन्॥१०८

फलकेन स्वकीयेन ररक्ष बलजिह्वली।

अथ शाहं महाबाहुं बाजराजः स्मयं तथा॥१०९

मानो लोक का सर्वस्व, सभी जनों का आधार, दुर्भाग्य के कारण आकाश से गिरे हुए तेजस्वी सूर्य के समान मूर्च्छा पाकर भूमि पर गिरे हुए उस शहाजी राजा की बलशाली ने वेगपूर्वक घोड़े से कूदकर तथा भातृभाव को दिखाकर अपने ढाल से उसकी रक्षा की तब बाजराज मुस्कुरा रहा था।

निश्चसतं निजग्राहं नागं जाङ्गुलिको यथा।

ततो हस्तिनमारोप्य नीयमानमरातिभिः॥११०

जैसे गरुड फुस फुस करने वाले सांप को पकड़ता है, वैसे ही श्वास प्रश्वास ग्रहण करने वाले उस महाबाहु शहाजी राजा को शत्रु, हाथी पर डालकर ले गये।

श्रितमूर्च्छासुखं शुष्कमुखं मुद्रितचक्षुषम्।

पञ्चाननमिवानीय पञ्जराभ्यन्तरेऽर्पितम्॥१११

निकृतं निकृतिज्ञेन मुस्तुफेन दुरात्मना।

शाहभूभृतमालोक्य भृशमाचुक्रुशुर्जनाः॥११२

जो मूर्च्छा को प्राप्त हो गया है, जिसका मुंह शुष्क हो गया है, जिसकी आंखें बंद हैं, कपट करने में चतुर, दुष्ट मुस्तुफखान ने जिसको फंसाया, ऐसे उस शहाजी राजा को पकड़कर सिंह के समान पिंजरे में डालकर लाते हुए देखकर लोग अत्यधिक आक्रोश करने लगे।

प्यधत्त यवनः रवेन कपटेन पटेन यम्।

नयं न वेद तं विद्मः शाहः सर्वविदप्ययम्॥११३

जिस मुस्तुफखान ने अपने कपटरूपी वस्त्र से जिस राजा को ढक दिया है, ऐसे सर्ववेत्ता उस शहाजी को कुछ ज्ञात नहीं हुआ ऐसा हमें प्रतीत होता है।

मुस्तुफः स्वामिकार्यार्थी पस्पर्श सुतमातशम्।

अहो विश्रम्भणायास्य ललंगे च स्वपुस्तकम्॥११४

स्वामिकार्य के इच्छुक मुस्तुफखान ने शहाजी को विश्वास दिलाने के लिए अपने पुत्र आतशखान की शपथ ली एवं अपने कुराण के नियम का उल्लंघन किया।

इति तं यवनं तत्र जगर्हे जनताभितः।

स तु स्वस्वामिकार्यार्थी कृतकृत्योभवत्ततः॥११५

इसलिए वह जनता उस यवन की सर्वत्र निंदा करने लगी, परंतु वह स्वामिकार्य का इच्छुक मात्र कृतकृत्य हो गया।

न पल्याणं न तुरगो न करी न क्रमेलकः।

नायुधं नायुधीयश्च न वाद्यं न च वादकः॥११६

न मञ्चको न चोल्लोचो न पताका न च ध्वजः।

न विक्रेयं न विक्रेता नेंधने न च कीलकः॥११७

न काण्डपटकस्तत्र न चासीत्पटमण्डपः।

तथाभवत् क्षणार्धेन शाहस्य शिबिरं तदा॥११८

जिनकी काठी नहीं है, घोडा नहीं है, हाथी नहीं है, ऊंट नहीं है, शस्त्र नहीं है, शस्त्रधारी भी नहीं है, वाद्य नहीं है, और नहीं वादक है, मंच नहीं है, छत नहीं है, पताका नहीं है, ध्वज नहीं है, बेचने की वस्तु नहीं है, बेचनेवाला नहीं है, इंधन नहीं है, कीलक नहीं है, मंडप नहीं है, ऐसी आधे क्षण में ही शहाजी राजा के शिबिर की अवस्था हो गई।

अमीभिः संवर्तानलनिभबलैर्मुस्तुफमुखैः,

चमूपालैः कालैरिव युधि निलिंपाधिपबलम्।

अमुं शाहं साहंकृतिमिति नितान्तं नियमितम्,

स्वदूतेभ्यः श्रुत्वा महसि महमूदेन मुमुदे॥११९

प्रलयकाल के अग्नि के समान, प्रचंड एवं यमराज की तरह क्रूर ऐसे उस मुस्तुफाखान आदि सेनापति इंद्र की तरह पराक्रमी उस अभिमानी शहाजी राजा को युद्ध में कैद किया है, ऐसा अपने दूत से सुनकर महमूद आदिलशाह अत्यंत आनंदित हुआ।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां संहितायां द्वादशोऽध्यायः॥ १२ ॥

## अध्याय:-१३

मनीषिण उचु:-

अथ स्वपितरं श्रुत्वा निगृहीतमरातिभिः।

शम्भुराजः किमकरोत् तथा शिवमहीपतिः॥१

तं निगृह्य महाराजं मुस्तुफो वाहिनीपतिः।

व्यधत् किमधर्मात्मा महमूदश्च दुर्मतिः॥२

१-२. पण्डित बोले - शत्रुओं ने अपने पिता को कैद कर लिया है, ऐसा सुनकर संभाजी और शिवाजी ने क्या किया?

उस शाहजी राजा को कैद करके सेनापति मुस्ताफाखान और दुष्ट अधार्मिक महमूदशाह ने क्या किया?

कवीन्द्र उवाच -

शम्भुः स्वपितरं श्रुत्वा निगृहीतमरातिभिः।

चुकोप मुस्तुफायोच्चैर्बिङ्गरूरं पुरं श्रयन्॥३

३. कवीन्द्र बोले - अपने पिता को शत्रुओं ने पकड़ लिया है, ऐसा सुनकर बैंगलोर में रहने वाले संभाजी, मुस्तफाखान पर अतिशय क्रोधित हुए।

निशम्य शिवराजोऽपि शाहराजदशामिमाम्।

येदिलस्यापकाराय प्रतिजज्ञे प्रतापवान्॥४

४. प्रतापी शिवाजी ने भी शाहजी राजा की इस अवस्था सुनकर आदिलशाह से प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की।

मुस्तुफस्तु महामानी बिङ्गरूरजिधृक्षया।

रयान्नृपं तानजितं डुरान्वयधुरन्धरम्॥५

तथा विठ्ठलगोपालं विप्रं क्षात्रोपजीविनम्।

प्रौढं फरादखानं च सद्यः प्रस्थातुमादिशत्॥६॥

५-६. अभिमानी मुस्तफखान ने बैंगलोर को त्वरित अधिग्रहीत करने की इच्छा से डुरे वंश के प्रमुख तानाजी राजा को एवं क्षत्रियवृत्ति से रहने वाले ब्राह्मण विठ्ठल गोपाल को तथा प्रौढ फरादखान को शीघ्र प्रस्थान करने का आदेश दिया।

तदानीं महमूदोऽपि मेधावी पृतनापतीन्।

योगमाज्ञापयामास शिवस्य विषयं प्रति॥७॥

७. उस समय बुद्धिमान् महमूशाह ने भी शिवाजी के प्रान्त पर आक्रमण करने की अपने सेनापतियों को आज्ञा दी।

अथ सेनापतिर्नाम फत्तेखानो महामनाः ।

मिनादरतनौ शेखौ फत्तेखानश्च कोपनः ॥ ८ ॥

क्रूरो शरफशाहश्च धन्वधारी यशोधनः ।

सन्नाहसहिता पते यवनाः सज्जसाधनाः ॥ ९ ॥

घाण्टिको मत्तराजश्च कुलिशोपमसायकः ।

तथा फलस्थानपतिर्बलवान् बाजनायकः ॥ १० ॥

सामन्ताः शतशश्चान्ये स्वर्णपृष्ठशरासनाः ।

स्वर्णसारसनाः स्वर्णवसनाः स्वर्णकेतनाः ॥ ११ ॥

स्वर्णचन्द्र कमुद्राङ्किफलकद्युतिशालिनः ।

तस्थुराक्रम्य तरसा पुरं बिल्वसरोऽभिधम् ॥ १२ ॥

८-१२. तत्पश्चात् महामना फत्तेखान नाम का सेनापति, मिनादशेख एवं रतनशेख, क्रोधित फत्तेखान, क्रूर, धनुर्धारी एवं यशस्वी शरफशाह ये सभी कवचधारी एवं साधन सुविधाओं से सज्ज यवन तथा वज्र जैसे जिसके बाण हैं, ऐसा मदमस्त घाटगे, फलटण का राजा बाजनाईक एवं सेना के धनुष है पीठ पर जिसके ऐसे स्वर्णकटिबंदो से युक्त, स्वर्ण वस्त्रों से युक्त, स्वर्ण ध्वजाओं से युक्त, स्वर्ण एवं चांदी से युक्त ढालों को धारण करने वाले अन्य सैकड़ों सामन्त राजाओं ने बेलसर नाम का शहर बलात अधीन करके वहाँ स्थित हो गये।

तथा हैबतराजस्य सुतो बल्लाळसंज्ञकः ।

कृतहस्तः कृती क्रूरकर्मा द्रौणिरिवापरः ॥ १३ ॥

सिंहसंहननोऽनेकैरनीकैः परिवारितः ।

पुरं शिरोबलं प्राप शिवसैन्येवरारितः ॥ १४ ॥

१३-१४. उसी प्रकार उत्तम धनुर्धर, युद्धकुशल, क्रूर, सुन्दर, मानो दूसरा अश्वत्थामा ऐसा हैबत राजा का पुत्र बल्लाल नाम वाला वह अनेक सैनिकों के साथ शिवाजी के सैनिकों के अवरोध से रहित होकर शिरबल पहुंच गया।

पुरन्दरशिरोवर्ती पुरन्दरसुतोपमः ।

तदा तदागमं श्रुत्वा शिवः स्मेरनताननः ॥ १५ ॥

साहवान् धनुर्बाणपाणिः सन्धदसाधनः ।

सीरायुधसमान् धीरान् स्ववीरानिदमब्रवीत् ॥ १६ ॥

१५-१६. तब वह उसके आगमन को सुनकर पुरन्दर किले पर रहने वाले, इन्द्र की तरह वह शिवाजी कवच पहनकर धनुष, बाण को हाथ में लेकर, सभी साधनों से सज्ज होकर, हंसमुख एवं विनम्रवदन वह शिवाजी बलराम की तरह अपने धैर्यवान् सैनिकों को यह बोला।

विश्वस्तो मुस्तफाखाने महाराजः पिता मम ।

अहो व्यसनमापन्नः सम्पन्नः सम्पदा स्वया ॥ १७ ॥

१७. शिवाजी बोला - मेरा पिता शाहजी राजा स्वयं की सम्पत्ति से सम्पन्न होते हुए भी मुस्तुफाखान पर विश्वास करने के कारण से वे विपत्ति में फंस गये हैं, यह कितने दुःख का वृत्तान्त है?

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत् ।

विश्वासाद्भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति ॥ १८ ॥

१८. अविश्वासी लोगों पर विश्वास नहीं करना चाहिए और विश्वस्त लोगों पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि विश्वास के कारण से उत्पन्न भय व्यक्ति का समूल नाश कर देता है।



इति व्यासस्य वचनं श्रुतवानपि पार्थिवः।

अविश्वास्यतरे तस्मिन् अहो विश्वस्ततां गतः ॥ १९ ॥

१९. इस व्यासवचन को जानते हुए भी राजा ने उस अत्यन्त अविश्वासी व्यक्ति पर विश्वास किया, यह कितना बड़ा आश्चर्य है?

अविज्ञातेङ्गितगतिः श्रितयेदिलशासनः ।

निजग्राह महाराजं मुस्तुफो यवनाधमः ॥ २० ॥

२०. अपने मनोगत को अज्ञात रखने वाले अधम यवन मुस्तुफाखान ने आदिलशाह के आदेश से महाराज को कैद कर लिया।

विश्वस्तः स्वर्णहरिणे हरिणाक्ष्या प्रणोदितः ।

वञ्चितो दशवक्त्रेण सोऽपि दाशरथिनृपः ॥ २१ ॥

२१. वह दाशरथी राम भी मृगनयना सीता के आग्रह से स्वर्ण हिरण पर विश्वास करके रावण के द्वारा फंसाया गया।

अतिविश्रब्धतां नीत्वा विप्रलब्धो मरुत्वता।

पपात त्रिदिवात्तूर्णं ययातिर्नहुषात्मजः ॥ २२ ॥

२२. नहुष के पुत्र ययाति का, इन्द्र ने अपने ऊपर अत्यधिक विश्वास करवाकर उसे फंसा दिया तो वह स्वर्ग से शीघ्र ही नीचे गिर गया।

सहजं कवचं बिभ्रदविश्वस्तो बलविद्विषा।

तथा स विहित कर्णः पार्थेन निहतो यथा। २३

२३. जन्मतः प्राप्त हुए कवच को धारण करने वाले कर्ण के विश्वास करने के कारण ही इन्द्र ने उसे ऐसा बनाया, कि जिससे उसे अर्जुन मार सके।

विश्वस्तो धर्मराजोपि भरतानां धुरन्धरः ।

सुयोधनसहायेन द्युते शकुनिना जितः ।। २४

२४. भरत कुल का धुरन्धर धर्मराज युधिष्ठिर भी विश्वस्तता के कारण ही दुर्योधन के सहयोगी शकुनी के द्वारा जीत लिया गया।

अतो वैरिषु विश्वासं न कुर्वीत विचक्षणः ।

येन सम्यगधीतोऽस्ति राजधर्मः सलक्षणः ॥ २५ ॥

२५. इसलिए जिसने लक्षणों सहित राजनीति का अच्छी तरह अध्ययन किया है, ऐसे चतुर पुरुषों को शत्रु पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

हालाहलधरा श्लेषो हालाहलनिषेवणम्।

विद्विषत्सु च विश्वासस्त्रयमेतत्समं स्मृतम् ॥ २६ ॥

२६. सांप को पकड़ना, हालाहल विष का पान करना एवं शत्रु पर विश्वास करना ये तीनों वृत्तान्त समान ही हैं।

लालनं कपिबालानां कालपन्नगचालनम् ।

तथा स्यादपकाराय खलप्रणयपालनम् ॥ २७ ॥

२७. बंदर के बच्चों का लालन-पालन करना, काले सांप को छोड़ना वैसे ही दोस्तों के साथ मित्रता करना अहितकारक होता है।

यथान्धमन्दिरालिन्दमध्यदीपकदीपनम्।

यथा स्रोतस्विनीस्रोतः सिकतासेतुबन्धनम्॥ २८

यथा शकलितानर्घ्यमुक्तासन्धानसाधनम्।

यथा च जगति ख्यातं कदलीकाण्डदारणम् ॥ २९ ॥

यथा ह्याकाशखननं यथा सलिलताडनम् ।

तथा परिश्रमायैव भवेदसदुपासनम् ॥ ३० ॥

२८-३०. जैसे अंधे व्यक्ति के घर के प्रांगण के मध्य दीपक का जलाना, जैसे नदी के प्रवाह में रेत का सेतु बनाना, जैसे टूटे हुए मूल्यवान मोतियों को पुनः जोड़ना, जैसे केले के खंभे को गिराना संसार में प्रसिद्ध है, जैसे आकाश को खोजना, जैसे पानी को मारना जैसे यह सब केवल परिश्रम के कारणीभूत होते हैं, वैसे ही दुष्टों की सेवा करना होता है।

द्विषि विश्वसता येन नीतिशास्त्रं न तत्स्मृतम् ।

किं तेन खदिराङ्गारपर्यङ्कशयनं कृतम् ॥ ३१ ॥

३१. शत्रु पर विश्वास करके जिसका पूर्णतया राजनीति शास्त्र विस्मृत हो गया है, उसका क्या उपयोग है? क्या उसने खदिर के अंगारे से युक्त पलंग पर शयन किया है? ।

भवेद्यदि सतृष्णस्य वैतृष्ण्यं मृगतृष्णया ।

तर्हि स्यादेव निखिलं कुशलं खलसेवया ॥ ३२ ॥

३२. प्यासे व्यक्ति की प्यास यदि मृगतृष्णा को पीकर शांत हो जाए तो दुष्टों की सेवा से भी संपूर्ण कल्याण होगा।

सुषिरान्वेषणपरः परस्पर्धाकरः खलः ।

आहितोप्यहितो ज्ञेयो नावज्ञेयो विजानता ॥ ३३ ॥

३३. दोषदर्शी शत्रु, दूसरे के साथ स्पर्धा करने वाला दुष्ट, इनको सांप से भी अधिक अहितकारी जानना चाहिए, जानते हुए भी इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

रक्षितं राष्ट्रमखिलं वाक्यं च परिपालितम् ।

अमुष्य महमूदस्य महाराजेन किं कृतम् ॥ ३४ ॥

३४. उस महमूद शाह के संपूर्ण राज्य की रक्षा की एवं उसकी आज्ञाओं का पालन किया, ऐसे इस महाराज ने क्या अनर्थ किया?

हितानामहितो भूत्वा महितोपि स्वया श्रिया ।

अहो येदिलशाहोयं न सीदति निराश्रयः ॥ ३५ ॥

३५. मित्रों के शत्रु हो जाने से आश्रयरहित यह आदिलशाह अपने ऐश्वर्य की शोभा से महान होते हुए भी विनाश को प्राप्त नहीं हो रहा है, क्या यह आश्चर्य नहीं है?

रुद्धः फरादखानाद्यैर्विरुद्धैरुद्धतस्मयः ।

योत्स्यते तत्र मे भ्राता बिंगरूरपुराश्रयः ॥ ३६ ॥

३६. बेंगलुरु में रहने वाला, अशदखान आदि शत्रुओं के द्वारा गिरा हुआ अत्यंत स्वाभिमानी मेरा भाई वहां युद्ध करेगा।

इमानि गिरिदुर्गाणि पालयन्नातिनिर्वृतः ।

योत्स्येहमहितैरत्र सन्नद्धानीकसंयुतः ॥ ३७॥

३७. और इन गिरिदुर्गों की रक्षा करते हुए मैं अत्यंत निर्भयता पूर्वक सज्ज सेना से युक्त होकर यहां शत्रुओं से लड़ूंगा।

अहमत्र स्वयं तत्र शंभुराजः पराक्रमी ।

मोचयिष्यावहे तातं युध्यमानावुभावपि ॥ ३८ ॥

३८. इधर मैं स्वयं और उधर पराक्रमी संभाजी, इस प्रकार दोनों युद्ध करके पिता को मुक्त करेंगे।

अथास्मदभिभूतात्मा महमूदः सुदुर्मदः।

सहैव स्वेन दर्पेण महाराजं विमोक्षयति ॥ ३९ ॥

३९. अत्यन्त अभिमानी महमूदशाह के हमारे से पराजित हो जाने से वह अपने घमंड के साथ ही महाराज को भी मुक्त कर देगा।

स्वेन धर्मेण सहितं महितं तातमावयोः ।

महमूदो न चेन्मोक्ता तर्हि भोक्ता स्वकर्म तत् ॥ ४० ॥

४०. स्वधर्म में निष्ठा रखने वाले हमारे पिताजी को, यदि महमूदशाह छोड़ेगा नहीं तो वह अपने कर्मों का फल स्वयं भोगेगा।

यर्हि मोहान्महाराजं येदिलः प्रहरिष्यति ।

तर्हि तं सहितं सद्यस्तात एव हनिष्यति ॥ ४१ ॥

४१. यदि आदिलशाह मूर्खता के कारण महाराज पर प्रहार करेगा तो पिता जी स्वयं ही उसके सहयोगी सहित उसको मार देंगे।

अनारतं मनो येषां धर्मपाशनिबन्धनम्।

अलं न तेषां बन्धाय कारागारादिबन्धनम् ॥ ४२ ॥

४२. जिनके मन सदा धर्मपाश के बंधन से बद्ध है, उनको कारागृह आदि बंधन बांधने में समर्थ नहीं होते हैं।

गृहीता महिता लोके जयवल्ली मया पुरा ।

स्थापितश्चंद्रराजश्च तस्यां तदभिलाषुकः ॥ ४३ ॥

४३. लोगों में प्रसिद्ध जयवल्ली, मैंने पहले ग्रहण की और फिर उसके इच्छुक चंद्रराव को यहां स्थापित कर दिया।

घोरात्मानो घोरफटाः कुपिता इव पन्नगाः।

मां जाङ्गुलिकमालोक्य महतीं शान्तिमागताः ॥ ४४ ॥

४४. नाग के समान क्रोधित हुआ भयंकर घोरपड़े, मुझ विषहारी वैद्य को देखकर अत्यन्त शान्ति को प्राप्त हो गया।

प्रस्थाय प्रथनाय द्राक् मया विद्रावितः पुरा ।

जीवनादाय मुक्तश्च फलस्थानपुरेश्वरः ॥ ४५ ॥

४५. युद्ध के लिए अचानक आक्रमण करने वाले फलटण के राजा को पहले मैंने वापस भगा दिया था और उसको जीवित पकड़कर छोड़ दिया था।

एतेऽधुना समुदिताः फतेखानादयो भटाः ।

योत्स्यन्तेऽस्मान् समासाद्य द्विपा इव मदोत्कटाः ॥ ४६ ॥

४६. अब ये फतेखान आदि संगठित सैनिक हमारे साथ मदमस्त हाथी के समान युद्ध करेंगे।

बलीयानेष बल्लाळः पालयन् प्रबलं बलम्।

मन्यते बहुमात्मानं समादाय शिरोबलम् ॥ ४७ ॥

४७. विशाल सैन्यबल से युक्त यह बलशाली बल्लाल शिरोबल को अधिग्रहित करने के कारण स्वयं को अत्यधिक बलवान् समझ रहा है।

अतो द्रुतमितो गत्वा तमेव बलिनां वरम्।

विनिगृह्य भवन्तोऽद्य मोचयन्तु शिरोबलम् ॥ ४८ ॥

४८. अतः तुम यहां से जल्दी जाकर उस अत्यधिक बलशाली बल्लाल को पकड़कर, आज ही शिरोबल को उससे मुक्त कर दो।

अथ श्वोवा परश्वोवा फतेखानं महावलम् ।

अत्र वा तत्र वा वीक्ष्य प्रतियोत्स्यामहे वयम् ॥ ४९॥

४९. फिर, कल या परसों उस बलवान् फतेखान के साथ हम यहां या वहां उसके साथ युद्ध करेंगे।

कवीन्द्र उवाच-

शिवस्येति वचः श्रुत्वा सैनिकास्ते सहस्रशः।

पुष्करं पूरयामासुः सिंहनादेन भूयसा ॥ ५० ॥

५०. कवीन्द्र बोले- शिवाजी के इन वचनों को सुनकर उसके हजारों सैनिकों ने शेर की तरह प्रचंड गर्जना करके आकाश को गूंजायमान कर दिया।

अथारातिप्रमथनो जगत्स्थापकवंशजः ।

प्रवृद्धप्रथनामोदो गोदोनाम महायुधः ॥ ५१ ॥

व्याघ्रान्वयस्तथा भीमो भीमो भीम इवापरः ।

दलितद्वेषिदोः स्तम्भदम्भस्सम्भश्च काण्टिकः ॥ ५२ ॥

शृङ्गारस्सङ्गराङ्गानामिङ्गालकुलसम्भवः ।

शिवश्चोत्तालकुन्ताग्रः करालः कालसन्निभः ॥ ५३ ॥

परवीराश्रियां चोरश्चोरवंश्यो गणाग्रणीः ।

भीकोऽतिभीषणानीकोऽत्यभीको रणकर्मणि ॥ ५४ ॥

वैरिवित्रासजननो युधि भैरवभैरवः ।

सभाभिर्भासमानोऽस्य सनाभिरपि भैरवः ॥ ५५ ॥

अमी शैलपतेश्शूराः सूरा इव सतेजसः।

स्वया स्वया श्रिया रम्याः प्रणम्यामुं प्रतस्थिरे ॥ ५६ ॥

५१-५६. शत्रुओं का विध्वंस करने वाला, व्यूह युद्ध में आनन्दित होने वाला, महायोद्धा गोदाजी जगताप, मानो दूसरा भीम ही हो ऐसा भयंकर भीमाजी वाघ, शत्रुओं के बाहुबल के अभिमान का नाश करने वाला संभाजी कांटे, यमराज की तरह भयंकर युद्धों के अंगों का शृंगार, जिसके भाले का अग्रभाग उठा हुआ है ऐसा शिवाजी इंगळे, शत्रुओं की लक्ष्मी का हरण करने वाला, युद्धकार्य में अत्यन्त निर्भय, अत्यन्त भीषण सैन्यबल से युक्त ऐसा सेनापति भीकाजी चोर, शत्रुओं की पीड़ा को बढ़ाने वाला, युद्ध में भैरव की तरह भयंकर, वह भैरव नाम वाला, वह इसका सगा भाई सूर्य के समान तेजस्वी था, अपने-अपने शोभा से शोभायमान इन शूरवीरों ने सैनिकों के स्वामी शिवाजी को प्रणाम करके प्रस्थान किया।

आध्यक्ष्ये शिव एतेषां न्ययोजयत काबुकम् ।

सर्वेषां वृष्णिवीराणां वासुदेव इवाहुकम् ॥ ५७ ॥

५७. जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने सात्यकी को यादव वीरों का सेनापति नियुक्त किया, उसी प्रकार शिवाजी ने काबुकजी को उन सबका सेनापति नियुक्त किया था।

सन्नाहैः स्वैः समाकीर्णास्तेऽवतीर्णाः पुरन्दरात् ।

अम्बुदा इव गर्जतः सन्नद्धतरसैधवाः ॥ ५८ ॥

तामतीत्य निशां तत्र प्रतीपविजिगीषया ।

प्रयाणाभिमुखीभूय कारयामासुरानकान् ॥ ५९ ॥

५८-५९. अपनी युद्ध सामग्री को लेकर, अतिशय सज्ज घोड़े पर बैठकर बादल की तरह गर्जना करते हुए वे पुरंदर किले के नीचे उतर गये और रात्रि वही पर व्यतीत करके शत्रु को जीतने के इच्छुक वे सब प्रस्थान अभिमुख होकर, उन्होंने ढोल बजवाया।

अथ पद्भिः पदातीनां भिन्दन्त इव भूतलम् ।

कर्तयन्त इवाश्चीयवर्तकैर्व्योममंडलम् ॥ ६० ॥

प्रकिरन्त इवारीणामुपरि प्रलयानलम् ॥

शरास्ते ददृशुस्सद्यो विकुर्वाणाश्शिशरोबलम् ॥ ६१ ॥

६०-६१. तत्पश्चात् पदातियों के पैरों से मानों भूतल को विदीर्ण करते हुए घोड़ों के खुरों से मानों आकाश को काटते हुए शत्रुओं पर मानो प्रलयाम्नि को बिखेरते हुए उन शूरवीरों ने शीघ्र ही शिरबल को देख लिया अर्थात् पहुंच गए।

परस्तु बलवद्वीक्ष्य शिवसैन्यमुपागतम् ।

निजगाद निजानीकपत्तीनतिमतीनिदम् ॥ ६२ ॥

६२. शिवाजी के बलशाली सेना को समीप आया हुआ देखकर शत्रु भी अपनी सेना में से अत्यन्त बुद्धिमान पदातियों से इस प्रकार बोला।

बल्लाल उवाच -

मा भैष्ट स्मयबंहिष्ठमवलोक्य द्विषद्बलम्।

प्रधने निधनं श्रेष्ठमश्रेष्ठं हि पलायनम् ॥ ६३ ॥

६३. बल्लाल बोला - शत्रु की अत्यन्त अभिमानी सेना को देखकर मत डरो, युद्ध में मृत्यु श्रेष्ठ होती है किंतु युद्ध से पलायन निन्दनीय होता।

फतेखानमतेनैते वयं प्राप्ताशिशिरोबलम् ॥

अवस्थानमिहास्माकं ध्रुवस्थानमिव ध्रुवम् ॥ ६४ ॥

६४. फतेखान की आज्ञा से हम शिरबल आये हैं, इस स्थान पर हमारा निवास ध्रुव तारे की तरह निश्चित है।

यदि वो भयमेतर्हि तर्हि सद्यो ममाज्ञया ॥

द्वितीयमिवमामत्र वप्रमालम्ब्य तिष्ठत ॥ ६५ ॥

६५. यदि तुम अब भी भयभीत हो तो मुझे दूसरा तट समझकर, मेरा शीघ्र ही आश्रय लेकर और मेरी आज्ञा से यहां निवास करो।

न ह्यस्मन्निधनेनैव स्वामिकार्यं प्रसिध्यति ॥

अतो युध्दाय महते वप्रमेवाश्रयामहे ॥ ६६ ॥

६६. केवल हमारी मृत्यु से ही स्वामिकार्य की सिद्धि नहीं होती है। इसलिए बड़े युद्ध के लिए इस परिखा का ही आश्रय लेंगे।

क्षोदिष्ठमपि दिष्टेन दिष्टेऽमुष्मिन् सुदुर्गमे।

दुर्गमेतद्धिद सिद्धिन्नो युध्दस्यास्य विधास्यति ॥ ६७ ॥



६७. भाग्य दैववश आई हुई इस अत्यन्त दुर्गम परिस्थिति में यह अत्यन्त छोटी परिखा भी इस युद्ध में हमारी सिद्धि को प्राप्त करा देगी।

साभिमानैस्साभिमानं युध्यमानैश्शिरोबले ॥

इहास्माभिश्शिरोदेयं न तु देयं यशो रणे ॥ ६८ ॥

६८. हम अभिमानी लोगों को अभिमान के साथ इस शिरबल स्थान पर लड़ते-लड़ते अपने शिर को देना चाहिए किन्तु शत्रु को युद्ध में यश नहीं देना चाहिए।

यशसे दयितां स्वीयां दशास्यदमनो जहौ ॥

यशसे दानवाधीशो बलिः पातालमाययौ । ६९ ॥

यशसे दानवारातिः कामठीं तनुमाददे ॥

यशसे स्वयमुत्कृत्योत्कृत्य मांसं शिबिर्ददौ ॥ ७० ॥

यशसे खण्डपरशुः सद्यो हालाहलं पपौ ॥

यशसेऽस्थीन्यहोत्कृत्य दधीचिस्सद्गतिं ययौ ॥ ७१ ॥

यशसे काश्यपीं सर्वामत्यजज्जमदग्निजः ॥

यशसे शरशय्यायामशेत स्वर्णदीसुतः ॥ ७२ ॥

तदद्य यशसेऽर्थाय प्रतियोत्स्यामहे परान् ॥

यावन्न प्रहरन्त्येते वीक्ष्य वीक्ष्य वरान् वरान् ॥ ७३ ॥

६९-७३. यश प्राप्ति के लिए राम ने अपनी पत्नी को छोड़ दिया, यशप्राप्ति के लिए राक्षसों का राजा बली पाताल चला गया, यशप्राप्ति के लिए ही शिवि राजा ने अपने मांस के टुकड़े करके दिये, यश के लिए ही शंकर ने हालाहल विष को पी लिया, यश के लिए ही दधीचि ने अपनी हड्डियां दी एवं सद्गति को प्राप्त हो गये, यश के लिए ही परशुराम ने सम्पूर्ण पृथ्वी को छोड़ दिया था, यशप्राप्ति के लिए ही भीष्म शरशय्या पर सोये थे, इसलिए आज जब तक इनमें से प्रमुख-प्रमुख लोगों को चुनकर मारेंगे नहीं तब हम यश के लिए और धन के लिए शत्रुओं के साथ युद्ध करते रहेंगे।

इत्युक्तवति बल्लाळे योधास्तस्य सहस्रशः ॥

सद्यस्तदुर्गमास्थाय विनेदुर्द्विरदा इव ॥ ७४ ॥

७४. इस प्रकार बल्लाल के कहने पर उसके हजारों सैनिक किले का आश्रय लेकर हाथी के समान गर्जना करने लगे।

अथ प्रतिभटान् दृष्ट्वा कृतवप्रावलम्बनान् ।

काबुकस्समराकाक्षी स्वान् सैन्यानिदमब्रवीत् ॥७५॥

७५. शत्रुओं ने परिखा का आश्रय लिया है, ऐसा देखकर युद्ध के इच्छुक काबुक ने अपने सैनिकों से इस प्रकार कहा।

काबुक उवाच-

अहो शिवस्य विषयं संप्राप्तो विजिगीषया।

बलवानेष बल्लाळो वप्रमाश्रित्य तिष्ठति ॥ ७६ ॥

७६. काबुक बोला - अरे! शिवाजी के प्रान्त को जीतने की इच्छा से आया हुआ। यह बलवान् बल्लाल परिखा का आश्रय लेकर स्थित है।

अस्मदीयमिदं ह्येष समाश्रित्य शिरोबलम् ।

अहो दर्शयते मन्दमतिरात्मशिरोबलम् ॥ ७७ ॥

७७. अपने इस शिरोबल का आश्रय लेकर रहने वाला यह मंदमति अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन कर रहा है।

न सन्त्यष्टा स्तथा चास्य नह्यस्ति परिखा तथा।

अतो न दुर्गमं दुर्गमदो जानीत सैनिकाः ॥ ७८ ॥

७८. इस किले का वैसा अट्ट भी नहीं और नहीं वैसी परिखा है। इसलिए अरे सैनिकों! यह दुर्ग दुर्गम है, ऐसा मत समझो।

क्रियतां परिवेषोऽस्य परितोऽध्वा निरुध्यताम् ।

क्षणेनैकेन निखिला परिखापि प्रपूर्यताम् ॥ ७९ ॥

७९. इसको घेर लो, इसके चारों ओर से मार्ग को रोक दो और एक मिनट में सम्पूर्ण परिखाओं को भर दो।

विहङ्गमानिवोदग्रक्रमानात्मतुरङ्गमान् ।

उत्पात्यादीयतामेतत् कुदालैर्वा विदार्यताम् ॥ ८० ॥

८०. पक्षियों की तरह घोड़ों को उंचा कूदाकर ले लो या फिर इसे कुदाल से फोड़ दो।

उत्खन्यतामदः सद्यो मूलमस्य निखन्यताम् ।

किमु दुर्गमिदं लंका येनातंकाय जायताम् ॥ ८१ ॥

८१. इसको खोद दो एवं इसके बाद शीघ्र ही इसके नींव को भी खोद दो। यह दुर्ग क्या कोई लंका है? जिससे भय प्रतीत हो।

इत्युक्ताः काबुनोच्चैः सैनिकाः समरोधदताः ।

सद्यस्तदुर्गमादातुमुपचक्रभिरेऽभितः ॥ ८२ ॥

८२. काबुक के इस प्रेरणादायक वचनों से युद्ध के लिए उत्सुक सैनिकों ने शीघ्र ही उस दुर्ग पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया।

परेष्यमून् पुरो वीक्ष्य सुरोधुरपराक्रमान् ।

मन्वानाः प्रधनारम्भं धन्वान्यादुधुवुस्तमाम् ॥ ८३ ॥

८३. देवों की तरह पराक्रमी उन वीरों को सम्मुख देखकर युद्ध का आरम्भ हो गया है, ऐसा मानकर शत्रु भी धनुष चलाने लगे।

उपरिष्ठादिमान् द्रष्टुं यश्चकारोन्नतं शिरः।

स सद्यच्छिन्नमूर्धत्वादभूत् केतुग्रहो यथा ॥ ८४ ॥

८४. ऊपर से इनको देखने के लिए जो सिर उन्नत करता था उसका सिर शीघ्र ही काट दिया जाता था और वह केतु ग्रह जैसा हो जाता था।

शाखाभ्य इव वृक्षाणां चञ्चरीकपरम्पराः ।

शरासनेभ्यश्शूराणां निरीयुर्निशिताशराः ॥ ८५ ॥

८५. वृक्षों की शाखाओं से जैसे भंवरों की संपूर्ण पंक्ति उड़ जाती है वैसे ही शूरीरों के धनुष से तीक्ष्ण बाण निकलने लगे।

क्रूराः कार्मुकमाकर्ण समाकृष्य महौजसः ।

शूराशिशरांसि शूराणां निचकर्तुश्शितैश्शरैः ॥ ८६ ॥

८६. क्रूर बलशाली शूरवीर धनुष को कान तक खींच कर अपने तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं के सिरों को काटने लगे।

कृतहस्तविनिर्मुक्ताः सायकाः पातुकाः क्षितिम् ।

विविशुस्तत्तलं चोच्चैः ददृशुश्च फणीश्वरम् ॥ ८७ ॥

८७. उत्कृष्ट धनुर्धरों द्वारा छोड़े गए एवं पृथ्वी पर गिरने वाले बाण उनके पेट में इतनी तेजी से घुसते थे कि तत्क्षण ही उनको शेषराज का दर्शन हो जाता था।

रथाङ्गौर्लाङ्गलैरक्षैर्मसलैरप्युलूखलैः ।

उपलैश्च घरट्टैश्च प्रज्वलद्भिस्तथोल्मुकैः ॥ ८८ ॥

खादिराङ्गारपुञ्जैश्च तप्तैस्तैलैश्च भूरिशः ।

तैस्तैश्शस्त्रैश्च वप्रस्थाः प्रतिवीरानवाकिरन् ॥ ८९ ॥

८८-८९. रथ के चक्के, हल, मुसल, ऊखल, पत्थर, घरह, जलता हुआ कोयला, खजूर के अंगारों का ढेर, तपा हुआ तेल एवं अनेक प्रकार के शस्त्र, परिखा में बैठे हुए लोग शत्रुवीरों पर फेंकने लगे।

हन्यमानैरपि परैः शिवसैन्यैरुदायुधैः ।

परिमण्डलितं दुर्गमिदमभ्यधिकं बभौ ॥ ९० ॥

९०. शत्रुओं के द्वारा मारे जाने पर भी शास्त्रों को उठाए हुए शिवाजी के सैनिकों से घिरा हुआ वह किला अत्यधिक सुशोभित होने लगा।

ततो गदाभिर्दिर्घाभिः परिघैरप्यनेकधा ।

तद्गुर्ग दारयामासुरुध्दताः केपि सैनिकाः ॥ ९१ ॥

९१. तत्पश्चात् दीर्घ गदाओं से एवं लोहबद्ध डंडों से कुछ क्रोधित सैनिकों ने अनेक स्थानों से उस किले को विदीर्ण कर दिया।

केपि कुन्ताभिघातेन सुषिराणि प्रचक्रिरे ।

निश्रेणीरधिरुह्यान् ये तद्धिक्तीः परिरेभिरे ॥ ९२ ॥

९२. कुछ सैनिकों ने भाले के प्रहारों से छिद्र कर दिए, कुछ ने चोटी पर चढ़कर उनकी दीवारों को तोड़ दिया।

आरूढास्तुरगान् केपि गरुडानिव रंहसा ।

तदुत्पतितुमैहन्त हन्त संप्रेक्ष्य सर्वतः ॥ ९३ ॥

९३. गरुड़ की तरह वेगवान घोड़ों पर बैठे हुए कुछ सैनिक चारों ओर अच्छी तरह देख कर उन पर कूदकर जाने का प्रयास करने लगे।

काबुकस्तु गदादीनामायुधानामनेकधा ।

अभिघातेन महता दारयामास गोपुरम् ॥ ९४ ॥

९४. काबुक ने तो गधा आदि अनेक प्रकार के शस्त्रों के द्वारा अनेक स्थान पर प्रहार करके नगर के द्वार को तोड़ दिया।

स भिन्नगोपुरं वीरः प्राकारं प्राविशद्यदा ।

अभ्येत्य युयुधे तत्र येदिलानीकिनी तदा ॥ ९५ ॥

९५. जब वह वीर टूटे हुए, नगरद्वार के प्रकार में घुस गया तब आदिलशाह की सेना उसके साथ उस समय युद्ध करने लगी।

वडवाग्नीनिवाग्राह्यतमानभ्यागतानिमान् ।

प्रतिगृह्य प्रतिग्राह्यान् बल्लालो बलवान् बभौ ॥ ९६ ॥

९६. वडवाग्नि की तरह अत्यंत स्वच्छंदता से आए हुए शत्रुओं को देखकर वडवाग्नि की तरह यह बलवान बल्लाल शत्रु पक्ष का प्रतिकार करते हुए सुशोभित होने लगा।

दर्शनीयतमः प्रांशुः पिन्धदकवचो युवा ॥

कुंतधारी धन्वधरो धीरः सैनिकसंवृतः ॥ ९७ ॥

तुङ्गं तुरङ्गमारूढः स तदाभ्यधिकं तथा ॥

दिदीपे किल निर्वाणवेलायां दीपको यथा ॥ ९८ ॥

९७-९८. दर्शनीय उन्नत कवच धारण किया हुआ युवा, भाला एवं धनुष को धारण करने वाला, धैर्यवान सैनिकों से घिरा हुआ, ऊंचे घोड़े पर बैठा हुआ वह बल्लाल जैसे बुझता हुआ दीपक अत्यधिक प्रकाशित होता है वैसे वह सुशोभित होने लगा।

अथ भीकश्च भीमश्च तुको गोदः सदस्तथा ॥

सम्भश्चान्येच सुभटाः पुरोविहितकाबुकाः ॥ ९९ ॥

द्रुतमुत्पातितोदग्रतुरगास्तरलायुधाः ॥

प्रहरन्ति स्म बल्लालप्रभृतींस्तीव्रया क्रुधा ॥ १०० ॥

९९-१००. तत्पश्चात् काबुक के नेतृत्व में भी काजी, भीमाजी, तोकाजी, गोदाजी, सदोजी, संभाजी और दूसरे सैनिक भी अपने उन्नत घोड़ों को वेग से कूदाते हुए एवं अपने चपल शस्त्रों से बल्लाल आदि वीरों पर अतिशय क्रोध से प्रहार करने लगे।

ततस्तेषां च तेषां च द्वेषान्धतमसान्तरे ।

आयुधान्यायुधीयानामन्योन्यं परिरेभिरे ॥ १०१ ॥

१०१. उस समय द्वेषरूपी काले अंधकार के मध्य दोनों पक्षों के योद्धाओं के शस्त्रों का एक दूसरे पर प्रहार होने लगा।

समरारम्भसंरम्भादन्योन्यमभिधायिनाम् ॥

ताक्षर्यस्फुरत्तरतरतुरगस्थितिशालिनाम् ॥ १०२ ॥

प्रत्यहन्यन्त शतशः शस्त्रैः शस्त्राणि शस्त्रिणाम् ॥

विद्युतामिव तेजोभिर्दिवि तेजांसि विद्युताम् ॥ १०३ ॥

१०२-१०३. युद्ध के आवेश में एक दूसरे पर प्रहार करने वाले गरुड़ से भी अधिक वेगवान घोड़े पर बैठे हुए योद्धाओं के शस्त्र, आकाशीय विद्युत जिस तरह परस्पर टकराती है उसी प्रकार सैकड़ों शस्त्र टकराए।

कुन्तपाणिः कुन्तधरं धन्वधारी धनुर्धरम् ।

गदी जघान गदिनं तदानीं शकलीभवन् ॥ १०४ ॥

१०४. स्वयं के टुकड़े होते समय, भालाधारी भालाधारी को, धनुर्धारी धनुर्धारी को, गदाधारी गदाधारी को मारने लगा।

न चर्मिणं विना चर्मी न वर्मी वर्मिणं विना ॥

युयुधे प्रधनेऽमुष्मिन्न धन्वी धन्विनं विना ॥ १०५ ॥

१०५. ढालधारी ने ढाल से रहित के साथ , कवचधारी ने कवच रहित के साथ एवं धनुर्धर ने धनुष से रहित के साथ इस युद्ध में युद्ध नहीं किया।

उरच्छदमनिर्भिद्य द्रुतमुत्पतिताः शराः ॥

क्षणं नमस्यभासन्त यथा वैभाकराः कराः ॥ १०६ ॥

१०६. कवच को छिन्न-भिन्न करने में असमर्थ होने से शीघ्र ही ऊपर उड़े हुए वह बाण सूर्य की किरणों की तरह क्षणभर आकाश में चमके।

भटान् सारेच्छदान् भित्वा वसुधां विविशुः शराः ॥

ततो रुधिरधाराणामाविरासुः परम्पराः ॥ १०७ ॥

१०७. कवचधारी योद्धाओं को छिन्न-भिन्न करके जब बाण पृथ्वी में घुस गए तब उनके शरीर से रक्त की धारा अविरल होकर बहने लगी।

क्रुद्धहस्तवदुन्मुक्तपृषत्कोत्कृतमस्तकाः ।

क्षरद्रुधिरदिग्धाङ्गाः कबन्धास्तत्र चुक्रुधुः ॥ १०८ ॥

१०८. वहां पर क्रोधित धनुर्धरों के द्वारा छोड़े गए बाणों से सिर धड़ से अलग हो गए एवं गिरते हुए रक्त से रक्त रंजित शरीर धरती पर गिर गए।

ततो धरातले पेतुर्मातङ्गानां तताः कराः ॥

शरैश्शकलिताङ्गानां तुरङ्गाणाञ्च कन्धराः ॥ १०९ ॥

१०९. तत्पश्चात् हाथी की लंबी सूंड एवं बाणों से जिसके शरीर के टुकड़े हो गए हैं ऐसे घोड़ों की गर्दन टूटकर भूमि पर गिरने लगी।

शरासनधरैश्शरैः शरच्छिन्नान्यनेकशः ॥

परितस्तरिरेऽरीणां शिरांसि समराजिरे ॥ ११० ॥

११०. शूर धनुर्धरों के बाणों के द्वारा तोड़े गये शत्रुओं के अनेक सिर युद्धभूमि पर फैल गए।

कञ्चित्प्रसभमभ्येत्य गदापाणिमुपागतम् ॥

संग्रामसागरग्राहमभिजग्राह कश्चन ॥ १११ ॥

१११. युद्धरूपी सागर से समीप आये हुए किसी गदाधारी रूपी मगरमच्छ को, किसी ने चतुरता से समीप जाकर जोर से पकड़ लिया।

तत्रान्याच्छिभमेकं यः स्वं हस्तं नावबुद्धवान् ॥

स एकेनैव हस्तेन हस्तीवाभिययौ परान् ॥ ११२ ॥

पञ्चविंशतिमिंगालः पोलः पंच च सप्त च ॥

चोरश्चतुर्दश तथा नवाष्टौ षट्च घाण्टिकः ॥ ११३ ॥

निजघान क्षणात्तत्र वीरान् व्याघ्रश्च षोडश ॥

एकोनविंशाः सुभटाः काबुकेन निषूदिताः ॥ ११४ ॥

११२-११४. वहाँ पर जो अपने एक कटे हुए हाथ को नहीं जान पाया, वह एक ही हाथ से हाथी के समान शत्रुओं पर प्रहार कर रहा था। उस स्थान पर इंगळे ने पच्चीस को, पोल ने बारह को, चोर ने चौदह को, उसी प्रकार घाटगे ने तेईस को, वाघ ने सोलह को इस प्रकार क्षणभर में ही वीरों को मार दिया एवं काबुक ने उन्नीस उत्कृष्ट योद्धाओं को मार दिया था।

प्रहतानेकगत्यश्च द्विपवर्षसमुद्भवा ।

प्रावर्तत तदा तत्र रयाद्रक्ततरङ्गिणी ॥ ११५ ॥

११५. तब वहाँ पर पदातियों, घोड़ों एवं हाथी के शरीर से निकलने वाली रक्त की नदी वेग से बहने लगी।

पराभूय परे वीराः परिवव्र्युदा बलात् ।

तदाभयाद्विदुद्राव बल्लालबलमाहवात् ॥ ११६ ॥

११६. जब शत्रुवीरों ने बलपूर्वक पराजित करके घेर लिया तब बल्लाल की सेना भयभीत होकर युद्धभूमि से पलायन करने लगी।



हैबतस्यात्मजस्तत्र शत्रुभिर्विमुखीकृतम् ॥

न चक्षमे स्थिरीकर्तुं तदलं विचलद्वलम् ॥ ११७ ॥

११७. शत्रुओं के द्वारा वापस लौटाएं गए एवं विचलित होकर पलायन करने वाली सेना को हैबत राजा का पुत्र नियन्त्रित नहीं कर सका।

अथाद्धा स किल स्पर्धामादायोद्यमितायुधः ।

रयादमीयाय परान् रुषा वृत्र इवामरान् ॥ ११८ ॥

११८. तब वह अत्यधिक क्रोधित होकर, अपने शस्त्रों को उठाकर जैसे वृत्रासर ने क्रोध से देवों पर प्रहार किया, उसी प्रकार शत्रु पर उसने प्रहार किया।

यावन्तः किल तस्यासन्निषुधिविद्वितयी शराः ।

तावन्तः पातितास्तेन काबुकीयाः पुरस्सराः ॥ ११९ ॥

११९. उसके तूणीर युगल में जितने बाण थे उनसे उतने ही काबुक के अग्रणी वीरों को मार दिया।

स यावत् प्रासमादाय त्रासयत्यभितः परान् ॥

तावत् कुन्ताभिघातेन काबुकस्तमपातयत् ॥ १२० ॥

१२०. वह जो भाला लेकर शत्रुओं को चारों ओर से पीड़ित कर रहा था, उसको ही काबुक ने अपने भाले के प्रहार से गिरा दिया।

युध्यमानेऽभिमानेन सिंहेनेवोन्मदे गजे ।

शिवसेनधिपतिना पातिते हैबतात्मजे ॥ १२१ ॥

रक्तमेदोवसामांसमसृणे क्षोणिमण्डले ।

कोपि धर्तुमहो धैर्यं प्रभुरासीन्न तद्वले ॥ १२२ ॥

१२१-१२२. सिंह जैसे मदमस्त हाथी को गिराता है, उसी प्रकार अभिमान से युद्ध करने वाले उस शिवाजी के सेनापति के द्वारा हैबत राज के पुत्र को गिरा देने पर रक्त मेद, चर्बी एवं मांस इन सबका भूमि पर कीचड़ हो गया। उसके बाद उसकी सेना में कोई भी धैर्य धारण करने वाला स्वामी नहीं था।

तत्र दन्ताग्रविन्यस्ततृणास्त्राणार्थिनो जनाः ॥

शतशः स्वैरमगमन् विमुक्तास्तेन मानिना ॥ १२३ ॥

१२३. उस समय दांतों में तिनका दबाकर शरण में आये हुए सैकड़ों लोगों को उस स्वाभिमानी काबुक ने मुक्त कर दिया और वे स्वच्छन्दता से चले गए।

केपि युद्धाभिमानेन युध्यमानाः प्रमन्यवः ॥

सायकैश्शकलीभूताः शतक्रतुपदं ययुः ॥ १२४ ॥

१२४. अतिशय क्रोधित कुछ लोगों ने अभिमानपूर्वक युद्ध किया और बाणों से उनके तुकड़े होकर वे स्वर्गवासी हो गये।

केचनच्छिन्न चरणाः केचन च्छिन्नपाणयः ॥

केचन च्छिन्नवर्माणः केचन च्छिन्नवक्षसः ॥ १२५ ॥

छिन्नत्रिकास्तथा केचित् केचिच्छिन्नफोणयः ॥

रणन्तः करुणं मम्लुर्विलुठन्तो महीतले ॥ १२६ ॥

१२५-१२६. किसी के पैर टुटकर, किसी के हाथ टुटकर, किसी के कवच खण्डशः होकर, किसी की छाती भिन्न होकर, किसी की रीढ़ की हड्डी टुटकर, तो किसी की कोहनी फुटकर, वे करुणा जनक आवाज निकालकर पृथ्वी पर लुढ़क-लुढ़क मूर्च्छित हो गये।

अथ विद्विषतस्तस्य शयानस्य रणाङ्गणे ।

कुञ्जरास्तुरगांस्तुङ्गांस्तत्तदाभरणानि च ॥ १२७ ॥

चित्राण्यपि च वस्त्राणि तनुत्राण्यायुधानि च ॥

याप्ययानानि कोषांश्च सम्भारानपरानपि ॥ १२८ ॥

संप्रहृष्टास्समादाय सुभटाः काबुकादयः ॥

पुरन्दरप्रभुं द्रष्टुं पुरन्दरगिरिं ययुः ॥ १२९ ॥

१२७-१२९. फिर उस शत्रु के रणभूमि पर गिरने के बाद, हाथी, उन्नत घोड़े, अनेक प्रकार के आभूषण, रंगबिरंगे वस्त्र, कवच, शस्त्रास्त्र, पालकियां, कोष और दूसरे सामान को भी लेकर अत्यंत आनंदित होकर काबुक आदि उत्कृष्ट योद्धा शिवाजी से मिलने के लिए पुरंदर किले पर चले गये।

अपहतारिपुवीरानेकयाश्चप्रवेक-

प्रचुरकनकमुक्ताहाररत्नोपहाराः ।

अवनमितशिरस्काः सैनिकाः काबुकाद्याः

सरभसकृतकार्याः शाहसूनुं प्रणेमुः ॥ १३० ॥

१३०. शत्रुवीरों को मारकर अपने कार्य को शीघ्र ही पूर्ण करके उत्तम हाथी, घोड़ें, विपुल स्वर्ण, मोतियों की माला एवं रत्नों को अर्पित करके सिर झुकाकर काबुल आदि सैनिकों ने शिवाजी को प्रणाम किया।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां संहितायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

## अध्याय:-१४

प्रधने पातितं श्रुत्वा बलिनं हैबतात्मजम् ।

चुकोप शिवराजाय फत्तेखानः स्मयं वहन् ॥ १ ॥

१. कवीन्द्र बोला - हैबतराजा के बलशाली पुत्र को युद्ध में मार दिया ऐसा सुनकर अभिमानी फत्तेखान शिवाजी पर क्रोधित हुआ।

ततो मुसेखानमुखैर्यवनैः सबलैर्वृतः ।

मत्तजित्प्रमुखैर्भूपैरनेकैश्चाभिरक्षितः ॥ २ ॥

मतङ्गजैरिवोन्मत्तेः सामन्तैश्च समंततः ।

युतस्सोऽभिययौ तूर्णं शिवराजजिगीषया ॥ ३ ॥

२-३. तत्पश्चात् मुसेखान आदि बलवान् यवनों के द्वारा परिवेष्टित, मत्ताजी प्रमुख अनेक राजाओं द्वारा रक्षित एवं हाथी के समान मदमस्त सामन्त राजाओं द्वारा चारों ओर से घिरे हुए उस फत्तेखान ने शिवाजी को जीतने की इच्छा से तुरन्त प्रस्थान किया।

प्रचलन्मत्तमातङ्गचक्रनक्रसमाकुलम् ।

प्रोत्पतत्तरलोत्तुङ्गतुरङ्गतिमिमण्डलम् ॥ ४ ॥

मारुतान्दोलितानेकपतानेकपताकोर्मिविराजितम् ।

धरातलोद्भूतरजोभरधाराधरोद्भुरम् ॥ ५ ॥

स्फुरद्गुण्डुभिनिर्घोषं घोषोद्घोषितदिक्तटम् ।

सितातपत्राडिण्डरिपिण्डमण्डलेपाण्डुरम् ॥ ६ ॥

कठोरचर्मकमठं चण्डकोदण्डपन्नगम् ।

विस्फुरद्धेतिवडवानलप्रतिभयप्रदम् ॥ ७ ॥

समरार्थी समादाय तरसा सैन्यसागरम् ।

स येदिलचमूपालः पश्यति स्म पुरन्दरम् ॥ ८ ॥

४-८. किसी ने चलते हुए मदमस्त हाथी के समूह को ही मगरमच्छ का समूह समझ लिया, किसी ने कूदते हुए चतुर एवं उन्नत घोड़ों को मछलियों का समूह समझ लिया, वायु से हिलने वाले ध्वजरूपी तरंगों से सुशोभित, किसी ने पृथ्वी से उठने वाली धूल के समूह को ही बादल से आच्छादित आकाश समझ लिया। किसी ने दुंदुभी के ध्वनि को ही दिशा रूपी किनारों को प्रतिध्वनित करने वाली गर्जना समझ लिया, किसी ने सफेद छातों को ही झाग समूह समझकर उसके समूह से सफेद दिख रहा है ऐसा समझ लिया। किसी ने कठोर ढालों को कछुआ तो किसी ने प्रचण्ड धनुष को ही सांप समझ लिया शस्त्ररूपी वडवाग्नि से भयंकर सेनारूपी समुद्र को युद्ध के लिए साथ ले जाते समय आदिलशाह के सेनापति को पुरंदर का किला दिख गया।

साभिमानः फतेखानः प्रचलन्तीं प्रभाविणीम् ।

अविदूरे गिरेस्तस्य न्यवेशयत वाहिनीम् ॥ ९ ॥

९. अभिमानी फतेखान ने चालकी से जाने वाली उस बलवान सेना निवासस्थल, उस किले से थोड़ी ही दूर पर बना लिया।

शाहसूनुस्तदालोक्य द्विपत्सैन्यमुपागतम् ।

न्यध्वानयद् गिरेस्तस्य शिखरे सङ्गरानकम् ॥ १० ॥

१०. उस शत्रु सेना को समीप आया हुआ देखकर, शाहजी के पुत्र ने किले के शिखर पर जाकर युद्ध की दुंदुभी बजा दी।

तेनानकनिनादेन परसैनिकमानसम् ।

चकम्पे पवनेनेव सरः सपदि मानसम् ॥ ११ ॥

११. जैसे वायु से मानस सरोवर अचानक कंपित हो जाता है, उसी प्रकार उस दुंदुभी के ध्वनि से शत्रु के मन कंपित हो गये।

अथ मानी फतेखानः समानगुणशालिभिः ।

मुसेखानप्रभृतिभिर्महाहङ्कारकारिभिः ॥ १२ ॥

कल्पानलसमप्राणकृपाणवरधारिभिः ।

प्रवृद्धाभ्याहवोत्साहैः ससन्नाहैः प्रभाविभिः ॥ १३ ॥

धीरैः परिवृतो वीरैः क्ष्वेडारवविधायिभिः ।

सद्यः पुरन्दरं शैलमारोढुमुपचक्रमे ॥ १४ ॥

१२-१४. तत्पश्चात् समान गुणशाली, अहंकारी, प्रलयाग्नि के समान उत्कृष्ट तलवारों को धारण करने वाले युद्ध करने के लिए उत्सुक, प्रभावी शस्त्रों से सज्ज, गर्जना करने वाले, ऐसे मुसेखान आदि पराक्रमी एवं धैर्यवान् वीर सैनिकों को साथ लेकर वह अभिमानी फतेखान शीघ्र ही पुरंदर किले पर चढ़ने लगा।

विदारिताभ्रगर्भाणि क्ष्वेडितानि वितन्वतः ।

तस्यानीकस्य महतो धरन्तमधिरोहतः ॥ १५ ॥

अभूत् पृष्ठे फतेखानो मुसेखानो मुखेऽभवत् ।

फलस्थानपतिस्सव्ये पार्श्वेऽन्यत्र च घाण्टिकः ॥ १६ ॥

१५-१६. बादलों को विदीर्ण करने वाली गर्जना को करती हुए वह प्रचण्ड सेना जब किले पर चढ़ रही थी तो उसके पृष्ठभाग पर फतेखान, अग्रभाग पर मुसेखान, बायीं तरफ फलटण का राजा और दाएं तरफ घाटगे था।

दुदुर्नैवपदं भूमौ येन्वहं यानयायिनः ।

ते तमारुरुहुश्शैलं तदा बत निजैः पदैः ॥ १७ ॥

१७. जिन्होंने कभी भूमि पर पैर नहीं रखा एवं जो सदा वाहन से ही यात्रा करते थे, उनको भी उस समय किले पर अपने पैरों से ही चढ़ना पड़ा।

अचलारोहणपरांस्ततो दृष्ट्वाभितः परान् ।

शिवसेनाधिपतयः क्रुद्धासिंहा इवानदन् ॥ १८ ॥

१८. तत्पश्चात् चारों ओर से किले पर चढ़ने वाले शत्रुओं को देखकर शिवाजी के सेनाधिपति ने क्रोधित होकर सिंह के समान गर्जना की।

प्रज्वलद्भिरयः पिण्डैर्नालायंत्रास्य निःसृतैः ।

नलिका गुळिकाभिश्च गण्डशैलैरनेकशः ॥ १९ ॥

उल्काबाणैश्च शतशो भिन्दिपालैश्च भूरिशः ।

परानवाकिरन् भूरि शिवशूरास्सहस्रशः ॥ २० ॥

१९-२०. तोपों के मुंह से निकलने वाले प्रज्वलित लोहे गोलों से, बन्दूक की गोलियों से अनेक बड़े-बड़े शिलाओं से दारू के सैकड़ों बाणों से, गुलेल से घुमाये हुए अनेक पत्थरों से, शिवाजी के हजारों वीर सैनिकों ने शत्रु पर अत्यधिक प्रहार किया।

शिलोच्चयपरिभ्रष्टानूपलानुरुविग्रहान् ।

यांस्तले पातयामासुः शिवसैन्याः किलोद्धुरान् ॥ २१ ॥

दूरादापततां तेषां संघट्टादध्वसंस्थिताः ।

धाराधरावधराः समुद्धूतरजोभवाः ॥ २२ ॥

पृथुलास्तत् क्षणोन्मीलत्प्रचुराग्निकणाकुलाः ।

----- ॥ २३ ॥

उपलाशशकलीभूताः प्रभूताः परितोऽबरम् ।

प्रोत्पत्य प्राहरन्नुच्चैस्तदुपेतं द्विषद्वलम् ॥ २४ ॥

२१-२४. पर्वत से गिरी हुई जिन प्रचण्ड शिलाओं को शिवाजी के सैनिकों ने नीचे ढकेल दिया था, वे शिलाएं उन्नत स्थान से नीचे गिरते समय आपस में होने वाले भिडंत से तथा मार्ग में स्थित बड़ी शिलाओं के साथ घर्षण होने से उनसे धूल उड़ने लगी एवं तत्क्षण अग्नि की अत्यधिक चिंगारियां निकलने से उनके अनेक तुकड़े होकर वे सर्वत्र आकाश में उड़कर समीप आये हुई उस शत्रु की सेना पर जोर से गिरने लगी।

दूरम्मदप्रतिभयैर्ज्वालजालमयैस्तदा ।

अग्नियन्त्रोद्गतैरश्मसारपिण्डैरनेकशः ॥ २५ ॥

खण्डशः खण्डशोभूतास्ते येदिलचमूभटाः ।

खगा इव खमुत्पत्य श्येनश्रेणिमतर्पयन् ॥ २६ ॥

२५-२६. तोपों से निकलने वाले आकाशीय विद्युत् के समान भयंकर ज्वालाओं के लपटों जैसे, अनेक लोहों के गोलों से आदिलशाह के सेना के उन सैनिकों के तुकड़े होकर, पक्षियों की तरह आकाश में उड़कर बाज के पंक्तियों को तृप्त करने लगे।

उल्काबाणाः क्षणे तस्मिन् उपाहितसलक्षणाः ।

प्रोद्धवद्दारुणारावमापतन्तो नभोगणात् ॥ २७ ॥

गरलज्वलनज्वालाननाः किमनिलाशनाः ।

भ्रान्त्वा भ्रान्त्वा परिभ्रान्तां विदधुर्यावनीं चमूम् ॥ २८ ॥

२७-२८. भयंकर आवाज करते हुए आकाश से नीचे गिरने वाले समान लक्षणों से युक्त दारु के बाण मानो विषाग्नि की ज्वाला को मुंह से छोड़ने वाले सांप ही हो, ऐसी प्रतीति कराते हुए बाण गोल घुमकर आदिलशाह की सेना पर धड़ाधड़ गिरने लगे।

एकापि गुळिका तत्र नलिकायन्त्रनिर्गता ।

भित्वाभ्यपातयद् भूमौ जवना यवनान् बहून् ॥ २९ ॥

२९. बंदूक से निकली हुई एक ही वेगवान् गोली अनेक यवनों को भेदकर उनको पृथ्वी पर गिराने लगी।

गिरिस्थपरिमुक्ताभिः शिलाभिश्शीर्णवक्षसः।

केचित्प्रपद्य वैचित्यमध्वनोर्ह्वितस्थिरे ॥ ३० ॥

३०. किले पर स्थित लोगों द्वारा छोड़े गये शिलाओं के द्वारा जिनके वक्षःस्थल चूर्ण हो गये हैं, ऐसे अनेक लोग मूर्च्छित होकर आधे मार्ग में गिर गए।

गिरेस्तस्य तटे लग्नाः केऽपि भग्ना महाश्मभिः ।

वमन्तो लोहितं भूरि रक्तवालुकलो हितम् ॥ ३१ ॥

समुद्धानुप्लवैरुद्दामानाः प्राणावनार्थिनः ।

परावृत्य रयादात्मशिविराय प्रतस्थिरे ॥ ३२ ॥



३१-३२. उस किले के तट पर पड़े हुए अनेक लोग बड़े-बड़े पत्थरों से भग्न हुए वे शिंदुर की तरह लाल रक्त की उल्टियां करने लगे, उनके साथियों द्वारा उठाकर ले जाए जाते हुए वे प्राणरक्षणार्थ फिर वापस लौटकर वेग से अपने शिविर की तरफ चले गये।

गुलिकायन्त्रनिर्यातगुलिकाभिन्नावग्रहाः।

जलयन्त्रजलाकारकीलालोत्कलिकाकुलाः ॥३३॥

सञ्जातसञ्ज्वरावेशभरास्तनुतरस्वराः ।

केचित्पिपासिता एव कृतान्तातिथितां ययुः ॥ ३४ ॥

३३-३४. जिनके शरीर बंदूक की गोलियों से विदीर्ण हो गये हैं एवं पानी के फब्बारे की तरह उड़ने वाले रक्त की धारा से वे व्याप्त हो गये हैं, जिनके अंगों की एक जैसी पीड़ा हो रही है एवं जिनका स्वर अतिशय पतला हो गया है, ऐसे अनेक प्यासे लोग पानी-पानी करते हुए यमराज के आतिथ्य को प्राप्त करने के लिए चले गये।

पताकिनीं तामालोक्य द्विषत्कृतपराभवाम् ।

मुसेखानः सजातीयान्सुभटानभ्यभाषत ॥ ३५ ॥

३५. शत्रु से अपनी सेना को पराजित हुआ देखकर मुसेखान अपने सजातीय श्रेष्ठ सैनिकों से बोला।

मुसेखान उवाच-

अमी महाश्मनां पाताः किमुत्पाताः पदे पदे ।

समन्तादापतन्तोऽमून् पातयन्ति चमूपतीन् ॥ ३६ ॥

३६. मुसेखान बोला - नीचे गिरने वाले बड़ी-बड़ी शिलाओं का गिरना मानो पग-पग पर उत्पात ही था, चारों ओर गिरने वाले ये अपने सेनापतियों को मार रहे हैं।

अहो महोदयोऽमुष्य पुरन्दरपतेरयम् ।

यदस्मानपि विक्रान्तान् विक्रम्याक्रामति स्वयम् ॥ ३७ ॥

३७. अहो! यह पुरंदर किले के स्वामी शिवाजी का बड़ा ही उत्कर्ष है कि जो स्वयं आक्रमण करके हम जैसे शूरों को पराजित कर रहा है।

निस्त्रिंशप्रभवं लोके येषां नः प्रथितं यशः ।

अपयानमितस्तेषां नितान्तमयशस्करम् ॥ ३८ ॥

३८. जिनके तलवार के बहादुरी का यश लोक में प्रसिद्ध है, उनको इस स्थान से वापस लौटना अत्यन्त तिरस्कृत है।

मैव दद्ध्वं पदं पश्चात् पुरः पश्यत भूधरम् ।

न जहाति जयः प्रायः संपरायस्थितं नरम् ॥ ३९ ॥

३९. पीछे पग मत बढ़ाओं, सामने के किले पर दृष्टि रखो। युद्ध में स्थित रहने वाले मनुष्य की विजय प्रायः त्याग नहीं करती है।

इति ब्रुवाण एवायं समन्तैरनिवर्तिभिः ।

पुरन्दराचलतरामारुरोह महामनाः ॥ ४० ॥

अथो शरफशाहेन सैनिकैः स्वैश्च भूरिशः ।

उभाभ्यामपि शेखाभ्यां राज्ञा मत्रजिता तथा ॥ ४१ ॥

प्रबलेन फलस्थाननायकेन च रंहसा ।

फतेखानस्य चानीकैः सामन्तैरप्यनेकशः ॥ ४२ ॥

४०-४२. तत्पश्चात् इस प्रकार बोलते हुए ही वह महामना मुसेखान पीछे की ओर से लौटने वाले विशाल सेना एवं अपनी सेना से युक्त अशरफशाहा, दोनों शेखों सहित मत्राजी राजा, उसी प्रकार फलटण का बलवान् राजा, फतेखान की सेना और अनेक सामन्त राजाओं के साथ वेगपूर्वक पुरंदर किले की चढ़ाई चढ़ने लगा।

सनिर्घोषैर्महोमेघैर्महामेघ इवाभितः ।

तमारोहन्तमालोक्य पुरन्दरतटीं रुषा ॥ ४३ ॥

सद्यश्शिवतमादिष्टाः क्षेपिष्ठाः सर्वतो दिशम् ।

गोदप्रभृतयो योधाः प्रत्यगृहन्नुदायुधाः ॥ ४४ ॥

४३-४४. गर्जना करने वाले बड़े मेघों से युक्त, महामेघों की तरह चारों ओर से पुरंदर के तट पर चढ़ने वालों को क्रोधपूर्वक देखकर, तुरंत कल्याणकारी एवं अज्ञात गोद आदि अत्यन्त वेगवान् योद्धाओं ने शस्त्र उठाकर चारों दिशाओं में आक्रमण कर दिया।

मुसेखानप्रभृतयोप्यमून् परचमूभटान् ।

अभीयुराभियाभ्येत्य ग्रहा इव महाग्रहान् ॥ ४५ ॥

४५. मुसेखान आदि ने भी ग्रह जैसे बड़े ग्रह पर आक्रमण करता है। उसी प्रकार उस शत्रुसेना के योद्धाओं पर निर्भयता से आक्रमण कर दिया।

तदा शरफशाहेन सदोभुजमदोद्धतः ।

मुसेखानेन सरुषा जगत्स्थापकवंशजः ॥ ४६ ॥

मिनादरतनाभ्यां तु युयुधे भैरवाभिधः ।

घाण्टिकेन च वीरेण व्याघ्रशीघ्रतरायुधः ॥ ४७ ॥

४६-४७. तब अशरफशाह से बलशाली सदोजी, क्रोधित मुसेखान से जगताप मिनाद एवं रतन से भैरव, वीर घाटगे के साथ शस्त्र चलाने में निपुण वाघ, ऐसे ये सब लठने लगे।

महामानी गदापाणिः प्रबलानीकिनी युतः ।

सैन्यैरन्यैश्च बहुभिर्बह्वयुध्यत काबुकः ॥ ४८ ॥

४८. अत्यन्त अभिमानी, गदाधारी एवं विशाल सेना से युक्त काबुक ने, दूसरे अनेक सैनिकों के साथ अत्यधिक युद्ध किया।

अभ्याहवस्मयभृतो युगव्यायतबाहवः ।

वरशीर्षण्यशीर्षाणोवर्मसंवृत विग्रहाः ॥ ४९ ॥

ते तेऽनीकद्वयीयोधाः सविरोधाः परस्परम् ।

शरासनं विधुन्वानाः सन्दधानाश्शितं शरम् ॥ ५० ॥

भूयो भूयस्सहस्वेति भाषमाणास्मयाभृतम् ।

तटे पुरन्दरगिरेस्तदा युयुधिरेऽद्भुतम् ॥ ५१ ॥

४९-५१. युद्ध के लिए आवेशित, जुए की तरह लम्बे हाथ वाले, सिर पर उत्कृष्ट मुकुट को धारण करने वाले एवं कवच को शरीर पर धारण किए हुए, परस्पर विरोध करने वाले, दोनों सेनाओं के योद्धा, धनुष को हिलाते हुए एवं तीक्ष्ण बाणों से युक्त, सहन कर, सहन कर, इस प्रकार बार-बार गर्व से बोलते हुए, उस पुरंदर किले की चढ़ाई पर दोनों ने अद्भुत युद्ध किया।

तदा पुरन्दरार्थाय प्रहरन्तः परस्परम् ।

नैकेऽवरोदुमारोढुं बत नैके तदा शकन् ॥ ५२ ॥

५२. उस समय पुरंदर की प्राप्ति के लिए परस्पर प्रहार करने वाली सेनाओं में से एक सेना तो नीचे उतर नहीं सकी और दूसरी सेना ऊपर चढ़ सकी।

अवलोक्य बतान्योन्यमानीय च शरव्यताम् ।

एके भुवस्तलं बाणैः प्यधुरन्ये दिवस्तलम् ॥ ५३ ॥

५३. परस्पर देखकर एवं निशाना साधकर एक सेना ने बाणों से पृथ्वी तल को और दूसरी सेना ने आकाश को ढक दिया।

यः कस्यचिदुरो भित्वा भुजं चिच्छेद कस्यचित् ।

स एवेषुस्सशीर्षण्यमन्यदीयं शिरो हरत् ॥ ५४ ॥

५४. जो बाण किसी की छाती को भेदकर दूसरे की भुजाओं को छिन्न करता था तो वही बाण तीसरे के मुकुट युक्त सिर को उड़ा देता था।

तत्र प्रसभमभ्येत्य गोदः क्रोधरयोद्धतः।

निचखान क्षणुतं भल्लं मुसेखानभुजान्तरे॥५५

५५. वहां पर अत्यन्त क्रोधित हुए गोदाजी ने वेग से समीप जाकर मुसेखान की छाती में तीक्ष्ण भाले को घुसा दिया।

निशातं विद्विषा तेन निखातं निजवक्षसि ।

यवनस्स तु तं भल्लं भीमं सन्नाहभेदिनम् ॥ ५६ ॥

उभाभ्यामपि पाणिभ्यामुद्धृत्य स्वभुजान्तरात् ।

रोषदष्टाधरतलः सद्य एव द्विधा व्यधात् ॥ ५७ ॥

५६-५७. किन्तु उस शत्रु के द्वारा अपने छाती में घुसाये हुए एवं कवच को भेदकर जाने वाले उस तीक्ष्ण एवं भयंकर भाले को, उस यवन ने दोनों हाथों से अपनी छाती से निकालकर, क्रोध से दांत एवं ओठों को चबाते हुए उसके दो टुकड़े कर दिए।

अलञ्चकार तं तत्र रुधिरार्द्रमुरस्स्थलम् ।

यथा शिलोच्चयं सान्द्रगैरिकाक्तशिलातलम् ॥ ५८ ॥

५८. गहरी लाल मिट्टी से रंगी हुई चट्टान जैसे पर्वत को सुशोभित करती है, वैसे ही रक्तरंजित उसकी छाती उसको सुशोभित करने लगी।

इहान्तरे खड्गचर्मधारी धीरः सदः स्यदात् ।

योद्ध्रा शरफशाहेन योद्धुमद्भाभ्यपद्यत ॥ ५९ ॥

५९. इतने में ही ढाल एवं तलवार को धारण किया हुआ, धैर्यवान् सदाजी योद्धा अशरफशाहा के साथ लड़ाई करने के लिए वेगपूर्वक चला गया।

उभावपि युधामत्तौ रक्तनेत्रावुभावपि ।

उभावपि ससन्नाहौ महोत्साहावुभावपि ॥ ६० ॥

स्वया स्वयासिलतया परिनर्तितया भृशम् ।

दिवं सौदामिनीद्योतैर्दीपयन्तावुभावपि ॥ ६१ ॥

परस्परान्तरप्रेक्षापरी पञ्चाननस्वरौ ।

भ्रान्तोद्भ्रान्तादिकान् भेदान् दर्शयन्ती विरेजतुः ॥ ६२ ॥

६०-६२. दोनों ही युद्धकार्य में मदमस्त थे, दोनों के ही नेत्र रक्त की तरह लाल हो गये थे, दोनों ही शस्त्रों से सुसज्जित थे, दोनों का ही उत्साह महान् था और दोनों ही अपनी-अपनी तलवार को बार-बार घुमाकर आकाशीय विद्युत् की चमक

की तरह आकाश को प्रकाशित कर रहे थे, दोनों ही परस्पर की गलतियों को ढूँढते हुए, सिंह जैसी गर्जना कर रहे थे, भ्रान्त, उद्भ्रान्त आदि पट्टे के प्रकाश दिखाते हुए वे सुशोभित हो रहे थे।

अथासिपातैरन्योन्यविहितैः क्षतविग्रहौ।

एकेनैव क्षणेनैतो रुधिराद्रो बभूवतुः॥६३

६३. तत्पश्चात्, परस्पर किए गए तलवार के प्रहारों से दोनों के शरीर चोटिल होकर क्षणभर में ही रक्तरंजित हो गये।

व्याघ्रस्तु पुरुषव्याघ्रं घाण्टिकं घोरशक्तिकम्।

प्रजहार भुजस्तम्भे शक्त्यानिशितया द्रुतम्॥६४

६४. इधर वाघराजा ने भयंकर शक्ति को धारण करने वाले, पुरुषों में श्रेष्ठ, घाटगे राजा की खम्भे जैसी भुजा पर अत्यन्त तीक्ष्ण शक्ति से शीघ्र प्रहार किया।

ततस्त्रवदसृग्दिग्धदेहो युद्धविशारदः।

शक्त्यैव घाण्टिकोत्पुचैः प्रवेष्टे तमताडयत्॥६५

६५. तब शरीर से बहने वाले रक्त से रंजित हुए उस युद्ध निपुण घाटगे ने भी शक्ति से उसकी भुजा पर जोर से प्रहार किया।

तदामुना हन्यमानो व्याघ्रो व्याघ्र इवापरः।

स्वशौर्यं दर्शयामास हर्षयामास च स्वकान्॥६६

६६. तब दूसरे शेर के समान उस वाघ राजा ने घाटगे के प्रहारों को सहन करते हुए अपने पराक्रम को दिखाकर अपने लोगों को हर्षित किया।

आकर्णाकृष्टधन्वानौ मिनादरतनावपि।

अभ्येतं भैरवं चोरं छादयामासतुः शरैः॥६७

६७. मिनाद एवं रतन ने भी धनुष को कान तक खींचकर समीप आये हुए भैरव चोर नामक राजा को बाण से ढक दिया।

ताभ्यामुभाभ्यामुन्मुक्तैः शरैर्नीतं शरव्यताम्।

अवाप्तचालनीभावं तदभ्राजत तद्वपुः॥६८

६८. उन दोनों के द्वारा छोड़े गए बाणों से विदीर्ण किया गया, उसका शरीर छलनी की तरह दिखने लगा।

स एकोद्वाविमौ तत्र युद्धमप्यभवच्चिरम्।

तथापि भैरवश्चोरः प्रतिपेदे जयश्रियम्॥६९

६९. यह अकेला और दोनों होते हुए भी वहां पर बहुत समय तक युद्ध चला तथापि अन्त में भैरव चोर को ही विजयश्री प्राप्त हुई।

काबुकेनापि सरुपा पावकप्रतिमौजसा।

गदाघातेन महता शायिताश्शतशो द्विषः॥७०

७०. क्रोधित एवं अग्नि की तरह तेजस्वी काबुक ने भी जोर के गदा प्रहारों से सैकड़ों शत्रुओं को सुला दिया था।

विशीर्णवरवर्माणो विदीर्णतरवक्षसः।

सहसा परिमुह्यन्तो हस्तविस्तप्रस्तहेतयः॥७१

प्रतिप्रतीकनिर्गच्छद्रक्तरञ्जितभूमयः।

आयोधनाजिरेऽमुष्मिन्निपतन्तो विरेजिरे॥७२

७१-७२. जिनके उत्कृष्ट कवच भग्न हो गये हैं एवं छाती विदीर्ण हो गई है, जिनके अचानक मूर्च्छित होने से हाथों से शस्त्र गिर गये हैं, जिनके प्रत्येक अवयवों से बहने वाले रक्त से भूमि रंजित हो गई है, ऐसी रणभूमि पर गिरने वाले लोग सुशोभित होने लगे।

विगलद्रक्तरक्ताङ्गाः सुभटास्ते बभुस्तदा।

निर्झरोद्गारसंपृक्तगैरिकार्द्रा इवाद्रयः॥७३

७३. बहने वाले रक्त से रंजित शरीर वाले वे उत्कृष्ट वीर झरने के प्रवाह में मिश्रित लालमिट्टी से रंगे हुए पर्वत के समान सुशोभित होने लगे।

तत्र तेषां परेषां च तदभ्याहवकौतुकम्।

व्यलोकत शिवोऽप्यद्धा वीरो वीरश्रियोल्लसन्॥७४

७४. वीरश्री से सुशोभित वीर शिवाजी भी वहां पर उसके एवं शत्रु के बीच में चलायमान उस युद्ध के कौतूहल को उस समय वह प्रत्यक्ष देख रहा था।

तदा पुरन्दरतटादतिमात्रस्मयोद्धता।

प्रणदन्ती प्रववृते लोहितोदा महानदी॥७५

७५. उस समय पुरंदर किले के तट से गर्जना करती हुई रक्त की महानदी अत्यन्त अभिमान के साथ उन्मुक्त एवं आवाज करती हुई प्रवाहित होने लगी।

आरुह्य व्योमयानानि द्योतयन्तो दिवोन्तरम्।

दर्श दर्श सुरास्सर्वे प्रशशंसुर्महाहवम्॥७६

७६. विमान में बैठकर अन्तरिक्ष को प्रकाशित करने वाले सभी देव, उस महायुद्ध को बार-बार देखकर, उसकी प्रशंसा करने लगे।

तत्कालकलितोद्दाममुण्डमाला मनोहरः।

प्रावर्तत मुदा तत्र प्रमथैस्सहितो हरः॥७७

७७. उस समय धारण की हुई भयंकर मस्तकों की माला से मनोहर दिखने वाला शंकर प्रसन्न होकर प्रेमियों के साथ वहां आ गया।

अतिमात्रं जिघत्सन्तस्तत्क्षणाधिगतक्षणाः।

अतृप्यन् प्रचुरं प्राप्य पिशितं पिशिताशनाः॥७८

७८. अतिशय भूखे राक्षस उस समय आनन्दित होकर अत्यधिक मांस के मिलने के कारण से संतुष्ट हो गये।

प्रेतरं कोंऽकमारोप्य करङ्कमकुतोभयः।

संपृक्तशोणितरसं तरसं बुबुधे तदा॥७९

७९. उस समय भूखे पिशाच रक्त से परिपूर्ण मस्तकों को निर्भयता से गोद में रखकर वेग से खाने लगे।

उद्दामोड्डानशौंडाभिर्डाकिनीभिस्समं तदा।

वपूंषि पुपुषुः स्वानि शाकिन्यस्सैनिकामिषैः॥८०



८०. उस समय भयंकर छलांग लगाने में निपुण ऐसी डाकिनीयों के साथ शाकनियों ने भी सैनिकों के मांस से अपने शरीर को पुष्ट किया।

कवीन्द्र उवाच-

यथा तत्र मुसेखानो गोदेन निहतस्तदा।

निशम्यतां तथा सर्वमधिधास्याम्यथ द्विजाः॥८१

८१. कवीन्द्र बोला - हे ब्राह्मणों! उस समय गोदाजी ने मुसेखान को किस प्रकार मारा था, ये सभी अब मैं बताता हूं, तो आप सुनो।

मुसेखानेन बलिना भग्नभल्लस्सकोपनः।

कालकाकोदराकारकरवालकरोऽभवत्॥८२

८२. बलवान् मुसेखान ने जब भाला भग्न किया तो क्रोधित होकर उसने काले कौवे के पेट की तरह आकृति वाली तलवार हाथ में ले ली।

तत्र तत्करवालेन तडिदाकारधारिणा।

पेतुः पठाणाः शतशः शकलीभूय भूतले॥८३

८३. उस स्थान पर उस आकाशीय विद्युत् की तरह आकृति से युक्त तलवार से सैकड़ों पठानों के टुकड़े होकर भूमि पर गिर गये।

मुसेखानस्तु तद्दृष्ट्वा तस्यकर्मातिमानुषम्।

तमात्मकरवालेन भुञ्जे सव्ये व्यताडयत्॥८४

८४. किन्तु मुसेखान ने उसके अमानवीय कृत्य को देखकर उसकी बायीं भुजा पर अपने तलवार से प्रहार किया।

ताडितस्स भुजे मुसेखानेन वेगिना।

नावेपत महावीरो वातेनेववनद्रुमः॥८५

८५. वेगवान् मुसेखान द्वारा बायीं भुजा पर प्रहार करने से भी वह महावीर, जैसे वायु से वनवृक्ष कम्पित नहीं होता है, वैसे ही वह कम्पित नहीं हुआ।

निबद्धभ्रूपटौ भूरिरोषरूक्षेक्षणावुभौ।

गतप्रत्यागतकरौ घोरखड्गलताकरौ॥८६

द्विरदा इव नर्दन्तौ प्रहरन्तौ परस्परम्।

विशीर्यमाणशीर्षण्यतनुत्रौ तौ विरेजतुः॥८७

८६-८७. भौहों को चढाकर एवं अत्यन्त क्रोध से क्रूर दृष्टि वाले वे दोनों ही हाथों में भयंकर तलवारों को लेकर कभी आगे तो कभी पीछे हट रहे थे, हाथी के समान गर्जना करते हुए जब आपस में प्रहार कर रहे थे तो उनके मुकुट एवं कवच विदीर्ण होकर दोनों सुशोभित होने लगे।

अथान्योन्यायुधाधातदीर्यमाणावुभाविमौ।

समं रुधिरधाराभिर्वसुधामभ्यर्षिचताम्॥८८

८८. तत्पश्चात् परस्पर किए गए शस्त्रों के प्रहारों से चोटिल हुए वे दोनों अचानक रक्त की धारा से पृथ्वी को अभिसिंचित करने लगे।

क्षममात्रमहो तत्र युद्धमासीत्तयोस्समम्।

ततस्तत् कृततोदोपि ततो गोदोऽधिकोभवत्॥८९

८९. अहो! वहां पर उन दोनों में क्षणमात्र समान युद्ध हुआ, फिर उस युद्ध से होने वाली वेदना को सहन करते हुए गोदाजी, मुसेखान पर भारी पड़ गए।

अथ प्रहारैर्बहुभिर्निर्भरं विह्वलोऽपि सन्।

बली स पातयामास खड्गं गोदस्य मूर्धनि॥९०

९०. फिर अनेक प्रहारों से अत्यन्त घायल हुए उस बलवान् मुसेखान ने गोदाजी के मस्तक पर प्रहार किया।

यावदापतति ह्यस्य करवालस्स्वमूर्धनि।

तावद्गोदोसिनास्वेन तमरातिमताडयत्॥९१

९१. जब तक इसकी तलवार गोदाजी के सिर पर गिरती, तब तक गोदाजी ने अपने तलवार से उस शत्रु को मार दिया।

ताडितः स तदा तत्र गोदेन क्रोधमूर्तिना।

आस्कन्धभागामामध्यभागं भिन्नो द्विधाभवत्॥१२

१२. उस समय उस क्रोधित गोदाजी के प्रहार से वह मुसेखान, कंधे से मध्यभाग तक कटकर उसके दो टुकड़े हो गये।

निपातितं तदा तस्य द्विधाभूतं कलेवरम्।

अभूच्च रुधिरौदारैररुणं धरणीतलम्॥१३

१३. तब दो भागों में विभक्त हुए उसके शरीर को नीचे गिरा दिया और तब उसके रक्तप्रवाह से पृथ्वीतल लाल हो गया।

जगत्स्थापकवंश्येन मुसेखाने निपातिते।

शतशस्तत्र यवनाः शमनातिथयोऽभवन्॥१४

१४. गोदाजी जगताप द्वारा मुसेखान को मार दिए जाने पर, वहां सैकड़ों यवन यमराज के अतिथि हो गए।

सदेन खड्गिनाखड्गयुद्धं योद्धुमपारयन्।

परः शरासनं गर्वादर्वाभूयाग्रह्यमग्रहीत्॥१५

१५. तलवारधारी सदाजी के साथ तलवार युद्ध करने में असमर्थ शत्रुओं ने पीछे हटकर अभिमान से उत्तम धनुषों को उठाया।

ततोऽशरफशाहस्य तुदतस्ते जितैश्शरैः।

विकृष्यमाणमौर्वीकं व्योमान्तवलयायितम्॥१६

अनेकवर्णनिन्यासमिन्द्रायुधमिवायतम्।

धनुरभ्येत्य चिच्छेद करवालकरस्सदः॥१७

१६-१७. तत्पश्चात् तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण करने वाले अशरफशाह ने अनेक रंगों से रंजित, इंद्रधनुष की तरह लंबे, धनुष की प्रत्यंचा को खींचकर झुकाया तो तलवारधारी सदाजी ने पास जाकर उसको काट दिया।

स तेन शीघ्रहस्तेन द्विषता द्विदलीकृतम्।

विचित्रवर्णदुर्वर्णबिन्दुराजिविराजितम्॥१८

तदा तदाहवसखं विहाय विशिखासनम्।

सद्यस्तमहितं हन्तुं घोरं परिघमाददे॥९९

९९. निपुण हाथों से शत्रु द्वारा दो टुकड़े किए गए, रंग-बिरंगे बिंदियों की पंक्ति से सुशोभित, युद्ध के मित्र, ऐसे उस धनुष को उस समय छोड़कर, उस शत्रु को मारने के लिए उसने लोहे का सोटा उठाया।

पञ्चाननसमस्तन्वातन्वानोतितमां युधम्।

गृहीतमात्रं चिच्छेद सदस्तस्य तदायुधम्॥१००

१००. शरीर से सिंह की तरह एवं अतिशय सावधानी पूर्वक युद्ध करने वाले उस सदोजी ने, उसके शस्त्र को लेते ही तोड़ दिया।

आदत्त तत्र हस्ते स्वे स म्लेच्छो यद्यदायुधम्।

सदो वीररसावेशात् तरसा तत्तदच्छिनत्॥१०१

१०१. वहां पर उस यवन ने जो-जो शस्त्र अपने हाथों में लिए उन-उनको सदोजी ने उसी समय तोड़ दिया।

ततो निरायुधो भूत्वा कृत्वानभिमुखं मुखम्।

यवनस्स परावृत्तिपथं लेभे यथासुखम्॥१०२

१०२. तत्पश्चात् निःशस्त्र होकर मुंह घुमाकर वह यवन स्वेच्छा से इधर-उधर पलायन करने लगा।

अथ प्रतिभटान्तस्मात् घाण्टिकोऽपि द्रुतं तथा।

अपद्रुतश्चिरं युद्ध्वा द्विरदाद्विरदो यथा॥१०३

१०३. तत्पश्चात् घाटगे भी उस शत्रु योद्धा वाघ के साथ बहुत देर तक युद्ध करके जैसे एक हाथी के पास से दूसरा हाथी भाग जाता है, वैसे ही उसके पास से वह भाग गया।

भैरवं भैरवं मत्वा मिनादरतनावपि।

संवर्तसमयप्रायात् संपरायादपेयतुः॥१०४

१०४. निनाद एवं रतनु भी भैरव को वास्तविक कालभैरव समझकर प्रलयकाल की तरह उस युद्ध से निकल गये।

पुरन्दरात् परावर्तमानां त्राणार्थिनीं चमूम्।

नालोकत फतेखानो ग्लानोऽनभिमुखीभवन्॥१०५

१०५. पुरंदर से रक्षा हेतु वापस लौटने वाली उस सेना को खिन्न फतेखान ने घूमकर नहीं देखा।

अभिमुखमुपायातं तत्र प्रभूतबलं बला-

द्युधि किल फतेखानं भङ्क्त्वा स शाहनृपात्मजः।

अविहतगतिर्देवोद्रेकादुदित्वरविक्रमो

विजयपुरभूशक्रं जेतुं बताभिमुखोऽभवत्॥१०६

१०६. वहां अनेक सैनिकों के साथ सामने आये हुए उस फतेखान को, उस शहाजी के पुत्र शिवाजी ने बल से भग्न करके, भाग्य के कारण अप्रतिहत गतिवाला एवं उदयमान पराक्रमी वह शिवाजी विजापूर के सुलतान को जीतने के लिए उत्साही हुआ।

भृशं युद्ध्वावाप्तः शिवधरणिपालादभिभवम्

फतेखानो म्लानो विजयपुरमभ्यर्णमकरोत्।

तमाकर्ण्योदन्तं सदसि महमूदेन सहसा

ममज्जे चिन्ताब्धौ सुचिरमनुत्तेन मनसा॥१०७

१०७. शक्ति से युद्ध करने के बाद भी शिवाजी से पराजय को प्राप्त करके खिन्न हुआ, फतेखान विजापूर पहुंच गया और वह समाचार दरबार में अचानक सुनकर महमूदशाह दुःखी हो गया और बहुत दिनों तक चिन्ता के सागर में डूब गया।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां मुसेखानवधो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४

## अध्याय:-१५

कवीन्द्र उवाच -

परैः पुरन्दरतटे मुसेखानं निपातितम्।

प्रभूतं सैन्यमन्यच्च पराक्रम्य पराहतम्॥१

फतेखानं च विमुखीकृतमन्तिकमागतम्।

निशम्य महमूदेन मुमुदे न दिवानिशम्॥२

१-२. कवीन्द्र बोले- शत्रुओं ने मुसेखान को पुरंदर के किले पर पराजित किया एवं उसकी विशाल सेना को पराक्रम से पीछे हटा दिया और फतेखान पराजित होकर पुनः वापस आ गया है, इस प्रकार सुनकर महमूद शाह रात-दिन अप्रसन्न रहने लगा।

अथो विदूयमानोऽन्तः फतेखानस्य भङ्गतः।

स्वे चेतसि चिरस्येत्थं महमूदो व्यचिन्तयत्॥३

३. तब फतेखान के पराजय के कारण अंतःकरण से खिन्न हुआ महमूदशाह, अपने मन में इस प्रकार विचार करने लगा।

अहो अहर्दिवममी अस्माभिः परिपालिताः।

क्षिण्वन्ति यवनानस्मान् क्षत्रियाः कालनोदिताः॥४

४. अरे! रात-दिन जिनका हमने पालन-पोषण किया, वे क्षत्रिय मराठे अनुकूल समय को प्राप्त करके हम यवनों का विनाश कर रहे हैं।

समृद्धिमधिकां लब्ध्वा दुर्मदात्मा मदाश्रयात्।

साहसी शाहराजोऽयं मन्नियोगं न मन्यते॥५

५. मेरे आश्रय से ही अत्यधिक समृद्धि को प्राप्त करके उन्मत्त हुआ, यह साहसी शहाजी राजा मेरे आदेश को भी नहीं मानता है।

अनेन कोपनेनाद्धा विधायोद्धतमाहवम्।

पुण्डरीकपुरोपान्ते विजितो रणदूलहः॥६

६. उस क्रोधी ने जोर का भयानक युद्ध करके पंढरपुर के पास स्थित रणदुल्लाखान को जीत लिया।

अनेन मन्त्रकलया कलितो मलिकोऽम्बरः।

निरर्गलेन निकृतः स चानेनार्गलेश्वरः॥७

७. इसने अपनी कूटनीति से मलिकंवर को अधीन कर लिया और उसने भयंकर अर्गल के राजा को पराजित किया।

चिररात्राय पित्रेव येनायं परिपालितः।

स निजामोऽप्यनेनोच्चैर्निकृतिस्थेन वञ्चितः॥८

८. जिसने पिता के समान इसका बहुत समय तक पालन-पोषण किया था, ऐसे उस कपटी शहाजी ने इस निजाम को भी अपनी जाल में फंसा दिया।

कार्णाटकाः क्षोणिभृतः परिहाय मदीयताम्।

बतैतन्मन्त्रयोगेन प्रथयन्त्येतदीयताम्॥९

९. कर्नाटक के राजाओं ने मेरी अधीनता को त्यागकर वे कूटनीति के कारण इसकी अधीनता को स्वीकार कर रहे हैं।

मुहुराहूयमानोऽपि नायातोऽयमुपह्वरे।

अपातयदयं ह्यस्मज्जयं संशयगह्वरे॥१०

१०. बार-बार बुलाने पर भी यह समीप नहीं आया एवं इसने ही हमारे विजयश्री को संशयरूपी गर्त में गिरा दिया।

अनेनोपकृतः पूर्वमिभरामः पदे पदे।

निवेशितोऽयं सन्तुष्य तेनाप्यत्युन्नते पदे॥११

११. इसने पहले इब्राहिमशाह को पग-पग पर उपकृत किया था, अतः उसने भी संतुष्ट होकर शहाजी को उच्चपदस्थ किया था।

अनेन हेतुना ह्यस्य मन्तवः शतशो मया।

अतिक्रान्ताध्वनोऽत्यर्थं क्षान्ता एव दिने दिने॥१२

१२. इस कारण से ही अत्यन्त मार्ग का उल्लंघन करके व्यवहार करने वाले इस शहाजी के सैकड़ों अपराध मैंने माफ कर दिये थे।

आगांसि सुगरीयांसि क्षन्तुं नैव क्षमोऽभवम्।

तदानीं निग्रहायास्य मुस्तुफाखानमादिशम्॥१३

१३. किन्तु अक्षम्य एवं बड़े अपराधों को जब मैं क्षमा करने में असमर्थ हुआ तो तब इसको पकड़ने के लिए मैंने मुस्तुफखान को आदेश दिया।

अस्मिंस्तु निगृहीतेऽस्य सुतौ शम्भुशिवावुभौ।

उन्नद्धीभूय युध्येते मन्मिज्जनलोलुभौ॥१४

१४. तत्पश्चात् शहाजी को कैद करने के कारण से, इसके दोनों पुत्र संभाजी एवं शिवाजी उद्धत होकर, मुझे डुबाने की इच्छा से युद्ध कर रहे हैं।

पित्रर्थे शम्भुना तत्र फरादः परिभावितः।

सम्पराये शिवेनात्र फतेखानोऽपि यापितः॥१५

१५. अपने पिता के लिए संभाजी ने वहां फरादखान को पराजित किया और यहां शिवाजी ने युद्ध से फतेखान का पलायन करवाया।

अलं बलमहो शम्भोः किल येन यशस्विना।

फरादस्तत्र भग्नो न भग्नं किन्त्वद्य मन्मनः॥१६

१६. उस यशस्वी संभाजी ने वहां फरादखान को पराजित नहीं किया, अपितु आज मेरे मन को ही पराजित किया है।  
अहो! वह कितना सामर्थ्यशाली है।



शिवस्य यस्य हस्तेऽद्य धरौ सिंहपुरन्दरौ।

सोहङ्कारं कथङ्कारं न करिष्यति मय्यरौ॥१७

१७. जिस शिवाजी के हाथों में आज सिंहगढ़ एवं पुरंदगढ़ है तो वह मुझ शत्रु पर अहंकार क्यों नहीं करेगा?

रणो यत्राजनिष्ठायं भीषणो भीष्मपर्वतः।

सुतरां दुर्ग्रहोऽस्माभिः स पुरन्दरपर्वतः॥१८

१८. जहां पर भयंकर युद्ध हुआ है, ऐसे उस भयंकर बड़े पर्वत वाले पुरंदर किले को जीतना हमारे लिए अत्यन्त कठीन है।

बिम्बरुरे पुरे शम्भुं शिवं चाद्रौ पुरन्दरे।

न्यवेशयत शाहोऽयं किमस्मत्परिभूयते॥१९

१९. इस शाहजी ने संभाजी को बैंगलुर में नियुक्त किया तथा शिवाजी को पुरंदर किले पर नियुक्त किया है तो कैसे हमसे पराजित होंगे?

जनकः शम्भुशिवयोर्न मोक्तव्यो मया यदा।

समृद्धायै श्रियेऽमुष्यै बत देयोऽञ्जलिस्तदा॥२०

२०. यदि मैंने संभाजी एवं शिवाजी के पिता को छोड़ा नहीं तो मुझे मेरी इस समृद्ध संपत्ति को तिलांजली देनी पड़ेगी।

पृदाकुरिव निर्मुक्तो मोक्तव्योऽयं मया यदि।

अपकारपरस्तर्हि किं मां नापकरिष्यति॥२१

२१. अपकारक सांप की तरह यदि इस शहाजी को मैंने छोड़ दिया तो यह अपकारक, मेरा अहित किस कारण से नहीं करेगा ?

अयं मोक्तव्य इत्येको मोक्तव्यो नेति चापरः।

मन्त्रयोरुभयोर्मन्ये प्रथमो मद्धितावहः॥२२

२२. इसको छोड़ देना चाहिए, यह एक और दूसरा इसको छोड़ना नहीं चाहिए, इन दोनों विचारों में से पहला विचार मेरे लिए हितकारी है।

सर्वथा जिह्वागस्यास्य रोषो मन्मन्त्रवैभवात्।

अपकारपरस्यापि प्रयास्यत्यवकेशिताम्॥२३

२३. अपकारी इस सांप का क्रोध मेरी युक्ति के प्रभाव से पूर्णतः निष्पाप हो जायेगा।

इमामुपकृतिं कृत्वा निधास्याम्यस्य मूर्धनि।

न विस्मरिष्यति ह्येनां कुलीनोऽयं गुणाग्रणीः॥२४

२४. मैं इसके सिर पर उसको छोड़ने के, इस उपकार को करके रखूंगा तो यह कुलीन एवं गुणों में अग्रणी शहाजी इसको नहीं भूलेगा।

चिरं विचिन्त्य मनसा सुधीर्धिसचिवानिदम्।

न्यगदद्येदिलो युक्तमित्यमन्यन्त तेऽप्यरम्॥२५

२५. मन में बहुत देर तक विचार करके चतुर आदिलशाह ने इस विचार को अपने बुद्धिमान मन्त्रियों को बताया और उन्होंने भी यह बिल्कुल ठीक है, ऐसा माना।

अथ तं मंगलस्नानं निर्मलाम्बरभूषणम्।

परिवेषविनिर्मुक्तं नवीनमिवभूषणम्॥२६

उपह्वरे समानाय्य मानार्हमुपवेश्य च।

अनुनीय च सोल्लासं महमूदोऽभ्यभाषत॥२७

२६-२७. तत्पश्चात् मंगल स्नान करके, निर्मलवस्त्रों एवं आभूषण को धारण किये हुए मानो अपने परिधि से मुक्त हुए नवीन सूर्य की तरह दिखाई देने वाले, उस शहाजी को अपने समीप लाकर, सम्मान के योग्य स्थान पर बैठाकर और उसको सांत्वना देकर महमूदशाह आनन्द से बोला।

महमूद उवाच -

मत्तो ह्यजानतो जातं तद्धि नो विद्धि जानतः।

न जगत्त्यत्र दुर्ज्ञेयं राजस्तव विजानतः॥२८

२८. महमूद बोला - मुझ अविवेकी से जो कुछ हुआ वह जानबूझकर नहीं हुआ है, ऐसा समझो। हे राजा! तेरे जैसे ज्ञानी को इस संसार में दुर्ज्ञेय कुछ भी नहीं है।

विहितो मुस्तफेनोच्चैर्द्वेषादफजलेन वा।

तं मन्तुतन्तुं राजेन्द्र मदीयं मन्तुमर्हसि॥२९

२९. मुस्तुफखान ने या अफजलखान ने अत्यन्त द्वेष से जो कोई बड़ा या छोटा अपराध किया है तो हे राजेन्द्र! उसको मेरा ही मान सकते हैं।

दिदृक्षुस्त्वामहं यस्मै यत्नानकरवं बहून्।

बत मे सम्मदः सोऽभूदस्तु वा मास्तु वा तव॥३०

३०. तेरे को देखने की इच्छा से मैंने तेरे लिए अनेक प्रयत्न किए तो मुझे उससे अत्यधिक आनन्द हुआ, तुझे हो या न हो।

उक्तोऽसि मृदुभिर्वाक्यैः परिमुक्तोऽसि निग्रहात्।

अभिजातोऽसि भूपाल मदभीष्टपरो भव॥३१

३१. मैंने मधुर वाक्यों से बातचीत की है, तुझे कारवास के बंधन से मुक्त किया है, हे राजा! तू कुलीन है, अतः मेरे अभीष्ट सिद्धि के लिए तत्पर रहो।

एकामप्युपकारस्य कणिकां प्राप्य निर्वृताः।

शतमप्युपकाराणां न स्मरन्ति महाव्रताः॥३२

अणुनाप्युपकारेण परिक्षुभितमानसाः।

उपकारसहस्राणि न स्मरन्त्यपचेतसः॥३३

३२-३३. उदारचेता लोग अत्यधिक लघु उपकार से ही संतुष्ट होकर सैंकड़ो अपकारों को भूल जाते हैं और क्षुद्र मन वाले लागे लघु अहित से ही विचलित होकर हजारों उपकारों को भूल जाते हैं।

अपकारसहस्राणि करोत्वलमसज्जनः।

उपकारसहस्राणि करोत्येव तु सज्जनः॥३४

३४. दुर्जन हजारों अपकारों को करता है तो भी सज्जन उस पर हजारों उपकार करता ही है।

उपकारं परकृतं स्मरन्ति स्वकृतं न ये।

त एव धारणावन्तः कृतज्ञाश्च सतां नये॥३५

३५. जो लोग दूसरे के द्वारा किए गए उपकार को याद रखते हैं एवं अपने किये हुए उपकारों को भूल जाते हैं, वे ही लोग सज्जनों की दृष्टि में स्मरणशील एवं कृतज्ञ हैं।

उपकारपरं लोकं प्रभुर्नोपकरोति यः।

स्वप्नलब्धा इव सुधा समृद्धा अपि तच्छ्रियः॥३६

३६. जो राजा उपकार करने में तत्पर लोगों के प्रति उपकार नहीं करता है, उसकी विशाल संपत्ति भी स्वप्न में प्राप्त हुए अमृत के समान है।

शिक्षयस्व कनीयांसं तनयं गर्वपर्वतम्।

महाराज मदीयं मे देहि तं सिंहपर्वतम्॥३७

हे महाराजा! अभिमान के पर्वत से युक्त ऐसे तेरे छोटे बेटे को उपदेश करो और मेरे सिंहगढ़ को मुझे दे दो।

न हि मां मुञ्चतितमां सिंहशैलग्रहाग्रहः।

मदीयेन नियोगेन शिवायास्तु पुरन्दरः॥३८

३८. सिंहगढ़ अधीन करने का मेरा निश्चय मुझे मूलतः नहीं छोड़ रहा है। किन्तु मेरे आदेश से पुरंदर शिवाजी के पास ही रहने दो।

करोतु मह्यं सोऽप्यद्वा बिङ्गरुमुपायनम्।

यद्भग्नेन फरादेन व्यधीयत पलायनम्॥३९

३९. उसी प्रकार जिस संभाजी से पराजित होकर फरादखान ने पलायन किया था, उस बैंगलूर शहर को भी उसको मुझे उपहार के रूप में देना चाहिए।

नियुञ्जते नियोगहान् कार्याचार्याः क्षणे क्षणे।

तन्न कुर्वन्ति ते तर्हि को हेतुः शीलरक्षणे॥ ४०

४०. श्रेष्ठ लोग सेवकों को प्रतिक्षण कार्य में ही नियुक्त करते हैं। यदि उन्होंने उस काम को नहीं किया तो उनके शीलरक्षण का क्या लाभ है?

प्रभुर्नियुक्ते कार्यार्थी कार्यार्थी तं निषेवते।

तयोरन्यतराकार्यान्न कार्यमुभयोरपि॥४१

४१. अपने कार्य की सिद्धि हेतु ही स्वामी सेवक की नियुक्ति करता है एवं अपने कार्य की सिद्धि के लिए ही सेवक स्वामी की सेवा करता है। उन दोनों में से एक ने भी अपने कर्तव्य को पूरा नहीं किया तो दोनों का ही काम नहीं होता है।

न सौहित्यं विना पानं विना प्राणं न विग्रहः।

विराजते महाराज नानुयानं विना नुगः॥ ४२

४२. तृप्ति के बिना पीने में आनन्द नहीं है एवं प्राण के बिना शरीर शोभा नहीं देता है, हे महाराजा! स्वामी का अनुसरण किये बिना सेवक सुशोभित नहीं होता है।

किं स्यादुक्तेन बहुना तवाहं त्वं ममाधुना।

अन्योन्यमवलम्बो नौ लोकस्यास्यावलम्बनम्॥४३

४३. अत्यधिक कहने से क्या लाभ है? अब मैं तेरा और तू मेरा है, हम दोनों का परस्पर आश्रय ही इस संसार का आधार है।

अल्पवर्णमयीमित्थमनल्पार्थगरीसीम्।

येदिलः शाहराजाय श्रावयामास भारतीम्॥४४

४४. इस प्रकार अल्प शब्दों में सारगर्भित उपदेश, आदिलशाह ने शहाजी राजा को दिया।

यत्र यद्व्यञ्जयामास महमूदो वदावदः।

शाहः स्वेन स्मितार्धेन तत्र तस्योत्तरं ददौ॥४५

४५. वाचाल महमूदशाह जब उपदेश कर रहा था तब उसका उत्तर शहाजी अपने अर्द्ध मुस्कराहट के साथ दे रहे थे।

स तदानीं महाबुद्धिर्महमूदं मदोद्धतम्।

तद्गुर्गद्वितयीदानप्रसन्दानममन्यत॥४६

४६. मदमस्त महमूदशाह को दोनों किलो का देना है, मतलब अपने पैरों में बेडियों को डलवाना है, ऐसा उस समय उस बुद्धिमान शहाजी को प्रतीत हुआ।

अथ तस्य विमुक्तस्य सत्कृतस्य यथायथम्।

येदिलः सदनद्वारि द्विरदाश्वमबन्धयत्॥४७

४७. तत्पश्चात् कैद से मुक्ति पाकर एवं यथायोग्य सत्कार प्राप्त किये हुए उस शहाजी के महलद्वार पर आदिलशाह ने हाथी और घोड़े बंधवा दिये।

स तदा जगदाह्लादतत्परः परसङ्कटात्।

मुमुचेऽम्भोधरघटापटलादिव चन्द्रमाः॥४८

४८. तब, जिस प्रकार मेघ समूह के आवरण से चन्द्रमा मुक्त होता है, उसी प्रकार संसार को आनन्द देने वाला शहाजी बड़े संकटों से मुक्त हो गया।

बन्धुः सर्वस्य लोकस्य मुक्तस्तस्मात् स निग्रहात्।

व्यराजततरां तत्र दिवाकर इव ग्रहात्॥४९

४९. कारावास से मुक्त हुआ वह सम्पूर्ण संसार का बांधव शहाजी ग्रहण से मुक्त हुए सूर्य के समान अतिशय सुशोभित हो रहा था।

मुक्तमात्रः स युक्तोऽभूदनीकेन महीयसा।

दिदीपे जगती सर्वा तदीयेन सुतेजसा॥५०

५०. उसने मुक्त होते ही बड़ा सैन्यबल संग्रहित किया और उसके उत्कृष्ट तेज से सम्पूर्ण पृथ्वी दीप्यमान हो गई।

अथ शम्भुर्महाबाहुनतिक्रमणीयया।

बिंगरूरं पुरं सद्यस्तत्त्याज पितुराज्ञया॥५१

५१. फिर पिता के अलंघनीय आदेश को पाकर महाबाहु संभाजी ने बैंगलोर शहर को तुरन्त छोड़ दिया।

समर्थोऽप्याहवं कर्तुमदेयमपि सर्वथा।

शिवः सिद्धाचलं प्रादात् पित्रर्थाय गरीयसे॥५२

५२. युद्ध करने में समर्थ होते हुए भी शिवाजी ने सर्वथा देने के लिए अयोग्य ऐसे सिंहगड किले को पिता की प्रसन्नता के लिए दे दिया।

अथ निज इति मत्वा पूजयित्वा वचोभिः।

पदि पदि विहिताभिः प्रीणयित्वोपदाभिः।

उपचितबहुसेनः प्रेषितो येदिलेन।

प्रतिभटविजयार्थं शाहराजः प्रतस्थे॥५३

५३. तत्पश्चात् अपना मानकर एवं मधुर शब्दों से सत्कार करके और पग-पग पर दिये गए उपहारों से संतुष्ट करके आदिलशाह द्वारा प्रेषित शहाजी विशाल सेना को लेकर शत्रु को जीतने के लिए निकल गया।

इत्यनुपुराणे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां संहितायां पञ्चदशोऽध्यायः॥१५

## अध्याय:-१६

कवीन्द्र उवाच-

अथाभिमतलाभेन महमूदेऽतिनिर्वृते।

स्वयं तु पितरर्थाय वितीर्णे सिंहपर्वते॥१॥

आहूय स्वर्णशर्माणमग्रजन्मानमन्तिके।

शिवोद्धा मंत्रवित्तन्मन्त्रवेदिनमब्रवीत्॥२॥

१-२. कवीन्द्र बोले - तत्पश्चात्, अभीष्ट सिद्धि हो जाने से महमूदशाह अत्यन्त आनन्दित हुआ। किन्तु केवल पिता के लिए स्वयं ही सिंहगढ़ को देने पर, कुटनीति में निपुण शिवाजी ने रणनीतिकार सेनोपंत नाम के ब्राह्मण मन्त्री को समीप बुलाकर कहा।

शिव उवाच-

जानतामतिमूर्धन्यं यं धन्यं जानते जनाः।

स मां नूनं न जानीते महाराजो महामनाः॥३॥

३. शिवाजी बोला - जिस धन्य पुरुष को लोग ज्ञान पुरुषों में अत्यन्त श्रेष्ठ समझते हैं, ऐसे मुझ को यह महामना शहाजी राजा वास्तव में नहीं पहचानते हैं।

अजानानो न जानातु सुखेनैव सतो गुणान्।

जानानो यन्न जानीते तद्वनोति हि सन्मनः॥४॥

४. अज्ञानी ने यदि सज्जन के विद्यमान गुणों को नहीं जाना तो न जाने किन्तु ज्ञानी ने भी यदि नहीं जाना तो वह बात सज्जन के मन को पीड़ित करती है।



सोऽज्ञास्यद्यर्हि मां तर्हि नादास्यत्सिंहापर्वतम्।

कोऽन्यथा तरसा जेष्यत्तमिम मत्करस्थितम्॥५॥

५. यदि मुझे पहचानता तो वह सिंहगढ़ दुर्ग को देता ही नहीं, क्योंकि नहीं तो मेरी अधीनता में स्थित इस दुर्ग को बलपूर्वक कौन जीत सकेगा?

अप्रमत्तोपि यो मत्तो द्विषते सिंहापर्वतम्।

आदापयद्येदिलाय किं वक्ष्ये तं महाव्रतम्॥६॥

६. ज्ञानी होते हुए भी जिस पागल ने शत्रु आदिलशाह को मेरे से सिंहगढ़ दुर्ग दिलवाया, ऐसे महाव्रती पुरुष को मैं क्या कहूँ?

स्वयं नियन्ता विश्वस्य विश्वस्य बत वैरिषु।

सुखं सुप्तो निजगृहे ततो निजगृहेऽरिभिः॥७॥

७. वास्तव में स्वयं विश्व का नियन्ता हो इस प्रकार शत्रु पर विश्वास करके अपने घर में सुखपूर्वक सोया, अतः वह शत्रु द्वारा पकड़ लिया गया।

नावज्ञेयाः खलु ज्ञेन वराका अपि विद्विषः।

प्रशाम्यते पतङ्गेन प्रज्वलन्नपि दीपकः॥८॥

८. दीनहीन शत्रु के होने पर भी विद्वान् को उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जलते हुए दीपक को भी कीट-पतंग बुझा देते हैं।

दीपं विनाशयन्नेव पतङ्गश्चेद्विनश्यति।

तुल्यतां कस्तयोस्तर्हि जात्यन्ध इव पश्यति॥९॥

९. यदि दीपक को बुझाते समय ही किसी पतंग का विनाश हो जाता है तो जन्म से अंधे के समान कौन उन दोनों की समानता बतायेगा?

नूनं पिपीलकोऽप्येकः प्रविश्य करिणः करम्।

भवत्यङ्करस्तस्मादल्पं मन्येत नो परम्॥१०

१०. वास्तव में एक चींटी भी हांथी के सूंड में घुसकर उसका विनाश कर देती है। अतः शत्रु को कभी भी क्षुद्र नहीं समझना चाहिए।

अहो महाबाहुरसौ जानानोऽपि महानयम्।

गणयत्वेव न परानस्य दोषो महानयम्॥११।

११. अहो! यह महाबाहु, बड़ा राजनीतिज्ञ होते हुए भी शत्रु की परवाह नहीं करता है, यह इसका सबसे बड़ा दोष है।

अरातिनिगृहीतेन शाहेन गुरुणा मम।

यः प्राप्तश्चिररात्राय कारागारपरिश्रमः॥१२

तस्य निर्यातनं कर्तुं संप्रवृत्तोस्मि सर्वथा।

यवनान्तात् प्रवृत्ताद्यप्रभृत्यत्रास्तुमत्प्रथा॥१३

१२-१३. शत्रु के द्वारा पकड़े हुए मेरे पिता शहाजी की कारावास में जो अवस्था थी, उसका प्रतिशोध लेने के लिए मैं पूर्णतः तैयार हूं और आज से ही यवनों के विनाश के कारण मेरी इस संसार में पहचान होगी।

यः परस्माद्विभेत्युच्चैः परस्तस्माद्विभेति च।

न बिभेति परस्माद्यः परस्तस्माद्विभेति हि॥१४॥

१४. जो शत्रु से भयभीत होता है, उससे भी शत्रु भयभीत रहता है, फिर जो शत्रु से भयभीत नहीं होता, उससे तो शत्रु भयभीत होता ही है।

नूनं मया निहन्तव्यास्ते ते यवननायकाः।

शरधिविधितयस्यैते तेजितास्सन्ति सायकाः॥१५

१५. वास्तव में उन सभी यवन नायकों का विनाश करूंगा और इसलिए मैंने दोनों तरफों के बाणों को तीक्ष्ण किया है।

विजयाह्वपुरग्राहोत्सुकं सम्प्रति मन्मनः।

अतोऽद्य नोद्यसे सद्योनियुज्यन्तां तुरङ्गिणः॥१६

१६. विजापुर शहर को अधीन करने के लिए मेरा मन उत्सुक हो गया है, अतः तुमसे मेरा कहना है कि तुरन्त घुड़सवारों को तैयार किया जाए।

सुवर्णशर्मा उवाच

दुरन्तं बलवद्वैरं दुरन्तः पापसञ्चयः।

दुरन्ताभ्यर्हितां गर्हा दुरन्ता गुरुगर्हणा॥१७

१७. सोनोपंत बोला - बलवान् से शत्रुता, पापों का संचय, पूज्यों की एवं पिता की निन्दा, इन सबका परिणाम दुःखदाय होता है।

विधाय बलवद्वैरं तव तातः कृताग्रहः।

नाभूदवहितो यर्हि तदर्हस्तर्हि निग्रहः॥१८

१८. बलवान् से शत्रुता करके, तेरे पिता अत्यधिक अनुरोध के साथ सचेत नहीं रह सका। अतः वह पकड़ लिया गया, यह युक्त है।

स प्रभावी महाराजो मन्त्रिणस्तस्य सुव्रताः।

तेन यद्वलवद्वैरं कृतं सोपनयः कृतः॥१९

१९. वह शहाजी राजा पराक्रमी है और उसके मन्त्री भी कर्तव्यपारायण हैं, फिर भी उसने जो बलवान् के साथ शत्रुता की वह राजनीति के दृष्टि से गलत है।

तनुते यद्यत्नं वैरमबलीयान् बलीयसा।

तर्हि तस्य पराभावे सर्वथा प्रभुरेव सः॥२०

२०. यदि दुर्बल मनुष्य अत्यन्त बलवान् के साथ अत्यधिक शत्रुता करता है तो उसको पराजित करने के लिए वह पूर्णतः समर्थ होता है।

दानमभ्याधिके शत्रौ समे साम विधीयते।

ऊने दण्डविधिः प्रोक्तो भेदः साधारणः स्मृतः॥२१

२१. अपने से अधिक बलवान् शत्रु को कर देना चाहिए, समान बलवान् शत्रु के साथ मित्रता करनी चाहिए, न्यून सामर्थ्यवान् शत्रु को दण्ड देना चाहिए और भेद यह साधारण उपाय होता है।

दिने दिने भवन्नूनः समः साम्यं विमुञ्चति।

आधिक्यं चाधिको येन को भेदं न प्रशंसति॥२२

२२. जिस भेदनीति के अनुसरण से सम शत्रु प्रतिदिन न्यूनता को प्राप्त होकर समानता को छोड़ देता है और अत्यधिक बलशाली शत्रु अपने आधिक्य को छोड़ देता है, अतः उस भेद की कौन प्रशंसा नहीं करता है?

नरेन्द्र नूनमूनोपि द्वेषणो भेदमर्हति।

ऊनस्याप्यूनतात्यर्थं हितायैव भवेद्युधि॥२३

२३. हे राजा! न्यून सामर्थ्यवान् शत्रु के साथ भी भेदनीति अपनाना योग्य है। क्योंकि न्यून सामर्थ्यवान् शत्रु का अत्यधिक दुर्बल हो जाना यह युद्ध में लाभकारी ही होगा।

ऊनोपि यदि दूनोयमिति मत्वाऽनुनीयते।

तर्हीतः श्लाघ्यमानोऽसौ स्वमेव बहुमन्यते॥२४

२४. यह दुःखी है, इस प्रकार मानते हुए यदि न्यून सामर्थ्यवान् शत्रु की सांत्वना की जाए तो वह अपने आपमें प्रशंसनीय होकर, अपने को बड़ा समझने लगता है।

ऊनानामप्यूनत्वमनूनानां तथोनता।

दृश्यते मनुजाधीश समयान्तरवैभवात्॥२५

२५. हे राजा! दुर्बल शत्रु की प्रबलता तथा बलवान् शत्रु की दुर्बलता, काल की महिमा से ही संभव है।

तस्मादूने नरेन्द्रेण द्विषि दण्डो विधीयते।

मते पत्युरपां येन मनस्सम्यङ्निधीयते॥२६

२६. वरुण की इस सम्मति में जो राजा अच्छी प्रकार ध्यान देता है, वह दुर्बल शत्रु पर शासन करता है।

समर्थश्चासमर्थश्चेत्युपायो द्विविधो मतः।

द्वितीयो ह्यवकेशी स्यात् प्रथमस्तु फलेग्रहिः॥२७

२७. समर्थ और असमर्थ ऐसे दो प्रकार के उपाय हैं। दूसरा उपाय निष्फल होता है किन्तु पहले प्रकार का उपाय सफल होता है।

योषितस्सारहारिण्यो मदिरा मोहदायिनी।

दुरोदरं धनहरं कादर्यं कार्यहानिकृत॥२८

वाक् पारुष्यमलक्ष्मीकं मृगया पापकारिणी।

नरेन्द्र दण्डपारुष्यमत्यर्थमयशस्करम्॥२९

२८-२९. स्त्रियां शक्ति का हरण करती हैं, शराब मति का विभ्रम करती है, द्यूतक्रीडा धन का नाश करती है, कंजूसी से कार्य की हानि होती है, कठोर संभाषण अकल्याणकारी है, उसी प्रकार मृगया से पाप लगता है और हे राजा! कठोर शासन अत्यन्त अपकीर्ति करने वाला होता है।

तस्मादेतानि सप्तानि व्यसनानि परित्यजेत्।

बतान्यतममप्येषां मतिभ्रंशाय जायते॥३०

३०. अतः इन सात व्यसनो का त्याग करना चाहिए, क्योंकि इनमें से एक व्यसन मतिभ्रम का साधक होता है।

येषामेकतरेणापि मतिभ्रंशो विधीयते।

तान्येकानि संसेव्य कः पुमान्नप्रहीयते॥३१

३१. यदि उनमें से एक के ही सेवन से मतिभ्रंश होता है तो अनेक के सेवन करने से कौन-सा मनुष्य अधोगति को प्राप्त नहीं होगा?

नीतिशास्त्रेषु विरसं निजकार्यभरालसम्।

मानुषं विजहाति श्रीर्व्यसनापन्नमानसम्॥३२

३२. नीतिशास्त्र में रुचि न रखने वाला, अपने कार्य के प्रति आलसी, और व्यसनो में मग्न व्यक्ति को लक्ष्मी छोड़ देती है।

मुष्णन्त्युचैः प्रमत्तेऽस्मिन् कोशं कोशाधिकारिणः।

तुदन्ति च दुरात्मानो राष्ट्रं राष्ट्राधिकारिणः॥३३

३३. उसके अत्यधिक प्रमत्त हो जाने पर तो कोषाधिकारी खजाने को चुरा लेता है और दुष्ट राष्ट्र के अधिकारी प्रजा को पीड़ित करते हैं।

तत्तद्वासनसक्तस्य वैचित्यमुपचीयते।

वैचित्योपचायदुच्चैरौचित्यमपचीयते॥३४

३४. नाना प्रकार के व्यसनों से राजा का भ्रम वृद्धि को प्राप्त होता है और उसमें अतिशय वृद्धि हो जाने से उसका औचित्यपूर्ण व्यवहार नष्ट हो जाता है।

औचित्यापचयादेनं जनस्सर्वोऽवमन्यते।

विनियुक्ताश्च कार्येषु नैव तान्याशु कुर्वते॥३५

३५. औचित्यपूर्ण व्यवहार के नष्ट होने पर लोग उसका अपमान करते हैं और कार्यों में नियुक्त किये गये लोग भी कार्य को शीघ्रता से पूर्ण नहीं करते हैं।

अथ क्रोधोद्धुरोत्युच्चैरुच्चरन् रुशतीं गिरम्।

दिने दिने तुदत्येनान् समेतानपि संसदि॥३६

३६. फिर अत्यन्त क्रोध के आवेश में आकर संसद में इकट्ठे हुए लोगों को ही प्रतिदिन उच्चध्वनि में भाषण देकर उनको पीड़ित करता है।

ततो ह्यनुक्षणकृतासूर्क्षणक्षतचेतसः।

परोक्षे परिभाषन्ते यथाचोपहसन्त्यमुम्॥३७

३७. तत्पश्चात् प्रतिक्षण किये गए उनके अनादर के कारण अन्तकरण से खिन्न होकर वे उसके परोक्ष में वार्तालाप करते हैं और उसका उपहास भी करते हैं।

ततो मुञ्चुत्यमुं केऽपि केऽप्यमुष्मिन्नुदासते।

केचिद्विपक्षपक्षांतर्निपत्य सुखमासते॥३८

प्रकोपनममुं मत्वा शपन्त्येव तु केचन।

भजन्ति न यथापूर्वमत्यजन्तोऽपि केचन॥३९

३८-३९. तत्पश्चात् कुछ लोग उसको छोड़ देते हैं, कुछ उसके प्रति उदासीन रहते हैं, कुछ उसके शत्रुपक्ष के साथ मिलकर सुख से रहते हैं, कुछ उसको क्रोधी समझकर शाप देते हैं और कुछ उसको न छोड़ते हुए भी पहले की तरह उसकी सेवा नहीं करते हैं।

सप्तव्यसनसक्तत्वादजानानच्छलं बलम्।

मन्यते प्रभुमात्मानमहङ्कारेण केवलम्॥४०

४०. इन सात व्यसनों में आसक्त होने से वह शत्रु के कपट रूपी बल को न जानता हुआ, केवल अहंकार से अपने को समर्थ समझता है।

व्यसनासक्तचित्तेन येनेत्थं बत भूयते।

जैत्रयात्रापरैस्सद्यः परैस्स परिभूयते॥४१

४१. चित्त के व्यसनों में आसक्त होने से जो इस प्रकार का हो जाता है, उसकी विजय के लिए यात्रा करने वाले शत्रु के द्वारा शीघ्र ही पराजय हो जाती है।

गिरयो नैव गुरवो गुरुरेव गुरुर्मतः।

भवतात्र प्रभवता दत्तः सिंहचलस्ततः॥४२

४२. दुर्ग इतने मूल्यवान् नहीं है, वास्तव में पिता ही बहुमूल्य है, अतः पराक्रमी होते हुए भी तुमने सिंहगढ़ दुर्ग को दिया।

प्रदत्ते द्विषतेऽमुष्मिन् विमुक्तश्चेत् स पार्थिवः।

तर्हि दत्तोपि भवता न दत्तः सिंहपर्वतः॥४३

४३. शत्रु को इस सिंहगढ़ दुर्ग को देकर यदि शहाजी राजा मुक्त हो गये तो आपके द्वारा प्रदत्त सिंहगढ़ दुर्ग न दिये के समान है।

यः सिंहपर्वतं मेने समं शाहमुमेरुणा।

बिंगरूरं च नगरं किं कृतं तेन वैरिणा॥४४

४४. जिसने सिंहगढ़ और बैंगलोर शहर को शहाजी रूपी मेरुपर्वत के समान माना, उस शत्रु ने विशेष क्या किया?

उपक्रान्तमिदानीं तु त्वया विजयमण्डलम्।

सुविक्रान्तस्य नृपतेः सर्वमेव महीतलम्॥४५

४५. तुमने इस समय विजययात्रा प्रारम्भ की है और अत्यन्त पराक्रमी राजा की ही सम्पूर्ण पृथ्वी होती है।

राजा तावत्ततो मन्त्री सुहृदो विपुलं धनम्।

राष्ट्रं दुर्गाणि सैन्यानि राजस्याङ्गानि सप्त वै॥४६

४६. सर्वप्रथम राजा, तत्पश्चात् मन्त्री, मित्र, विपुल धन, राष्ट्र, किले और सेना, ये सात राज्य के अंग हैं।

एतैरविकलैर्युक्तं राज्यं सद्भिः प्रशस्यते।

एकेनापि विहीनं तदितरैरूपहस्यते॥४७

४७. जिस राजा के ये अंग व्यवस्थित होते हैं, उस राज्य की सज्जन लोग प्रशंसा करते हैं। यदि वही राजा एक अंग से भी विहीन हो तो वह अन्यो के द्वारा उपहास का पात्र बन जाता है।

मौलिर्नृपो मुखं मन्त्री धनसैन्ये भुजद्वयम्।

राष्ट्रमन्यद्रुपुस्सर्वं सुहृदस्सन्धयो दृढाः॥४८

दुर्गाणि तु दृढान्युच्चैस्तदस्थीनि तदन्तरा।

एवमङ्गानि राज्यस्य सप्तोक्तानि मनीषिभिः॥४९

४८-४९. राजा का यह मस्तक है, मन्त्री मुख है, धन और सेना ये भुजाएं हैं, सम्पूर्ण राष्ट्र का यह शरीर है, मित्र यह शरीर है, मित्र यह जोड़ है और दुर्ग यह उसमें स्थित मजबूत हड्डी है, इस प्रकार विद्वानों ने राज्य के सात अंग बताये हैं।

सप्ताङ्गस्यास्य राज्यस्य धर्म आत्माऽभिधीयते।

मन्त्रः प्राणो बलं नीतिरनीतिरसमर्थता॥५०

दण्डो यथोचितः शौर्यमधर्मो रिपुरुद्धतः।

मदः परस्परं भेदो दीर्घमायुरभेद्यता॥५१

जनरञ्जनमुत्कर्षो दर्शनं दीर्घदर्शिता।



प्रतापः प्रोज्ज्वलं रूपं विमला बुद्धिरायुधम्॥५२

तथैव बलवद्वैरमन्तरायः प्रकीर्तितः।

प्रमादस्तुभवेन्निद्रा प्रबोधः सावधनता॥५३

५०-५३. इन सात अंगों से युक्त राज्य का धर्म आत्मा है, मन्त्र प्राण है, नीति यह बल है और अनीति दुर्बलता है। यथोचित दण्ड विधान यह शौर्य, शत्रु की उद्दण्डता अधर्म, आपस में भेद करना यह मद, दृढता, दीर्घायु है, लोकानुरंजन उत्कर्ष, दूरदर्शिता ही दृष्टि है, पराक्रम यह उज्ज्वल स्वरूप, आयुध यह विमल बुद्धि, उसी प्रकार बलवान् के साथ शत्रुता विघ्न कहा गया है, प्रमाद यह निन्द्रा और सावधानी यह जागृत अवस्था कही गई है।

समं च विषमं चेति वैरं द्विविधमुच्यते।

प्रथमं तु समेनाहुर्द्वितीयमधिकेन चेत्॥५४

५४. सम और विषम ये दो प्रकार की शत्रुता कही गयी है। समान शत्रु के साथ शत्रुता यह पहली एवं बलवान् शत्रु के साथ शत्रुता यह दूसरी प्रकार की शत्रुता कही गई है।

समे समत्वादुभयोर्न भवेद्विजयः खलु।

अधिकस्याधिकत्वेन विषमे विजयो ध्रुवम्॥५५

५५. समान शत्रुता में, समान बल होने से दोनों को ही विजय प्राप्त नहीं होगी, किन्तु विषम शत्रुता में अधिक बलवान् की ही अधिक बल होने से विजय निश्चित है।

फतेखानप्रभङ्गेन मुसेखानवधेन च।

अहर्दिवं प्रभो तुभ्यं महमूदोऽभ्यसूयति॥५६

५६. फतेखान की पराजय से एवं मुसेखान के वध के कारण से हे महाराज ! महमूदशाह रात-दिन आपसे द्वेष करता है।

पश्य येदिलदिल्लीन्द्रौ विषयानन्तरौ तव।

यवनौ बलिनौ तुभ्यं द्रुह्यतोऽहर्निशं नृपा॥५७

५७. महाराज देखा! आपके राज्य के समीप स्थित आदिलशाह एवं दिल्ली के बादशाह, ये सामर्थ्यवान् यवन आपसे रात-दिन द्रोह करते हैं।

अमू उभयतो यस्य द्वेषणौ रोषणौ तव।

तस्य नूनमिहस्थाने स्थितिः स्थाने न संप्रति॥५८

५८. ये दोनों शत्रु, दोनों तरफ से आप पर क्रोधित हो गये हैं, अतः आपका यहां रहना सम्प्रति वास्तव में योग्य नहीं है।

अतोऽतिदुर्गमं स्थानमास्थाय जगतीपते।

यतस्व जगतीं जेतुं किमजय्यं शिवस्य ते॥५९

५९. इसलिए महाराज! अत्यन्त दुर्गम स्थान पर स्थित होकर जगत को जीतने के लिए प्रयत्न करो, आप शिवाजी के लिए क्या अजेय है?

कण्ठेकालेन कैलासः स मेरुः शम्बपाणिना।

अभ्यन्तरमपां पत्युः शिश्रिये दनुजारिणा॥६०

६०. शंकर ने कैलाश पर्वत का, इन्द्र ने मेरुपर्वत का और विष्णु ने समुद्र का आश्रय लिया है।

न दुर्गं दुर्गमित्येव दुर्गमं मन्यते जनः।

तस्य दुर्गमता सैव यत्प्रभुस्तस्य दुर्गमः॥६१

६१. दुर्ग को केवल दुर्ग कहने से लोग दुर्ग नहीं मानते हैं, अपितु उसके स्वामी का दुर्गम होना ही उसकी दुर्गमता होती है।

प्रभुणा दुर्गमं दुर्गं प्रभुर्दुर्गेण दुर्गमः।

अदुर्गमत्वादुभयोर्विद्विषन्नेव दुर्गमः॥६२

६२. राजा के कारण से दुर्ग दुर्गम होता है एवं दुर्ग के कारण से राजा दुर्गम होता है। दोनों के अभाव होने पर तो शत्रु ही दुर्गम होता है।

सन्ति ते यानि दुर्गाणि तानि सर्वाणि सर्वथा।

यथा सुदुर्गमाणि स्युस्तथा सद्यो विधीयताम्॥६३

६३. आपके जो दुर्ग हैं, वे सब प्रकार से, जिस प्रकार अत्यन्त दुर्लभ बन सकें, उस प्रकार शीघ्र प्रयत्न करना चाहिए।

सुवर्णशर्मणोवाचमिमां श्रुत्वा नृपोत्तमः।

माननीयोऽतिमहतां माननीयाममन्यत॥६४

६४. सोनोपंत के ये वचन सुनकर अति महान माननीयों में माननीय, नृपश्रेष्ठ ने उनकी बातों को मान लिया।

प्रभुत्वं बिभ्राणस्त्रिभुवनपरित्राणकरणे।

पितृद्वेषिद्वेषी तदनुतनुजः शाहनृमणेः।

निरातङ्कस्सक्तो यवनकदनायातिमहते।

समग्रामप्युर्वीममनुत वसन्तीं करतले॥६५

६५. तत्पश्चात् त्रिभुवन का पालन करने के लिए प्रभुत्व को धारण करने वाला, पिता के शत्रु से द्वेष करने वाला, यवनों के महान् नाश करने के लिए उत्सुक और निर्भय, ऐसा शिवाजी सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने हाथ के तलवे पर है, ऐसा समझने लगा।

इत्यनुपुराणे निवासकरकवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां षोडशोऽध्यायः।

## अध्याय:-१७

कवीन्द्र उवाच -

ततोऽफजलमाहूय स्वीयसैन्यधुरन्धरम्।

अल्लीशाहः स्वयं वाचमुवाच समयोचितम्॥१

कवीन्द्र बोला -

तत्पश्चात् अपने सेना के सेनापति अफजलखान को बुलाकर, अल्लीशाह ने स्वयं समयानुसार उपदेश दिया।

अल्लीशाह उवाच -

हितावहस्त्वमस्माकमस्मिन् सैनिकसञ्चये।

विरोद्धा द्विजदेवानां कालः कलिरिवापरः॥२

अल्लीशाह बोला -

इन सैनिकों के समूह में तू हमारा हित करने वाला है, देव एवं ब्राह्मणों का विरोधी है और मानो तू दूसरा कलिकाल ही हो।

प्रस्थितेन त्वया पूर्वं पृतनाव्यूहवर्तिना।

रामराजान्वयभुवो राजानो युधि निर्जिताः॥३

पहले तूने विशाल सेना के साथ प्रस्थान करके राम राजा के वंशी राजाओं को युद्ध में पराजित किया था।

कृतप्रतीपसन्तापे प्रतापे तव जाग्रति।

बत श्रीरङ्गराजोऽपि रणरङ्गाद्विरज्यते॥४

शत्रु को पीड़ा देने वाले तेरे प्रताप के जागृत होने से, श्रीरंगपट्टण का राजा भी रणभूमि से विमुख हो गया है।

त्वया विक्रम्य वीरेण क्षणात् कर्णपुराधिपः।

सर्पो जाङ्गुलिकेनेव स्फुरद्दर्पो वशीकृतः॥५

जिस प्रकार गरूड़ अत्यन्त क्रोधित सांप को भी अधीन कर लेता है, उसी प्रकार तूने वीरता से आक्रमण करके कर्णपूर के राजा को अपने अधीन किया था।

त्वया मन्दरसारेण मथिता मधुरापुरी।

निगृह्य नगरीं काञ्चीं आहतं चापि काञ्चनम्॥६

मंदराचल पर्वत के समान बलशाली तूने, मदुरा शहर को तहस-नहस किया और कांची को अधीन करके सुवर्ण लूट करके लाया।

पदे पदे शुभवता भवता किङ्करीकृतः।

व्यस्मरद्वीरभद्रोऽपि छत्रचामरसम्पदः॥७

पग-पग पर यश प्राप्त करने वाले तेरे द्वारा गुलाम बनाया गया। वीरभद्र भी छत्रचामर से युक्त ऐश्वर्य को भूल गया है।

बिभेजि सिंहलपतिर्मत्तो लंकापतिस्तथा।

भजन्त्यम्भोधिरपि मां तदिदं पौरुषं तव॥८

सिंहल का राजा, उसी प्रकार उन्मत्त लंका का राजा मेरे से डरते हैं और समुद्र भी मेरी सेवा करता है, यह तेरे पराक्रम का ही परिणाम है।

प्रचलन्त्यचलाः सप्त चलत्यफजल त्वयि।

क्षुभ्यन्ति चाब्धयः सप्त द्वीपाः सीदन्ति सप्त च॥९

हे अफजलखान! तेरे चलने पर ये सात कुलपर्वत चलने लगते हैं, समुद्र भी परेशान हो जाता है और सातों द्वीप खिन्न हो जाते हैं।

बर्तेद्रप्रस्थनाथोऽपि निशम्य तव पौरुषम्।

रोषावेशवशीभूतो न निद्राति दिवानिशम्॥१०

तेरे पराक्रम को सुनकर क्रोधित हुए दिल्ली के बादशाह को भी रात-दिन नींद नहीं आती है।

एतादृशि महावीरे दुर्जये त्वयि जाग्रति।

मह्यं द्रुह्यत्यहोरात्रमहो शाहसुतः शिवः॥११

ऐसे तेरे जैसे महावीर के जागृत होने पर भी शहाजी का पुत्र शिवाजी, मेरे से रात-दिन द्रोह करता है, यह आश्चर्य है।

हन्त तेन महोत्साहवता वीरेण मानिना।

स्वधर्माभिनिविष्टेन म्लेच्छधर्मो विहन्यते॥१२

अरे! उस महान् उत्साही, स्वाभिमानी, स्वधर्म पर अभिमान करने वाले वीर के द्वारा मुसलमानों के धर्म का नाश हो रहा है।

क्रमेणाक्रम्य विकटां कण्ठीरव इवाटवीम्।

एष आत्मवशो नैव मन्यते मम शासनम्॥१३

भयानक जंगली सिंह के समान क्रमानुसार आक्रमण करके यह स्वाभिमानी मेरे शासन को स्वीकार नहीं करता है।

छलप्रचलचित्तस्य खलस्यास्य समाश्रयात्।

मम चित्ते चिरं शैलः सह्योऽप्यसह्यताम्॥१४

छल-कपट में जिसका चित्त चलायमान है, ऐसे दुष्ट के हाथों में सह्य पर्वत का होना, मेरे मन के लिए असहनीय हो गया है।

महमूदेन पित्रा मे यदि न स्यात् स वारितः।

तर्हि स्यान्मज्जितोम्भोधौ तेन राजपुरीश्वरः॥१५

मेरे पिता महमूदशाह, यदि इसको नहीं रोकते तो यह दंडाराजपुरी के राजा को समुद्र में डूबा देता।

स चन्द्रराजं निर्जित्य पुत्रामात्यसमन्वितम्।

जयवल्लीं च नगरीमग्रहीन्निरवग्रहः॥१६

पुत्र एवं मन्त्रियों के साथ चंद्रराव मोरे को जीतकर इसने बिना किसी प्रतिबंध के जयवल्ली को अधीन कर लिया।

दत्तोऽवरङ्गशाहस्य मया यः सन्धिकाम्यया।

नीवृन्निजामशाहस्य सपर्वतवनाकरः॥१७

स तेनात्मवशेनास्मानवमत्य प्रतापिना।

परानप्यविनीतेन प्रसह्य स्ववशीकृतः॥१८

सन्धि करने की इच्छा से मैंने जो औरंगजेब को दुर्ग, अरण्य एवं पर्वतों से युक्त प्रदेश दिये थे, वे प्रदेश उस प्रतापी, वशी एवं उन्मत्त शिवाजी ने मेरा एवं उन मुसलमानों का तिरस्कार करके बलपूर्वक अधीन कर लिये।

अतर्कितागमोऽभ्येत्य दस्युवृत्तिपरायणः।

मत्पत्तनपुरग्रामानुद्धृतोऽयं विलुण्ठति॥१९

यह लुटेरा एवं बागी शिवाजी अचानक छापेमारी करके मेरे शहर गांव एवं कस्बों को लूट लेता है।

अहोरात्रेण पक्षेण गम्यं पक्षद्वयेन च।

अत्येति स किलाध्वनं क्षणेनैवाकुतोभयः॥२०

एक अहोरात्र में, एक पक्ष में, या एक महीने में पार करने योग्य मार्गों को, वह निर्भय शिवाजी एक क्षण में ही पार कर लेता है।

अयं कौमारमाभ्य निकृतिप्रकृतिः स्वयम्।

यवनानवजानाति जाग्रदुग्रपराक्रमः॥२१

उग्र पराक्रमी और अपने कपटी स्वभाव से जागरूक शिवाजी, कौमार अवस्था से ही यवनों का अपमान करते आया है।

आक्रम्य ताम्रवक्त्राणां नगराण्युरुविक्रमः।

नगरप्रभृतीन्येष चण्डचण्डमदण्डयत्॥२२

इस अत्यन्त पराक्रमी शिवाजी ने मुगलों के शहरों पर आक्रमण करके अहमदनगर आदि शहरों पर भयंकर शासन किया है।

स्थैर्यं निजामराष्ट्रस्य गृहीतस्यापि यत्नतः।

अपि दिल्लीपतिर्नैव मनुतेऽस्माद्विशङ्कितः॥२३

प्रयत्नपूर्वक अधीन किये गए निजामशाह के राज्य की स्थिरता भी दिल्ली के बादशाह को इसके भय से संदेह युक्त प्रतीत होती है।

पितामहेन मे पूर्वं पिता तस्य विवर्धितः।

शाहराजो दुर्विनीतं तं न शिक्षयितुं क्षमः॥२४

पहले मेरे दादाजी द्वारा पालित-पोषित उसके पिता शहाजी भी उस अविनीत पुत्र को दण्ड देने में असमर्थ है।

अयं विगृह्य पित्रा मे निगृहीतं प्रतापिना।

शाहराजं महाबाहुर्बलनैव व्यमोचयत्॥२५

मेरे प्रतापी पिता ने छापेमारी करके कैद किए गए शहाजी राजा को इस महाबाहु ने अपने बल से ही मुक्त किया।

नो दूयते परभयादयमल्पवया अपि।

अतिक्रामति चाप्यस्मान् विस्मापकपराक्रमः॥२६

यह अल्पायु वाला होते हुए भी शत्रु के भय से भयभीत नहीं होता है, और यह आश्चर्यजनक पराक्रमी हम पर ही आक्रमण करता है।

दिने दिने वर्धमानः प्रतापेन सह श्रिया।

अयमाश्रीयते भूपैराकाङ्क्षितसमृद्धिभिः॥२७

प्रतिदिन प्रताप एवं संपत्ति के द्वारा इसके वृद्धि को प्राप्त होने से धन के इच्छुक राजा इसकी अधीनता स्वीकार कर रहे हैं।



शनैः शनैरेष बली पदं कुर्वन् पुरः पुरः।

अस्मद्राज्यं समाच्छिद्य करिष्यति किमात्मसात्॥२८

यह बलवान् शिवाजी धीरे-धीरे पग को आगे बढ़ाते हुए क्या हमारे राज्य को भी छीनकर आत्मसात करेगा?

तज्जयाय पुरा वीरान् यान्यान्प्रास्थापयं मुहुः।

न प्राप्ताः पुनरावृत्तिं ते तं प्राप्य प्रतापिनम्॥२९

पहले जिन-जिन वीरों को, इसको जीतने के लिए बारंबार भेजा था। वे वीर इस प्रतापी को प्राप्त करके पुनः वापिस नहीं आये।

निर्वाणमरिवीराणां कुर्वाणां कुर्वाणमकुतोभयम्।

त्वां विना तस्य जेतारं नान्यं पश्यामि कञ्चन॥३०

वीर शत्रुओं का नाश करने वाला एवं निर्भय तेरे बिना, उसका जीतने वाला मुझे दूसरा कोई दिखाई नहीं देता है।

तस्मात्वमेव गत्वा तं कृतदुर्गपरिग्रहम्।

सविग्रहं ग्रहमिव निगृह्णानय दुर्ग्रहम्॥३१

इसलिए तू ही जाकर दुर्ग का आश्रय लेकर रहने वाले उस दुर्जय शिवाजी को मूर्तिमत ग्रह की तरह जीवित पकड़कर ले आ।

कवीन्द्र उवाच -

एवमुक्तोऽतिविश्रम्भादल्लीशाहेन मानिना।

प्रोवाचाफजलः प्रीत्या प्रस्तुतार्थमयं वचः॥३२

कवीन्द्र बोला-

इस प्रकार अत्यन्त विश्वास के साथ अभिमानी अल्लीशाह के बोलने पर, अफजलखान प्रसन्न होकर वर्तमान कार्य के संबंध में बोला।

अफजल उवाच -

विश्रम्भेणापि च प्रेम्णा यदाज्ञापयति प्रभुः।

तस्य कर्ता स एव स्यात् गुणीभूतस्तु किंकरः॥३३

अफजलखान बोला -

विश्वास एवं प्रेमपूर्वक जो स्वामी आज्ञा देता है, उसका कर्ता तो स्वामी ही होता है, सेवक केवल निमित्तमात्र है।

द्विषद्वर्गक्षयकरी जागर्ति किल या मयि।

कार्यमादिशता साद्य शक्तिरुत्तेजिता त्वया॥३४

शत्रुओं के नाश करने की जो शक्ति मेरे में जागृत अवस्था में विद्यमान है, उसको आज आपने मुझे कार्य बताकर उसको जागृत किया।

उग्राय विग्रहायास्मै त्वया प्रेषयता ह्यमुम्।

अवैम्यनुग्रहेणैष सङ्गृहीतोऽनुगः स्वयम्॥३५

उस पर भयंकर युद्ध करने के लिए तुमने जो मुझे भेजा है, मानो आपने मेरे पर अनुग्रह करके अपना बनाया हो।

कर्तव्यं भृत्यवर्गाय स्वामी चेन्नसमादिशेत्।

अस्ति नास्तीति कस्तर्हि तस्य ज्ञास्यति पौरुषम्॥३६

यदि स्वामी सेवक को कार्य आदेशित नहीं करेगा तो उसमें पराक्रम है या नहीं, उसको कौन जानेगा?

अहमद्धा भृशं बद्ध्वा स्पर्धाकरमहर्निशम्।

तमन्तकमिवोद्धृत्तमानयिष्ये तवान्तिकम्॥३७

अहर्निश स्पर्धा करने वाले एवं यमराज के समान दुष्ट ऐसे उस शिवाजी को सुदृढता से बांधकर आपके समक्ष लाऊंगा।

प्रविश्य देशं कार्णाटं निर्जिता शतशो नृपाः।

स जयस्तमनिर्जित्य जीवतो मे निरर्थकः॥३८

कर्नाटक राज्य में प्रवेश करके मैंने सैकड़ों राजाओं को जीता है, वह मेरा विजय है, किन्तु यदि मैंने शिवाजी को नहीं जीता तो मेरा जीवन जीना निरर्थक है।

कवीन्द्र उवाच -

इत्युक्तवन्तमत्यर्थं समर्थबलदर्पितम्।

कर्तुं प्रतिश्रुतं कर्म सद्य एव समुद्यतम्॥३९

येदिलोऽफजलं तत्र प्रस्थापयितुमादृतः।

तदा संभावयामास बहुभिः पारितोषिकैः॥४०

कवीन्द्र बोला-

इस प्रकार बोलने वाले, अपने प्रचण्ड शक्ति पर अभिमान करने वाले और स्वीकृत कार्य को शीघ्र करने के लिए उद्यत, ऐसे अफजलखान को वहां प्रेषित करने के लिए उत्सुक आदिलशाह ने उस समय अत्यन्त उपहारों को देकर उसका सत्कार किया।

ततः सरत्नपर्याणपृष्ठानुष्ट्रांस्तुरङ्गमान्।

तथैवाभरणोपेतान् भद्रजातीन्मतङ्गजान्॥४१

तनुत्राणि शिरस्त्राणि शस्त्राणि विविधानि च।

विचित्राणि च वस्त्राणि निजानि बिरुदानि च॥४२

तिरस्कृतविमानानि याप्ययानान्यनेकधा।

रौप्यान् रौक्मांश्च पर्यङ्कान् करङ्कांश्च पतद्ग्रहान्॥४३

रत्नोत्तंसानथोमुक्तास्रजोहीराङ्गदानि च।

कटकान्यूर्मिकाश्चापि चित्ररत्नचयांकिताः॥४४

तथा द्वीपान्तरोत्थानि जातिश्रेष्ठान्यनेकशः।

अल्लीशाहादफजलः प्रापत्कोषांश्च काटिशः॥४५

तत्पश्चात् रत्नों से परिपूर्ण काठी वाले ऊंट एवं घोड़े, उसी प्रकार अलंकारों से युक्त भद्र जाति के हाथी, अनेक प्रकार के कवच, मुकुट एवं शस्त्र और विचित्र वस्त्र, स्वयं की बिरुंदे, विमानों को भी तिरस्कृत करने वाली अनेक प्रकार की पालकियां, चांदी एवं सोने के पलंग, पान एवं सुपारी के बक्से, रत्नों के शिरोभूषण मोतियों की माला, हीरे के बाजूबंद, कड़े अनेक रंगीन रत्नजडित अंगुठियां, उसी प्रकार दूसरे देशों में होने वाले विभिन्न जातियों के अनेक उत्कृष्ट पदार्थ और अरबों का खजाना अल्लीशाह से अफजलखान को मिला।

वज्रधारामिव शितां रत्नकोषनिवेशिताम्।

निजां पाणिस्थितां प्रादात्प्रभुस्तस्मै कृपाणिकाम्॥४६

वज्र की तीक्ष्णता के समान पैनी, रत्नजडित म्यान में रखी हुई, अपने हाथ में स्थित स्वयं की कटार अल्लीशाह को दी।

स्वामिनैवाथ विन्यस्तां प्रेम्णा सारसनान्तरे।

सरत्नकोषाभरणां स बभाव कटारिकाम्॥४७

फिर स्वामी ने ही प्रेमपूर्वक उसके कमर के पट्टे में लटकाई हुई, रत्नजडित म्यान में स्थित एवं आभूषणों से युक्त कटार को धारण किया।

ततः पुनः पुनस्तस्मै प्रीत्या प्रास्थानकालिकीः।

कृत्वा नतीरफजलः प्रचचालाचलोपमः॥४८

तत्पश्चात्, प्रस्थान का समयोचित उसको बारंबार प्रेमपूर्वक मुजरा करके वह पर्वत के समान अफजलखान चलने लगा।

प्रचलन्तममुं तावत् प्रणमन्तं मुहुर्मुहुः।

पदे पदेऽनुजग्राह दिशन्नीशो दयादृशम्॥४९

बारंबार मुजरा करने वाले एवं प्रस्थान किये हुए उस अफजलखान पर पग-पग पर कृपादृष्टि डालकर स्वामी ने कृपा की।

तं वीरमान्यं सेनान्यं स विधाय महामनाः।

अन्यानमूंश्चमूनाथांस्तत्साहाय्ये समादिशत्॥५०

उस महत्वाकांक्षी आदिलशाह ने उस वीरमान्य अफजलखान को सेनापति बनाकर, दूसरे सेनानायक को भी उसकी सहायता करने का आदेश दिया।

अम्बरः शम्बरसमः प्रतापी याकुतः पुनः।

महामानी मुखेखानः पठानो हसनोऽपि च॥५१

रणदूलहसूनुश्च रणदूलहसंज्ञकः।

तथैवाङ्कुशखानोऽपि निरङ्कुशगजक्रमः॥५२

बर्बरः खेलकर्णस्य प्राप्तो यः क्रीतपुत्रताम्।

स हिलालो महाबाहुः प्रत्यर्थिद्रुमकुञ्जरः॥५३

इत्येतेऽन्ये च यवनाः ससैन्याः ससुहृद्रणाः।

सद्यः स्वामिसमादिष्टाः तं सेनापतिमन्वयुः॥५४

शबर राक्षस के समान अंबर और प्रतापी याकुत, अभिमानी मुसेखान, हसन पठान, रणदुल्लाखान का रणदुल्ला नामक पुत्र निरंकुश हाथी के समान अंकुशखान भी, खेलकर्ण का खरीदा गया पुत्र बर्बर और शत्रुरूपी वृक्षों के लिए हाथी के समान महाबाहु हिलाल और सेना से एवं मित्रों के समुदाय से युक्त दूसरे मुसलमान शीघ्र ही स्वामी की आज्ञा से उस सेनापति के पीछे गये।

जितानेकप्रतिभटाः प्रसभं समरोद्धटाः।

घोरकर्मकृतो घोरफटा अपि तमन्वयुः॥५५

पाण्डरो नायकश्चैव खराटोऽपि च नायकः।

कल्याणयादवश्चापि नैकसैनिकनायकः॥५६

समुद्यद्युद्धसंरम्भो मम्बो भृशबलस्तथा।

विश्वविश्रुतकर्माणो घाण्टिकाः काण्टिका अपि॥५७

इत्येतेऽन्ये च राजानः सामन्ताश्च सहस्रशः।

चतुरङ्गचमूयुक्तास्तं सेनापतिमन्वयुः॥५८

जिसने बलपूर्वक अनेक शत्रुओं जीता है, ऐसा युद्ध में निपुण, भयंकर कार्य का कर्ता, घोरपड़े भी उसके पीछे पड़ गया। पांढरे नाईक, खराटे नाईक, अनेक सैनिकों का नायक कल्याण यादव, जिसके युद्ध का आवेश प्रचंड है ऐसा मंबाजी भोसले, जगत् प्रसिद्ध पराक्रम के कर्ता घांटगे एवं कांटे और दूसरे राजा एवं हजारों सामन्त चतुरंगिनी सेना के साथ उस सेनापति के पीछे गये।

ततः कार्तान्तिकादिष्टे समये तस्य गच्छतः।

अभव्यशंसीन्यभवन्दुर्निमित्तान्यनेकशः॥५९

तत्पश्चात् ज्योतिषी द्वारा कथित मुहूर्त पर प्रस्थान किये हुए उसको अशुभसूचक अनेक चिह्न दिखाई दिये।

स पक्षपातं क्रोशन्तः प्रकामं वामगामिनः।

वृधेति कथयामासुर्वायसास्तस्य साहसम्॥६०

बत भेजे दिनार्धेऽपि भानुरस्पष्टभानुताम्।

प्रजज्वालेवान्तरिक्षं बभूवुर्धूसरा दिशः॥६१

सहसैव महत्युल्का निपपात दिवस्तटात्।

धनं विनैव च व्योम्न बभूवाशनिनिस्वनः॥६२

ववाशिरे प्रतिभयं दिशमैन्द्रीं श्रिताः शिवाः।

भङ्गमाप ध्वजो यानान्यप्रहृष्टानि चाभवन्॥६३

अवाप सदृशद्रेणु वर्षीवातः प्रतीपताम्।

बभ्रामाग्रे प्रणुन्नोऽपि वारणः पृथनाग्रणीः॥६४

पंखों को फड़फड़ाकर उच्चध्वनि करने वाले एवं बाईं तरफ से जाने वाले कौवों ने उसका साहस बेकार है, ऐसा बताया, मध्याह्न में ही सूर्य अस्पष्ट दिखने लगा, अन्तरिक्ष मानों प्रज्ज्वलित हो गया हो, दिशाएं मलिन हो गई, एक बड़ी उल्का आकाश से अचानक गिर गई, बादलों के बिना ही आकाश में आकाशीय विद्युत गरजने लगी। पूर्व दिशा में

लोमड़ियां भयंकर आवाज करने लगी, ध्वज टूट गया और यान खराब हो गये, कंकड, धूल की वर्षा करने वाली वायु विपरीत बहने लगी, सेना का अग्रिम हांथी अंकुश के प्रहार के बिना ही आगे दौड़ने लगा।

यद्यप्येतानि चान्यानि तन्निमित्तान्यवारयन्।

तथापि सरणोत्थाहं नामुञ्चन्नमुचिर्यथा॥६५॥

इस प्रकार के एवं अन्य निमित्तों के द्वारा उसके मार्ग को रोकने पर भी उसने इन्द्र के समान युद्ध के उत्साह को नहीं छोड़ा।

ततः स प्रस्थितस्तस्मात्पत्तनाद्विजयाह्वयात्।

योजनार्धमिते देशे वसतिं स्वामकल्पयत् ॥ ६६ ॥

फिर बिजापुर से प्रस्थान किये हुए उस अफजलखान ने आधे योजन पर अपना निवासस्थान बनाया।

तत्रागताभिरभितो वाहिनीभिः समन्वितः ।

स निवेशोन्मुखः सैन्यव्यूहोम्भोधिरिवावभौ ॥ ६७ ॥

वहां चारों ओर से आई हुई सेनाओं से युक्त यह निवासस्थान बनाने के लिए उत्सुक सेनासमूह समुद्र के समान प्रतीत हुआ।

महार्हवर्णैरुच्छ्रायच्छादितव्योममण्डलैः ।

नवैरुत्तम्भितस्तम्भैर्मण्डितं पटमण्डपैः ॥ ६८ ॥

प्रोल्लसत्काण्डपटकप्राकारमयमण्डपम् ।

विचित्रासनविस्तारप्रस्तारितसभान्तरम् ॥ ६९ ॥

पुञ्जीकृतेष्टभूयिष्ठवस्तुसम्भारभासुरम् ।

उच्चैरुत्तानितोल्लात्र प्रच्छायाञ्चितचत्वरम् ॥ ७० ॥

अविदूर पुरोदेशद्वयीनद्धतुरङ्गमम् ।

समदद्विदव्यूहबृंहितस्पृष्टदिक्तम् ॥ ७१ ॥

जागरूकैरहोरात्रं गुटिकायन्त्रधारिभिः ।

कोदण्डिभिस्तथान्यैश्च खड्गखेटकपाणिभिः ॥ ७२ ॥

अपारैश्च तथा पारश्वधिकैः शक्तिहेतिकैः ।

अभिगुप्ताष्टदिग्भागमभितस्थितिशालिभिः ॥ ७३ ॥

तदनेकानकोदग्रवाद्यनिर्घोषभीषणम् ।

तत्तत्कार्यविधिव्यग्रजनकोलाहलाकुलम् ॥ ७४ ॥

यथास्थानस्थिताशेषजनलब्धसुखोदयम् ।

सैन्यं सैन्यपतिः सर्वे गुरुगर्वं व्यलोकत ॥ ७५ ॥

नवीन कपड़ों के खड़े किये गए खंभों से सुशोभित मण्डप की उंचाई से आकाश को ढकने वाले तंबुओं से वह सेना सुशोभित थी। अनेक रंगों से रंगीन बैठकें सभामण्डप के अंदर फैली हुई थी, पसंदीदा अनेक वस्तुओं से निर्मित समूहों से वह सुशोभित था, उंचे छतों की छाया से उसके अंदर का प्रांगण शोभायमान था, समीप ही अग्रभाग पर घोड़े बंधे हुए थे, मदमस्त हाथियों के समूह के गर्जन से दिशाएं परिपूर्ण हो गई थी, अहर्निश रक्षा करने वाले बंदूकधारी, धनुर्धारी, ढाल एवं तलवारों को धारण करने वाले, अनगिनत परशुधारी, भाला धारण करने वाले, ऐसे अनेक व्यक्ति आस-पास खड़े होकर उसकी आठों दिशाओं से रक्षा कर रहे थे, अनेक नगाड़ों एवं प्रचंड वाद्यों की ध्वनि से वह भयंकर प्रतीत हो रहा था, अनेक प्रकार के कार्यों में व्यक्त कारीगरों के कोलाहल से वह व्याप्त हो गया, अपने योग्य स्थान पर रहने वाले सभी लोग आनन्दित थे, इस प्रकार की सेना को सेनापति ने गर्व के साथ देखा।

संग्रामे साभिमानः स भृशमफजलः स्वामिनो लब्धमानः ।

शौर्यश्रीशोभमानः सपदि भृशबलं भूपतिं जेतुकामः ।

दुर्दैवाकृष्टवित्तः पथि पथि परितो दुर्निमित्तानि पश्यन् ।

वैराटं राष्ट्रमन्तर्गतगुरुनिकृतिः क्षिप्रमभ्याससाद ॥ ७६ ॥

युद्ध में अभिमानी, स्वामी से अत्यधिक सम्मान प्राप्त किया हुआ। शौर्य एवं लक्ष्मी से शोभायमान, भोसले राजे को शीघ्र जीतने का इच्छुक, दुर्भाग्य से वापिस लौटाया गया वह अफजलखान पग-पग पर खराब निमित्तों को देखता हुआ और अंतःकरण में बड़े कपट को छुपाकर वाई प्रांत को शीघ्र प्राप्त हो गया।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिवासकरपरमानन्दकवीन्द्र प्रकाशितायां

शतसाहस्र्यां संहितायां अफजलाभ्यागमो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥



## अध्याय:-१८

मनीषिण उचुः -

उपेक्ष्य स खलः कस्माच्छिवं पुण्यपुरस्थितम्।

वैराटमेव विषयं ययौ सेनासमन्वितः॥१

१. पण्डित बोले - पुणे शहर में रहने वाले शिवाजी की उपेक्षा करके वह दुष्ट अपनी सेना के साथ वैराट प्रदेश किस कारण से गया?

कवीन्द्र उवाच -

साहङ्कारशिवं जेतुं स कालयवनद्युतिः।

यवनोऽफजलस्तूर्णं प्रस्थितः स्वामिशासनात्॥२

वैराटमेव विषयं प्राविशद्येन हेतुना।

तमहं संप्रवक्ष्यामि शृणुध्वं भो मनीषिणः॥३

२-३. कवीन्द्र बोले- उस घमण्डी एवं कालयवन के समान तेजस्वी अफजलखान यवन ने शिवाजी को जीतने के लिए, स्वामी की आज्ञा से शीघ्र प्रस्थान करके वैराट प्रदेश में ही किस कारण से प्रवेश किया वह मैं बताता हूँ हे पण्डितों ध्यान से सुनो।

निगृह्य बाजराजं तं कृष्णराजं च दुर्मदम्।

जनकं च तयोश्चन्द्रराजमाजौ महौजसम्॥४

अव्यक्तवर्तनीयुक्तां सद्यपर्यन्तवर्तिनीम्।

अटवीप्रायविषयां महादुर्गसमाश्रयाम्॥५

उन्निद्रसैनिकोदग्रामद्रिप्राकारमध्यगाम्।

जयवल्लीं नाम पुरीं अग्रहीदुर्गं शिवः॥६

४-६. बाजराज एवं उन्मत्त कृष्णराज और उन दोनों के पिता महान् बलवान् चन्द्रराज को युद्ध में मार करके, गुप्तमार्ग से युक्त, सह्याद्री के किनारे बसी हुई, सघन वृक्षों से युक्त तथा किले के आश्रय से युक्त, जागरूक सैनिकों के कारण से भयंकर एवं पर्वतों के मध्य में स्थित, ऐसी जयवल्ली नामक दुर्जेय नगरी को शिवाजी ने अधिग्रहीत किया।

ये येऽत्र चन्द्रराजस्य सहायाश्च सनाभयः।

तांस्तानशातयद्वीरः शिवः शक्तिमतां वरः॥७

७. जो-जो चन्द्रराज के सहायक एवं सगे संबन्धी थे, उन सबको बलवानों में बलशाली उस वीर शिवाजी ने काट दिया।

तदा प्रतापवर्मायश्चन्द्रराजस्य बान्धवः।

पलायितश्शिवभयाद्येदिलं प्रत्यपद्यत॥८

८. तब चन्द्रराज का बन्धु जो प्रतापवर्मा था वह शिवाजी के भय से आदिलशाह के पास चला गया।

चन्द्रराजपदाकांक्षी मन्त्रविन्मन्त्रिभिर्युतम्।

येदिलं प्रीणयामास चिरं स परिचर्यया॥९

९. चन्द्रराज के राज्य की आकांक्षा करने वाले उस प्रताप वर्मा ने, मन्त्रिवत् मन्त्रियों से युक्त आदिलशाह की चिरकाल तक सेवा करके उसको संतुष्ट किया।

तं देशं चन्द्रराजस्य महावनसमाश्रयम्।

तस्मादाच्छिद्य नृपतेर्दास्यामि भवते ध्रुवम्॥१०

येदिलस्येति वचसा तदा सोऽपहतव्यथः।

चकाराफजलस्याभिक्रमकर्म सहायताम्॥११

१०-११. विशाल वन में स्थित उस चन्द्रराज के राज्य को उस शिवाजी राजा से छिनकर तुझे अवश्य ही दूंगा। इस प्रकार आदिलशाह के कहने पर वह अपनी पीड़ा से रहित होकर उसने अफजलखान के आक्रमण के कार्यों में सहयोग किया।

ततोऽभिमानिना तेन चन्द्रराजसनाभिना।

भेदं निवेद्याफजलो वैराटं समनीयत॥१२

१२. फिर चन्द्रराज के उस अभिमानी बन्धु ने भेद बताकर अफजलखान को बैराट लेकर आया।

जयवल्ली वशा यस्य वैराटं तस्य सर्वथा।

तथा सहाद्रिखिलः सान्तरीपश्च सागरः॥१३

इति मत्वा स यवनस्तामेवादातुमादितः।

समुद्यतो महाबाहुर्द्रुतं वैराटमाययौ॥१४

१३-१४. जिसके अधीन जयवल्ली हैं, उसके अधीन पूर्णरूप से वाईस प्रान्त है। उसी प्रकार सम्पूर्ण सहाद्रि एवं समुद्रतट भी है, ऐसा विचार करने पर वह महाबाहु यवन, उसको अधीन करने के लिए पूरी तैयारी के साथ शीघ्र वाईस प्रदेश आया।

ततस्समेत्य सैन्येन वैराटं राष्ट्रमास्थिते।

यवनेऽफजले तूर्णं जयवल्लीं जिघृक्षति॥१५

शिवराजः कृती तत्र प्रतीकारपरायणः।

प्रभुः प्रभूतदर्पत्वादिदमात्मन्यचिन्तयत्॥१६

१५-१६. फिर सेना से साथ वाईस प्रान्त आकर वह अफजलखान यवन जयवल्ली को शीघ्र अधीन करने का इच्छुक था, उस समय प्रतिरोध करने में तत्पर वह चतुर शिवाजी बड़े अभिमान के साथ यह मेरे लिए है, ऐसा विचार करने लगा।

येदिलेन विसृष्टोऽसौ मयि रुष्टेन मानिना।

करिष्यत्यात्मसदृशं पौरुषं पौरुषक्रमः॥१७

स एष यवनो यस्य दुर्नयेन गरीयसा।

अहो कलियुगस्यास्य माहात्म्यमुपचीयते॥१८

१७-१८. मेरे पर क्रोधित हुए उस अभिमानी आदिलशाह के द्वारा प्रेषित यह पराक्रमी अफजलखान अपने शक्ति के समान पराक्रम करेगा। अरे! जिसके अत्यन्त दुष्टता के कारण इस कलियुग का माहात्म्य वृद्धि को प्राप्त हो रहा है, वही यह यवन है।

दुर्नयेन भृशं येन निशुम्भसमतेजसा।

अवाज्ञायत वै देवी तुलजापुरवासिनी॥१९

यः सदैवानस्तिदयो रोषणो राशिरंहसाम्।

द्विजानक्षिगतानक्षिगतानिव जिघांसति॥२०

पर्वतः पातकस्येव सर्वतः समुदोद्धतः।

पद्धतिं वर्णधर्माणां रोद्धुं तो हि व्यवस्थितः॥२१

निषेद्धा सर्वधर्माणामधर्माणां विवर्धकः।

स मया हन्त हंतव्यः स मया समुपागतः॥२२

१९-२२. निशुंभ की तरह तेजस्वी उस दुष्ट ने तुलजापुर की भवानी का बड़ा अपमान किया, जो सदैव निर्दयी एवं क्रोधी होने के कारण से पापों का राशि है, मानो आंख में गये हुए तिनके समान ब्राह्मणों को देखते ही मारने का इच्छुक है, मानो पातक का पर्वत ही हो, जो मदमस्त, वर्णाश्रमधर्मों को पूर्णरूप से नष्ट करने के लिए उद्युक्त है, जो सभी धर्मों का निषेध करके अधर्म की वृद्धि कर रहा है, ऐसे उस समीप आये हुए अफजलखान को मुझे मारना ही चाहिए।

हविः प्रकृतयो गावः पयसा सर्पिषापि च।

विधये सप्ततन्तूनां विधिना विहिता भुवि॥२३

२३. यज्ञ के लिए दुध एवं घी इन हवि के द्रव्यों की पूर्ति के लिए ब्रह्मदेव ने पृथ्वी पर गायों का निर्माण किया है।

तासामसौ तामसात्मा हन्ता हन्त दिने दिने।

विपर्यासयितुं धर्ममशेषमपि वाञ्छति॥२४

२४. उनको यह तमोगुणी अफजलखान अरे! प्रतिदिन मार करके धर्म का विनाश करना चाहता है।

इयं वसुन्धरा देवी धर्मेण खलु धार्यते।

ध्रुवं स धार्यते देवैस्तेऽधार्यन्त द्विजातिभिः॥२५

२५. यह वसुंधरा देवी वास्तव में धर्म के संयोग से धारण की जाती है, और वह धर्म निःसंदेह देवों द्वारा रक्षित होता है।

अतस्सर्वस्य लोकस्य मूलमेते द्विजातयः।

पालनीयाः प्रयत्नेन पूजनीयाश्च सर्वदा॥२६

२६. इसलिए इस सम्पूर्ण संसार के आधार ऐसे ब्राह्मणों का सर्वदा प्रयत्नपूर्वक पालन एवं सत्कार करना चाहिए।

सुराणां भूसुराणाञ्च सुरभीणां च पालनम्।

विदधाम्यहमेवाद्धा भूत्वा भूत्वा युगे युगे॥२७

२७. देवों का ब्राह्मणों का और गायों का पालन मैं ही प्रत्यक्ष प्रत्येक युग में अवतार लेकर करता हूँ।

येनाम्भोनिधिमाविश्य बिभ्रता मीनरुपताम्।

हतः शंखासुरः संख्ये श्रुतयश्चाप्युपाहताः॥२८

अधारिमन्दरो येन पृष्ठे स्वे कमठात्मना।

तथाचाधारतामेत्य व्यधायि वसुधा स्थिरा॥२९

उद्हृत्य वसुधां सद्यः समुद्रादंष्ट्रया स्वया।

येन वाराहरुपेण हिरण्याक्षो निषूदितः॥३०

हरेर्यवीयसा येन हरिणा ह्रस्वरुपिणा।

अलं छलं कलयता बलिर्नीतो रसातलम्॥३१

आविर्भूय सभास्तम्भान्नरसिंहत्वमीयुषा।

व्यदारि करजैर्येन हिरण्यकशिपोरुरः॥३२

भृगुवंशावतंसेन रैणुकेयेन येन वै।

कार्तवीर्यं निहत्याजौ कृता निःक्षत्रिया मही॥३३

येन दाशरथीभूय निबद्धाम्भोधिसेतुना।

दाशकण्ठशिरः श्रेणी शरेणैकेन पातिता॥३४

वृष्णिवंशावतंसेन येन शूरेण शौरिणा।

धर्मं व्यवस्थापयता हताः कंसादयः खलाः॥३५

सः विष्णुस्सर्वदेवानां सर्वस्वमहमीश्वरः।

हर्तुं भारमिमं भूमेराविर्भूतोस्मि भूतले॥३६

२८-३६. जिसने समुद्र में प्रवेश कर मत्स्यरूप धारण करके युद्ध में शंखासुर को मार दिया एवं वेदों को पुनः लाया, जिसने कछुए का रूप धारण करके मंदर पर्वत को अपने पीठ पर धारण किया और पृथ्वी का आधार बनकर उसको स्थिर किया, जिसने वराह का रूप धारण करके अपने तीक्ष्ण दांतों से पृथ्वी को समुद्र से बाहर निकालकर हिरण्याक्ष को मार दिया, जिस इन्द्रानुज विष्णु ने वामन अवतार लेकर पूर्णतया छल करके बली को रसातल में ले गया, जो सभामण्डप के खम्भे के मध्य से नरसिंह रूप में प्रकट होकर अपने नाखूनों से हिरण्यकशिपु का वक्षःस्थल विदीर्ण कर दिया, जिस भृगुवंश के भूषण रेणु का पुत्र परशुराम ने कार्तवीर्य का विनाश किया और पृथ्वी को निःक्षत्रिय किया, जिसने दशरथ का पुत्र बनकर समुद्र पर सेतु बांधा था एवं एक ही बाण से दस मस्तकों को काट दिया, जिसने वृष्णिवंश का भूषण बनकर शूरसेन के कुल में जन्म लेकर कंसादि दुष्ट मार दिये थे एवं धर्मस्थापना की, वही सभी देवों का सर्वस्व मैं विष्णु ही हूं और सम्पूर्ण पृथ्वी का भार हरण करने के लिए पृथ्वी पर प्रकट हो गया हूं।

यवनानाममी वंशाः सर्वेप्यंशास्सुरद्विषाम्।

जगतीं निजधर्मेण निमज्जयितुमुद्यताः॥३७

३७. यवनों के ये सभी वंश असुरों के अंश होते हैं। ये अपने धर्म के योग से पृथ्वी को डुबाना चाहते हैं।

तस्मादेतान् हनिष्यामि दानवान् यवनाकृतीन्।

प्रथयिष्यामि धर्मस्य पन्थानमकुतोभयम्॥३८

३८. अतः इन यवनरूपी राक्षसों को मैं मारुंगा और धर्म का निर्भय मार्ग प्रशस्त करुंगा।

जयवल्लीवनं घोरं गृहं कण्ठीरवस्य मे।

विशन्निधनमागंता द्विषन्नफजलो गजः॥३९

३९. जयवल्ली का यह सघन वन ही मुझ सिंह की गुफा है, वहां प्रवेश करने वाला यह शत्रु अफजलरूपी हाथी निश्चित ही विनाश को प्राप्त होगा।

समुत्पतन्पक्षबलादलक्षितनिजान्तकः।

पतङ्ग इव मां लब्ध्वा स वै निधनमेष्यति॥४०

४०. अपने आतंक को न देखने वाला पंखों के बल पर उड़ने वाले पक्षी के समान वह मेरी चाल में फंसकर निश्चित मृत्यु को प्राप्त होगा।

इति चित्ते विनिश्चित्य स शिवः पुरुषोत्तमः।

सन्दिश्य निजसेनान्यं रिपुराराष्ट्रविकर्षणे॥४१

नरानधिकृतांस्तत्तत्कार्येष्ववहितान् हितान्।

नियुज्य निजराष्ट्रस्य दुर्गाणां चाभिगुप्तये॥४२

स्वयं षाड्गुण्यनिपुणः परवीरविमर्दनः।

परीतः पत्तिसैन्येन जयवल्लीमुपागमत्॥४३

४१-४३. ऐसा मन में निश्चय करके उस पुरुष श्रेष्ठ शिवाजी ने अपने सेनापति को शत्रु के राज्य का विध्वंस करने का आदेश देकर तथा अपने राज्य को एवं दुर्ग की रक्षा करने में निपुण, हितकारी अधिकारी लोगों को नियुक्त करके, संधिविग्रह आदि छः गुणों में निपुण एवं शत्रुवीरों का मर्दन करने वाला वह शिवाजी स्वतः पदाति सेना के साथ जयवल्ली आया।

अथ गुप्तेगिताकारमपारभुजपौरुषम्।

प्रतीतमन्यैरजितं शक्तित्रयसमन्वितम्॥४४

जयवल्लीमधिष्ठाय स्वयं योद्धुमवस्थितम्।

सन्नद्धानीकनिवहं निशम्याफजलशिवम्॥४५

व्यसृजद्वाचिकं तस्मै सर्वार्थविदुषे यथा।

तथा निशम्यतां सर्वं विबुधाः कथयामि वः॥४६

४४-४६. फिर जिसका अभिप्राय गुप्त है, जिसका बाहुपराक्रम अपार है, जो शत्रुओं के लिए अजेय है, जो प्रभाव उत्साह एवं मन्त्र इन तीन शक्तियों से युक्त है, जिसका सेना-समूह तैयार है, ऐसा वह विख्यात शिवाजी जयवल्ली में अधिष्ठित होकर स्वयं युद्ध के लिए तैयार होकर बैठा है, ऐसा सुनकर उस सर्वार्थ कुशल शिवाजी को अफजलखान ने जो संदेश भेजा था। हे पण्डितों! वह मैं तुम्हें बताता हूँ, सुनो।

अफजल उवाच -

विदधाति यदौद्धत्यं भवानद्य पदे पदे।

तद्येदिलस्य हृदये भजते शल्यरूपताम्॥४७

४७. अफजलखान बोला - आज जो आजकल पग-पग पर उड़ता कर रहा है वह आदिलशाह के अंतःकरण में काटे की तरह चुभ रहा है।

गते निजामे विलयं गमितः स्वीयतां स्वयम्।

येदिलेन वितीर्णोयस्ताग्नेभ्यः सन्धिकाम्यया॥४८

स एष विषयस्तेषां गिरिदुर्गसमाश्रयः।

गृहीतस्संगृहीतश्च शाहराजात्मज त्वया॥४९

४८-४९. निजामशाह के विलय के लिए चले जाने पर स्वयं हस्तगत किये हुए मुख्यप्रदेश को आदिलशाह से संधि करने की इच्छा से मुगलों को दिया, वह पर्वत किलों से परिपूर्ण प्रान्त के शिवाजी राजा ने अपने अधीन कर लिया है।

भवता सततं लाभवता तत्र पदे पदे।

गृहीतविषयः क्रुद्धो रुद्धो राजपुरीश्वरः॥५०

५०. वहां पर निरन्तर भाग्यशाली तुमने पग-पग पर मुख प्रान्त को अधीन करके, कारागार में डाल देने से दण्डापुरी का राजा क्रुद्ध तथा रुष्ट हैं।

त्वयेदं चण्डराजस्य गाढमन्यदुरासदम्।

अभिक्रम्य च विक्रम्य प्राज्यं राज्यं हतं हठात्॥५१

५१. शत्रुओं के लिए अजेय चन्द्रराजा के विस्तीर्ण राज्य पर पराक्रम के साथ आक्रमण करके तुमने वह बलात् हरण कर लिया।

त्वया गृहीत्वा कल्याणं तथा भीमपुरीमपि।

यवनानां महासिद्धिनिलयाः किल पातिताः॥५२

५२. कल्याण और भीमपुरी को भी अधीन करके आपने यवनों के मस्जिदों को गिरा दिया।

५३. तुभ्यं कुप्यन्ति तेऽद्यापि यवनाः पवनाशनाः।

अपहृत्यापि सर्वस्वं कृता येषां विडम्बना॥५३

५३. जिसके सर्वस्व को हरण करके आपने उसको पीड़ा दी थी, वे यवनरूपी सांप आज भी तुम पर क्रोधित है।



निगृह्य यवनाचार्यान्विचार्यात्मनो बलम्।

प्रतिबध्नास्यविद्धानामध्वानमकुतोभयः॥५४

५४. आपने अपने बलाबल का विचार किये बिना ही काजी मुल्लों को कैद करके निर्भयता से अविधों के मार्ग को रोका था।

यच्चक्रवर्तिचिह्नानि धत्से स्वयमभीतवत्।

अध्यारोहसि च स्वर्णसिंहासनमनीतिमान्॥५५

स्वयमेवानुगृह्णासि निगृह्णासि च मानवान्।

अहो आत्मवशोनम्यान्ननमस्यभिमानवान्॥५६

दुर्निवारगतिर्यस्माद्यस्मात् कस्माद्विभेषि न।

तस्मादहं प्रेषितोस्मि येदिलेन प्रतापिना॥५७

५५-५७. जैसे आप निर्भयता से स्वयं चक्रवर्ती राजा के चिह्नों को धारण कर रहे हो और अन्याय से स्वर्ण सिंहासन पर बैठते हो और स्वयं ही मनुष्यों पर निग्रह तथा अनुग्रह करते हो, स्वतन्त्र होकर वंदनीय लोगों को अभिवादन नहीं करते हो, अजेय होने से तुम घुटपुट लोगों से नहीं डरते हो, इसलिए प्रतापी आदिलशाह ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।

येदिलस्य नियोगाद्यन्मया सह समागतम्।

उद्योजयति सद्यो मां तदिदं षड्विधं बलम्॥५८

५८. आदिलशाह की आज्ञा से जो यह छः प्रकार की सेना मेरे साथ आई हुई है, वह मुझे शीघ्र युद्ध के लिए उद्युक्त कर रही है।

मुसेखानादयो ह्येते त्वया सह युयुत्सवः।

प्रोत्साहयन्ति मामत्र जयवल्लीं जिघृक्षवः॥५९

५९. तुम्हारे साथ युद्ध करने के लिए उत्साहित मुसेखानादि वीर एवं जयवल्ली को अधीन करने इच्छुक सरदार मुझे इस कार्य में प्रोत्साहित कर रहे हैं।

तदद्यमन्नियोगेन सन्धिमेव महीपते।

विधेहि देहि सकलानचलानचलामपि॥६०

६०. तब, हे राजा! मेरे आदेश से आप सन्धि करो और सभी किले एवं सम्पत्ति को दे दो।

सिंहं लोकं महान्तं च प्रबलं च शिलोच्चयम्।

पुरन्दरं गिरिं तद्वत् पुरीं चक्रावतीमपि॥६१

विषयं च तथा नीराभीमरथ्यन्तराश्रयम्।

प्रणिपत्य प्रयच्छाशु दिल्लीन्द्रायामितौजसे॥६२

६१-६२. सिंहगढ़ और लोहगढ़ ये बड़े और सुदृढ़ किले हैं, उसी प्रकार पुरंदरगढ़ एवं चक्रवर्तीपुरी चाकण, नीरा और भीमा का मध्यभाग, ये सब महाबलादय, दिल्ली के बादशाह के शरण में जाकर शीघ्र ही वापस कर दो।

या चन्द्रराजादाच्छिद्य गृहीतानिग्रहात्त्वया।

जयवल्लीमिमामल्लीशाहस्त्वां तां हि याचते॥६३

६३. जो जयवल्ली तुमने चन्द्रराज के पास से बलात् अधीन कर ली थी, वह यह जयवल्ली भी अल्लीशाह तुमसे मांग रहा है।

उपनतमहितस्य पत्रलेखं

रहसि निशम्य तमेतमेकवीरः।

स किल सकलराजलोकरत्नं

न्यधित निजे हृदि कञ्चिदेव यत्नम्॥६४

६४. शत्रुओं के आये हुए इस प्रकार के पत्र को सुनकर उस सकल राजाओं के शिरोमणि एवं अद्वितीय वीर ने अपने मन में कुछ एक उपाय बनाए।

स्मृत्वा मन्त्रमथेप्सिताय जगतः सर्वस्य सर्वोत्तरम्।

यत्संप्रेषितवानसौ नरपतिः पत्रस्य तस्योत्तरम्॥

यच्चागादभिमानवानफजलः सज्जस्य तस्याटवीम्

तत् सर्वं कथयामि वः सुमतयः श्रेयस्करं श्रूयताम्॥६५

६५. सम्पूर्ण संसार के कल्याण के लिए सर्वोत्कृष्ट प्रयत्न करके उस राजा ने उस पत्र का क्या उत्तर भेजा? और तैयार सज्ज उस शिवाजी के अरण्य में वह अभिमानी अफजलखान कैसे गया? वह सम्पूर्ण श्रेयस्कर वृत्तान्त, हे पण्डितों! मैं तुम्हें बताता हूं, सुनो।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां संदेशदेशनाम  
अष्टादशोऽध्यायः॥१८

## अध्याय:-१९

कवीन्द्र उवाच -

नियोजयन्स सर्वत्र दृशं प्रणिधिरुपिणीम्।  
पश्यत्यवहितः सर्वं शिवो बाह्यं तथान्तरम्॥१  
ततोऽसौ दूतमाहूय निष्णातं निजकर्मणि।  
प्रतिवाचमिमां तस्मै प्राहिणोत्परिपन्थिने॥२

१-२. गुप्तचर रूपी अपनी दृष्टि को सर्वत्र युक्त करके वह शिवाजी अपने राज्य के एवं पर राज्य के सभी समाचारों को दक्षता के साथ देखता था। तत्पश्चात् अपने कार्य में निपुण दूत को बुलाकर उसने शत्रु को यह उत्तर भेजा।

शिवराज उवाच -

समस्ताः समरे येन ध्वस्ताः कार्णाटभूमिपाः।  
तस्य तेऽद्य मयि श्रेयानियानपि दयोदयः॥३

३. शिवाजी बोला – जिसने कर्नाटक के सभी राजा युद्ध में पराभूत कर दिए थे ऐसे आपने आज मेरे पर इतनी दया दिखाई वह बहुत अच्छा किया।

अतुलं ते बाहुबलं बलं च तुलितानलम्।  
अलङ्कृतं क्षितितलं त्वया त्वयि न हि च्छलम्॥४

४. आप में बाहुबल अतुलनीय है आपका पराक्रम अग्नि के समान है आपने पृथ्वी को अलंकृत किया है और आप में मूलतः ही कपट नहीं है।

दिदृक्षुरसि यद्येतान् विभवान्वनसम्भवान्।  
तद्विलोकयतामेत्य जयवल्लीमिमां भवान्॥५

५. यदि यह वन वैभव देखने की इच्छा आपको है तो आप जयवल्ली आकर देख लीजिए।

तवागमनमेवेतः साम्प्रतं वेद्मि साम्प्रतम्।

अभयं मम तेनैव भवितापि च वैभवम्॥६

६. आपका यहां आना ही संप्रति योग्य है ऐसा मुझे लगता है और उसके कारण से ही मुझे निर्भयता प्राप्त होकर मेरा वैभव भी वृद्धि को प्राप्त होगा।

तृणाय मन्ये ताम्राणामनम्राणामनीकिनीम्।

येदिलस्य च तां तद्वत् त्वां विना तीव्रविक्रमम्॥७

७. भयंकर पराक्रम से युक्त आपके बिना उन्मत्त मुगलों की सेना को एवं आदिलशाह की सेना को मैं तिनके के समान मानता हूं।

दक्षः पथा त्वमागच्छ प्रयच्छामि शिलोच्चयान्।

भवते याचमानाय जयवल्लीमिमामपि॥८

८. आप सावधानीपूर्वक रास्ते से आइए आप जो मांग कर रहे हैं उन किलों को एवं जयवल्ली को भी मैं देता हूं।

प्रेक्ष्य दुःप्रेक्षणीयं त्वामिह विश्रब्धमानसः।

इमां पुरः करिष्यामि निजपाणिकृपाणिकाम्॥९

९. जिनको देखना भी कठिन होता है ऐसे आपको यहां संदेह रहित मन से देखकर मैं अपने कटार को आपके सामने रख दूंगा।

वनीमिमां ते पृतना प्रतनामतनीयसीम्।

पश्यन्ती सुतलच्छाया सुखान्यनुभविष्यति॥१०

१०. इस प्राचीन एवं विशाल और अन्य को देखकर आपकी सेना पाताल की छाया के सुख का अनुभव करेगी।

इति सूत्रमिवात्यल्पवर्णं बह्वर्थसंयुतम्।

शिवः सन्देशमादिश्य व्यसृजदूतमात्मनः॥११

११. इस प्रकार सूत्र के समान अत्यंत संक्षिप्त किंतु सारगर्भित संदेश बताकर अपने दूत को शिवाजी ने प्रेषित किया।

स तं संदेशमाकर्ण्य शिवदूतेन भाषितम्।

स्वामिकार्यं कृतं स्वेनेत्यमन्यत सुदुर्मतिः॥१२

१२. शिवाजी के दूत द्वारा बताए गए संदेश को सुनकर 'आपने स्वामिकार्य कर लिया है' ऐसा उस दुर्बुद्धि अफजल खान को प्रतीत हुआ।

वैराटस्थोऽपि सुतरां योजनत्रयसान्तराम्।

जयवल्लीं स यवनः स्वहस्तस्थामवागमत्॥१३

१३. उस यवन को विराट (वाई) में स्थित होकर तीन योजन अंतर पर स्थित जयवल्ली हाथ में आ गई ऐसा प्रतीत होने लगा।

अथास्थाय स आस्थानीं समाहूय स्वसैनिकान्।

वाचमेतां नयोपेतां व्याजहार महामनाः॥१४

१४. तत्पश्चात् दरबार में बैठकर तथा अपने सैनिकों को बुलाकर उस महत्वाकांक्षी अफजल खान ने इस प्रकार राजनीति युक्त भाषण किया।

अफजल उवाच -

समाह्वयति मां तत्र स शिवः सन्धिकाम्यया।

स्वामिकार्येप्सुना तत्र प्रयातव्यमितो मया॥१५

१५. अफजल खान बोला- वह शिवाजी संधि करने की इच्छा से मुझे वहां बुला रहा है तब स्वामिकार्य सिद्ध करने की इच्छा से मुझे वहां जाना चाहिए।

समुन्नद्धैः सुसन्नद्धैः सैनिकैः स्वैः समीयुषाम्।

सदैवोज्जागरूकाणां न तत्र भयमस्ति नः॥१६

१६. शस्त्र उठाए हुए एवं उत्तम प्रकार से सुसज्जित अपने सैनिकों के साथ सदा जागरूक रहने वाले हम लोगों को वहां जाने में भय नहीं है।

समुह्य व्यूहसैन्यानि यास्मामस्तत्र सर्वथा।

अहो यत्र वने घोरे नैव नाभास्वती कथा॥१७

१७. उस स्थान पर कोई गुप्त स्थान तो होगा ही ऐसे उस सघन अरण्य में सेना ले जाकर एवं व्यूह रचना करेंगे और कुछ हो गया तो जाएंगे।

द्विपट्वीपिशरण्यानामरण्यानामुदीक्षणम्।

भवताद्भवतां तत्र विश्रान्तानामनुक्षणम्॥१८

१८. सिंह एवं हाथियों के आश्रय स्थान वाले उस अरण्य में आराम करते समय तुमको प्रतिक्षण निगरानी करनी चाहिए।

तत्र भूभृत्तटावन्यां वन्यां वीक्ष्य महीयसीम्।

वन्या इव विनालानं क्रीडन्तु करिणो मम॥१९

१९. वहां पर्वतों के तट पर विशाल जलाशय को देखकर मेरे हाथी वन्य हाथी के समान स्वतंत्रता से विहार करते हैं तो करने दो।

प्रपतेद्यपि चाकाशं निपतेयुः शतहृदाः।

तदप्यफजलस्यास्य न भवेन्मतिरन्यथा॥२०

२०. यदि आकाश गिर जाए या फिर आकाशीय विद्युत गरजना करके गिर जाएं फिर भी अफजल खान की बुद्धि में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

क्षितिमुत्खातयिष्यामि पातयिष्यामि पर्वतान्।

वनानि च प्रधक्ष्यामि सद्यः क्रोधकृशानुना॥२१

२१. मेरी क्रोधाग्नि से मैं तत्काल वन को जला दूंगा भूमि को खोद दूंगा एवं पर्वतों को समतल कर दूंगा।

प्रतिज्ञां पारयिष्यामि भ्रंशयिष्यामि देवताः।

नादास्यते स चेन्मान्द्यान्मदीयमुचितं वचः॥२२

२२. यदि वह जनता के कारण से मेरी कथित बातों को स्वीकार नहीं करेगा तो मैं देवता नष्ट कर दूंगा और अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करूंगा।

इति ब्रुवाणमास्थानभ्राजमानासनस्थितम्।

दैवध्वस्तधियस्ते तु न तं प्रत्याचक्षिरे॥२३

२३. दरबार में शोभायमान आसन पर बैठकर इस प्रकार बोलने वाले अफजल खान का निषेध दुर्देव से विनष्ट बुद्धि वाले उन सैनिकों ने नहीं किया।

अथ तं मन्त्रिणः सर्वे पुरः प्रस्थातुमुद्यतम्।

इति नीतिमुपाश्रित्य विनयेन व्यजिज्ञपन्॥२४

२४. फिर आगे प्रस्थान के लिए उद्यत उस अफजलखान को सभी मंत्रियों ने राजनीति का अनुसरण करके विनम्रता से निवेदन किया।

मन्त्रिण उचुः -

स्वामिन्विधीयतामेव भवतात्मचिकीर्षितम्।

प्रत्याख्यातास्तु कस्तस्य यत्र दैवमवस्थितम्॥२५

२५. मंत्री बोले- हे स्वामी आप जो करना चाहते हैं, वह आप अवश्य कीजिए जहां पर स्वयं देवता अधिष्ठित है, वहां निषेध कौन कर सकता है।

प्रशस्तेन स्वचित्तेन विश्वस्तः स यदि त्वयि।

तर्हि सद्यः समायातु जयवल्लीवनाद्बहिः॥२६

२६. उसने यदि तुम पर शुद्ध अंतःकरण से विश्वास किया है तो उसको जयवल्ली के वन से बाहर तत्काल आना चाहिए।

उपाहरतु सर्वस्वमात्मीयं भवतो मुदे।

निजां नामयतु ग्रीवां नमन्निह पदे पदे॥२७



२७. उसको आप को संतुष्ट करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करना चाहिए और आपको पग पग पर मुजरा देते हुए अपनी गर्दन को आपके सामने झुकाना चाहिए।

येन कौमारमारभ्य धन्विना धूर्जटि विना।

स्वप्नेऽपि स्वामिनेऽन्यस्मै न निजं नामितं शिरः॥२८

बाल्यात्प्रभृति लोकेऽस्मिन् अनल्पबलशालिनः।

कर्माण्यमानुषस्येव प्रायो यस्येह शुश्रुमा॥२९

विगायति च यो लोके यवनानां विलोकनम्।

निजधर्मधुरीणोऽद्धा शृणोति च न तद्वचः॥३०

स आह्वयति तत्रैव भवन्तमभयो यदि।

तर्हि मन्यामहे तस्य विद्यते साहसं हृदि॥३१

२८-३१. जिस धनुर्धारी ने बचपन से ही शंकर के अतिरिक्त अन्य किसी भी स्वामी के सामने अपना सिर सपने में अभी तक नहीं झुकाया है, जिस महाबलशाली पुरुष के अमानवीय कृत्यों को बचपन से ही हम प्रायः सुनते आए हैं, जो यवनों के मुख्य दर्शन को भी अत्यधिक निंदनीय समझता है और जो स्वधर्म में धुरंधर है ऐसा वह यवनों की बातों को बोलता ही नहीं सुनता है तो यदि वह निर्भयता से हमको वहीं पर बुला रहा है तो उसके हृदय में किसी प्रकार का साहस है ऐसा मुझे लगता है।

पदे पदे परिश्लिष्टकर्मारकुलसंकुला।

न गताय हिताश्वानां विषमानगमेदिनी॥३२

३२. जो पग पग पर बांस के सघन वृक्षों से व्याप्त है, ऐसी वह दुर्गम पर्वत भूमि घोड़ों के जाने के लिए हितकर नहीं है।

श्लिष्टाग्रानोकहशतैः श्लिष्टारोहावरोहया।

स्तम्बेरमाः कथं यान्तु तथा पर्वतपद्यया॥३३

३३. जिसका मुंह सैकड़ों वृक्षों से व्याप्त है एवं जो आरोहण अवरोहण के लिए अत्यधिक संकुचित है ऐसे पर्वत मार्ग से हाथी किस प्रकार जा सकते हैं।

आत्मा त्वमल्लीशाहस्य शल्यं दिल्लीन्द्रवक्षसः।

स्वामीसेनामतल्लीनां विशमाविषमावटीम्॥३४

३४. तू अल्लीशाह का प्राण है एवं दिल्ली के बादशाह के हृदय का शूल है और उत्तम सेना का स्वामी है अतः तू इस भयंकर रास्ते पर या खड्डे में प्रवेश मत करना।

योगीव विजिताहारविहारो विजितासनः।

यः सर्वस्यापि लोकस्य वेत्त्यहो गुप्तमाशयम्॥३५

उत्प्लुत्य पर्वतशिरः प्राकाराभ्यन्तरस्थितान्।

निहन्ति यो जिह्मगतीन् परान् पतगराडिव॥३६

यस्य यातमविज्ञातं भवत्यमितयोजनम्।

अवैति मनसैवासं द्विषन्तमपि यो जनम्॥३७

भवतापकृता पूर्वं भवतापकृता स्वयम्।

विधत्ते तुलजादेवी सततं यत्सहायताम्॥३८

तेन विद्विषतानेकसैन्ययुक्तेन पालिताम्।

कथं त्वं तामरण्यानीमभिमानी गमिष्यसि॥३९

३५-३९. जिसने योगी के समान अपने आहार-विहार को एवं अपने आसन को जीता है एवं जो संपूर्ण संसार के गुप्त अभिप्राय को जानता है। जिस प्रकार गरुड़ सांप के फणों को काटता है उसी प्रकार जो किले के मस्तक पर छलांग मारकर प्रकार में स्थित शत्रु का विनाश करता है। जो मित्र कौन है एवं शत्रु कौन है ? यह मन से ही जानता है, लोगों को प्रेरित करने वाले हमारे द्वारा अपमान की गई तुलजा देवी जिसको सदा सहयोग करती है एवं जो अनेक सैन्यों से युक्त है ऐसे शत्रु के द्वारा रक्षित विशाल अरण्य में अभिमानी हम किस प्रकार प्रवेश कर सकते हैं।

इत्याकर्ण्य वचस्तेषां स विद्वेषान्धमानसः।

प्रोवाच ताननादृत्य दृप्तः शोणविलोचनः॥४०

४०. इस प्रकार उसके वचनों को सुनकर देश भाव से अंधत्व को प्राप्त हुआ एवं क्रोध की लालिमा से युक्त आंखों वाला वह उन्मत्तता से युक्त उसका धिक्कार करके बोला।

अफजल उवाच -

जन्मप्रभृति दृष्टात्मा योऽस्मभ्यमपराध्यति।

स परः स्वयमस्माकमभ्यर्णं कथमेष्यति॥४१

४१. अफजल खान बोला – स्वभाव से स्वाभिमानी वह शत्रु अब तक अपराध करते आया है। वह स्वयं हमारे पास में कैसे आ सकता है?

यदमानुषकर्मैति तं प्रशंसथ मानुषम्।

अवैमि तदविज्ञाय मदीयमपि पौरुषम्॥४२

४२. अमानवीय कृत्यों को करने वाले ऐसे जिस मनुष्य की प्रशंसा कर रहे हो तो आप मेरे पराक्रम को ना पहचानने के कारण कर रहे हो ऐसा मुझे लगता है।

धावद्वाहखुराञ्चलैर्विदलितं कार्णाटकानां बलम्।

तत्तत्स्थानभिदा च सम्प्रति पराभूतं सुराणां कुलम्।

तं सर्वोन्नतमन्तकोऽपि सहसा कोपानलव्याकुलम्।

मां दृष्ट्वा समया मया सह भयाद्धताद्य सन्धास्यति॥४३

४३. जिसने दौड़ने वाले घोड़ों के खुरों से कर्नाटक के राजाओं की सेनाओं को विनष्ट किया जिसने सभी स्थानों को फोड़कर संप्रति सभी स्थानों को भ्रष्ट किया है। सर्वश्रेष्ठ एवं क्रोधाग्नि से संतप्त ऐसे मुझे समीप आया हुआ देखकर प्रत्यक्ष यमराज भी भय से मेरे साथ संधि करेगा।

या युष्मानतिविक्रमानपि भिया संयोजयन्ती तता।

नैकानोकहसंवृता प्रतिभटैर्युध्यद्भिरप्यन्विता॥

तामेतामटवीमतीवविषमां सद्यः करिष्ये समाम्।

व्याहृत्येऽतिहितान् हितान् कुमतिना तेन प्रतस्थेतमाम्॥४४

४४. जो विस्तीर्ण अनेक वृक्षों से आच्छादित और युद्ध करने वाले योद्धाओं से युक्त है, ऐसा वह अरण्य अत्यंत पराक्रम से युक्त तुम सब को भी भयमुक्त करता है उस अत्यंत दुर्गम अरण्य को तत्काल समतल कर दूंगा ऐसा उन हितकर्ता लोगों को बोलकर वह दुर्मति शीघ्रता से निकल गया।

कवीन्द्रपरमानन्दकृत - श्रीशिवभारत

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां

शतसाहस्र्यां संहितायां अफजलप्रयाणं नाम एकोनविंशोऽध्यायः॥१९

## अध्याय:-२०

कवीन्द्र उवाच -

अत्रान्तरे भगवती तुलजा भक्तवत्सला।  
स्वं रूपं दर्शयामास शिवाय जगतीजिते॥१  
कल्पवल्लीमिव नवां पुरस्तादथ तां स्थिताम्।  
सरत्नाभरणां शोणचरणां चंपकप्रभाम्॥२

१-२.कवीन्द्र बोले-

तत्पश्चात् एक-दूसरे से मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक, उस कार्य में तत्पर बुद्धिवाले एवं अपनी-अपनी राजनीति से व्यवहार करने वाले उन दोनों दूतों के द्वारा जैसा करार हुआ था, वैसा सब बताता हूँ। हे पण्डितों ध्यान से सुनो।

विलसन्नीलवसनां नीलधम्मिल्लशालिनीम्।  
अतीव सुकुमारांगीं कुमारीवेषधारिणीम्॥३  
पूर्णेन्दुवद्वदनां इन्दीवरविलोचनाम्।  
मन्दस्मितामभिनवप्रवालतुलिताधराम्॥४  
भ्राजिष्णुभालतिलकां रत्नरंजितकर्णिकाम्।  
मनोज्ञनासिकान्यस्तचित्ररत्नमयूरिकाम्॥५  
मृदुबालतां पद्महस्तां सुललितांगुलिम्।  
रत्नरश्मिकुलाकीर्णकंकणां शुभलक्षणाम्॥६  
कंठसंसक्तगुच्छार्धगुच्छरत्नललन्तिकाम्।  
सुवर्णसुमनःश्लिष्टनीलकंचुलिकावृताम्॥७  
आनाभिविलसद्भारां रत्नकांचीकृतश्रियम्।

वरदां विश्वजननीमवनीपतिरैक्षत॥८

३-८. अपनी सेना को यथास्थिति रखकर स्वयं अफजलखान सशस्त्र आये और पालकी में बैठकर आगे जायें, उसकी सेवा के लिए दो तीन ही सेवक होने चाहिए, उसी प्रकार वह प्रतापगढ़ की उपत्यका के पास स्वयं आकर वहीं पर सभा मण्डप में शिवाजी की प्रतीक्षा करें और शिवाजी सशस्त्र आकर उस अतिथि का आदर सत्कार गौरव के साथ यथाविधि करें। दोनों के ही रक्षणार्थ सज्ज, स्वामिनिष्ठ, शूर एवं निष्ठावान् दस-दस सैनिक बाणों की सीमा पर आकर पृष्ठभाग में खड़े हो जायें और दोनों के आपस में मिलने पर सभी लोग आनकारी बातें करें।

अथ तद्दर्शनोल्लासभृशसंजातसंभ्रमः।

प्रश्रयेणादिमायां मामनंसीत् स मुहुर्मुहुः॥९

९. इस प्रकार करार करके एवं अंदर से कपटभाव से युक्त होकर एक-दूसरे से मिलने के इच्छुक वे दोनों उस समय सुशोभित हुए।

प्रणमन्तं तु तं देवी समुत्थाप्यात्मपाणिना।

दृशा दयार्द्रया भक्तमपश्यज्जगदीश्वरी॥१०

१०. तत्पश्चात् वह प्रतापगढ़ के स्थलभाग की ओर आ रहा है, ऐसा सुनकर शिवाजी महाराज सज्ज होते हुए सुशोभित होने लगे।

अभिष्टय सहस्रेण नाम्नां स्थितमथाग्रतः।

तमुवाचेति सा देवी सुदती सस्मितानना॥११

देव्युवाच -

उपैत्यफजलो नाम योऽयं यवनपुंगवः।

स एष सच्छलो वत्स त्वया सह युयुत्सते॥१२

कलिकालतरोर्मूलं प्रतिकूलं दिवौकसाम्।

तमिमं यवनात्मानं दुर्भदं विद्धि दानवम्॥१३

अवध्यं सर्वदेवानां दशाननामिवापरम्।

सहितं सर्वसैन्येन मोहितं मायया मया॥१४

सहस्रैव समायातमंतकस्य तवांतिके।

तममुं हतमेवेति त्वमवेहि महीपते॥१५

उद्धवन्तं निरोधाय धर्मस्येह मुहुर्मुहुः।

तमेनमसिपातेन महता भुवि पातय॥१६

क्षरद्रुधिरधारार्द्रप्रतीकमपमस्तकम्।

स्रस्तबाहुलतं व्यस्तप्रसारितपदद्वयम्॥१७

गृध्रगोमायुभल्लूकारिष्टोत्कृष्टांत्रसंचयम्।

पश्यन्तु विबुधास्सर्वे तमिमं भुवि॥१८

१२-१८.पुरोहित के द्वारा निर्दिष्ट विविध प्रकार की विधि से देवाधिदेव शंकर की नित्य की तरह पूजा करके नित्य की दानविधि को करके, थोड़ा भोजन करके, स्वयं शुद्ध सीमित जल को बारंबार आचमन की तरह पीकर उस तुकजा देवी का क्षणमात्र मन में चिन्तन किया, उस समय के लिए उचित वेशभूष को धारण करके लोक में अनुपम अपने मुख को दर्पण में देखा शीघ्र आसन से उठकर और पुरोहित एवं दूसरे ब्राह्मणों का शीघ्र आसन से उठकर और पुरोहित एवं दूसरे ब्राह्मणों को नमस्कार करके उन सबका शुभ आशीर्वाद लिया, दही, दूर्वा, अक्षत, इनको स्पर्श किया, सूर्यमण्डल देखा। सामने खड़ी बछड़े से युक्त गाय के समीप जाकर तत्काल सुवर्णसहित उसको गुणवान् ब्राह्मण को दे दिया, अपने पीछे आने के लिए सज्ज पराक्रमी अनुयायियों को प्रतापगढ़ की सुरक्षार्थ नियुक्त किया और मन में कपट को रख समीप आकर स्थित उस यवन की ओर, वह महाबुद्धिमान् शिवाजी अपने अतिथि के संमुख जिस प्रकार जाना चाहिए, उस स्नेहभाव से गया।

त्वं यदा वासुदेवोऽभूस्तदाहं नन्दमन्दिरे।

त्रिदिवात्तव साहाय्यविधानार्थमवातरम्॥१९

इदानीमपि दैत्यारे विमुच्य तुलजापुरम्।

उपेतास्मीति जानीति साहाय्यायैव ते स्वयम्॥२०

१९-२०.उत्तम कवच को धारण किया हुआ, शिवाजी राजे भोंसले, कर्णाभरण को धारण करने वाले, सफेद पगड़ी से एवं केसर के छिड़काव किये गए अंगरखे से वह अत्यन्त सुशोभित हो रहा था। उस वज्रयुक्त शरीर के लिए उस कवच की क्या जरूरत है?

यथाजातेन कंसेन यथाहमवमानिता।

पूर्वं तथाधुनैतेनाप्यवज्ञातासि पाप्मना॥२१

२१. एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में पट्टे को धारण करने वाला वह शिवाजी राजा, नंदक तलवार एवं कौमुदकी गदा को धारण करने वाले विष्णु के समान दिख रहा था।

विधिना विहितोऽस्त्यस्य मृत्युस्त्वत्पाणिनामुना।

अतस्तिष्ठामि भूत्वाहं कृपाणी भूमणे तव॥२२

व्याहरन्तीति शर्वाणी तत्कृपाणीमवीविशत्।

असौ जाग्रदवस्थोऽपि तत्स्वप्नमवमन्यत॥२३

२२-२३. पुनः किले के तट से सिंह की तरह बाहर निकलकर, शीघ्र पगों को रखते हुए, अत्यन्त समीप आकर खड़े हुए, अंकुशाग्र के समान सुन्दर, विशाल और लंबी दाढ़ी से भयंकर दिखने वाले, धैर्यवान् एवं धैर्यदृष्टि से युक्त शिवाजी को शत्रु ने देखा।

ततोऽसौ तुलजां देवीं ध्यायं ध्यायं निजे हृदि।

समस्तमपि भूमारममंस्त हृतमात्मना॥२४

२४. जैसे इन्द्र ने वृत्र को देखा उसी प्रकार शिवाजी ने भी मुस्कराते हुए सामने स्थित उसकी दृष्टि से दृष्टि को स्वयं मिलाया।

तिष्ठन्नयं प्रतापाद्रिशिरः प्राकारसंसदि।

आनाय्य न्यगदद्वाचं पत्तिसेनापतीनिति॥२५

समाहूतो मया सैन्यसमवेतो महाश्रयः।

इत एव समायाति स म्लेच्छः संधिकाम्यया॥२६

२५-२६. क्रोधित यम की तरह सामने खड़े हुए उसने दक्ष वीर शिवाजी को अपने पर विश्वस्त करने के लिए अपने हाथ में स्थित अबाधगति वाली तलवार को उस क्रोधित, कपटी दुष्ट ने पास में खड़े हुए अपने सेवक के हाथ में दे दिया।

तदद्य मन्नियोगेन युष्माभिरनिवारिता।



संपश्यत्वटवीमेतामेता परपताकिनी॥२७

२७.तत्पश्चात्, मिथ्या स्नेह दिखाकर, प्रतिकूल भाग्य से हत वह अफजलखान उससे उंचे स्वर में बोला।

मिथो मद्वीक्षणाकांक्षी स मां योधैरुदायुधैः।

भवद्भिः सहितं श्रुत्वा भयं संभावयेदपि॥२८

२८.अफजल बोला -

अरे! मिथ्या युद्धोत्साह को धारण करने वाले एवं अत्यन्त स्वच्छंद व्यवहार करने वाले, नीतिमार्ग को छोड़कर कुमार्ग को क्यों धारण करते हो?

तस्माद्विशत वै सर्वे गहनं गहनोदरम्।

यूयं परैर्विज्ञाताः सज्जास्सन्निहिता अपि॥२९

२९.आदिलशाह की, कुतुबशाह की या फिर महाबलवान् दिल्लीपति की भी सेवा नहीं करता है और नहीं उन्हें मानता है और अपने पर गर्व करता है।

स्वयं विहितसंधोऽपि न संघास्यति यद्यसौ।

तर्हि विघ्नन्तु तत्सेना जातेऽस्मद्दुर्भिक्षवन्तौ॥३०

३०.अतः आज मैं दुर्विनीत तुझको दण्ड देने के लिए आया हूँ। यह किला मुझे दें, लालच छोड़ दें और मेरी शरण में आ जा।

रहस्यमिव राजेन्द्रो रहस्तानीत्युपादिशत्।

परोऽपि सेनया सार्धं तं पंथानमथासदत्॥३१

विसंकटदृष्टदृष्टजानुभ्रश्यद्दृढत्वचः।

अध्यारोहन् करटिनः कथंचिदथ तं गिरिम्॥३२

३१-३२.मैं तुझे अपने हाथ से पकड़कर तथा बिजापुर ले जाकर, अल्लीशाह के समाने तेरे मस्तक को झुकवाते हुए उस प्रतापी स्वामी से हाथ जोड़कर निवेदन करूंगा और हे राजा, तुझे फिर उससे अत्यन्त वैभव को प्राप्त करवाऊंगा।

निषादिनुन्नाः करिणो द्रुमाणां वर्त्मवर्तिनाम्।

बुध्वानधुरवाग्भावभियाशुण्डाग्रमण्डलैः॥३३

३३.अरे! शहाजी राजा के पुत्र, बच्चे, अपनी होशयारी को छोड़कर अपने हाथ को मेरे हाथों में दें और आलिंगन कर।

उत्तारितमहाभारलघवोप्युन्नतेऽध्वनि।

शरीराण्येव करभाः स्वानि भाराय मेनिरे॥३४

३४.इस प्रकार बोलकर उसने उसकी गर्दन को बाएं हाथ से पकड़कर दूसरे दाएं हाथ से उसके पेट में कटार घुसा दी।

सप्तयो वल्लभधरैर्नीयमानाः शनैः शनैः।

अवरुढहयारोहा अप्यायन्त कथंचन॥३५

३५.वल्लभ लोगों के द्वारा धीरे-धीरे लेकर जाते हुए घोड़ों के पीठ पर स्थित घुड़सवार को उतारने पर भी कष्ट से घोड़े आरोहित हुए।

प्रपातपातकातर्याद् धृतेषु बत पाणिभिः।

क्षुपेषु मुक्तमूलेषु केचित् पेतुरवाङ्मुखाः॥३६

३६.चढाई से गिरने के भय से हाथों से पकड़ी हुई झाड़ियां उखड़कर गिर गई और कुछ लोग नीचे मुंह पर गिर गये।

आरोहन्मत्तमातंगपदाभिहतिनिःसृतैः।

पतद्भिरुपलैस्स्थूलैर्विध्वस्तोऽधः स्थितो जनः॥३७

३७.ऊपर आरोहण करने वाले हाथियों के पैरों के प्रहार से निकलकर गिरने वाले बड़े-बड़े पत्थरों से नीचे के लोग विनाश को प्राप्त हो रहे थे।

लताप्रतानसंमिश्रत्वक्सारांतरचारिणी।

वीतध्वजपटा वीतच्छत्रा साभूदनीकिनी॥३८

३८.लताओं के विस्तार से मिश्रित बांस के ऊपर से जाने वाली उस सेना के ध्वज एवं छाते फट गये।

प्रमत्ततरमातंगकरसंपर्कभीरवः।

तत्र तत्यजुरात्मानं भृगुपातेन केचन॥३९

३९.अत्यन्त मदमस्त हाथियों के सुड के स्पर्श के भय से वहाँ कुछ लोगों ने पर्वत के तट से गिरकर प्राणों को त्याग दिया।

प्रोच्चप्रपातपर्यंतस्रस्तहस्तपदैस्तदा।

कैश्चित् पतद्भिरन्येऽपि बहवः स्वसखीकृताः॥४०

४०.ऊँचे पर्वत के तट से हाथ-पैरों के फिसलने के कारण से कुछ लोगों ने दूसरे भी अनेक लोगों को अपना साथी बनाया।

एवमारुह्य तं शैलं सर्वा यवनवाहिनी।

परिम्लानापि सा धैर्यादवरोहे मतिं दधे॥४१

४१.इस प्रकार पर्वत पर चढ़कर यवनों की संपूर्ण सेना अतिशय श्रान्त होने पर भी उसने धैर्य धारण करके दूसरी तरफ उतरने की इच्छा की।

स्तम्बेरमास्तमारुह्य पर्वतं पर्वता इव।

मंदं मंदमवारोहन्नुज्झन्तो मदमात्मनः॥४२

४२.पर्वत के समान हाथियों ने उस पर्वत पर चढ़कर वे अपने मद को धीरे-धीरे छोड़ते हुए नीचे उतर गये।

आरुह्य भूधरममुं यथा त्रिदशभूमलम्।

तथावरुह्य तैर्लोकैर्बतालोकि तलातलम्॥४३

४३.जिस प्रकार उस पर्वत चढ़कर उन्होंने स्वर्ग देखा उसी प्रकार उससे उतरकर उन लोगों ने मानो पाताल को देखा हो।

अथ पर्वतमध्यस्थां गंभीरां कंदरामिव ।

सिंहव्याघ्रवराहर्क्षतरक्षुकुलसेविताम् ॥ ४४ ॥

वज्रपाणिमणिश्याम- वनां वज्रमयीमिव ।

तमोऽबुनिधिसंभूतां ततां विषलतामिव ॥ ४५ ॥

तलातलस्येव महीमदीनगुणशालिना ।

त्रिजगज्जयिना नित्यं शिवेन परिपालिताम् ॥ ४६॥

दिवाकरकरास्पृष्टतलां प्रच्छायसंकुलाम् ।

अभ्यागच्छन्नफजलो जयवल्लीं व्यवलोकत ॥ ४७ ॥

४४-४७. तत्पश्चात् पर्वत के मध्यभाग में स्थित गुफा के समान गहरी, सिंह, बाघ, सुअर, भालू, इनके द्वारा आश्रित, ईद्रनीलमां के समान काली झाड़ियों से युक्त, मानो वज्र ही हो, अंधकाररूपी सागर में उत्पन्न हुई मानों पातालभूमि हो, तीनों लोगों को जीतने वाले उत्कृष्ट गुणशाली शिवाती के द्वारा नित्य रक्षित, सूर्य के किरणों के द्वारा तल को स्पर्श न की हुई, सघन छाया से युक्त, ऐसी उस जयवल्ली को पास में आकर अफजलखान ने देखा।

उपेत्य जयवल्लीं तामसावफजलो बली।

इयं मया गृहीतेति निजे चेतस्यचिंतयत्॥४८

४८. उस बलवान् अफजलखान के उस जयवल्ली के पास आने पर यह मेरे हाथों में आ गई, ऐसा वह अपने में चिंतन करने लगा।

शिवराजोऽपि तं श्रुत्वा जयवल्लीमुपागतम्।

मम पाणितलं दैवादयमायात इत्यवैत्॥४९

४९. वह जयवल्ली के पास आ गया है, ऐसा सुनकर शिवाजी को भी यह सौभाग्य से मेरे हाथों में आ गया है, ऐसा प्रतीत होने लगा।

ततः कुकुद्वतीकूले कीचकव्रजसंकुले।

निरुत्सवा इव भयादवात्सुर्मिलिताः परे॥५०

५०. तत्पश्चात् भय से मानो उत्साहरहित होकर बास के वृक्षों से व्याप्त कुमुद्वती के तट पर शत्रु ने आश्रय प्राप्त किया।

भयमीयुः प्रतिभये यत्र ते तस्य सैनिकाः ।

स एकोऽफजलस्तत्र साभिमानो बिभाय न ॥ ५१ ॥

५१. जिस भयंकर स्थान पर उसके सैनिक भयभीत हो गये थे, उस स्थान पर वह अकेला अफजलखान भयभीत नहीं हुआ।

ततः प्रोच्छ्रायितोहामपटमंडपमंडितम् ।

निबद्धनिगडालाननियंत्रित मद्विपम् ॥ ५२ ॥

निम्नातशंकुसंबद्ध सैधवश्रेणिसंयुतम् ।

सद्यः संदानितानेकक्रमेलककुलाकुलम् ॥ ५३ ॥

पण्यपूर्णापणाकीर्णविपणिभ्राजितांतरम् ।

व्रजदावजदुद्भ्रांतजनस्वनभरान्वितम् ॥ ५४ ॥

अत्यायतं वनावन्यामनायतमिव स्थितम् ।

दृश्यमप्यादे तत्र तदनीकमदृश्यताम् ॥ ५५ ॥

५२-५५. अत्यन्त ऊँचे एवं विशाल तंबुओं से सुशोभित, जंजीरों से खूंटों में बांधे हुए हाथी थे, जमीन में गादे गये खूंटों से बांधे हुए घोड़ों के समूह से युक्त, तत्काल बांधे गए अनेक ऊँटों के समूह से व्याप्त, बिक्री योग्य वस्तुओं से परिपूर्ण, दुकानों से सुशोभित, इधर-उधर आने-जाने वाले लोगों के समूह की ध्वनियों से परिपूर्ण, अत्यधिक दूर होते हुए भी समीप वनप्रदेश में अत्यन्त छोटा दिखने वाला वह सेना का दृश्य होते हुए भी वह अदृश्य हो गया।

शिवश्चाफजलश्चोभावपि तावदनामयम् ।

प्रष्टुं निजं निजं दूतं न्ययुंजातां परस्परम् ॥ ५६ ॥

५६. शिवाजी और अफजलखान, इन दोनों ने कुशल पूछने के लिए अपने-अपने दूत एक-दूसरे के पास भेजे।

शिवस्याफजलो वेद हृदयं स च तस्य तत् ।

तं विधि तु विधिर्वेद वेद संधिविधि जनः ॥ ५७ ॥

५७. शिवाजी के अंतःकरण को अफजलखान ने पहचान लिया और अफजलखान के भी अंतःकरण को शिवाजी ने पहचान लिया। विधाता ने ही केवल उसको सत्यरूप में जाना, अन्य लोगों ने संधि हो रही है, ऐसा समझा।

देयान्युपायनान्यस्मै प्राप्तायातिथये मया ।

निजनीत्युनुरोधेन तत्सुतेभ्योऽपि सर्वथा ॥ ५८ ॥

५८. इस आये हुए अतिथि को एवं उसके पुत्रों को भी किसी प्रकार मुझे अपने शिष्टाचार का अनुसरण करके उपहार देना चाहिए।

मुसेखानायां कुशाय याकुतायांबराय च ।

तथा हसन खानाय परेभ्यश्च पृथक् पृथक् ॥ ५९ ॥

तथैव मंबराजाय पितृव्याय गरीयसे ।

तत्तद्रत्नपरीक्षा च कारणीयास्ति वै पुनः ॥६०॥

६०.मुसेखान, अंकुशखान, याकुत, अंबर उसी प्रकार हसनखान और अन्य सभी को तथा बड़े चाचा मंबाजी राजे, इसको भी पृथक्-पृथक् उपहार देने चाहिए और सभी प्रकार के रत्नों की परीक्षा करवा लेनी चाहिए।

इत्थमानायितास्तेन राज्ञा विपणिनो यदा।

तदा तेऽफजलादिष्टाः शिवस्यांतिकमाययुः॥६१॥

६१.इस प्रकार उस राजा ने जब व्यापारी बुलवाएं तब उस अफजलखान की आज्ञा से वे शिवाजी के पास आए।

स्वानि स्वानि समानतान्यथ रत्नानि तानि ते।

धनिनो दर्शयामासुः शिवायाशुजिघृक्षवे ॥ ६२ ॥

६२.फिर अपने-अपने द्वारा लाए गए उन रत्नों को उन व्यापारियों ने शीघ्र लेने वाले शिवाजी को दिखाया।

आहूतेभ्यः स तस्मादफजलकटकान्तत्र तेभ्यो धनिभ्यः

सर्वाण्यादत्त रत्नान्यथ निजसविधे तान् समस्तान्यधत्त ।

लुब्धात्मानस्तदानीं विधिविहतधियो भूरिमारानुरोधा

दशा नाज्ञासिषुस्ते बत गिरिशिखरे सर्वतः स्वं निरोधम् ॥६३॥

६३.उस अफजलखान की सेना से वहाँ बुलवाये गए व्यापारियों से उसने सम्पूर्ण रत्नों को ले लिया और उन सबको अपने पास ही रख लिया। तब उन लालची एवं दैव के कारण से विनष्ट बुद्धि वाले मूर्ख व्यापारियों ने, अत्यन्त लालच की आशा से हम पर्वत की चोटी पर चारों ओर से घिर गये हैं, इसको नहीं पहचाना।

विश्रब्धो मयि वर्तते शिवमहीपालः स तस्मादहम्

तस्योपांतमुपेत्य सांप्रतममुं सामोपधिं संश्रयन् ।

गुप्तामात्मकटारिकां तदुदरे गाढं निखाय स्वयं

देवानामपि मंदिरेऽद्य सुतरां सद्यो विधास्ये भयम् ॥६४

६४. उस शिवाजी राजे ने मेरे पर विश्वास किया है, अतः मैं उसके पास तत्काल जाकर मैत्री करने का कपट करके अपनी गुप्त कटार को स्वयं उसके पेट में घुसाकर आज शीघ्र ही देवों के मन्दिरों में भी अत्यन्त भय को उत्पन्न करूंगा।

इत्थं चेतसि चिंतितं बत निजे म्लेच्छेन तेनच्छलम्।

तद्विज्ञाय शिवः स एष सकलं सद्यस्तदीयं फलम्।

तस्मै दातुमथोद्यतो युधि यथा वक्ष्यामि सर्वं तथा

मन्ये तद्यशसा सुधामधुकथा पीयूषवार्ता वृथा ॥६५

६५. इस प्रकार उन यवनों द्वारा अपने मन में चिन्तित कपट को जानकर वह शिवाजी उन सबका फल उसको युद्ध में देने के लिए किस प्रकार सज्ज हुआ, यह सब मैं बताऊंगा, उसके यश का मधुर वृत्तांत ही अमृत है, उसके आगे अमृत की बातें व्यर्थ हैं।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां

साहस्र्यां संहितायामफजलागमनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

## अध्याय:-२१

कवीन्द्र उवाच -

अथो मिथो दर्शनार्थं भृशमुद्यतयोस्तयोः।

अप्यस्तत्रधियोस्तत्र निजनीतिसमेतयोः॥१

यथा दूतमुखेनैव नियमः समजायत।

कथयामि तथा सर्वं शृणुत द्विजसत्तमाः॥२

१-२ कवीन्द्र बोला - तत्पश्चात् एक दूसरे से मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक, उस कार्य में तत्पर बुद्धिवाले एवं अपनी-अपनी राजनीति से व्यवहार करने वाले उन दोनों दूतों के बीच जैसा करार हुआ था वह सब बताता हूं, हे पण्डितों ध्यान से सुनो।

विन्यस्यानीकमात्मीयं यथावस्थितमात्मना।

एकेनाफजलेनैव प्रस्थेयं शस्त्रपाणिना॥३

याप्ययानाधिरूढेन यातव्यं च पुरः पुनः।

सन्तु तत्परिचर्यार्थं द्वित्रा एवानुजीविनः॥४

तथैव स्वयमभ्येत्य प्रतापाद्रेरुपत्यकाम्।

शिवं प्रतीक्षमाणेन स्थेयं तत्रैव संसदि॥५

शिवेन च समभ्येत्य शस्त्रहस्तेन गौरवात्।

आतिथ्यमतिथेस्तस्य विधातव्यं यथाविधि॥६

तिष्ठन्तु दंशिताः शूराः पृष्ठे दश दश स्थिराः।

शरस्यांतरमासाद्य रक्षणाय द्वयोरपि॥७



मिलिताभ्यामुभाभ्यां च कर्तव्यं तत्र तद्रहः।

सर्वस्यापि हि लोकस्य भवेद्येन महान्महः॥८

३-८. अपनी सेना को यथास्थिति में रख करके स्वयं अफजलखान सशस्त्र आयेँ और पालकी में बैठकर आगे जायेँ, उनकी सेवा के लिए दो-तीन ही सेवक होने चाहिए, उसी प्रकार वह प्रतापगढ़ की उपत्यका के पास स्वयं आकर वहीं पर सभामंडप में शिवाजी की प्रतीक्षा करें और शिवाजी सशस्त्र आकर उस अतिथि का आदर सत्कार गौरव के साथ यथाविधि करें। दोनों के ही रक्षणार्थ सज्ज, स्वामिनिष्ठ, शूर एवं निष्ठावान् दस-दस सैनिक बाणों की सीमा पर आकर पृष्ठभाग में खड़े हो जायेँ और दोनों के आपस में मिलने पर सभी लोग आनन्दकारी बातें करें।

एवं विधाय नियमं विधायच्छलमातरम्।

दिदृक्षमाणावन्योन्यं तदानीं तौ व्यराजताम्॥९

९. इस प्रकार करार करके एवं अन्दर से कपटभाव से युक्त होकर एक दूसरे से मिलने के इच्छुक वे दोनों उस समय सुशोभित हुए।

ततः श्रुत्वा तमायान्तं प्रतापाद्रितलस्थलीम्।

शिवराजो महाराजः सज्जमानो व्यराजत॥१०

१०. तत्पश्चात् वह प्रतापगढ़ के स्थलभाग की ओर आ रहा है, ऐसा सुनकर शिवाजी महाराज सज्ज होते हुए सुशोभित होने लगे।

विविधाभिर्वि यथादिष्टं पुरोधसा।

तथा नित्यवदभ्यर्च्य देवदेवं वृषध्वजम्॥११

नित्यदानविधिं कृत्वा भुक्त्वा स्वल्पमनल्पधीः।

सम्यगाचम्य च मुहुर्मुहुर्बु शुचि स्वयम्॥१२

चिन्तयित्वा च तां देवीं तुलजां क्षणमात्मनि।

विधाय चात्मनो वेषं तदात्वोचितमात्मना॥१३

निजमप्रतिमं लोके विलोक्य मुकुरे मुखम्।

उत्थाय चासनात्सद्यः प्रणिपत्य पुरोहितम्॥१४

द्विजानन्यांश्च तैः सर्वैराशंसितशुभोदयः।

दधिदुर्वाक्षतान् स्पृष्ट्वा दृष्ट्वा मार्तण्डमण्डलम्॥१५

स्थितामभ्येत्य च पुरः सवत्सां स्वर्णसंयुताम्।

वितीर्य सुरभिं सद्यः सगुणायग्रजन्मने॥१६

उद्यताननुयानार्थमात्मीयाननुयायिनः।

प्रतापिनः प्रतापाद्रेर्गुप्तये विनियुज्य च॥१७

तमन्तस्सच्छलं म्लेच्छमभ्येत्य स्थितमान्तिके।

अभ्यगच्छदसौ हार्दादभ्यागतमिवात्मनः॥१८

११-१८. पुरोहित के द्वारा निर्दिष्ट विविध प्रकार की विधि से देवाधिदेव शंकर की नित्य की तरह पूजा करके, नित्य की दानविधि को करके, थोड़ा भोजन करके, स्वयं शुद्ध सीमित जल को बारंबार आचमन की तरह पीकर उस तुलजा देवी का क्षणमात्र मन में चिन्तन किया, उस समय के लिए उचित वेशभूषा को धारण करके लोक में अनुपम अपने मुख को दर्पण में देखा, शीघ्र आसन से उठकर और पुरोहित एवं दूसरे ब्राह्मणों को नमस्कार करके उन सबका शुभ आशीर्वाद लिया, दही, दुर्वा अक्षत इनकों स्पर्श किया, सूर्यमण्डल देखा, सामने खड़ी बछड़े से युक्त गाय के समीप जाकर तत्काल सुवर्ण सहित उसको गुणवान् ब्राह्मण को दे दिया, अपने पीछे आने के लिए सज्ज पराक्रमी अनुयायियों को प्रतापगड़ की सुरक्षार्थ नियुक्त किया और मन में कपट को रख समीप आकर स्थित उस यवन की ओर वह महाबुद्धिमान् शिवाजी अपने अतिथि के संमुख जिस प्रकार जाना चाहिए, उस प्रकार स्नेहभाव से गया।

उष्णीषेणैव शुचिना व्यभादुत्तंसधारिणा।

कश्मीरजपृषद्वर्षरजितेनांगिकेन च॥१९

शिववर्मा भृशबलः संवृतः शिववर्मणा।

तस्य वज्रशरीरस्य किं कार्यं तेन वर्मणा॥२०

१९-२०. उत्तम कवच को धारण किया हुआ शिवाजी राजे भोंसले, पुष्पगुच्छ को धारण करने से, सफेद पगड़ी से एवं केसर के छिड़काव किए गए अंगरखे से वह अत्यंत सुशोभित हो रहा था। उस वज्रयुक्त शरीर के लिए उस कवच की क्या जरूरत है?

कृपाणं पाणिनैकेन बिभ्राणोन्येन पट्टिशम्।

स नन्दकगदाहस्तः साक्षाद्धरिरुदैक्ष्यत॥२१

२१. एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में पट्टे को धारण करने वाला वह शिवाजी राजा नंदक तलवार एवं कौमुदकी गदा को धारण करने वाले प्रखर विष्णु के समान दिख रहा था।

अथ पर्वतपर्यन्तात् पंचाननमिवोद्गतम्।

द्रुतप्रत्यर्पितपदं संप्रसज्य पुरः स्थितम्॥२२

सृण्यग्रसुंदरोदग्रव्यायतश्मश्रुभीषणम्।

धीरं धीरदृशं वीरं शिवं रिपुरुदैक्ष्यत॥२३

२२-२३. पुनः किले के तट से सिंह की तरह बाहर निकलकर शीघ्र पगों को रखते हुए अत्यन्त समीप आकर खड़े हुए, अंकुशाग्र के समान सुन्दर, विशाल और लंबी दाढ़ी से भयंकर दिखने वाले, धैर्यवान् एवं धैर्यदृष्टि से युक्त शिवाजी को शत्रु ने देखा।

शिवोपि तं पुरो वीक्ष्य वृषा वृत्रामिवागतम्।

स्मयमानः स्वयं तस्य दृशा दृशमयोजयत्॥२४

२४. जैसे इन्द्र ने वृत्र को देखा उसी प्रकार शिवाजी ने भी मुस्कराते हुए सामने स्थित उसकी दृष्टि से दृष्टि को मिलाया।

विरुद्धस्थितिमुद्बुद्धं क्रुद्धः कुद्धमिवांतकम्।

स तं शाहसुतं वीरं विश्वासयितुमात्मनि॥२५

स्वहस्तस्थायिनं खड्गमखण्डितगतिं खलः।

स्वपार्श्ववर्तिपाणिस्थमकरोद्विधृतच्छलः॥२६

२५-२६. क्रोधित यम की तरह सामने खड़े हुए उसने दक्ष वीर शिवाजी को अपने पर विश्वस्त करने के लिए अपने हाथ में स्थित अबाधगति वाली तलवार को उस क्रोधित, कपटी दुष्ट ने पास में खड़े हुए अपने सेवक के हाथ में दे दी।

ततः स्वरेण तारेण मृषादर्शितसौहृदः।

प्रतिकूलेन विधिना हतः स तमवोचत॥२७

२८. तत्पश्चात् मिथ्या स्नेह दिखाकर, प्रतिकूल भाग्य से हत वह अफजलखान उससे ऊंचे स्वर में बोला।

अफजल उवाच -

अये मृषामृधोत्साहधारिन् स्वैरतरस्थिते।

किं नीतिपथमुत्सृज्य भजस्यपथपान्थताम्॥२८

२८. अफजल बोला - अरे! मिथ्या युद्धोत्साह को धारण करने वाले एवं अत्यन्त स्वच्छंद व्यवहार करने वाले नीतिमार्ग को छोड़कर कुमार्ग को क्यों धारण करते हो?

येदिलं कुतुबं वापि दिल्लीन्द्रं वा महौजसम्।

न सेवसे न मनुषे तनुषे गर्वमात्मनि॥२९

२९. आदिलशाह की कुतुबशाह की या फिर महाबलवान् दिल्लीपति की भी सेवा नहीं करता है और नहीं उन्हें मानता है और अपने पर ही गर्व करता है।

तदद्य दुर्विनीतं त्वां विनेतुमहमागतः।

प्रयच्छ पर्वतानेतान् गृध्नुतां त्यज मां भज॥३०

३०. अतः आज मैं दुर्विनीत तुझको दण्ड देने के लिए आया हूं। यह किला मुझे दे और मेरी शरण में आ जा।

धृत्वाहं त्वा स्वहस्तेन नीत्वा विजयपत्तनम्।

अल्लीशाहस्य पुरो नामयित्वा शिरस्तव॥३१

प्रणिपत्य च विज्ञाप्य तं प्रतापिनमीश्वरम्।

दास्यामि वैभवं तुभ्यं भूयो भूयस्तरं नृप॥३२

३१-३२. मैं तुझे अपने हाथ से पकड़कर तथा बिजापुर ले जाकर अल्लीशाह के सामने तेरे मस्तक को झुकवाते हुए उस प्रतापी स्वामी से हाथ जोड़कर निवेदन करूंगा और हे राजा! तुझे फिर उससे अत्यन्त वैभव को प्राप्त करवाऊंगा।

शाहराजात्मजशिशो विहाय स्वां विहस्तताम्।

स्पृश हस्तेन मे हस्तमेहि देह्यंकपालिकाम्॥३३

३३. अरे! शहाजी राजा के पुत्र, बच्चे, अपनी होशियारी को छोड़कर अपने हाथ को मेरे हाथों में दे और आलिंगन करा।

एवमुक्त्वा स तद्ग्रीवां धृत्वा वामेन पाणिना।

इतरेण च तत्कुक्षौ निचखान कटारिकाम्॥३४

३४. इस प्रकार बोलकर उसने उसकी गर्दन को बाएं हाथ से पकड़कर दूसरे दाएं हाथ से उसके पेट में कटार घुसा दी।

नियुद्धविच्छिन्नस्तद्वस्तोन्मुक्तकंधरः।

ध्वनिना धीरधीरेण प्रतिध्वनितकंदरः॥३५

प्रविंशतीमात्मकुक्षिभागमभ्रांतमानसः।

किंचिदाकुंचितांगस्तां शिवः स्वयमवंचयत्॥३६

३५-३६. बाहुयुद्ध में निपुण शिवाजी ने तत्काल उसके हाथ से गर्दन को छुड़ाकर अत्यन्त गंभीर ध्वनि से गुफाओं को प्रतिध्वनित किया और विचलित हुए बिना अपने अवयवों को थोड़ा संकुचित करके शिवाजी ने अपने पेट में घुसने वाली कटार से स्वयं को बचाया।

ददाम्येतं कृपाणं ते गृहाण निगृहाण माम्।

इदं विनिगदन्नेव धीरः सिंहसमस्वरः॥३७

सिंहयायी सिंहकायः सिंहदृक् सिंहकंधरः।

स्वपाणिद्वितयोद्धूतविकोशायुधसुन्दरः॥३८

तं निर्यातयितुं वैरं प्रवृत्तोसौ महाव्रतः।

शिवः कृपाणिकाग्रेण कुक्षावेव तमस्पृशत्॥३९

३७-३९. यह प्रहार तेरे पर करता हूं, वह ले, मुझे पकड़ इस प्रकार बोलता हुआ, सिंह के समान ध्वनि, सिंह के समान गति, सिंह के समान शरीर, सिंह जैसी दृष्टि, सिंह जैसी गर्दन वाला एवं अपने दोनों हाथों से घुमायी हुई नंगी तलवार से शोभायमान वह धैर्यवान् एवं सक्रिय शिवाजी, उस शत्रु से प्रतिशोध लेने में प्रवृत्त होकर अपने तलवार का अग्रभाग उसके पेट में घुसा दिया।

आपृष्ठं विद्विषत्कुक्षिं तूर्णं तेन प्रवेशिता।

आकृष्यान्त्राणि सर्वाणि सा कृपाणी विनिर्गता॥४०

४०. उसने शत्रु के पेट में पृष्ठभाग पर्यन्त शीघ्र घुसायी गई उस तलवार से सभी अंतडिया खींचकर बाहर गिर गईं।

कुप्यतः कार्तिकेयस्य शक्तिः क्रौंचाचलं यथा।

व्यभादफजलं भित्वा शिवखड्गलता तथा॥४१

४१. क्रोधित कार्तिकेय की शक्ति जैसे क्रौंच पर्वत को विदीर्ण करके सुशोभित हुई, उसी प्रकार शिवाजी की तलवार अफजलखान को विदीर्ण करके सुशोभित होने लगी।

घूर्णमानेन शिरसा बभावफजलस्तदा।

ईदृशं शिवराजेन पौरुषं दर्शितं यदा॥४२

४२. इस प्रकार का पराक्रम शिवाजी महाराज ने जब दिखाया तब अफजलखान के सिर के गोल-गोल घुमने से वह सुशोभित होने लगा।

ततो रुधिरधाराभिरार्द्रकृतमहीतलः।

प्रमत्त इव मोहेन घूर्णमानोऽतिविह्वलः॥४३

यथैव शिवशस्त्रेण निःसृतान्युदराद्वहिः।

तथैवान्त्राणि सर्वाणि बिभ्राणः स्वेन पाणिना॥४४

अनेन निहतोऽस्मीह जह्येनमहितं जवात्।

इति वक्ति स तं यावत् तत्पार्श्ववर्तिना॥४५

तमेवाफजलस्यासिं समुद्यम्याभिमानिना।

जिघांसयैव सहसा शिवराजोऽभ्यपद्यत॥४६

४३-४६. तत्पश्चात् अपने खून की धाराओं से भूमि को भिगोकर, पागल मनुष्य की तरह मूर्च्छा के झटकों से व्याकुल हुआ, वह अफजलखान शिवाजी के शस्त्र द्वारा पेट से बाहर पड़ी हुई अंतडियों को यथास्थिति में अपने हाथों से पकड़कर इसने मुझे यहां मार दिया, इस शत्रु को शीघ्रता से नष्ट करो, इस प्रकार वह अपने पार्श्ववर्ती सेवक को बोलता है और वह अभिमानी सेवक भी उसी तलवार को उठाकर नष्ट करने की इच्छा से अचानक शिवाजी पर आक्रमण करता है।

नो हनिष्यत्युमं राजा द्विजातिमिति जानता।

स्वामिनाफजलेनासौ योद्धा युद्धे निवेशितः॥४७

४७. ब्राह्मण को शिवाजी नष्ट नहीं करेगा। इस प्रकार जानबुझकर धनी अफजलखान ने उस ब्राह्मण योद्धा को युद्ध में प्रविष्ट किया था।

द्विजातिरिति तं श्रुत्वा जानानः शिवभूमिपः।

अभ्येतमपि नो हन्तुमिच्छन्निजनयस्थितः॥४८

४८. वह ब्राह्मण योद्धा है ऐसा सुनकर नीति से व्यवहार करने वाले शिवाजी राजा ने उसको जान से मारने की इच्छा नहीं की।

अप्राप्ता एव यावत्ते तत्राफजलसैनिकाः।

तावत्स एव तं खड्गं शिवस्योपर्यपातयत्॥४९

४९. अफजलखान के वे सैनिक जब तक वहां नहीं पहुंचे, तब तक उसने उसी तलवार से शिवाजी पर प्रहार किया।

शिवस्तत्पातितं खड्गं खड्गोनादत्त वै तदा।

शिरस्तदधिपस्यापि पट्टिशेन व्यधाद् द्विधा॥५०

५०. उसने प्रहार की हुई तलवार को उस समय शिवाजी ने अपने तलवार से रोक लिया और पट्टे से उस अफजलखान के सिर के दो टुकड़े कर दिये।

पट्टिशेन विनिर्भिन्नमुच्छ्रितस्य रिपोःशिरः ।

स्वरूपां विहतं सद्यो गिरेः शृंगमिवापतत् ॥ ५१ ॥

५१. उन्नत शत्रु का पट्टे से काटा हुआ सिर वज्र से फोड़े गए पर्वत शिखर की तरह नीचे गिर गया।

असौ जिष्णुरभूत्तव स म्लेच्छोऽभून्महीधरः ।

शितकोटिः पट्टिशोऽपि शतकोटिरभूत्तदा ॥ ५२ ॥

५२. उस स्थिति में शिवाजी इन्द्र हो गया वह म्लेच्छ पर्वत हो गया और तीक्ष्ण अग्रभाग वाला पट्टा भी उस समय वज्र हो गया।

क्वचित्कबंधः प्रसृतः स्रस्तान्यान्वाणि च क्वचित् ।

न्यपतच्च क्वचिन्मूर्धा शिरोवेष्टोऽपि च क्वचित् ॥ ५३ ॥

विप्रकीर्णं क्वचिच्छत्रं प्रकीर्णकमपि क्वचित् ।

तत्तन्मुक्तामणिमयो रत्नोत्तंसः स च क्वचित् ॥ ५४ ॥

क्वचिद्वस्त्रं क्वचिच्छत्रं समासाद्य दशामिमाम् ।

सोलुठन्मेदिनीपृष्ठे दुष्टः स्वेनैव कर्मणा ॥ ५५ ॥

५३-५५. कहीं पर शरीर गिर गया, कहीं पर अंतड़ियां फैल गईं, कहीं पर मस्तक गिर गया, कहीं पर पगड़ी गिर गई, छत्री कहीं पर उड़ गई, चंवर भी एक तरफ गिर गया, सभी प्रकार के मोतियों एवं रत्नों के आभूषण कहीं पर गिर गए तो एक ओर छत्र तो दूसरी तरफ वस्त्र इस प्रकार की अवस्था को प्राप्त होकर वह दुष्ट अपने कर्मों के कारण ही भूमि पर बिखर गया।

निमिष्य नोन्मिपन्त्येव यावत्ते तस्य सैनिकाः ।

तावच्छिवनृपेणोच्चैर्यवनः स निपातितः ॥ ५६ ॥

५६. जब तक उसके वे सैनिक आंखों के पलकों को बंद करके खोलते तब तक इस शिवाजी राजा ने उस यवन को तुरंत नीचे गिरा दिया।

ते हतं स्वामिनं वीक्ष्य यवनानीकनायकाः ।

कुप्यन्तोऽतीव दृप्यन्तो विनिर्धूतायतायुधाः ॥ ५७ ॥

सय्यदोऽबदुलो नाम बडाहोपि च सय्यदः ।

रहीमखानोऽफजल भ्रातृपुत्रश्च दुर्मदः ॥ ५८ ॥

पहीलवानखानोपि महामानी महान्वयः ।

पीलुजिच्छंकरश्चोभौ वीरौ महितवंशजौ ॥ ५९ ॥

चत्वारोऽपि यवनाः पवनातिगविक्रमाः ।

बलिनोऽफजलस्यैते पाणिग्राहाः प्रमाथिनः ॥ ६० ॥



ध्वस्ते जंभासुरे सद्यः सुरेश्वरमियासुराः ।

संभूयाभ्यपतन्सर्वे शिवराजजिघांसवः ॥ ६१ ॥

५७-६१. वे अपने स्वामी को भरा देखकर अब्दुल सय्यद, बड़ा सय्यद, अफजलखान का घमण्डी भतीजा रहीमखान, अत्यन्त अभिमानी और बड़े घर का पहलवानखान, पिलाजी एवं शंकराजी मोहित ये दोनों वीर और वायु से भी अधिक वेगवान्, बलवान् एवं अफजलखान के पृष्ठ रक्षक ये चार एवं अन्य भी उस यवन सेना के नायक अत्यन्त क्रोधित एवं गर्व के साथ शस्त्रों को उठाकर जंभासुर के नष्ट होने पर जैसे इन्द्र पर असुर तत्काल आक्रमण करते हैं, उसी प्रकार शिवाजी को जान से मारने की इच्छा से सभी ने मिलकर उन पर आक्रमण किया।

तदा हेतिद्वयं तद्वै परिभ्रामयतामुना ।

परितो वितताकारः प्राकारः किमकारि न ॥ ६२ ॥

६२. उस समय उन शस्त्रयुगलों को घुमाते हुए उस शिवाजी ने अपने चारों ओर मानो विशाल प्राकार ही बना दिया हो।

अभ्रमन्नपि युद्धेऽस्मिन् स भ्रमन्नभ्रमन्तरा।

अभ्रामयदहोरात्रं मिषतां द्विषतां दृशः ॥ ६३ ॥

६३. उसने इस युद्ध में विचलित न होते हुए आकाश में गोल-गोल घूमते हुए स्पर्धा करने वाले शत्रुओं की आंखों को अहोरात्र गोल घुमवाया।

कालेन कलवालेन पटुना पट्टिणेन च ।

ककुभां वलयानीव मंडलानि व्यधत्त सः ॥ ६४ ॥

६४. काले तलवार से एवं तीक्ष्ण पट्टे से उसने दिग्वलय के समान मण्डलों को बनाया।

मंडलानि वितन्वानं मन्वानं दर्पमात्मनि ।

पट्टिशं च कृपाणं च व्याधुन्वानं मुहुर्मुहुः ॥ ६५ ॥

तदा तमुग्रकर्माणं शिववर्माणमाहवे ।

न विलोकयितुं शेकुः परे स्वेपि च सैनिकाः ॥ ६६ ॥

६५-६६. तलवार को और पट्टे को बारंबार घुमाकर मण्डलों को बनाने वाले एवं गर्व करने वाले उस उग्रकर्मा शिवाजी को शत्रुपक्ष के और स्वपक्ष के सैनिक युद्ध में उस समय देख नहीं सके।

क्षणं विशन्वसुमती क्षणमाकाशमाविशत्।

मध्य एव क्षणं तिष्ठन् जोषमानीन् स क्षणम् ॥ ६७ ॥

६७. क्षणभर में पृथ्वी में प्रवेश करता क्षणभर में आकाश में और क्षणभर मध्य में स्थित होता, इस प्रकार वह क्षणभर भी शान्त नहीं था।

तडित्पातानिव स्यादुपेतानात्मनोऽन्ति के ।

पातितान्प्रतिवीरैस्तैः खड्गपाताननेकशः ॥ ६८ ॥

कदाचित्पट्टिशेनैव कदाचिद्गाढमुष्टिना ।

कदाचिद्युगपत्ताभ्यां द्वाभ्यामादत्त स प्रभुः ॥ ६९ ॥

६८-६९. आकाशीय विद्युत् के समान वेग से अपने पर आने वाले विरुद्ध वीरों के द्वारा किए गए अनेक तलवार के प्रहारों को उस स्वामी ने कभी पट्टे से तो कभी तलवार से और कभी उन दोनों से रोका।

तदा संभः काबुकीयः काडूचेंगालसंभवः ।

कुंडजिच्च यशोजिच्च द्वाविमौ कंकवंशजौ ॥ ७० ॥

गोकपाटान्वयः कृष्णः शूरजित् कांटकोपिऽच।

तथैव माहिलो जीवो विश्वजिच्च मुरुंबकः ॥ ७१ ॥

संभः करवरस्तद्वदिभरामोऽपि बर्बरः ।

एते दश महावीराः शिवराजाभिरक्षिणः ॥ ७२ ॥

कृतक्ष्वेडारवाः कोपनिष्कासितमहासयः ।

प्रत्यगृह्णन्त तांस्तत्र पवनानिव पर्वताः ॥ ७३ ॥

७०-७३. तब संभाजी, कावजी, काताजी इंगळे, कोडाजी एवं येसाजी ये दोनों कंकवंशी, कृष्णाजी गायकवाड़, सुरजी कांटके, उसी प्रकार शिद्दी, इस प्रकार इन शिवाजी के रक्षक दस वीरों ने गर्जना करके, म्यान से प्रचंड तलवारों को निकालकर, पर्वत जैसे वायु रोकता है, उसी प्रकार उन्होंने वहां शत्रुपक्ष का विरोध किया।

तेषां तेषां च नादेन पूरिते गगनोदरे ।

मन्दुरायां निरुद्धोऽपि विद्रुतोऽभूद्धरिहरिः ॥ ७४ ॥

७४. उन-उन मुसलमानों के और उन मराठों की गर्जना से आकाश परिपूर्ण हो गया अश्वशाला में बंधा हुआ इंद्र का घोड़ा भी भाग गया।

राजन्ददाम्यहं तुभ्यमसिमेतं सहस्व मे।

वदन्मुहुर्मुहुरदं वडाहः सय्यदस्तदा ॥ ७५ ॥

नदन्तं सिंहवद्भूरि भूयोऽप्यफजलान्तकम् ।

प्रत्यधावन्निषिद्धोऽपि माहिलेन तरस्विना ॥ ७६ ॥

अहमेव निहन्स्येनमायात्वेष ममान्तिके ।

इति क्षितिपतेर्वाक्यमनाकर्ण्यव माहिलः ॥ ७७ ॥

तमसिं सय्यदोत्क्षिप्तं समादत्त स्ववर्मणा ।

व्यधाच्च सय्यदं वीरः करवालेन वै द्विधा ॥ ७८ ॥

७५-७८. हे राजा! तेरे पर इस तलवार के प्रहार को करता हूं, तू मेरा वार सहन कर, इस प्रकार बारंबार बोलता हुआ, उस समय बड़ा सय्यद सिंह की तरह प्रचंड गर्जना करने वाले एवं अफजलखान को जान से मारने वाले शिवाजी पर पुनः दौड़कर आक्रमण किया। वेगवान् जीवा महाल के निषेध करने पर भी इसको मैं ही जान से मारुंगा, इसको मेरे पास आने दें। इस महाराजा के कथन को अनसुना करके सय्यद द्वारा उठाए हुए उस तलवार के प्रहार को अपने ऊपर लिया और उस वीर ने अपने तलवार से सय्यद के दो टुकड़े कर दिये।

काबुकीयेन कंकाभ्यामिंगालेनाभिमानिना ।

मुरुंबकेन वीरेण तथा करवरेण च ॥ ७९ ॥

क्रूरेण कांटकेनापि गोकपाटेन च द्रुतम् ।

बर्बरेण सावेशं युद्धन्तोन्त्येऽपि पातिताः ॥ ८० ॥

७९-८०. कावाजी, दोनों कंकवंशी, अभिमानी इंगळे, वीर मुरुंबक, उसी प्रकार करवर, क्रूर कांटके, गायकवाड़ और शिंदी बर्बर इन्होंने क्रोध से लड़ने वाले दूसरे शत्रुओं को शीघ्रता से मार दिया।

निकृत्तस्कंधहस्तानि निकृत्तचरणानि च ।

निकृत्तमूर्धमध्यानि पतितानि समंततः ॥ ८१ ॥

लोहितेनानुलिप्तानि द्रुमामयसमश्रिया ।

तत्र तेषामहो तानि वपूंषि प्रचकाशिरे ॥ ८२ ॥

८१-८२. कन्धे एवं हाथ से भग्न, पैर से टूटे हुए, मस्तक एवं मध्यभाग से टूटे हुए, लाख की तरह रक्त से रंजित चारों तरफ पड़े हुए उनके शरीर वहां चमकने लगे।

एकाशीत्याधिकैः पंच दशभिः संमितैः शतैः ।

शालिवाहे शके संवत्सरे चैव विकारिणि ॥ ८३ ॥

मासि मार्गे सिते पक्षे सप्तम्यां गुरुवासरे।

मध्याह्ने दैवतद्वेषी शिवेनाफजलो हतः ॥ ८४ ॥

८३-८४. शक १५८१ विकारी संवत्सर के मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी तिथि तथा गुरुवार के दोपहर को देवों से द्वेष करने वाले अफजलखान को शिवाजी ने जान से मार दिया।

विध्वस्तेऽफजलेबलिन्यपि बलेनैतेन भूमीभृता,

वाति स्मातिहिमः प्रभूतकुसुमामोदी मृदुमरुतः ।

नद्यश्चापि सुधावदातसलिलाः सद्यः स्थिरा सुस्थिरा,

स्वं स्वं स्थानमवाप्य निर्वृतहृदः सर्वेऽप्यभूवन्सुराः ॥ ८५ ॥

८५. बलपूर्वक इस राजा ने बलवान् अफजलखान को जान से मार दिया तो अत्यन्त शीतल, असंख्य फूलों की सुगन्ध से युक्त, मंद-मंद वायु बहने लगी, नदियां भी अमृत के समान शुद्ध पानी से युक्त हो गई, तत्काल पृथ्वी अत्यन्त स्थिर हो गई, सभी देव भी अपने-अपने स्थान पर जाकर सुखी हो गए।

इति निजरिपुमुच्चैः संगरे पातयित्वा,

विलसति शिवभूमीवल्लभे शस्त्रपाणौ ।

सपदि विजयशंसी व्यभुवानस्त्रिलोकीम्,

गिरिशिरास गभीरो दुन्दुभिः प्रादुरासीत् ॥ ८६ ॥

८६. इस प्रकार अपने शत्रु को युद्ध में बल से मारकर, सशस्त्र शिवाजी सुशोभित होने लगा तो तीनों लोकों को व्याप्त करने वाली विजय सूचक एवं गंभीर दुंदुभी की ध्वनि किले पर हुई।

इत्यनुपुराणे परमानन्दकवीन्द्रप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायामफजलवधो नाम एकविंशोऽध्यायः ॥

२१॥

## अध्याय:-२२

तेन दुन्दुभिनादेन दूतेनेव प्रसर्पता ।

सैनिकाः शिवराजस्य सपदि प्रतिबोधिताः ॥ १ ॥

१. कवीन्द्र बोले- दूत के समान वेग से जाने वाली उस दुंदुभी ध्वनि ने शिवाजी के सैनिकों को तत्काल सूचना दे दी।

सौलक्षिकः कमलजिद्यशोजित् कंक एव च ।

तानाजिन्मल्लसूरश्च कुण्डो वरखलस्तथा ॥ २ ॥

रामः पाङ्गारिकश्चामी पञ्च पञ्चाग्नितेजसः।

एकैकेन सहस्रेण पत्नीनां परिवारिताः ॥ ३ ॥

सहस्रैः पञ्चभिस्तद्वृद्धो नारायणो द्विजः ।

क्षेत्रेण कर्मणा ख्यातः सर्वेऽप्येते महायुधाः ॥ ४ ॥

बह्वायुधीयगहनां गहनान्तरवर्तिनीम् ।

यादवारयन्नेत्य परितः परवाहिनीम् ॥ ५ ॥

२-५. कमकोजी सोळंखे, येसाजी कंक, तानाजी मालुसरे, कोंडाजी, वरखल और रामजी पांगारकर, ये पांच अग्नि के समान तेजस्वी वीरों ने अकेले हजारों पदातियों के साथ तथा उसी पराक्रम से विख्यात एवं पांच हजार पदातियों के साथ विद्यमान नारायण ब्राह्मण, इन सभी योद्धाओं तथा महायोद्धाओं ने वेग से आकर वन के मध्यभाग में स्थित, अनेक योद्धाओं से युक्त शत्रु की सेना को चारों ओर से घेर लिया।

अत्रान्तरे परेऽप्युच्चैः पटहेन प्रणादिना ।

हतोऽफजल इत्येव सहसा प्रतिबोधिताः ॥ ६ ॥

सज्जमानास्साभिमानान् संरब्धान् प्रतिरुन्धतः ।

तान् पत्तीन् पर्वतोपान्तादेतानैक्षन्त सर्वतः ॥ ७ ॥

६-७. इस बीच शत्रुओं को भी अफजलखान मारा गया यही बात उच्चध्वनि से बजनेवाली दुंदुभी के द्वारा सहसा ज्ञात होने पर वे सज्ज हो रहे थे कि तभी पर्वत के तट से आये हुए अभिमानी, संरब्ध एवं आक्रमण करने वाले पदाति चारों ओर से दिखाई दिये।

निर्मदा इव मातङ्गा निर्विषा इव पन्नगाः ।

निरुणा इव नरा निःशृङ्गा इव भूधराः ॥ ८ ॥

निर्जीवना इव घनाः क्षितीशा इव निर्धनाः ।

विरेजिरे न यवनास्ते तदाफजलं विना ॥ ९ ॥

८-९. मदरहित हाथी, विषरहित सांप, पगड़ी से रहित मनुष्य, शिखरों से रहित पर्वत, पानी से रहित बादल और धनहीन राजा इन सबके समान वे यवन अफजलखान के बिना उस समय सुशोभित नहीं हो रहे थे।

तातस्याफजलस्यैतत् पतनं नभसो यथा ।

श्रुत्वा ध्वस्तधियस्तत्र मुमुहुस्तनयास्त्रयः ॥ १० ॥

१०. आकाश के गिरने के समान पिता अफजलखान को मरा हुआ जानकर उसके तीनों पुत्र की बुद्धि के नष्ट हो जाने से वे विचलित हो गये थे।

नभस्वता प्रतीपेन भग्नपोता इवार्णवे ।

तदा ते जीवितस्याशामत्यजन् गहने वने ॥ ११ ॥

११. प्रतिकूल वायु के द्वारा समुद्र में नाव के भग्न होने से उसमें स्थित लोग जैसे जीवन की आशा को छोड़ देते हैं, उसी प्रकार उन्होंने उस गहन वन में उस समय जीवन की आशा को छोड़ दिया।

अथ कृच्छ्रगतान् सर्वान् गतगर्वान् गतौजसः ।

सैन्यान्तर्वर्तिनस्सैन्यान् वीक्ष्य विद्रवतो निजान् ॥ १२ ॥

भक्तिमान् स्वामिनि मृधे शक्तिमानतिकोपनाः ।

स्फुरदुद्धोणवदनः पृथुप्रसृतिलोचनः ॥ १३ ॥

क्रूरः करिकराकारकरः प्रतिभयस्वरः ।

स्थिरीकृत्य मुसेखानः पठानः स्वयमब्रवीत् ॥ १४ ॥

१२-१४. तब सेना के अपने सभी सैनिकों के संकट में फंसने के कारण से गर्वरहित एवं बल से नष्ट होकर भागती हुई अपनी सेना को देखकर, स्वामिभाव, शक्तिमान्, अत्यन्त क्रोधी, नाक को ऊपर चढ़ाया हुआ एवं मुंह को फुलाकर, विस्तीर्ण अंजली के समान आंखों से युक्त, हाथी के सूंड के समान भुजाओं एवं भयंकर स्वर से युक्त वह मुसेखान पठान उनको रोककर बोलने लगा।

तृणीकृत्यात्मनः प्राणान् स्वामिकार्यचिकीर्षया ।

स गतोऽफजलस्तर्हि वयं सर्वेऽपि किं गताः ॥ १५ ॥

१५. मुसेखान बोला - स्वामिकार्य करने की इच्छा से अपने प्राणों को तिनके के समान मानकर अफजलखान यदि मर भी गया तो क्या हम सब भी मर गयें?

सर्वतः संवृतपथः पर्वतः क्व गमिष्यथ ।

आस्तिष्ठत प्रहरत प्रतीपान् परितः स्थितान् ॥ १६ ॥

१६. चारों ओर से पर्वत का मार्ग बंद कर दिया है तो तुम कहां जाओगे? अरे! खड़े रहो और चारों ओर स्थित शत्रुओं को मारो।

स्वामिनं वा सखायं वा सहायं वा स्वमुज्झताम् ।

केषाञ्चिदपि विद्रुत्य जीवतां मास्तु जीवितम् ॥ १७ ॥

१७. अपने स्वामी को, मित्र को या अपने साथी को छोड़कर जो कोई भागकर अपने प्राणों को बचायेगा, उसके जीवन को धिक्कार हैं।

स्वामिकार्यमकुर्वाणः कुर्वाण स्त्राणमात्मनः ।

कथं दर्शयतु स्वीयं मुखमात्मजनान्तिके ॥ १८ ॥

१८. स्वामिकार्य किये बिना अपनी रक्षा करने वाला मनुष्य, अपना मुंह अपने लोगों को कैसे दिखा सकता है?

विकरालं महाकालं करवालं करे वहन् ।



प्रसह्य विद्विषां सेनामिमां पातयितास्म्यहम् ॥ १९ ॥

१९. अत्यन्त भयानक, प्रलयकारी इस तलवार को हाथ में लेकर मैं इन शत्रुओं की सेना को बलात् नष्ट कर दूंगा।

एवमुक्त्वा महाबाहुस्समारुह्य महाहयम् ।

संवृतः स्वेन सैन्येन शिविरान्निर्ययौ रयात् ॥ २० ॥

२०. इस प्रकार बोलकर वह महाबाहु महान् घोड़े पर चढ़कर अपनी सेना के साथ शिविर से वेगपूर्वक निकल गया।

तमन्वियाय हसनः श्वसनप्रतिमो बली ।

अन्येपि सैन्यपतयः स्वरवसैन्यसमन्विताः ॥ २१ ॥

२१. वायु के समान वेगवान्, बलवान्, हसन एवं दुसरे सेनापति भी अपनी-अपनी सेना के साथ उसके पीछे चले गये।

अन्तरादन्तरानेकप्रसृतप्रस्तराविलम् ।

तुरङ्गमखुराघातोत्पतदग्निकणाकुलम् ॥ २२ ॥

स्यदत्स्खलत्पदपतज्जंघालजनसंकुलम् ।

अभूत् प्रचलने तेषां प्रचलं तन्महीतलम् ॥ २३ ॥

२२-२३. मध्य-मध्य में उबड़-खाबड़ अनेक विस्तीर्ण पत्थरों से व्याप्त घोड़ों के खुरों के आघात से उड़ने वाली चिंगारियों से पूर्ण, पैर के फिसलने से या ठोकरें खाकर गिरने वाले चपल लोगों के भीड़ से व्याप्त वह भूमि उसके हाल-चाल से कंपित हो गई।

अथ प्रतिभटान् वीक्ष्य संरब्धैरश्वसादिभिः ।

अप्यश्मवत्मसु रयात् पुरो नुनुदिरे हयाः ॥ २४ ॥

२४. तब शत्रु योद्धाओं को देखकर विचलित घुड़सवारों ने अपने घोड़ों को पत्थरों से युक्त मार्ग के ऊपर से भी वेग से आगे ले गये।

ततः पुरः प्रणुन्नाश्वो मुसेखानोऽत्यमर्षणः ।

तरस्वी प्रतिजग्राह पृषत्कैः परसैनिकान् ॥ २५ ॥

२५. तत्पश्चात् अत्यन्त क्रोधित एवं वेगवान् मुसेखान ने अपने घोड़े को आगे ले जाकर शत्रु के सैनिकों पर बाणों की वर्षा की।

हसनाद्यास्तथान्येऽपि क्रुद्धाः सर्वे धनुर्भृतः ।

शरैराकुलयाञ्चक्रुः पुरस्थान परिपन्थिनः ॥ २६ ॥

२६. हसन इत्यादि दूसरे सभी क्रोधित धनुर्धरों ने सम्मुख स्थित शत्रुओं को बाणों से जर्जरित कर दिया।

तदा रोषारवैस्तेषां हयानां हेषितैरपि ।

बृहितैश्च महेभानां युद्धावेशोपबृहितैः ॥ २७ ॥

चण्डदण्डाहतानां च पटहानां पटुस्वनैः ।

विविधानां च वाद्यानां निनादभृशभीषणैः ॥ २८ ॥

तथाभितस्तरक्षूणां ऋक्षाणां वनपक्षिणाम् ।

शार्दूलानां वृकाणां च खड्गिनां वनदंष्ट्रिणाम् ॥ २९ ॥

निर्गतानां दरीगर्भात् सद्यः क्षुभितचेतसाम् ।

कोलाहलैः सुबहुभिर्गगनोदरगामिभिः ॥ ३० ॥

प्रसभं पूरितात्युच्चैरटवी सातिसङ्कटा ।

प्रतिध्वानैः प्रतिभटानुद्धटान् बह्वर्जयत् ॥ ३१ ॥

२७-३१. उस समय उनके क्रोधयुक्त शब्दों से, घोड़ों के हिनहिनाने से, युद्ध के आवेश से, बड़े हाथियों द्वारा किए गए प्रचंड चीत्कार से, छडी के प्रहार से बजने वाले नगाड़ों की तीव्र ध्वनि से, विविध वाद्यों के भयानक आवाजों से, उसी प्रकार चारों से अचानक विचलित होकर गुफाओं से बाहर निकले हुए, वाद्य, भालू, जंगली पक्षी, भेड़िया, गेड़े, सुअर आदि गगनभेदी असंख्य कोलाहल से अत्यन्त वेग से परिपूर्ण हुए उस अत्यन्त दुर्गम अरण्य की प्रतिध्वनि के द्वारा उद्धट सैनिकों को अनेक बार धमकाया गया।

शरैस्तीक्ष्णतरैर्विद्धा अप्यविद्वान पदातयः ।

तस्मिन् रणे मण्डलाग्रैः क्षितिमण्डलमानयत् ॥ ३२ ॥

३२. अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण हुए पदातियों ने भी उस युद्ध में अबाधित गति वाले तलवारों से शत्रुओं को भूमि पर गिराया।

धावद्भिरसिधाराभिः शकलीकृतसैन्धवाः ।

स्पर्धयेवाश्ववारास्तैः पत्तिभिः पत्तयः कृताः ॥ ३३ ॥

३३. दौड़ने वाले उन पदातियों ने घुड़सवारों के घोड़ों के टुकड़े करके उनको मानो स्पर्धा से पदाति ही बना दिया हो।

कश्चित् परप्रहरणप्रहृतो रुधिरारुणः ।

पतन्ननुरुस्सहसा सूर्यमण्डलमासदत् ॥ ३४ ॥

३४. कोई शत्रु के शस्त्र के प्रहार से रक्तंजित हो गया तथा नीचे गिरकर सहसा सूर्यलोक ही चला गया।

कश्चित् भीमेन वीरेण भिन्नोरुयुगमण्डलः ।

सद्यस्सुयोधनदशामन्वभूद्वसुधां श्रितः ॥ ३५ ॥

३५. कोई भयंकर वीर द्वारा जंघाओं के फोड़ने से वह तत्काल भूमि पर गिरकर दुर्योधन की दशा का अनुभव करने लगा।

कश्चिन्नियुध्यतात्युच्चैर्द्विषता द्विदलीकृतः ।

वीरो विपर्यस्तवपुर्जरासन्ध इवापतत् ॥ ३६ ॥

३६. मुष्टियुद्ध करने वाले किसी वीर शत्रु के दो टुकड़े होने के कारण वह जरासन्ध के समान विपरीत होकर गिर गया।

गुलिकायन्त्रनिर्मुक्तगुलिकाविद्धवक्षसः ।

केचिद्धृतधनुर्जीवा अपि निर्जीवतां दधुः ॥ ३७ ॥

३७. तोप से निकले हुए गोले से विदीर्ण छाती वाले कुछ वीर धनुष की प्रत्यंचा को हाथ में पकड़कर ही मृत्यु को प्राप्त हो गए।

तत्तल्लाघवमास्थाय प्रहरन् वै प्रभाविणम् ।

खड्गखेटकभृत् कश्चित् बभार बत गौरवम् ॥ ३८ ॥

३८. ढाल एवं तलवार को धारण करने वाला कोई वीर नाना प्रकार के पराक्रम को दिखाकर पराक्रमी वीर पर प्रहार करता हुआ सुशोभित होने लगा।

परितः पातितोदग्रतरवारितडिल्लताः ।

प्रावेपर्यन्त यवनान् घनाः शिवपदातयः ॥ ३९ ॥

३९. शिवाजी के पदातिरूपी बादल से भयंकर तलवाररूपी बिजलियों के चारों ओर से गिरने के कारण यवन कंपित हो गए।

स्वमुखेन स्वयोधानां सम्मुखे यो व्यक्तथयत् ।

सोऽपि संख्ये मुसेखानः शूरैस्तैरभ्यभाव्यत ॥ ४० ॥

४०. जिसने अपने योद्धाओं के सामने अपने मुंह से अपनी प्रशंसा की थी, वह मुसेखान भी उन वीरों द्वारा पराजित हो गया।

अथ ध्वस्तहये त्रस्तशस्त्रे वित्रस्तचेतसि ।

अपक्रामति संग्रामात् मुसेखानेऽभिमानिनि ॥ ४१ ॥

सद्यो यापितवैयात्ये याकुतेऽप्यपयायिनि ।

अत्याहितेन हसने व्यसनेषु निमज्जति ॥ ४२ ॥

भयशङ्कुवशे क्षिप्रमङ्कुशे विगतौजसि ।

मृदुभ्यामपकोषाभ्यां पदाभ्यामपसर्पति ॥ ४३ ॥

कातरौ भ्रातरौ हित्वा ज्यायानफजलात्मजः ।

विहाय सेनां चास्थाय रूपान्तरमपासरत् ॥ ४४ ॥

४१-४४. फिर घोड़ा नष्ट हो गया, शस्त्र गिर गये और मन भयभीत हो गया, ऐसी स्थिति में वह अभिमानी मुसेखान नष्ट कर दिया गया, बड़े भय से हसन संकट में मग्न हो गया। भयभीत होकर सुकोमल पैरों से युक्त अङ्कुशखान सामर्थ्य के नष्ट होने से शीघ्र दबे पांव निकल गया, भयभीत दोनों भाईयों को छोड़कर तथा सेना को भी छोड़कर अफजलखान का पिता वेष बदलकर भाग गया।

ततस्तद्येदिलानीकमपारमपनायकम् ।

पलायमानमभितः शिवसैन्यैर्युध्यत ॥ ४५ ॥

४५. तत्पश्चात् आदिलशाह की विशाल एवं नायक से हीन सेना पलायन करने लगी तो शिवाजी के सैनिकों ने उन पर चारों ओर से प्रहार किया।

युध्यध्वं मां भृशबलं भ्रातरं शाहभूभुजः ।

मम्बो वदन्निदं तत्र बत बन्धादमुच्यत ॥ ४६ ॥

४६. शहाजीराजा का भाई जो मैं भोंसले हूँ, मेरे से युद्ध करो, इस प्रकार बोलते हुए मंबाजी को वहीं पर जन्म बंधन से मुक्त कर दिया।

पौत्रः फरादखानस्य नाम्ना यो रणदूलहः ।

तेजसा तीव्रतीतव्रेण सर्वेणापि सुदुःसहः ॥ ४७ ॥

साहसी शोणतनयः कोपी कोणपविक्रमः ।

युगदीर्घभुजो मानी घनसंहननो युवा ॥ ४८ ॥

स निजं प्रहयन्नेव शैलशृङ्गसमं शिरः ।

शिवसैन्यवशं यातो बत बन्धमुपाददे ॥ ४९ ॥

४७-४९. अत्यन्त तेजस्वी पराक्रम के कारण सभी के लिए अत्यन्त दुःसह, पराक्रमी, शोण के पुत्र, क्रोधी, राक्षस की तरह पराक्रमी, जुए की तरह दीर्घ भुजाओं से युक्त, अभिमानी, सुदृढ़ शरीर वाला, जवान, फरादखान का पौत्र रणदुल्ला, वह पर्वत के शिखर के समान अपने सिर को नमन करते ही शिवाजी की सेना के अधीन होकर कैद हो गया।

सभयोऽबरखानस्य तनयोऽबरनामकः ।

तदा विवर्णवदनो बत जीवितकामुकः । ५० ॥

विन्यस्तवर्मनिस्त्रिंशचर्मशक्तिशरासनः ।

शिवसैन्यवशं यातो बत बन्धमुपाददे ॥ ५१ ॥

५०-५१. अंबरखान का पुत्र भयभीत अंबर निस्तेज होकर प्राण बचाने की इच्छा से कवच, तलवार, ढाल और धनुष फेंककर शिवाजी के सैनिकों के अधीन होकर कैद हो गया।

मतङ्गजवदुन्मत्तो राजजिन्नाम घाण्टिकः ।

शिवसैन्यवशं यातो बत बन्धमुपाददे ॥ ५२ ॥

५२. हाथी के समान मदमस्त राजाजी घाटगे यह शिवाजी की सेना के अधीन होकर कैद हो गया।

निजाग्रजपरित्यक्तौ यौ तावफजलात्मजौ ।

शिवसैन्यवशं यातौ बत बन्धमुपेयतुः ॥ ५३ ॥

५३. जिनको उनके पिता एवं भाईयों ने छोड़ दिया था, वे अफजलखान के पुत्र शिवाजी की सेना के अधीन होकर कैदे हो गये।

अन्येऽपि येदिलानीकनायकाश्छिन्नसायकाः ।

सहस्रिणो द्विसाहस्राः त्रिसाहस्राश्च भूरिशः ॥ ५४ ॥

पञ्चषट्सप्तसाहस्राः त्रिदशारिसमश्रियः ।

शिवसैन्यवशं याता बत बन्धमुपाययुः ॥ ५५ ॥

५४-५५. एक हजार, दो हजार, तीन हजार, पांच हजार, छः हजार, सात हजार ऐसे राक्षस की तरह आदिलशाह के दूसरे भी अनेक तेजस्वी सेनापति बाण के टूट जाने से शिवाजी को सेना के अधीन होकर कैद हो गये।

पातितैश्च पतद्भिश्च पात्यमानैः पलायितैः ।

तद्वीराशंसनं वीरैरगमद्वर्णनीयताम् ॥ ५६ ॥

५६. गिरा दिये गए, गिरने वाले, गिराये जाने वाले एवं भागे हुए वीरों से अत्यन्त भयंकर वह युद्धभूमि वर्णनीयता को प्राप्त हो गई।

पाशैः प्रासैश्चंद्रहासैः पट्टिशैश्च परश्वथैः ।

मुद्गरैः परिघैस्तद्वत् त्रिशूलैस्तोमरैरपि ॥ ५७ ॥

गदाभिश्शक्तिभिश्चापैर्निषङ्गैरिषुपूरितैः ।

खेटकैश्चापि चक्रैश्च छुरिकाभिः कटारकैः ॥ ५८ ॥

तनुत्रैश्च शिरस्त्रैश्च स्वर्णसारसनैस्तथा ।

तलत्रैरङ्गुलित्रैश्च यन्त्रैराग्नेयसंज्ञिकैः ॥ ५९ ॥

आनकप्रमुखैर्वाद्यैः पताकाभिर्ध्वजैरपि ।

बिरुदैरातपत्रैश्च प्रकीर्णैश्च प्रकीर्णकैः ॥ ६० ॥

उल्लोचैः काण्डपटकैरनेकैः पटमण्डपैः ।

नैकवर्णैः सुविस्तीर्णैः महार्हक्षौमजन्मभिः ॥ ६१ ॥

त्रिपदैः करकैः स्थालैश्चषकैश्च पतद्ग्रहैः ।

चतुष्कैर्मञ्चकैश्चापि रूप्यकाञ्चननिर्मितैः ॥ ६२ ॥

इतस्ततः परिस्रस्तैस्तैर्वस्त्रैश्च भूरिशः ।

अन्यैरपि महासैन्यसंभारैरभितः श्रिता ॥ ६३ ॥

विवृतास्यपरिस्पष्टदशनैः स्तब्धलोचनैः ।

शिरोभिर्विगतोष्णीषैरुग्रवेषवती क्वचित् ॥ ६४ ॥

आबाहुमूलात्पतितैर्धृतरत्नाङ्गुलीयकैः ॥

क्वचित्प्रसाधताङ्गीव कोमलाङ्गुलिभिः करैः ॥ ६५ ॥

स्थूलस्थूणोपमैर्मूलाच्छिन्नैरुभिरुरुभिः ।

जानुजंघाग्रविभ्रष्टैरङ्घ्रिभिश्चोच्छ्रिता क्वचित् ॥ ६६ ॥

गृधैरुत्कृत्तमस्तिष्कग्रासग्रसनलम्पटैः ।

पटुचञ्चूपटैः पक्षप्रच्छायितपथा क्वचित् ॥ ६७ ॥

आपतन्निजयूथ्योग्रस्यत्कोष्टकुलाकुला।

क्षतजोत्क्षेपणक्रीडड्डाकिनीमण्डला क्वचित् ॥ ६८ ॥

दर्शितोदग्रदन्ताग्रनिकृत्तान्त्रवसामिषैः ।

सुतलोहितलिप्ताङ्गैः पिशाचैश्चाञ्जिता क्वचित् ॥ ६९ ॥

हरहारविधिप्रीतयोगिनी योगिनी क्वचित् ।

सा तदाधिगतार्थाभूज्जयवल्लीवनावनी ॥ ७० ॥

५६-७०. पाश, भाले, तलवार, पट्ट, परशु, मुद्गर, परिघ, त्रिशूल, तोमर, गदा, शक्ति, धनुष, बाणों से पूर्ण तरकस, ढाल, चक्र, चाकू, कटार, कवच, शिरस्त्राण, सोने की कमर की बेल्ट, चमड़े के दस्ताने, चमड़े के हाथ, तोप, दुंदभी आदि वाद्य, पताका, ध्वज, बिरुद, इधर-उधर गिरे हुए छातें, छत, कर्ण आभूषण, अनेक रंगों से युक्त, अत्यधिक विशाल एवं अतिमूल्यवान्, अनेक तंबू, कलस, बर्तन, शराब के पात्र, थूंकने का पात्र, चांदी एवं सोने के पलंग, इधर-उधर गिरे सामान से व्याप्त खुला मुंह होने के कारण दांतों का स्पष्ट दिखना निश्चल नेत्र, पगड़ी रहित सिरों के द्वारा उग्र स्वरूप, रत्नों की अंगुठियों से युक्त, कोमल उंगुलियों के कन्धे के पास से टुटकर गिरे हुए हाथों से, मानों शरीर श्रृंगारित प्रतीत हो रहा था, जोड़ों के पास से टुटे हुए एवं बड़े खम्बे की तरह भारी जांघों वाले, घुटनों एवं टखनों के पास से टुट हुए पैरों से कहीं उंची हो गई, मस्तक से टुटे हुए भाग को खाने में मग्न, तीक्ष्ण चोंच वाले गिधड़ों के पंखों की उसके मार्ग पर छाया पड़ रही थी, दौड़कर आने वाले अपने स्वामी से अत्यन्त डरने वाले लोमड़ी के झुंड से व्याप्त और कहीं पर रक्त को उड़ाकर खेलने वाला डाकिनियों का मण्डल था, जिन्होंने भयंकर दन्ताग्र से चमड़ी, मांस तोड़कर बाहर निकाला है एवं जिनके अंगों को ढोने से रक्तरंजित पिशाचों से व्याप्त, कहीं पर शंकर को चढ़ाई गई माला से आनन्दित योगिनीयों से युक्त ऐसी वह जयवल्ली की अरण्यभूमि, उस समय जयवल्ली नाम के योग्य बनीं।

इति जितपरानीकास्ते ते पदातिबलाधिपाः ।

प्रमुदितहृदस्सर्वे खर्वेतरस्मयसङ्गताः ॥

सरभसमथो बद्धानद्धा विरुद्धचमूपतीन् ।

पदि पदि पुरस्कुर्वन्तस्तांछिवं समलोकयन् ॥ ७१ ॥

७१. इस प्रकार शत्रु सेना को जीतकर उस पदाति के सभी सेनानायक आनन्दित एवं अतिशय गर्व से युक्त हो गये। फिर वेग से कैद किए गए उन शत्रु के सेनापतियों को पग-पग पर आगे ढकलते हुए उनको शिवाजी के दर्शन करवाये।

केचित् संयति पातिताः सकुतुकं केचिच्च विद्राविताः ।

संरब्धेन शिवेन ते प्रतिभटाः केचिच्च बन्दीकृताः ॥



एतत्तत्र जगत्रयस्थितिपरे राजन्यलीलाधरे ।

दुष्टध्वंसकरे धराभयहरे चित्रं न विश्वम्भरे ॥ ७२ ॥

७२. कुछ को युद्ध में मार दिया, कुछ को कौतुक के साथ भगा दिया और कुछ शत्रु योद्धाओं को क्रोधित शिवाजी ने जेल में डाल दिया, तीनों लोगों की रक्षा करने वाले, दुष्टों का नाश करने वाले, पृथ्वी के भय को समाप्त करने वाले एवं क्षत्रिय लीला करने वाले विश्वभर के लिए क्या यह आश्चर्य कारक नहीं है?

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां

संहितायां अफजलसैन्यभङ्गो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

## अध्याय:-२३

अथ तत्तच्छिरोवेष्टश्लिष्टदोर्द्वयपृष्ठकान् ।

उष्णक्लान्तान्निरुष्णीपान्नमग्रीवान् विचेतसः ॥ १ ॥

विकृष्टान् सैनिकैः स्वीयैः परसेनापतीन् पुरः ।

पुंजीभूतान् प्रतापाद्रौ शिवराजो व्यलोकत ॥ २ ॥

१-२. कवीन्द्र बोले - तत्पश्चात् उन उनकी पगड़ी से पीछे दोनों हाथों से बंधे हुए, धूप से निस्तेज मुंहवाले, पगड़ी रहित, नीचे गर्दन किए हुए, खिन्न मन वाले ऐसे शत्रुपक्ष के सेनापति अपने सैनिकों को खींचकर अपने सामने इकट्ठे किए हुआओं को शिवाजी ने देखा।

ततोऽरिसैन्यादानीतान् सौवर्णान् राजतान् पणान् ।

मञ्जूषान्तरनिक्षिप्तान् रत्नराशीननेकशः ॥ ३ ॥

तथा मुक्तामयान् हारान् हेमभारांश्च भूरिशः ।

स कुबेरगृहाकारे कोषागारे न्यधापयत् ॥ ४ ॥

३-४. फिर शत्रु की सेना से लाए गए सोने एवं चांदी के सिक्के को, पेटियों में रखें हुए स्थायी रत्नों के समूह को, उसी प्रकार मोतियों के हार और सोने के अनेक ढेर उसने कुबेर के घर की तरह अपने कोषागार में रखवा दिये।

मनीषिणः उचुः-

अल्लीशाहस्य तां सेनां सहितः पत्तिसेनया ।

जयवल्लीवनाम्भोधौ न्यमज्जयदयं शिवः ॥ ५ ॥

तावत्सेनापतिस्तस्य सहितः सप्तिसेनया ।

क्व नु स्थितो किमकरोत् कवीन्द्र तदुदीरय ॥ ६ ॥

५-६. पण्डित बोले - पदातियों से युक्त इस शिवाजी राजा ने अल्लीशाह की सेना को जयवल्ली के अरण्यरूपी सागर में डुबों दिया तब तक उसका सेनापति घुड़सवारों के साथ कहां पर था? उसने क्या किया? हे कवीन्द्र बताओ।

बलादफजलं नाम दनुजं हन्तुमुद्यतः ।

प्रस्थितोऽमित्रविजयी जयवल्लीं यदा शिवः ॥ ७॥

तदा तदाशया तूर्णं प्रस्थितः पृतनापतिः ।

द्विपां बबन्ध राष्ट्राणि बभञ्ज नगराणि च ॥ ८ ॥

७-८. कवीन्द्र बोला - अफजलखान नामक राक्षस को बल से मारने के लिए सज्ज होकर शत्रुनेता शिवाजी जब जयवल्ली के लिए निकला तो उसकी आज्ञा से सेनापति ने तुरन्त प्रस्थान करके शत्रु के प्रान्तों को अधीन कर लिया और नगरों को नष्ट कर दिया।

अस्मिन्नवसरे स्वामिकार्यैकनिहितात्मना ।

वैराटवर्तिना तेन यवनेनाभिमानिना ॥ ९ ॥

प्रहिताः स्वहिताः सैन्यपतयस्तीवविक्रमाः ।

उपचक्रमिरे शैवं राष्ट्रमाक्रमितुं क्रमात् ॥ १०॥

९-१०. इस अवसर पर स्वामिकार्य में अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले उस वाई प्रान्त में स्थित अभिमानी यवन द्वारा प्रेषित अपना हित करने वाले एवं महापराक्रमी सेनापति शिवाजी के देश पर क्रम से आक्रमण करने लगे।

यादवः शूर्पविषयं पांडरश्च शिरोबलम् ।

खराटः साहसवटं हिलालः पुण्यनीवृतम् ॥ ११ ॥

हपसः सैफखानश्च परसैनिकसंकटम् ।

प्रविश्य निग्रहेणैव जग्राह तलकोंकणम् ॥ १२ ॥

११-१२. जाधव ने शूर्पप्रान्त, पांडर ने शिरबक, खराट ने सासवड़, हिलाल ने पुणे प्रान्त, हबशी और सैफखान ने मराठाओं से व्याप्त तल कोंकण में प्रवेश करके जबरदस्ती उन प्रान्तों को ले लिया।

ततः शिवस्य सेनानी श्रुत्वा तां देशदुःस्थताम् ।

कृतामायोधनपरैः परैरफजलाशया ॥ १३ ॥

सहितः सप्तिभिः सप्तसाहस्रैः पत्तिभिस्तथा ।

संपरायपरः श्रीमान् स्वामिकार्याभियोगवान् ॥ १४ ॥

परावृत्य महाबाहुर्महाबाहुजिगीषया ।

प्रायात् पतगराहाः शिवराष्ट्रमनामयम् ॥ १५ ॥

१३-१५. तब अफजलखान की आज्ञा से युद्धपरायण शत्रुओं द्वारा देश की की हुई दुर्दशा को सुनकर, युद्ध के लिए उत्साहित, विख्यात, स्वामिकार्यनिष्ठ, पराक्रमी, गरुड की तरह वेगवान् शिवाजी का सेनापति सात हजार घुड़सवार एवं पदातियों के साथ लौट आया और उस पराक्रमी सेनापति को जीतने की इच्छा से शिवाजी के सुखसम्पन्न देश में चला गया।

खराटं पांडरं चाथ यादवं च सुदुर्जयम् ।

हिलालं सैफखानं च विधास्ये शमनातिथिम् ॥ १६ ॥

सेनापतेरिमां सन्धां समाकर्ण्य शिवः स्वयम् ।

तस्मै निजेन दूतेन द्रुतमेतदवेदयत् ॥ १७ ॥

१६-१७. खराटे, पांडरे, अजिंक्य जाधवराव, हिलाल और सैफखान को मैं यमलोक भेजता हूँ, ऐसी अपने सेनापति की प्रतिज्ञा को सुनकर शिवाजी ने स्वयं अपने दूत के माध्यम से उसको तुरन्त संदेश प्रेषित किया।

यवनोऽफजलो नाम दानवो दुरतिक्रमः ।

जयवल्लीमिमामेति ससैन्यः सन्धिकाम्यया ॥ १८ ॥

१८. अफजलखान नामक दुर्जेय यवन राक्षस सेना के साथ संधि करने की इच्छा से जयवल्ली आ रहा है।

तस्मात्त्वया न योद्धव्यं तस्य तैः सैनिकैः समम् ।

सन्नद्धेनैव च स्थेयं यावत्सन्धिविनिर्णयः ॥ १९ ॥

१९. अतः उस सन्धि के निर्णय होने तक तू उसके सैनिकों के साथ युद्ध मत कर किन्तु तैयार रहो।

भवेदहन्यथो यस्मिन् मम तस्य च दर्शनम् ।

तस्मिन्नैवान्तिके कुर्यास्त्वं वैराटमसंशयम् ॥ २० ॥

२०. और जिस दिन उसकी और मेरी मुलाकात होगी, उस दिन तू वाई निःसंशय होकर जा।

इत्यादिष्टः स्पष्टमेव स परं शिवभूभृता ।

नायुध्यत परैः सार्धं मध्य एव व्यवस्थितः ॥ २१ ॥

२१. इस प्रकार शिवाजी राजा की स्पष्ट आज्ञा से आगे शत्रुओं से न लड़कर वह बीच में ही स्थित हो गया।

अथ युद्धमभूद् यस्मिंश्छिवाफजलयोर्द्वयोः ।

वैराटमाययौ सैन्यपतिस्तस्योत्तरेऽहनि ॥ २२ ॥

२२. आगे जिस दिन शिवाजी एवं अफजलखान इन दोनों के बीच युद्ध हुआ तो उस दिन ही सेनापति नेताजी पालकर वाई आ गया।

तेन ते न धृतास्तेन विद्रुताः सर्वतोदिशम् ।

मुसेखानप्रभृतयो दुर्धर्षास्त्रिषद्विषः ॥ २३ ॥

२३. उसने पकड़े नहीं अतः मुसेखान आदि दुर्जेय राक्षस दसों दिशाओं में भाग गए।

स आरोहः सोऽवरोहः स पन्थाः सा महावनी ।

स विरोधी स परिधिः सा निशा स पराभवः ॥ २४ ॥

स वैषः स च संत्रासावेशः साप्यसहायता ।

जयवल्लीपरिसदादमी कथमपासरन् ॥ २५ ॥

२५. पण्डित बोलें- वह चढ़ाई, वह अवतरण, वह दुर्गम मार्ग, वह महारण्य, वह विरोधी, वह सीमा, वह भीषण रात्रि, वह पूर्ण पराभव, वह कंपकपाती अवस्था और वह असहाय स्थिति इस प्रकार जयवल्ली के चारों तरफ का स्थान होते हुए भी वे किस प्रकार भाग गए।

पातितेऽफजले तस्मिंश्छिवेन शिवपत्तयः ।

पलायमानानभितो यवनान् पर्यवारयन् ॥ २६ ॥

२६. कवीन्द्र बोले - उस अफजलखान को शिवाजी ने मार दिया तो पलायन करने वाले यवनों को शिवाजी के पदातियों ने चारों ओर से घेर लिया।

मुसेखानश्च हसनो याकुतश्चांकुशस्तथा ।

नासहन्त परं तत्र परैः कृतमतिक्रमम् ॥ २७॥

२७. मुसेखान, हसन, याकुत और अंकुश इनको शत्रुओं द्वारा किया हुआ अपमान सहन नहीं हुआ।

अपराह्णे महानासीत् तेषां तेषां च संगरः ।

प्रोत्पतन्निपतद्धेतिमहोत्पातभयंकरः ॥ २८ ॥

२८. मध्याह्न में उन दोनों मराठा एवं मुसलमान सेनाओं के बीच ऊपर उड़ने वाले एवं नीचे गिरने वाले शस्त्रों के बड़े उत्पात से भयंकर युद्ध हुआ।

सा शैलभूमिः पत्तीनां हिता वै नाश्वसादिनाम् ।

यवनास्ते ततो भग्नाः संमनाः साध्वसार्णवे ॥ २९ ॥

२९. वह पर्वत युक्त प्रदेश पदातियों के लिए अनुकूल किन्तु घुड़सवारों के लिए प्रतिकूल था। अतः उन यवनों के मनोरथ भग्न होने से वे भय के सागर में डूब गये।

परस्परैकमनसः पालयन्तः परस्परम् ।

द्विषद्भ्यागमधिया वीक्षमाणा दिशो दश ॥ ३० ॥

अतीव तुंगान् मातंगांस्तुरगान् सुमनोहरान् ।

अपारान् कोषसंभारान् परिवारान् प्रियानपि ॥ ३१ ॥

विहायापसृतास्तस्मात् समरादमरारयः ।

ताम्यन्तस्तामसाधयस्ते तरूनतरान्तरा ॥ ३२ ॥

भ्रमन्तः कातरतराः परेषां दृगगोचराः ।

कण्टकाविद्धसर्वागाः क्षतजार्द्राः क्षतौजसः ॥ ३३ ॥

शिलाशीर्णोरुपर्वाणो मार्गान्वेषणतत्पराः ।

पुरः प्रतापवर्माणं चंद्रराजस्य बान्धवम् ॥ ३४ ॥

वित्रस्तं वञ्चितदृशं द्वित्रैरेव जनैर्वृतम् ।

द्राग विद्रवन्तमद्राक्षुरक्षुद्राः क्षुद्रताजुषः ॥ ३५ ॥

३०-३५. परस्पर एकचित्त होकर, एक-दूसरे की रक्षा करता हुआ शत्रु आक्रमण करेगा, इस बुद्धि से दसों दिशाओं में देखते हुए अत्यन्त उन्नत यवन, हाथी, अत्यन्त सुन्दर घोड़े, विशाल कोष और प्रिय परिवार को भी छोड़कर उस युद्ध से भाग गये। दुःखी, तमोगुणी, पेड़ों के बीच में भटकने वाले, अत्यन्त भयभीत शत्रुओं की दृष्टि से बचते हुए कांटों से सम्पूर्ण अंगों के विदीर्ण हो जाने से, रक्तरंजित, हतबल, पत्थर पर पायु एवं घुटनों के फुटने से, मार्ग के अन्वेषण में मग्न, अक्षुद्र होते हुए भी क्षुद्र बने हुए उन यवनों ने भयभीत, आंखों से नष्ट हुए, दो-तीन मनुष्यों के साथ वेग से भागते हुए चन्द्रराव के भाई प्रतापराव को संमुख देखा।

अथायुधभृतः सर्वे सद्यःक्षुभितमानसाः ।

निहन्तव्योऽयमित्युच्चैर्ब्रुवन्तस्ते तमब्रुवन् । ३६ ॥

३६. तब सभी सैनिकों के अचानक विचलित हो जाने से इसको मारना चाहिए, इस प्रकार उच्चध्वनि में उससे बोलें।

पुरा कर्णेजपीभूय पुनः पुनरुपेयुषा ।

मिथ्यानुलापिना नित्यं निजच्छद्वापलापिना ॥ ३७ ॥

त्वयैवानीयाफजलः स महानीकनायकः ।

सहसा सहितोऽस्माभिः कालानलमुखे हुतः ॥ ३८ ॥

३७-३८. पहले चुगलखोर बनकर बारंबार आकर, सदा झूठ बोलकर एवं अपने कपट को छिपाकर उस महासेनापति अफजलखान को लाकर हमारे सहित उसकी प्रलयाग्नि के मुख में अचानक आहुति दे दी।

एवमुक्तवतस्तांस्तु हन्तुमुद्यमितायुधान् ।

स निबद्धाञ्जलिः क्रुद्धान् प्रणनाम पुनः पुनः ॥ ३९ ॥

३९. इस प्रकार बोलकर मारने के लिए शस्त्र उठाए हुए एवं क्रोधित उन सैनिकों को प्रतापराव मोरे ने हाथ जोड़कर पुनः-पुनः प्रणाम किया।

मुसेखानस्ततस्तत्र दृष्ट्वा काकुरवाकुलम् ।

ऊचे करुणयैवेनं नीचीकृतनिजस्वरः ॥ ४० ॥

४०. तत्पश्चात् वहां उसको काकुध्वनि से बोलता हुआ देखकर मुसेखान ने अपने स्वर को धीमा करके उसको करुणा से बोला।

तव दृष्टचरैवेयमटवी गाढसंकटा ।

अतोऽस्मानप्रतो भूत्वा नय केनचिदध्वना ॥ ४१ ॥

४१. मुसेखान बोला - यह गहन एवं दुर्गम अरण्य तूने पहले देखा ही है। अतः अग्रणी होकर किसी मार्ग से हमें बाहर लेकर चला।

वैराटं विषयं गत्वा वयं त्वामात्मदायिनम् ।

सौहृदादुपकर्तारः सखायमिव सुव्रतम् ॥ ४२ ॥

४२. वाईप्रांत पहुंचने पर हम तुझ प्राणदाता पर निष्ठा से मित्र की तरह प्रेम से उपकार करेंगे।

स इमां गिरमकार्ण्य मुसेखानमुखोद्गताम् ।

तथेति संप्रतिश्रुत्य भृशविश्रब्धमानसः ॥ ४३ ॥

केनाप्यज्ञायमानेन दृष्टपूर्वेण वर्त्मना ।

द्राक्तान् निष्कामयामास शिवस्य विषयाद्वहिः ॥ ४४ ॥

४३-४४. मुसेखान के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर वैसा ही करता हूं, ऐसा वचन देकर अत्यन्त निश्चिन्तता के साथ वह प्रतापराव अज्ञात एवं स्वयं पूर्व देख गये मार्ग से उनको शिवाजी के प्रान्त से बाहर निकाल दिया।

तथाविधानुजत्यागाल्लज्जितोऽफजलात्मजः ।

विन्यस्तपूर्वान् वैराटे तातेनाश्वांश्च कुंजरान् ॥ ४५ ॥

संभारानवरोधांश्च कोषान् योधांश्च कांश्चन

आदाय दूयमानात्मा द्रुतमस्माद्विनिर्ययौ । ४६ ॥



४५-४६. उस प्रकार छोटे भाई को छोड़कर आने से लज्जित होकर अफजलखान का पुत्र, पिता द्वार वाईप्रान्त में स्थापित हाथी, घोड़े, सामग्री, खजाना एवं कुछ योद्धाओं को साथ लेकर दुःखी अंतःकरण से वहां से तत्काल निकल गया।

अनुदुत्यापि नाद्राक्षीद्यदा तान् द्रुतविदुतान् ।

तदा सेनापतिर्नेता पुनर्वैराटमागमत् ॥ ४७ ॥

४७. वेग से पलायन करते हुए उसका पीछा करने पर भी जब उनको वह नहीं दिखा तो सेनापति पालकर पुनः वाई गया।

शिवोऽपि विहितद्वेषादल्लीशाहात्सुदुर्मतेः ।

बली बलेन विषयं क्षिप्रमादातुमुद्यतः ॥ ४८ ॥

प्रस्थानभेरीझांकारझांकारितदिगन्तरः ।

प्रभावी बहुभिः सैन्यैर्वैराटं स्थानमासदत् ॥ ४९ ॥

४९. बलवान् एवं प्रतापी शिवाजी भी अपने से द्वेष करने वाले एवं अत्यन्त दुष्ट बुद्धि आदिलशाह से बलात् देश को शीघ्र अधीन करने के लिए सज्ज होकर, प्रस्थान दुंदुभी के घोष से दिशाओं को प्रतिध्वनित करके साथ में विशाल लेकर वाई प्रान्त पहुंच गया।

अथ स्वेन प्रभावेण कृष्णातटमकण्टकम् ।

कृतं व्यलोकत मुदा मोदितो मुदितैर्द्विजैः ॥ ५० ॥

५०. तब अपने प्रभाव से कृष्णा के तट को निष्कण्टक देखकर एवं ब्राह्मणों को आनन्दित देखकर उसको आनन्द हुआ।

ततोऽग्रयायिनं कृत्वा स तं सेनापतिं निजम् ।

अन्यमाक्रमितुं देशमुपाक्रमत विक्रमी ॥ ५१ ॥

५१. पुनः अपने उस सेनापति को आगे भेजकर उस पराक्रमी शिवाजी ने दूसरे देश पर अक्रमण करना प्रारम्भ किया।

ततस्तु तस्य सैन्यानि परसैन्येन पालितौ ।

पर्यमण्डलयं छैलावुभौ चन्दनवन्दनौ ॥ ५२ ॥

५२. आगे शत्रु सेना द्वारा रक्षित चंदन एवं वंदन इन दोनों किलों को उनकी सेना ने घेर लिया।

स नृपः श्रीपतिः साक्षादद्राक्षीदालयं श्रियः ।

श्चालयं नाम नगरं नामनिर्वासिताहितः ॥ ५३ ॥

५३. साक्षात् लक्ष्मीपति वह राजा केवल नाममात्र से ही शत्रुओं को भगाकर लक्ष्मी के घर श्चालय नामक नगर में पहुंच गया।

ततोऽफजलविध्वंसादवसन्नावनाश्रयौ ।

भृशं भृशबलानीकैः पुण्यदेशादपासितौ ॥ ५४ ॥

उभौ नायकनामानौ राजानौ यादवान्वितौ ।

खेलकर्णक्रीतपुत्रं हिलालं विश्रुतं क्षितौ ॥ ५५ ॥

पुरस्कृत्याभयं प्राप्य प्रपद्य च महाशयम् ।

न्यषेवेतां विशेषेण शिवतातिममुं शिवम् ॥ ५६ ॥

५४-५६. तत्पश्चात्, अफजलखान के विध्वंस के कारण धैर्य के नष्ट होने से तथा आश्रय से रहित हुए नायक नाम के दोनों राजाओं को जाधवराव के साथ भोसले की सेना ने पुणे प्रान्त से भगा देने के कारण खेलकर्ण का क्रीतपुत्र जो विख्यात हिलाल है, उसको आगे करके तथा उसके द्वारा अभयदान प्राप्त करके, महाशय एवं अत्यन्त दयालु शिवाजी की शरण में आकर उसका आश्रय प्राप्त किया।

उपायनान्युपानीय नमतस्तान् महाभुजान् ।

आत्मनीनतया श्रीमांश्छिवः श्रीभिः समार्थयत् ॥ ५७ ॥

५७. नतमस्तक होकर उपहार देने वाले उन बलवान् सेनापतियों को श्रीमान् शिवाजी ने अपनेपन से संपत्ति देकर समृद्ध किया।

अथ खट्वाङ्गकं मायावर्नीं रामपुरं पुनः ।

कलधौतं बाल्लवं च तथा हलजयन्तिकाम् ॥ ५८ ॥

अष्टिं चाष्टं वटग्रामं वेलापुरमुदुंबरम् ।

मसूरं करहाटं च शूर्पं ताम्रं च पल्लिकाम् ॥ ५९ ॥

नेरलं कामनगरीं विश्रामपुरमप्युत ।

सवाहमूरणं कोलं करवीरपुरं तथा ॥ ६० ॥

बलैराक्रम्य स बली बलीनादाय भूरिशः।

प्रयच्छन्नभयं वीरो न्यदधान्निजशासने ॥ ६१ ॥

५८-६१. तत्पश्चात् खटाव, मायणी, रामपुर, कलेढोण, बाल्लव, हलजयंतिका, अष्टी, अष्टे, वडगांव, वेलापुर, औदुंबर, मसूर, कराड़, सुपें, तांबे, पाली, नेरलें, कामेरी, बिसापुर, सावे, उरण, कोके और कोल्हापुर, इन स्थलों पर बलवान् वीरों ने सेना के साथ आक्रमण करके उनके पास से अत्यन्त कर लेकर और उनको अभय प्रदान करके उन स्थलों को अपने शासन में लाये।

ततो न्यस्य यथान्यासं परितः स्वां पताकिनीम् ।

सहसा स महीपालः प्रणालं शैलमावृणोत् ॥ ६२ ॥

६२. फिर अपने सेना के पास उनको व्यवस्थित रखकर उस राजा ने अचानक पन्हाळ के किले को घेर लिया।

परिमण्डलितं वीक्ष्य शैल शैलाधिवासिनः ।

क्षिप्रं वप्रमुपाश्लिष्य जगर्जुर्जलदा इव ॥ ६३ ॥

६३. किले को घेरा हुआ देखकर दुर्गवासी लोग शीघ्र तट पर चढ़कर मेघ की तरह गर्जना करने लगे।

ते शस्त्रवर्षैः सोत्कर्षैः पृथुवर्ष्मभिरश्मभिः।

परानवाकिरन्नुग्रतरैरुल्काशरैरपि ॥ ६४ ॥

६४. उन्होंने असंख्य शस्त्रों की, प्रचंड पत्थरों की एवं भयंकर उल्का बाणों की शत्रुओं पर वर्षा कर दी।

भूमानमागतैर्धूमैर्नालायन्त्राननोद्गतैः ।

नभोन्तकारितमभूद् भृशमम्भोधरैरिव ॥ ६५ ॥

६५. तोपों के मुख से निकलकर फैलने वाले धुएं से बादल की तरह आकाश को आच्छादित कर दिया।

आग्नेययन्त्रोदरनिःसृतानां नवोदितार्कप्रभविग्रहाणाम् ।

कदम्बकैरायसकंदुकानां कुतूहलान्यादित संगरश्रीः ॥६६॥

६६. तत्क्षण उदित हुए सूर्यबिंब की तरह लाल इस प्रकार तोप से निकलने वाले लोहे के गोलों की वर्षा से युद्ध को आश्चर्यचकित करने वाली शोभा प्राप्त हो गयी।

तडित्समानाः सुतरां रणन्तः प्रोत्क्षिप्यमाणाः शिवसैनिकौघैः ।

उल्काशरास्तत्र तथा निपेतुः परे यथा चेतसि नो चिचेतुः ॥ ६७॥

६७. अकाशीय विद्युत् की तरह अत्यन्त आवाज करने वाले शिवाजी के सैनिकों द्वारा फेंके हुए उल्का बाण शत्रु पर इतने गिरें की उसकी शत्रु को कल्पना भी नहीं थी।

अथायुधीयाः शिवभूमिपीयाः तं शैलमध्यारुरुहुर्बलेन।

निषिध्यमाना अपि तैः समस्तैः द्विषद्भिरुद्धूनि तहेति हस्तैः ॥६८॥

६८. तत्पश्चात् शस्त्रों का घुमाने वाले उन समस्त शत्रुओं द्वारा रोके जाने पर भी शिवाजी के सैनिक उस किले पर बलात् चढ़ गए।

उत्पत्य तत्रापततां समन्तात् ताक्ष्यक्रमाणां शिवसैनिकानाम् ।

क्रूरैः कृपाणैर्निशितैश्च बाणैः प्राणैर्व्ययुज्यन्त बत प्रतीपाः ॥ ६९ ॥

६९. चारों ओर से उछलकर आक्रमण करने वाले एवं गरुड़ की तरह वेगवान शिव सैनिकों के भयंकर तलवारों ने एवं तीक्ष्णबाणों ने शत्रु के प्राण हरण कर लिये।

शरैः शिवानीकचर प्रयुक्तैर्निपेतुषा शैलजुषा जनेन ।

मन्येऽधमणप्रतिमेन भर्ते प्रत्यर्पितोऽभूदाशतो धनौघः ॥ ७० ॥

७०. शिवसैनिकों द्वारा छोड़े गए बाणों से मरने वाले दुर्गवासियों ने मानों ऋण की तरह उपभोग किए गए धन को धनकोष से पुनः दे दिया।

सह्यस्य भर्ता द्विषतामसह्यस्तभ्यो गृहीतं सपदि प्रसह्य ।

अध्यास्य विध्याचलतुल्यकायं प्रभुः प्रणालाचलमैक्षतायम् ॥७१॥

७१. शत्रुओं के लिए असहनीय इस सहाद्री के स्वामी शिवाजी ने उनके समीप से बलात् तत्काल अधीन किए हुए विंध्याचल के समान उस पन्हाळ किले पर चढ़कर उसको देखा।

दर्पादेत्य प्रणालाचलशिरसि शिवः सैनिकैरात्मनीनैः ।

न्यस्यंस्तस्मिन्ननीकं दिनमिव निखिलां यामिनीं तामतीत्य ॥

प्राकारागारवापीविलसदुपवनापारकासारगुर्वीम् ।

दृष्टां दृष्टां मुहुस्तां श्रियमतुलतरां पार्वतीयामपश्यत् ॥ ७२ ॥

७२. अपने सैनिकों के साथ पन्हाळ किले पर गर्व से आकर वहां सेना रखकर शिवाजी ने वह संपूर्ण रात दिन की तरह व्यतीत करके वहां के तट, महल, कुएं, सुन्दर उद्यान, विशाल तालाबों द्वारा वृद्धिंगत उस किले की अनुपम शोभा को बारंबार देखा।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिनिवासकरपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां प्रणालाद्रिग्रहो नाम  
त्रयोविंशोऽध्यायः ।

## अध्याय:-२४

ते तदायोधनात् तस्मान्निधनाभावकांक्षया ।

सहसा विमुखीभूता मुसेखानपुरोगमाः ॥ १ ॥

हीनाः स्वीयेन सैन्येन हीणाश्चाफजलं विना ।

किमकुर्वत किं मत्वा गत्वा विजयपत्तनम् ॥ २ ॥

१-२.पंडित बोले तब मृत्यु से रक्षण हो जाए इस इच्छा से उस युद्ध से सहसा पलायन करके सेना रहित एवं अफजल खान के न होने से लाज ऐसे उस मुसे खान प्रवृत्ति सेनापतियों ने बीजापुर जाकर क्या विचार किया और क्या किया?

निशम्याफजस्यांतं प्रणालाद्रिप्रहं तथा ।

स्वयं पुनः किमकरोद्येदिलो भृशबालिशः ॥ ३ ॥

३.अफजल खान की मृत्यु को एवं पन्हास किले की पर आदि नेता को सुनकर अति मूर्ख आदिलशाह ने स्वयं पुनः क्या किया?

तं च शैलं समादाय बलादफजलांतकः ।

स विश्वविजयी वीरश्चरितं किंविधं व्यधात् ॥ ४ ॥

४.और उस किले को बलात लेने के बाद अफजल खान को मारने वाले उस विश्व विजेता वीर ने क्या किया?

मुसेखानः फाजिलेन याकुतेनाकुशेन च ।

हसनेन च संभूय निजेनाभिजनेन च ॥ ५ ॥

विजयाहं पुरं गत्वा नत्वा स्वामिनमात्मनः ।

प्रहग्रीवः पुरोवर्ती बद्धांजलिपुटोऽभवत् ॥ ६ ॥

५-६. कविंद्र बोला काजल याकूत अंकुश हसन और अपने परिवार के साथ बीजापुर जाकर अपने स्वामी को प्रणाम करके तथा नतमस्तक होकर अपने स्वामी के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

येदिलस्तमथोद्वीक्ष्य विषीदंतमधोमुखम् ।

जगाद गर्वगर्भाभिर्गीर्भिरुत्साहयन् भृशम् ॥ ७ ॥

७. वह दुःखी एवं नतमस्तक हैं ऐसा देखकर, आदिलशाह गरबा युक्त वचनों से उस को प्रेरित करते हुए बोला।

सहसा साहसात् स्वामिकार्यव्ययितजीवितः ।

स यातस्तां दशां तर्हि न यातः शोचनीयताम् ॥ ८ ॥

कृतहस्तः स्वयं तत्र कुसृतिप्रकृतिः परः ।

तमेकाकिनमाहय हतवान् विजने वने ॥ ९ ॥

यद्ययास्यत् तदा तत्र सेनामादाय भूयसीम् ।

असावजलस्तर्हि नायास्यत् तादृशीं दशाम् ॥ १० ॥

८-१०. आदिलशाह बोला- सहसा साहस करने के कारण स्वामी कार्य के लिए प्राणों को न्यौछावर करने वाले उसको (अफजलखान) यदि यह अवस्था प्राप्त हुई है तो वह सोच नीयत को प्राप्त हुआ है ऐसा नहीं है।

स्वयं धनुष कला में निपुण और कपटी स्वभाव वाले शत्रु ने उसको वहां अकेला बुलाकर निर्जन वन में मार दिया।

न हि साहसमात्रेण सिद्धिमायान्त्युपक्रमाः ।

अलं फलाय महते सनयाः किल विक्रमाः ॥ ११ ॥

११. केवल साहस से ही कार्य सिद्धि को प्राप्त नहीं होते हैं किंतु बुद्धिमत्ता के प्रक्रम में ही वास्तव में महान फलदायक होता है।

विपिनेऽफजलं तत्र यो हन्त हतवान् रुपा ।

आशीविष इवोच्छीर्षगतो नोपेक्ष्य एव सः ॥ १२ ॥

१२. अरे रे! उसे वन में अफजल खान को जिसने क्रोध से मार दिया उसकी सिर स्थित वैशाली सांप की तरह उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

अविषह्यतमं तस्मात् तमागस्करमात्मनः ।

शल्यतुल्यं सह्यशैलादुद्धरिष्यामि सर्वथा ॥ १३ ॥

१३.अतः मेरे विरुद्ध अपराध करने वाले अत्यंत असहनीय शिवाजी को सैया जी से कांटे की तरह पूर्ण कर फेकता हूं।

बत प्रस्थाय वैराटमास्थितः सोऽपि संप्रति ।

सद्यः समुह्य सैन्यानि प्रणालाद्विमुपैष्यति ॥ १४ ॥

१४.अरे! वर्तमान में वह भी प्रस्थान कर के वाई आया है। तत्काल सेना लेकर वह तन्हा अकेले के लिए प्रस्थान करेगा।

निगति प्रणिधयः किवदंतीमिमामिह ।

तस्मात् सर्वेऽप्यभिकम्य कुरुध्वमतिविक्रमम् ॥ १५ ॥

१५.इस प्रकार यह गुप्तचर इस बात को यहां कह रहे हैं अतः तुम सब उस पर आक्रमण करके बड़ा पराक्रम करो।

तत्तद्देशजुषस्तांस्तानानाय्यानीकनायकान् ।

परनिग्रहणायोच्चैर्जागरूकानिव ग्रहान् ॥ १६ ॥

साहाय्याय समुन्नद्धान् संदोह्याभ्यांश्च सैनिकान् ।

अहर्दिवमविश्रांताः प्रयात पतगा इव ॥ १७ ॥

१६-१७.शत्रु का नाश करने के लिए ग्रहों की तरह अत्यंत जागरूकता के साथ उन पर प्रांतों के सेनानायक को सहायता के लिए बुलाकर और दूसरे भी अभिमानी सेनापतियों को सहायता के लिए भेजकर तुम पक्षी की तरह रात दिन बिना विश्राम के आक्रमण करते रहो। स्वराज खान के पोते महान योद्धा भिवानी तुम अजमान को हमारी सेना का सेनापति रहने दो।

फरादसूनुस् नुहिं नाम्ना यो रुस्तुमेजनः ।

स पृथुप्रधनश्चाघी पृतनापतिरस्तु नः ॥ १८ ॥

इत्युक्तास्तेन सर्वेऽपि सत्कृताश्च यथोचितम् ।

तमात्मनः परिवृढं प्रणिपत्य प्रभाविणम् ॥ १९ ॥

ते सैन्यपतयस्तस्मात् पुरात् विजयसाह्वयात् ।



कृतक्ष्वेडारवोदग्राः समग्रा अपि निर्ययुः ॥ २० ॥

१८-२०. इस प्रकार उन सब के साथ बोल कर उसने उनका यथोचित सत्कार किया तत्पश्चात में सभी सेनापति अपने सामर्थ्य वान स्वामी को प्रणाम करके भयंकर गर्जना करते हुए बीजापुर से बाहर निकल गए।

अथ संप्रेषितचरा चरास्ते येदिलांतिके ।

तमुदन्तं प्रणालाद्वेद्भुतमेत्य न्यवेदयन् ॥ २१ ॥

२१. तत्पश्चात पहले भेजे गए गुप्तचरो ने आदिलशाह के समीप शीघ्र आकर उस पनहा किले से संबंधित समाचार सुनाया।

निशम्य येदिलस्तेन नरेन्द्रेण करे कृतम् ।

अन्वशोचत् तमचलं फणी फणमिवोन्नतम् ॥ २२ ॥

२२. अपने उन्नत फन को गरुड़ के द्वारा पकड़ने पर जिस प्रकार सांप को दुख होता है उसी प्रकार उस उत्कृष्ट किले को "उस राजा ने अधीन कर लिया है ऐसा सुनकर आदिलशाह दुखी हुआ।

तमद्रिम द्विपतिना शिवेन स्ववशीकृतम् ।

अल्लीशाहोऽन्वहं चित्तं चिंतया पर्यतप्यत ॥ २३ ॥

२३. किले के स्वामी शिवाजी ने उसके लिए को अधीन कर लिया है ऐसा सुनकर आदिल साहब प्रतिदिन चिंता से मन में संतप्त हो रहा है।

अथात्मानमपर्याप्तं मन्वानस्तद्विनिग्रहे ।

द्रुतमानाययामास दिल्लीपतिपताकिनीम् ॥ २४ ॥

२४. तब उसको निग्रहित करने के स्वयं को असमर्थ मानते हुए उसने दिल्ली के बादशाह की सेना को शीघ्र सहायता के लिए बुलवाया।

शिवराजोऽपि तच्छ्रुत्वा घनसंनाहशालिनः ।

परसैन्यपतीन् भूयः संपरायाभिलाषिणः ॥ २५ ॥

नियुज्य पृतनामुग्रां प्रणालाचलपालने ।

स्वयमुत्साहवानुच्चैरुत्सुकस्तज्जिगीषया ॥ २६ ॥

स्फुरद्धेतिशतोदग्रदवाग्निसमविभ्रमैः ।

सैन्यैः समन्वितस्तैस्तैः पुरस्तात् तरसाभवत् ॥ २७ ॥

२५-२७.तब शिवाजी ने भी शत्रु पक्ष के सुदृढ़ युद्ध विषधारी सेनापति युद्ध करना चाहते हैं ऐसा सुनकर बंधक किले की रक्षा के लिए उग्रसेना को रखकर स्वयं उत्साही एवं उनको जीतने की इच्छा से अत्युत्सुक ऐसा वह चमकदार सैकड़ों शस्त्रों के कारण भयंकर दावा अग्नि के समान शोभायमान उस सेना के साथ वेग से आगे बढ़ गया।

परेऽपि रुस्तुमं नाम पृतनाधिपतिं निजम् ।

सुदुर्धरं पुरस्कृत्य साभिमानाः पुरोऽभवन् ॥ २८ ॥

२८.शत्रु भी रुस्तुम नामक अपने अत्यंत दुर्गेश सेनापति के नेतृत्व में अभिमान के साथ आगे बढ़ गया।

अथ वीक्ष्य सुदुर्धर्षीं परवीरपताकिनीम् ।

रुस्तुमः फाजिलादीन् स्वान् यूथनाथानवोचत ॥ २९ ॥

२९.तब शत्रु पक्ष की सेना दूजे यह है ऐसा देखकर रुस्तुम फाजिल्का भित्ति अपने सेनानायक उसे बोला।

पश्यत प्रसभं व्यूढां प्रतिपक्षचमूमिमाम् ।

सन्नाहिनीं महोत्साहां धीरामुल्लसितध्वजाम् ॥ ३० ॥

३०.रुस्तुम बोला शस्त्र अस्त्रों से सज्जा कठिन कार्यों को करने वाली अत्यंत उत्साही धैर्यवान चमकदार तेजस्वी भजो से युक्त तथा सुदृढ़ व्यूह रचना से युक्त इस शत्रु सेना को देखो।

सन्त्यस्यां हि महावीराः सीरायुधसमश्रियः ।

प्रत्यात्मान इवानेके शिवस्यातुलतेजसः ॥ ३१ ॥

३१.सेना में बलराम की तरह महावीर अतुलनीय पराक्रमी शिवाजी के मानो अनेक प्रतिबिंब हो।

स एष शिवसेनानीनेता नाम प्रतापवान् ।

योत्स्यते भृशमस्माभिरभिमानभृतां वरः ॥ ३२ ॥

३२. वह यह शिवाजी का सेनापति प्रतापी महामानी नेता जी हमारे साथ बारंबार युद्ध करने का इच्छुक है।

तथा यादवराजोऽपि व्यूढकंकटको युवा ।

प्रभूतकटकः क्रुध्यन्नस्मानभिवुभूषति ॥ ३३ ॥

३३. उसी प्रकार कवच धारी विशाल सेना से युक्त क्रोधित वह युवा जाधवराव भी हमारे पराजय का इच्छुक है।

खराटः खर्वितारातिवलः प्रबलसाहसः ।

सूनुना हनुमन्नाम्ना सहितोऽस्मान् जिगीपति ॥ ३४ ॥

३४. शत्रु सेना को छिन्न-भिन्न करने वाला प्रचंड साहसी खराटे अपने हनुमंत नाम के पुत्र के साथ हमें जीतना चाहता है।

पांडवप्रतिमो युद्धे पांडरः पांडरध्वजः ।

बलस्य महतो भर्ता कर्ता समरमद्भुतम् ॥ ३५ ॥

३५. युद्ध में अर्जुन की तरह सफेद ध्वजा से युक्त विशाल सेना का अधिपति पांडरे हमारे साथ आश्चर्यजनक युद्ध करना चाहता है।

करवालकरः कालः कालज्वलनभीषणः ।

करिष्यति हिलालोऽपि भृशं भृशबलप्रियम् ॥ ३६ ॥

३६. तलवार धारण करने वाला प्रलययाग्नि के समान भयंकर मानव प्रत्यक्ष एवं यमराज ही हो ऐसा काला हिलाल भी भोसले का अत्यंत हितकारी होगा।

महसां राशिरिंगालो हीरवर्मा महाभुजः ।

तथा व्याघ्रो भीमनामा प्रवारः सिद्धजित् तथा ॥ ३७ ॥

गोदो नाम महावीरो जगत्स्थापकवंशजः ।

तथा परशुरामोऽपि महाद्रिककुलोद्भवः ॥ ३८ ॥

अपरेऽपि महानीकनाथाः प्रधानपारगाः ।

शिवराजस्याभिसराः प्रसरन्ति पुरः पुरः ॥ ३९ ॥

३७-३९.तेजस्वी महाबाहु हिराजी इंगके, भीमाजी वाघ, सिधोजी पंवार, महावीर गोदाजी जगताप, मानो दूसरा परशुराम ही हो ऐसा महाडिक, उसी प्रकार दूसरे युद्धनिपुण बड़े-बड़े सेनानायक तथा शिवाजी राजा के सहायक आगे चलकर आ रहे हैं।

स्वयं भृशबलो राजा शिवोऽपि रिजराजहः ।

अमरप्रतिमः कामं समरं पारयिष्यति ॥ ४० ॥

४०.शत्रु राजा को मारने वाला, देवतुल्य शिवाजी राजे भोसले भी स्वयं युद्ध को इच्छा अनुसार जीतेगा।

तदद्धास्माकमप्येते यूथनाथाः समन्ततः ।

संव्युह्य वाहिनीं स्वां स्वां तिष्ठन्तु मृधमुर्धानि ॥ ४१ ॥

४१.अतः वास्तव में हमारे सेनानायक को भी चारों ओर से अपने-अपने सेना की व्यवस्थित व्यू रचना करके युद्ध के अग्रभग में खड़े रहना चाहिए।

पालयिष्याम्यहं मध्यभागमद्धा महायुधाः ।

सव्यं पार्श्वमनीकस्थः फाजिलोऽवतु विक्रमी ॥ ४२ ॥

४२.हे । महान योद्धाओं में मध्य भाग की रक्षा करता हूं पराक्रमी सेनापति था जल सेना के बाएं भाग की रक्षा करें।

मलीक इतबाराहः सादातेन समन्वितः ।

पालयत्वपरं पार्श्वं पृतनायाः पृथुस्मयः ॥ ४३ ॥

४३.और महाभिमानी मलिक इतबार और सादात के साथ सेना के दाएं भाग की रक्षा करें।

अजीजखानतनयः फतेखानो महायशाः ।

तथा मुल्लाहयाहोऽस्तु पाणिग्राहक्रियापरः ॥ ४४ ॥

४४.अजीज खान का पुत्र महा यशस्वी फतेह खान और मुल्लाह यह सेना के किस भाग की रक्षा करें।

संताभिधो घोरफटः सर्जराजश्च घांटिकः ।

सन्नद्धाः सैनिकाश्चान्ये पालयन्त्वभितश्चमूम् ॥ ४५ ॥

४५.संताजी घोरपडे, सर्जेशव घाटगे और दूसरे सज्ज योद्धा ये सब चारों ओर से सेना की रक्षा करें।

इत्युक्तास्तेन ते सर्वे यथास्थानमवस्थिताः ।

पालयामासुरव्यग्राः समग्रामपि वाहिनीम् ॥ ४६ ॥

४६.इस प्रकार उनको उसके बताने पर वे सब अपने-अपने स्थान पर स्थित होकर समग्र सेना की मग्न होकर रक्षा करने लगे।

तदानीमेव भूपालः शिवोऽपि निजवाहिनीम् ।

व्यूहयन्त्रभितो योधानवोचदुचितं वचः ॥ ४७ ॥

४७.उसी समय शिवाजी राजा ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना करते हुए यादवाओं को समयोचित भाषण दिया।

नेता फाजिलमभ्येतु चतुरंगचमूपतिः ।

प्रयातु परवीरघ्नो व्याघ्रो मुल्लाहयाह्वयम् ॥ ४८ ॥

४८.चतुरंगिनी सेना का अधिपति यह नेताजी फाजल पर आक्रमण करें। शत्रुवीरों को मारनेवाला बाघ, मुल्लाहय पर आक्रमण करें।

मलीकमितबाराख्यमिंगालोऽप्यभिसर्पतु ।

महाद्रिको महामानी फतेखानेन युध्यतु ॥ ४९ ॥

४९.मलिक इतबार पर इंगके आक्रमण करेगा, महामानी महाडिक फतेखान के साथ लड़ेगा।

प्रवारवंश्यः सिद्धोऽपि सादाताभिमुखोऽचतु ॥

गोदस्तु घांटिकं घोरफटं च प्रतियास्यति ॥ ५० ॥

अहं तु रुस्तुमं नाम यवनानीकनायकम् ।

सादयिष्यामि समरे शूरं नासीरवर्तिनम् ॥ ५१ ॥

५०-५१. सिधोजी पवार सादात के साथ युद्ध करें, गोदाजी यह घाटगे एवं घोरपडे के साथ युद्ध करेगा और अग्रणी रुस्तुम नामक वीर यवन सेनाधिपति को मैं युद्ध में मारुंगा।

दक्षिणेन च सैन्यस्य खराटः पांडरोऽपि च ।

हिलालो यावश्चोभावितरेणाभिगच्छताम् ॥ ५२ ॥

५२.खराटे एवं पांडरे ये दोनों सेना के दाएं भाग पर और हिलाल और जाधव ये दोनों सेना के बाएं भाग पर साथ-साथ चलें।

इत्युक्तवति राजेंद्रे तद्योधास्ते महायुधाः ।

समं दुंदुभिनादेन सिंहनादान् वितेनिरे ॥ ५३ ॥

५३.इस प्रकार राजेन्द्र (शिवाजी) के भाषण देने पर उसके उस महापराक्रमी योद्धाओं ने दुंदुभी ध्वनि के साथ सिंह गर्जना की।

ततो भूरिप्रभेदानां दुंदुभीनामनेकशः ।

ऋचकानां काहळानां पणवानां च सर्वशः ॥ ५४ ॥

गोमुखानां च शृंगाणामनीकद्वयवर्तिनाम् ।

निध्वानः पुष्कराध्वानमावृणोद्दीर्णदिङ्मुखः ॥ ५५ ॥

५४-५५.तत्पश्चात् अनेक प्रकार की दुंदुभी, ऋचक (रणवाद्यविशेष) काहल (महाढक्का) ढोल, गोमुख (मृदंगविशेष), शृंग, इस प्रकार के दोनों सेनाओं के रणवाद्यों से दिशाओं को प्रतिध्वनित करने वाली ध्वनि ने आकाश को व्याप्त कर दिया।

अग्रतः प्रचलन्तीनां पताकानां समंततः ।

कान्तिभिः सकलं व्योम तदा किर्मीरतां दधौ ॥ ५६ ॥

५६.अग्रभाग में चलने वाली ध्वजाओं के चारों ओर से आने वाले तेज से संपूर्ण आकाश विचित्र दिखने लगा था।

ते ततोऽत्यर्थमुद्दले स्वनन्त्यौ भृशभीषणे ।

पूर्वापरार्णवनिभे पृतने समसज्जताम् ॥ ५७ ॥

५७.तत्पश्चात् मर्यादा का उल्लंघन करने वाली, गर्जना करने वाली, अत्यंत भयंकर, पूर्व एवं पश्चिम समुद्र की तरह वह सेना आपस में भिड़ गई।

आवेशादथ भुजदंभहतचित्तैः

अभ्यर्णाग तपृतनाद्वयाग्रयोधैः ।

गर्जद्भिः सकुतुकसंप्रणोदिताश्चैः

धाराभिः समरधराभिषिच्यते स्म ॥ ५८ ॥

५८. फिर एक दूसरे के समीप आई हुई उस सेना के अग्रणी, बाहुबल पर अभिमान करने वाले, योद्धाओं ने आवेश से गर्जना करते हुए एवं उत्सुकता से घोड़े को प्रेरित करके रुधिर की धाराओं से रणभूमि को भिगो दिया।

आधावत्तरगखुरोत्थरेणुधारा-

संभाराकुलितमिहांतरंऽतरिक्षम्।

संप्राप्ते धनसमये वदन्नवांभः-

संपृक्तं सर इव धूसरं बभूव ॥ ५९ ॥

५९. इसी बीच दौड़ने वाले घोड़ों के खुरों से उड़ाई गई धूल के देर से व्याप्त अंतरिक्ष, वर्षा के आरंभ में बहने वाले नवीन पानी से परिपूर्ण सरोवर के सामान धूसर हो गया था।

तं वृष्टेः समयमुदीक्ष्य दीर्घसारैः

आसारैर्नवजलदैरिव प्रकामम् ।

धावद्भिः सपदि धनुर्धरैरनेकैः

बाणौ धैर्गगनतलं बताप्यधायि ॥ ६० ॥

६०. वर्षा के समय को पहचान करके नवीन मेधों की शक्ति के प्रवाह से आकाश जिस प्रकार आच्छादि हो जाता है, उसीप्रकार दौड़ने वाले धनुर्धरों के अनेक बाणों की वर्षा से वह पूर्णतः आच्छादित हो गया था।

यावत् स्वं रिपुमवलोक्य लब्धहर्षः

कोदण्डं किल युधि कश्चिदाचकर्ष ।

तावत् तत्करधृतभल्लभिन्नहस्तः-

तच्चित्रं यदजनि तत्र नो विहस्तः ॥ ६१ ॥

६१.अपने शत्रु को देखकर हर्षित हुए किसी वीर ने युद्ध में धनुष खींचा तो उसी के हाथों में स्थित भाले से उसका हाथ भेद देने पर भी वह विचलित नहीं हुआ, यह आश्चर्य है।

संग्रामांगणभुवि भूरिकीर्तिपुष्पा-

ण्यादातुं सपदि धनुर्लतां विकृष्य ।

ते शूराः करकलया शिलीमुखानां

संदोहं द्रुतमुपातयन् परेषु ॥ ६२ ॥

६२.रणभूमि पर अनेक कीर्तिरूपी फूलों को तोड़ने के लिए धनुष रूपी लता को तत्काल खींचकर उन वीरों ने हस्तकौशल से बाणरूपी भ्रमरों के समूह को शत्रु पर वेग से उड़ा दिए।

अभ्येतप्रतिभटचंडचंद्रहास-

प्रौढिम्मा द्रुतमपमूर्धतां प्रपद्य ।

लिप्यद्भिः क्षितिमपि बद्धमुष्टिभावा-

न्नोन्मुक्ताः क्वचन पताकिभिः पताकाः ॥ ६३ ॥

६३.आक्रमण करने वाले शत्रु योद्धाओं के तीक्ष्ण तलवारों के प्रभाव से मस्तक वेग से तुटकर भूमि पर गिरने पर भी ध्वजधरियों ने मुठ्ठियों से मजबूत पकड़ने के कारण ध्वजा कहीं नहीं गिर पायी।

आगच्छन् गुरुतरगर्वमर्ववाहैः

संसृज्य द्रुतकृतसंगरावगाहैः ।

संरंभाद्भिजगृहेऽग्रगैरनेकैः

सैन्यौघैः स्वयमथ रुस्तुमः शिवेन ॥ ६४ ॥

६४.युद्ध में शीघ्रता से प्रविष्ट घुड़सवारों के साथ मिलकर बड़े गर्व के साथ आक्रमण करने वाले रुस्तुमखान पर अग्रणी अनेक सैन्यदलों के साथ शिवाजी ने स्वयं क्रोध के साथ आक्रमण किया।

कर्षन्तः सपदि धनूंषि सप्रकर्ष

युध्यन्तः शिवसुभटाः शरैरमोघैः ।



क्रुद्धानामभिपततां महायुधानां

म्लेच्छानामदयमपातयच्छिरांसि ॥ ६५ ॥

६५. भोसले की सेना द्वारा उत्साह में फेंके गए वज्र के समान शस्त्रों के समूह को रुस्तुम के योद्धा, उस अति प्रचंड भीड़ में वास्तव में सहन नहीं कर सके।

सोल्लासं भृशबलसैन्यपातितानां

दंभोलिप्रकृतिभृतां बतायुधानाम् ।

संघातं कथमपि सेहिरे न तस्मिन्

संमर्दे सुमहति रुस्तुमायुधीयाः ॥ ६६ ॥

तिष्ठन्तं करटिकदंढ दुर्गदेशे

गर्जन्तं घनमिव फाजिलं तदोच्चैः ।

आक्रामन् मरुदिव सर्वतो बलीयान्

उद्भ्रान्तं शिवपृतनापतिर्व्यधत् ॥ ६७ ॥

६६-६७. गजसमूहरूपी दुर्ग के मध्य में स्थित हुए एवं मेघ की तरह प्रचंड गर्जना करने वाले फाजिल पर प्रचंड वायु के समान चारों ओर से आक्रमण करके शिवाजी के सेनापति ने उसको उद्विग्न कर दिया।

नेतारं भृशबलभूपवाहिनीनां

नेतारं कुपितमुदीक्ष्य फाजिलोऽद्धा ।

उच्चैरुच्चरितपदां पपाठ नादीं

प्रारंभे द्रुतमपयानरूपकस्य ॥ ६८ ॥

६८. शिवाजी की सेना के नायक नेताजी को उत्तेजित हुआ देखकर फाजिल ने वास्तव में प्रारंभ में ही पलायनरूपी नाटक की नांदी उच्चध्वनि से पढ़ दी थी।

रत्नाद्याभरणविभूषिता युवानः

संग्रामाङ्गणभुवि लोहितांगरागाः ।

अन्येभ्यो भयमपहाय केऽपि वीर-

श्रीयुक्ताः शरशयनेषु शेरते स्म ॥ ६९ ॥

६९. रत्नों, अलंकारों से विभूषित एवं रत्तरंजित अंग वाले कुछ युवा वीर दूसरों के भय को छोड़कर वीर श्री से युक्त होकर रण भूमि पर सो गये।

संग्रामे महति खराटकेन केचित्

योद्धारः सपदि च पांडरेण केचित् ।

विध्वस्ताः स्वयमथ यादवेन केचित्

व्याघ्रेण स्वयमाभपत्य चापि केचित् ॥ ७० ॥

७०. उस महासंग्राम में कुछ योद्धाओं को खराटे ने कुछ को पांडरे ने, कुछ को स्वयं जाधव ने, कुछ को स्वयं बाघ ने आक्रमण करके तत्काल मार दिये थे।

सोत्साहं प्रधानमपरो महोग्रकर्मा

विक्रम्यामृणदहितान् स हीरवर्मा ।

क्रोधाग्निप्रस्मरधूमधूप्रधामा

कांश्चित्तानथ हतवान् हिलालनामा ॥ ७१ ॥

७१. उग्रकर्मा युद्धोत्सुक हीरवर्मा ने उत्साह से आक्रमण करके शत्रु को तहस-नहस कर दिया। क्रोधाग्नि से फैलने वाले धुंए ने जिसकी कांति को धूसरित कर दिया है ऐसे हिलाल ने कुछ योद्धाओं को मार दिया।

स्वं शस्त्रं विजहति रुस्तुमे वियाते

संग्रामात् सपदि च फाजिलेऽपयाते।

सादातप्रमुखमनीकमव्यवस्थं

वातारं कमपि निजस्य नाध्यगच्छत् ॥ ७२ ॥

७२. रुस्तम द्वारा सहसा पलायन करने पर अव्यवस्थित हुए सादात प्रमुख की सेना को अपना रक्षण करने वाला कोई प्रापत नहीं हुआ।

अथ समरसदेशात् पंचपैरश्ववारैः

अपसरति विहस्ते रुस्तुमे मंगभाजि ।

भृशमशरणमल्लीशाहसैन्यं समस्तं

व्याधित दशदिगंतप्रेक्षणायासमाशु ॥ ७३ ॥

७३.तब पराजित होकर विचलित हुआ रुस्तुमखान पांच छः घुडसवारों के साथ युद्ध से भाग गया और अत्यंत सहाय आदिलशाह की समस्त सेना ने दसों दिशाओं में पलायन किया।

तदनु शिवनृपस्तं प्राप्तभंगं पुरस्तात्

प्रसभमपसरन्तं रुस्तुमं त्रस्तमुच्चैः ।

निकटगमपि नैव न्यग्रहीन्निग्रहार्हं

न हि विदधति भीरौ शूरतां सूर्यवंश्याः ॥ ७४ ॥

७४.तत्पश्चात् पराजित हुआ तथा अत्यंत भयभीत, सामने से वेग से पलायन करने वाले उस रुस्तुम को समीप होते हुए भी एवं पकड़ने योग्य होने पर भी शिवाजी ने नहीं पकड़ा, क्योंकि सूर्यवंशी राजा भयभीतों पर पराक्रम नहीं दिखाते हैं।

येऽस्मानप्यपहाय हन्त समरे सद्योपयाताः

स्वयं भूयोऽप्याश्रयितुं पाविरहितान् लज्जामहे तान् वयम्।

मन्वानाः सुतरामितीव हृदये ते येदिलानीकिनी

मत्तेभाः सबलं शिवं भृशवलं भेजुः शरण्यं प्रभुम् ॥७५॥

७५.“जो हमें युद्ध में छोड़कर स्वयं तुरन्त भाग गये उन लज्जा रहितों का पुनः आश्रय करने में लज्जा आती है” ऐसा ही मानों मन में निश्चित विचार करके उस आदिलशाह की सेना के मदमस्त हाथियों द्वारा आश्रय लिया।

सोत्साहोत्सवशिवसंहतप्रतीप

प्रस्त्रस्ताभरणगणप्रभानुभावैः ।

कर्षन्ती सकुतुकलोकलोचनौघं

सौभाग्यं किमपि बभार सा मृधश्रीः ॥ ७६ ॥

७६.प्रयत्नपूर्वक बाहर निकलने वाले सैकड़ों घोड़ों को, जिनका अंतः करण पता है ऐसी वह गहरी गर्जना करने वाली अत्यंत भयंकर, आश्चर्यजनक वेग से युक्त, प्रवाह के बढ़ने के कारण तटों से परिपूर्ण होकर प्रवाहित होने वाली खून की नदी को मस्तकों की पंक्तियों ने किस प्रकार पार किया?

प्रयत्नप्रोन्मज्जत्तरगशतावशातहृदयां

गभीरां गर्जन्तीं प्रतिभयतरामुद्धतरयाम् ।

प्रवाहप्रौढना सपदि परिपूर्णोभयतटां

कबंधानां श्रेणी कथमथ तताराश्रसरितम् ॥ ७७ ॥

७७.इस प्रकार रुस्तुमप्रभृति शत्रुओं को भगाकर उस प्रांत को अधीन करके महादुंदुभी के मधुर ध्वनि से दिशारूपी स्त्रियों के मुखकमल को हर्षित करता हुआ शिवाजी राजा सुशोभित होने लगा।

इत्थं स रुस्तुममुखान् विमुखान् विधाय

देशं च तं नरपतिः स्वकरे निधाय ।

ढक्कारवेण मधुरेण दिगंगनानां –

उल्लासयन्नुदलसद्वदनांबुजानि ॥ ७८ ॥

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिवासकरकवीन्द्रपरमानन्द

प्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां रुस्तुमादि भंगो नामाध्यायः ॥ २४ ॥

## अध्याय:-२५

कवीन्द्र उवाच –

रुस्तुमादीन् विनिर्जित्य वितत्य च सितं यशः।

शिवोऽल्लीशाहविषयं वशमानेतुमञ्जसा॥१

संप्रेष्य महतीं सेनां सेनापतिसमन्विताम्।

स्वयं पुनः प्रणालाद्रिमवेक्षितुमुपागमत्॥२

१-२. कवीन्द्र बोले - रुस्तमखान प्रभृतियों को पराजित करके अपनी श्वेत कीर्ति को फैलाकर, अल्लीशाह के प्रदेश को जल्दी वश में करने के लिए सेनापति के साथ एक बड़ी सेना को भेजकर स्वयं शिवाजी फिर से पन्हाळगढ़ के पर्यवेक्षण करने के लिए गया।

सोऽपि सेनापतिर्नेता शिवराजनियोजितः।

येदिलस्याशु तद्राष्ट्रं वशीचक्रे महायशाः॥३

३. महाविख्यात उस सेनापति ने शिवराज की आज्ञा पाकर आदिलशाह के उस प्रदेश को हां हां बोलते हुए कब्जे में कर लिया।

कपित्थं बदरग्रामं मल्लग्रामं च कुण्डलम्।

गोहग्रामं सतीकीरमेडं च मिरजं तथा॥४

गोकाकं दुग्धवाटं च पुरं मुरवटं पुनः।

धारावटं महादुर्गं क्षुद्रवन्द्यपुरं तथा॥५

श्यामग्रामं मायिलं च पारग्रामं च संगलम्।

काणदं कर्दमवटं कागलं ह्रीबलं तथा॥६

हनुवल्लीं हूणवटं रायबाकं हुकेरिकाम्।

काण्डग्रामं हरिद्रां च धुणिकां किणिकामपि॥७

अरगं तिलसंगं च केरुं चाम्बुपं पुनः।

कामलापुरसंयुक्तामतनीं च त्रिकूटकम्॥८

एतान्यन्यानि च महापत्तनानि पुराणि च।

निगृह्य निग्रहाभिज्ञो निन्ये नेता स्वनिघ्नताम्॥९

४-९. कवठ, बोरगांव, गालगांव, कुण्डल, घोगांव, सतीकीर आडभिरज, ओकाक, दोदवाड, मुरवाड़, धारवाड़ का बड़ा किला, क्षुन्द्रवंद्यपुर, श्यामगांव, माथिल, पारगांव, सांगली, काणद, कुरुन्दवाड़ी, कागल, हेबाज, हनुवल्ली, हूणवाड, रायबाग, हुकेरी, कांडगांव, हकदी, धुणिका, किणी, अरग तेलसंग केरु, अंबुप, कमलापूर, अथली तिकोटे, ये और बड़े नगर व पुरीयों को जीतकर उस विजयी नेताजी ने अपने कब्जे में किए।

इति ध्वस्ते जनपदे स्रस्ते सैन्येऽपि भूयसि।

पराधीनत्वमाप्तेषु प्रणालाद्रिषु चाद्रिषु॥१०

चिरयत्सु च ताम्रेषु द्रुतमाकारितेष्वपि।

विदूयमानोऽनुदिनं पतन्नत्याहिताम्बुधौ॥११

अल्ली कर्णपुराधीशं जोहरं नाम बर्बरम्।

आहूय प्राहिणोत्तूर्णं निग्रहीतुं शिवं नृपम्॥१२

१०-१२. इस प्रकार से वह देश नष्ट हो गया। बहुत से सैनिक मृत्यु को प्राप्त हो गए, पन्हाळ आदि किल्ले शत्रुओं के वश में हो गये तुरन्त बुलाने पर भी मुगलों ने विलम्ब किया, इस कारण प्रतिदिन दुःखी होता हुआ एवं संकटरूपी समुद्र में डुबते हुए की अल्ली आदिलशाह ने कर्णूल के राजा शिद्दी जोहर को बुलाकर शिवाजी राजा को पकड़ने के लिए तुरन्त भेद दिया।

स ततोऽनेकसाहस्रैरश्ववारैस्सजातिभिः।

अपारैः पर्वताकारैः करिभिश्च समन्वितः॥१३

तथा कार्णाटकैः पत्तिबलैरतिबलैर्बली।

पालितं शिवभूपेन प्रणालाचलमागतम्॥१४

१३-१४. तब वह पराक्रमी मुखिया अपने जाती के कई हजार घुड़सवार, पर्वत के समान विशाल अनगिनत हाथी एवं शक्तिशाली कर्नाटकी पदौल सेना के साथ शिवाजी के अधिकृत पन्हाळ के किले में आया।

रुस्तुमः फाजिलश्चैव भग्नपूर्वावुभावपि।

येदिलस्याज्ञया भूयः संभूय निजसेनया॥१५

समानगुणशीलेन सादातेन समन्वितौ।

द्रुताग्रगामिना तेन जोहरेण समीयतुः॥१६

१५-१६. पहले पराजय को प्राप्त होने के कारण, रुस्तम एवं फाजल दोनों ही आदिलशाह की आज्ञा पाकर फिर से अपनी सेना के साथ, समानगुणों, समान व्यवहार व हमेशा मिलकर शीघ्रता से आगे जाने वाले उस जोहर से जा के मिले।

बाजराजो घोरफटः कार्णाटः पीडनायकः।

वल्लीखानात्मजो भायीखानः समरदुर्जयः॥१७

मसूदो बर्बरोऽन्येऽपि येदिलस्य नियोगतः।

प्रणालमद्रिमादातुं जोहरान्तिकमाययुः॥१८

१७-१८. बाजराज घोरपड़े कर्णाटक का पीडनायक, वल्लीखान का पुत्र अजेय भाईखान, शिद्दी मसूद और दूसरे सरदार आदिलशाह की आज्ञा से पन्हाळ को प्राप्त करने के लिए शिद्दी जोहर के निकट आ गये।

ततः स जोहरस्तद्वत् फाजिलश्चापि रुस्तुमः।

अमी स्वैः स्वैरश्ववारैः सहिताः सङ्गरोद्धुराः॥१९

बडेखानादिभिः पत्तिसेनाधिपतिभिर्वृताः।

पूर्वदिग्भागमध्यास्य तं न्यरुन्धन् महीधरम्॥२०

१९-२०. उसके बाद वह जोहर, फाजल एवं रुस्तम इन रणधीर सरदारों ने अपने-अपने घुड़सवारों एवं बड़े खानादि और पदाति सैन्यसमूह के सेनापति के साथ, पूर्व की ओर से पन्हाळ के किले को घेर लिया।

सादातश्च मसूदश्च बाजराजश्च बाहुजः।

भायीखानादयोऽन्येऽपि स्वैः स्वैः सैन्यैः पुरस्कृताः॥२१

तथा कार्णाटयाष्टीकैः स्फुरत्फलकयष्टिकैः।

अन्यैश्च गुळिकायन्त्रधरैरुत्पनोद्धतैः॥२२

पदातिभिः परिवृतः प्रभावी पीडनायकः।

प्रणालाचलमावव्रुः प्रतीचीं दिशमामाश्रिताः॥२३

२१-२३. सादात, मसूद, क्षत्रिय बाजराज और भायीखानादि अन्य सरदारों ने अपने-अपने सैनिकों के साथ और पराक्रमी पीडनायक ने चमकती हुई ढाल, लाठी, कर्णाटक की लाठीवाले और हमला करने के लिए उत्सुक ऐसे अन्य बन्दूक को धारण किए हुए पदाति सैनिकों के साथ पन्हाळगढ़ को पश्चिम की ओर से घेरा।

अन्यान्यपि च सैन्यानि तस्याद्रेर्दक्षिणोत्तरौ।

तस्थौ भागवुपाश्रित्य संश्लिष्टं जोहराज्ञया॥२४

२४. अन्य सैनिकों ने जोहर की आज्ञा से उस किले को दक्षिण एवं उत्तर की ओर से घेर लिया।

शैलवर्ती शिवोत्युच्चैरतिनीचैश्च जोहरः।

आहवः स तदप्यासीद्भारताहवसोदरः॥२५

२५. ऊंचे किले पर शिवाजी एवं किले के नीचे जोहर फिर भी वह युद्ध भारतीय युद्ध के समान हुआ।

बर्बरः स बहून् मासान् युयुधे तेन भूभृता।

तथापि न यशो लेभे प्रतिवेलं पराहतः॥२६

२६. वह शिद्दी राजा के साथ बहुत महिनों तक युद्ध करता रहा, फिर भी हर बार पराजित होने के कारण उसको यश नहीं मिला।



एवं वदन्तमनघं कवीन्द्रं विप्रपुङ्गवम्।

श्रीगोविन्दपदाम्भोजप्रमोदभरमेदुरम्॥२७

शिवभूपयशःसोमसमुल्लासितचेतसम्।

पर्यपृच्छन्निति मुदा बुधाः काशीनिवासिनः॥२८

२७-२८. इस प्रकार से कथन करने वाले, श्रीविष्णु के चरणकमलों के आनन्द से परिपूर्ण शिवाजी के यशरूपी सोमरस से चित्त हर्षाकुल हो गया है जिसका ऐसे काशी में रहने वाले निष्पापी ब्राह्मण श्रेष्ठ विद्वानों ने कवीन्द्र से पूछा।

मनीषिण उचुः -

अल्ली दिल्लीपतेः सेनां विधृतायोधनस्मयाम्।

विसृज्य दूतमात्मीयं द्रुतमाह्वयति स्म याम्॥२९

सा पुनः कियती केन नायकेनाभिरक्षिता।

केनाध्वना क्वचायाता किं कार्यं चान्वपद्यत॥३०

किं प्रतीकारमकरोच्छिवराजश्च तां प्रति।

परमानन्द सुमते तत्सर्वमभिधीयताम्॥३१

२९-३१ पंडित बोलें- अल्ली आदिलशाह ने अपना दूत भेजकर युद्ध में गर्व से लड़ने वाली दिल्लीपति की जो सेना बुलाई है, वह कितनी थी, उसका नायक कौन था? वह किस यान से कहाँ आया, उन्होंने कौन-सा कार्य आरम्भ किया और शिवाजी ने उसका कैसे प्रतीकार किया। यह सब हे बुद्धिमान परमानन्द बताओ।

कवीन्द्र उवाच -

शिवस्योपचयं वीक्ष्य तथापचयमात्मनः।

याचितां येदिलेनोच्चैः सहायमभिवाञ्छता॥३२

दिल्लीपतिः स्वपृतनां पृथुसारां प्रथीयसीम्।

बलिना मातुलेनाद्धा शास्ताखानेन रक्षिताम्॥३३

प्रपन्नपालनपरः शतशो जितसङ्गरः।

प्रयातुमादिशत्तूर्ण धारागिरितलस्थिताम्॥३४

३२-३४. कवीन्द्र बोले - शिवाजी महाराज का उत्थान एवं अपना पतन देखकर उत्कृष्ट सहायता करने वाला मिल जाए इसलिए आदिलशाह तो दिल्ली की ओर से सैनिक बुलाने पर भी शरणागतों की रक्षा करने में तत्पर एवं जिसने हजारों युद्ध में विजय पायी है, ऐसे दिल्ली के राजा हमारा मामा पराक्रमी शाहसुखान के सेनापतित्व में देवगिरी किले के तलहटी में अपनी सामर्थ्यशाली व बड़ी सेना के साथ जल्दी से जाने की आज्ञा दी।

ततोऽनेकेऽनीकनाथाः स्वामिशासनवर्तिनः।

प्रतस्थिरे सुसन्नद्धाः शास्ताखानपुरोगमाः॥३५

३५. उसके बाद स्वामी की आज्ञा के अनुसार चलने वाली बहुत से सेनापति सुन्दर रूप से तैयार होकर शाहसुखा के नेतृत्व में चले पड़े।

मानी शमसखानाख्यः पटानः प्रथितक्रमः ।

सुतो जाफरखानस्य नामदारश्च दुर्जयः ॥ ३६ ॥

तथा गया[सु] दीखानो मुनीमो हसनोऽपि च ।

मिरजासुलतानश्च प्रतापी मनचेहरः ॥ ३७ ॥

तथा तुरुकताजश्च क्रूरात्मा च कुबाहतः

हौदखानोऽप्युजबखात्रयोऽमी समरोन्मुखाः ॥ ३८ ॥

इमामबिरुदीखानो लोदीखानश्च दुर्धरः ।

पठानौ द्वाविमौ तद्वद् मौलदौ द्वौ दिलावरौ ॥ ३९ ॥

तथाबदुलबेगश्च भंगडः खोजडम्बरः ।

जोहरश्च पुनः खोजसुलतानः पराक्रमी ॥ ४० ॥

सिदीफतेफतेजंगौ रणरङ्गविशारदौ ।

क्रोधनः कारतलवो गाजीखानादयोऽपि च ॥ ४१ ॥

तनयः शत्रुशल्यस्य भावसिंहः प्रभावभृत् ।

किशोरशामसिंहाह्वौ राजानौ चास्य बान्धवौ ॥ ४२ ॥

राजा गिरिधरो नाम तथैव च मनोहरः ।

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च पञ्चमः पुरुषोत्तमः ॥ ४३ ॥

गोवर्धनेन सहिताः षडमी गौडवंशजाः ।

क्षत्रियाः क्षपितारातिकुलाः क्षितिभृतां वराः ॥ ४४ ॥

गौडविठ्ठलदासस्य नप्ता सप्ताश्चसन्निभः ।

सुतोऽर्जुनस्य विजयी राजसिंहश्च पार्थिवः ॥ ४५ ॥

वीरो बीरमदेवश्च रामसिंहश्च सुव्रतः ।

तथैव रायसिंहश्च त्रयोऽमीशीर्षदान्वयाः ॥ ४६ ॥

श्रीमानमरसिंहाख्यो राजा चंद्रवतान्वयः ।

तथा चन्द्रपुरेन्द्रस्य सेनापतिररिन्दमः ॥ ४७ ॥

द्वारकाजिच्च जीवाजित् पर्शुजिदलजित् पुनः ।

शरीफ-नृपसूनुश्च त्र्यंबकः समरोन्मुखः ॥ ४८ ॥

एते भृशबलाः प्रौढबलाः सर्वे प्रतापिनः ।

गोकपाटश्च सुरजिद्यशोजिच्च महाभुजः ॥ ४९ ॥

राजा दिनकरश्चापि ख्यातः कांकटकान्वयः ।

त्र्यम्बकानन्तदत्ताख्यास्त्रयः खण्डार्गळान्वयाः ॥ ५० ॥

दत्तरुस्तुमवर्माणौ राजानौ यादवान्वयौ ।

सर्वजित्तनयो रम्भः प्रवारः परवीरहा ॥ ५१ ॥

जायामुदयरामस्य जगज्जीवनमातरम् ।

राजव्याघ्रीति यां प्राहुर्युधि व्याघ्रीमिवोद्बुराम् ॥ ५२ ॥

सा प्रतापेन महता बताप्रतिहतायुधा।

कृष्णराजप्रचण्डाद्यैः सहिताऽऽत्मसनामभिः॥५

घाण्टिकः सर्जराजश्च गाढः कमल एव च।

कोकाटो जसवन्तश्च कमलेन समन्वितः॥५४

दिल्लीपतेर्नियोगेन सर्व एते महाभुजाः ।

स्वस्वसैन्यान्विताः शास्ताखानं सेनान्यमन्वयुः ॥ ५५ ॥

३६-५५. प्रसिद्ध पराक्रमी एवं मानी शमसखान पठाण, जाफरखान का पुत्र दुर्जयी नामदार, वैसे ही गयासुदीखान, हसन मुनीम सुतान मिर्जा, प्रतापी मनचेहर, तुरुकताज, क्रूर कुबाहत और हौदखान, उझबेग ये तीनों युद्धोत्सुक, इमाम विरुदीखान एवं दुर्जयी लोदीखान ये दोनों पठाण, वैसे ही दोनों दिलावर मौलद, अब्दुल बेग, प्रसिद्ध खोजा भंगड़, जोहर, पराक्रमी खोजा सुल्तान, युद्धविशारद सिद्दी फते एवं फतेजंग, क्रोधी कारतलब, गाजीखान आदि सरदार, शत्रुशल्य का पुत्र पराक्रमी भावसिंह, उनके भाई किशोरसिंह एवं रामसिंह ये दोनों राजा, राजा गिरिधर मनोहर, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पांचवा पुरुषोत्तम एवं गोवर्धन ऐसे छः गौड़वंशीय शत्रुविनाशक श्रेष्ठ क्षत्रिय राजा, गौड़ विट्ठलदास का सूर्य के समान तेजस्वी पोता, अर्जुन का पुत्र विजयी राजा राजसिंह, ये तीनों सिसोद वंश के राजा, चन्द्रवंत वंश के राजा श्री अमर सिंह, चन्द्रपूर के राजा का सेनापति अरिंदम द्वारकाजित्, जिवाजी, परसोजी, बालाजी, शरीफ राजा का पुत्र युद्धोत्सुक त्र्यम्बक ये सब पराक्रमी व महाबलशाली, भोसले, त्र्यम्बक, अनंत एवं दत्त ये तीनों खंडार्ग का वंश के दत्त और करतुग ये यादववंशी, सर्वाजी का पुत्र शत्रुवीर्य रंभाजी पवार, युद्ध में शेरनी के समान निर्भयी उदयराम की पत्नी जगतजीवन की माता, रायशेरणी, नाम से प्रसिद्ध, बड़े प्रताप के कारण अप्रतिध्वणित स्त्री एवं उसका कृष्णराज, प्रचंड आदि भाई, सर्जेराव घाटगे, कमलाजी गाढे, जसवंतराव एवं कमलाजी कोकाटे, ये सभी बलशाली, सरदार दिल्लीपति की आज्ञा से अपनी सेना के साथ शाहएस्तेखान के पीछे-पीछे गए

तैर्बलैः परितोऽप्यध्वसरितो विहितास्तथा।

विना धनागमं नैताः पश्यन्त्यात्मपतिं यथा॥५६॥

५६. उन सैनिकों ने अपने चारों ओर के भी मार्ग की नदियां ऐसी सूखा दी कि वे नदियां अपने पति समुद्र से वर्षा ऋतु तक मिल ही न पाये।

निर्धार्यः स ततः शास्ताखानः शास्ता चमूभृताम्।

सहस्रैः सप्तसप्तत्या तुरगैः परिवारितः॥५७

गम्भीरवेदिभिर्भद्रकारीभिर्गिरिसन्निभैः ।

तथा बक्सरैरग्रसरैः पत्तिवरैर्वृतः ॥ ५८ ॥

सन्नद्धः सहितस्तैस्तैर्विविधैर्युद्धसाधनैः ।

प्रपेदे सरितं भीमां सीमां विद्वेषिनीवृतः ॥ ५९ ॥

५७-५९. उसके बाद दृढ शासक, सेनापति शाएस्ताखान सतत्तर हजार घुड़सवार, पर्वत के समान भद्र जाती के मदमस्त हाथी, बक्सर जाती के उत्तम प्रमुख पदाति सैनिकों के साथ सभी प्रकार की युद्धसामग्री के साथ सज्ज हतोत्साहित शत्रु के प्रदेश की सीमा भीमा नदी के समीप पहुंच गया।

प्रोच्छिन्नदेवायतनं छिन्नभिन्नमठीमठम् ।

भज्यमानाध्यक्षगृहं भग्नोद्यानमहीरुहम् ॥ ६० ॥

प्रभूतविजनीभूतप्रतनप्रापपत्तनम् ।

पर्यटन्मलेच्छकटकस्पष्टभ्रष्टसरित्तटम् ॥ ६१ ॥

ग्रस्तं विधुन्तुदेनेव निखिलं विधुमण्डलम् ।

दर्शनीयेतरमभूत् तदा तन्मेदिनीतलम् ॥ ६२ ॥

६०-६२. तदनन्तर मन्दिरों का विध्वंस किया, छोटे बड़े मठ छिन्न-भिन्न कर दिए, अधिकारियों के घर मिट्टी में मिला दिए, बगीचों के वृक्ष तोड़ दिए, बहुत से पुराने गांव व नगर सुनसान कर दिए, सब जगह घूमने वाले मुसलमान सैनिकों ने नदीतट भ्रष्ट कर दिए, इस प्रकार वह भूप्रदेश आकाश में चन्द्रग्रहण के समान भयानक दिखने लगा।

ततः क्षिप्रमुपेतेन क्षुभिताम्भोधिबन्धुना।

तेन चक्रेण चकितं चक्रे चक्रावतीतलम्॥६३

६३. उसके बाद अशांत समुद्र के समान उस सेना ने शीघ्रता से चाकणप्रान्त को भयभीत किया।

रुरुधुस्तां शोणमुखाः पुरीं चक्रावतीं रुषा।

शिवराजे महाराजे प्रणालाचलवर्तिनि॥६४

६४. शिवाजी महाराज के पन्हाळ के किले पर रहते हुए मुगलों ने चाकण के किले को क्रोध से घेर लिया।

तत्र संग्रामदुर्गान्तर्वर्तिभिः शिवपत्तिभिः।

युयुधुर्युद्धकुशलास्ते दिनानि बहून्यपि॥६५

६५. उस संग्राम दुर्ग में रहने वाले शिवाजी के सैनिक बहुत दिनों तक संघर्ष करते रहे।

यावद्युध्यति जोहरेण बालना क्रुद्धः प्रणालाचले,

राजा तावदमी वयं समुदिताश्चक्रावतीमण्डले ।

योत्स्यामः प्रतियोधिभिः प्रतिपदं दुर्गस्थितानामिदम् ।

विज्ञायाभिमतं तथा न विदधे शास्तापि शस्तं मनः ॥६६॥

६६. जब तक क्रोधी शिवाजी राजा पन्हाळ के किले पर बलशाली जोहर से युद्ध करते हैं, तब तक हम सब मिलकर चाकणप्रान्त में क्रमशः लड़ेंगे, ऐसी किल्ले में रहने वालों की इच्छा जानकर शाएस्ताखान को अच्छा नहीं लगा।

अल्लीशाहोऽपि दिल्लीपरिवृढपृतनां तत्र संग्रामदुर्गे,

युध्यन्तीमाकलय्य प्रथितपृथुबलां किञ्चिदाश्वस्तचित्तः ।

रोद्धव्योऽयं विरुद्धः प्रसभमवाहितीभूय शैले प्रणाले ,

संरम्भादित्थमुच्चैर्विजयपुरगतो जोहरायालिलेख ॥ ६७ ॥

६७. दिल्लीपति राजा की बड़ी व प्रसिद्ध सामर्थ्यशाली सेना उस संग्रामदुर्ग पर संघर्ष कर रही हैं, ऐसा सुनकर अल्लीशाह के चित्त को थोड़ा धैर्य प्राप्त हुआ, उसने भी विजापुर से जोहर को अत्यन्त क्रोध में लिखा कि सावधान रहकर पन्हाळ किले के शत्रु को दृढ़ता से बंदी बनाए रखें।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिनिवासकरकवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां

शतसाहश्र्यां संहितायां शास्ताखानाभ्यागमो नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥२५॥

## अध्याय:-२६

कवीन्द्र उवाच -

अथ त्रस्ते जनपदे विस्रस्ते च महाजने।  
लुंठिते साहसवटे शूर्पे चाप्यवकुण्ठिते॥१  
निगृहीते पुण्यपुरे गृहीते चेदिरापुरे।  
परचक्रचयग्रस्तप्रायचक्रावतीचये॥२  
आत्मजे शिवराजे च प्रणालाचलवर्तिनि।  
ऋद्धेऽपि जोहरेणोच्चैः क्रुद्धे तत्रैव युध्यति॥३  
सुता यादवराजस्य शाहपत्नी महाव्रता।  
अहो रणरसोत्साहादाहोपुरुषिकामधात्॥४

लोग भयभीत हो गए, व्यापारी पलायन कर गए, सासवट को लुट लिया, शर्प को घेर लिया, पुणे पर हमला हो गया, इंदापूर पर कब्जा हो गया, चाकण चोरो का बहुतेक प्रदेश शत्रुसेना के कब्जे में हो गया, पुत्र शिवाजी समृद्ध व अत्यन्त क्रुद्ध हतोत्साहित पन्हाळ किले पर ही जोहर के साथ लड़ रहा था। ऐसे समय जाधवराव की बेटी, शहाजी की धर्मपत्नी जिजाबाई इसी जगह वीररस से परिपूर्ण होकर युद्ध की भाषा बोलने लगी।

जननी शिवराजस्य सा राजगिरिवर्तिनी।  
निजानां गिरिदुर्गानामवनेऽवहिताभवत्॥५

राजगढ़ पर रहने वाली शिवाजी की माता अपने किले की रक्षा के कार्य में लग गई।

अथ सेनापतिर्नेता नैकानीकनिषेवितः।  
प्लुष्ट्वा शाहपुरं सर्वं दृष्ट्वा पृष्ठं च विद्विषः॥६

शिवसन्देशमासाद्य प्रसादमिव सुव्रतः।

समन्वितो हिलालेन शिवपत्तनमाययौ॥७

तदनन्तर धार्मिक सेनापति नेताजी बहुत बड़ी सेना लेकर सम्पूर्ण शाहपूर को जलाकर, शत्रुओं को भगाकर, शिवाजी का समाचार प्रसाद की तरह सुनकर हिलाला के साथ शिवपट्टण आ गया।

ततः स वत्सलां वत्सालोके चिरमुत्सुकाम्।

यातुं प्रणालमचलं स्वयमेव समुद्यताम्॥८

रोषावेषवतीं स्वेन सैन्येन महतावृताम्।

ददर्श शाहराजस्य राज्ञीं राजगिरिस्थिताम्॥९

उसके बाद स्नेह से युक्त, पुत्र के दर्शन के लिए चिरकाल से उत्सुक, पन्हाळकिले को स्वयं जाने के लिए तैयार हुई, क्रोध को प्राप्त हुई, अपनी बड़ी सेना से युक्त वह शहाजी राजा की राणी को नेताजी ने राजगड़ पर देखा।

आगस्कर इवात्यर्थं भीतभीतः पदे पदे।

स ननाम हिलालेन सहितस्तां महाव्रताम्॥१०

मानो कोई अपराध किया हो ऐसे उसने भयभीत होकर धीरे-धीरे हिलाला के साथ उसने धर्मनिष्ठ राणी को प्रणाम किया।

प्रणमन्ताविमौ दृष्ट्वा बद्धाञ्जलिपुटानुभौ।

सा जगाद महाभागा मृदुगम्भीरभाषिणी॥११

उन दोनों को हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए देखकर महाभाग्यशाली राणी कोमल व गंभीर शब्दों में बोली।

राजमातोवाच -

बिभ्राणः समरोत्साहं मत्प्राणः स बहिश्चरः।

रुद्धो विरुद्धैरभितः प्रणालाचलमूर्धनि॥१२



राजमाता बोली - युद्ध के उत्साह से पूर्ण, मेरे प्राणों के समान प्रिय पुत्र पन्हाळ के किले को शत्रुओं ने चारों ओर से घेर रखा है।

तत्र तं स्वामिनं हित्वा त्रपां चातिमहीयसीम्।

अहो युवां परभिया परावृत्तावुभावपि॥१३

वहां पर स्वामी को छोड़कर व सारी लज्जा को भुलाकर तुम दोनों शत्रु के डर से लौट आये यह आश्चर्य है।

तमेकमात्मनो वत्सं विमोचयितुमात्मना।

प्रयतिष्ये हरिष्येऽद्य जोहरस्य शिरो युधि॥१४

मेरे उस अकेले पुत्र को मैं खुद छुड़ाने का प्रयत्न करूंगी और जोहर की गर्दन आज युद्ध में से लेकर आऊंगी।

वन्यामिव दिशं शून्यामिमां पश्यामि यं विना।

आनयिष्यामि तं सद्यः शिशुं सिंहमिवोद्धतम्॥१५

जिनके बिना ये दिशाएं बड़े अरण्य के समान सुनसान दिख रही हैं। उस सिंह के समान पराक्रमी पुत्र को मैं जल्दी से ले आऊंगी।

श्रीवत्सलांछनस्यांशं तमेकं वत्समात्मनः।

क्षणं यदि न पश्यामि तर्हि त्यक्ष्यामि जीवितम्॥१६

विष्णु का अवतार ऐसा वह मेरा एकलौता पुत्र यदि मुझे क्षणभर नहीं दिखा तो मैं प्राण छोड़ दूंगी।

युध्यध्वमिह संभूय यूयमत्र परैः सह।

स्वयं योत्स्यामि तेनाहं जोहरेण विरोधिना॥१७

तुम रात यहां मिलकर शत्रुओं से उलझे रहो, मैं खुद उस शत्रु जोहर से लड़ती हूँ।

एवमुक्तवतीं तत्र तां परित्रस्तचेतनः।

क्षुभितां चारूचरितां चमूपतिरबोचत॥१८

माता के इस प्रकार बोलने के कारण डरा हुआ, वह सेनापति क्षुब्ध होकर जिनका आचरण पवित्र है, ऐसे उस राजमाता से बोला।

चमूपतिरुवाच-

भगवत्याः प्रभावेण महाप्राणो महाभुजः।

सोऽवेक्षते जगत् कृत्स्नं न सहायमपेक्षते॥१९

चमूपति बोला -देवी भगवती के प्रभाव से वह महासामर्थ्यशाली व पराक्रमी स्वामी सम्पूर्ण जगत का पालन कर रहा है, उन्हें सत्कार्य की अपेक्षा नहीं है।

अतस्तदाज्ञया गत्वा जित्वा विजयपत्तनम्।

परावृत्तोऽस्मि भव्यं ते योद्धुं ताम्रमुखैः समम्॥२०

इसलिए उनकी आज्ञा से जाकर विजापुर को जीतकर तुम्हारा कल्याण हो, ऐसा मैं मुगलों के साथ युद्ध करने के लिए फिर से आया हूँ।

पातुमायातु मामत्रभवती भव्यनिश्चया।

तत्र वर्वर्ति विजयी शिवः स भृशनिर्भयः॥२१

दृढ़निश्चयी आप मेरी रक्षा करें, उधर वह अत्यन्त निर्भयी व विजयी शिवाजी है ही।

तमात्मनः परिवृढं दुर्धराणां धुरन्धरम्।

कदा द्रक्ष्यामि च कदा परैः स्रक्ष्यामि संगरम्॥२२

अपराजयी, योद्धाओं में श्रेष्ठ ऐसे उस धन्य अपने शिवाजी को कब देख पाऊं और कब शत्रुओं के साथ युद्ध करूँ, ऐसा मुझे लग रहा है।

योत्स्यन्ति ताम्रवदनैरनेके सैनिका इमे।

अहं तु तत्र योत्स्यामि विरुद्धैर्जोहरादिभिः॥२३

ये सारे सैनिक मुगलों से लड़ेंगे और मैं वहां जोहरादि शत्रुओं के साथ लड़ूंगा।

पालितान्यतियत्नेन शिवसैनैरिहाधुना।

प्रभवत्यद्य दुर्गाणि गृहीतुं नारुणाननः॥२४

इधर शिवाजी के सैनिकों ने अभी अत्यधिक प्रयत्न से रक्षित किए हुए किल्ले को मुगल आज नहीं ले पायेंगे।

इति विज्ञापयामास तत्र तां पृतनापतिः।

प्रतस्थे च प्रतापेन प्रणालमचलं प्रति॥२५

इस प्रकार सेनापति ने उस समय उन्हें निवेदन किया और धैर्यपूर्वक पन्हाळगड़ की ओर चल दिया

तरसा तुरगारूढं करवालकरं दृढम्।

षड्विधान्यपि सैन्यानि तं महान्वयमन्वयुः॥२६

शीघ्रता से घोड़े पर बैठकर हाथ में तलवार लेकर निकले हुए उस ओर कुल के धैर्यशाली सेनापति के पीछे छः प्रकार की सेनाएं भी निकल पड़ी।

शुण्डिशुण्डासमुद्भूतधूलिधूसरितध्वजम्।

स बाहुजो महाबाहुस्तदुवाह महद्वलम्॥२७

हाथी के शूंड से उड़ायी हुयी धूल से धूसरित ध्वज को वह सामर्थ्यशाली क्षत्रिय सेना को लेकर चल पड़ा।

निशम्य जोहरोऽप्येनां रिपुसेनामुपागताम्।

तेन सेनाधिपतिना हिलालेन च पालिताम्॥२८

प्रतियोधयितुं योधानात्मनीनाननेकशः।

तत्र संप्रेषयामास प्रासपट्टिशधारिणः॥२९

उस सेनापति और हिलाला के द्वारा रक्षित एवं शत्रुसेना का आने का समाचार पाकर, उसको रोकने के लिए जोहर ने भाला और पट्टी को चलाने वाले बहुत सारे योद्धा वहां भेज दिए।

ततस्ते बर्बराः सर्वे गर्वेण महतावृताः।

प्रासपाशधनुर्बाणधारिणः प्रौढिकारिणः॥३०

तामिमां पर्वतपतेः पृतनां सुप्रथीयसीम्।

ऋद्धां रुध्वाध्वनोर्मध्ये प्रत्ययुध्यन्नुदायुधाः॥३१

उसके बाद वे बड़े गर्व के साथ, भाला, पाश एवं धनुर्धारी वे सभी शिद्दी शिवाजी के उस बहुत बड़ी व समृद्ध सेना को मार्ग में ही रोककर शस्त्र फेंककर लड़ने लगी।

तत्र युद्धान्यजायन्त हिलालस्य परैः सह।

शरोत्कृत्तशिरस्कानि कुन्तकृत्तकराणि च॥३२

वहां पर शत्रु के साथ-साथ हिलाला का भी युद्ध हो गया, उसमें बाण से शिर अलग व भाले से हाथ तोड़ दिये गए।

वाहवाहो महाबाहुहिलालस्यात्मजस्तदा।

विवेश विद्विषां व्यूहं मन्युमानभिमानवान्॥३३

तब हिलाला का क्रोधी व अभिमानी सामर्थ्यशाली पुत्र वाहवाह शत्रु के व्यूह में घुस गया।

स युवा पृथुताम्राक्षो वैरिबक्षोविदारणः।

अतीव दर्शनीयोऽभूत् दर्शयन्हस्तलाघवम्॥३४

बड़े व लाल आखों वाला, शत्रुओं की छाती को फाड़ने वाला, वह युवा अपने हाथों की चपलता को दिखाने वाला, बड़ा ही दर्शनीय लग रहा था।

स ततस्तेर्महायोधैर्विविधायुधयोधिभिः।

हयान्निपातितो मानी मुमोह मृधमूर्धनि॥३५

उसके बाद अनेक शस्त्रों से लड़ने वाला अभिमानी उस वाहवाह को महायुद्धाओं ने युद्ध के अग्रभाग में ही घोड़े से गिरा दिया और वह बेहोश हो गया।

तं भिन्नभल्लवपुषं भृशविह्वलचेतसम्।

द्विषन्तोऽतीवहृष्यन्तो निन्युःस्वशिविरं प्रति॥३६

जिसके शरीर में भाला घुसा हुआ है, ऐसे घायल चित्तवाले वाहवाह को शत्रु हर्ष के साथ अपने शिविर में ले गए।

तमात्मानमिवात्मीयं नीयमानमरातिभिः।

न शशाक हिलालोऽपि विमोचयितुमात्मजम्॥३७

अपने आत्मा के समान उस पुत्र को शत्रु को ले जाते समय हिलाला भी छुड़ा नहीं पाया।

जोहरायुधिकास्तत्र क्रुधा युयुधिरे तथा।

हिलालप्रमुखाः सर्वे विमुखाः सर्वतो यथा॥३८

जोहर के योद्धा ऐसे क्रोध के साथ लड़े की हिलाला आदि सभी वीर इधर-उधर भागने लगे।

तमुदन्तमथाकर्ण्य पृष्ठगोपश्चभूपतिः।

हिलालतनयं वीरमन्वशोचत चेतसि॥३९

यह बात सुनकर पृष्ठभाग की रक्षा करने वाला सेनापति हिलाला अपने वीर पुत्र के लिए मन में शोक करने लगा।

इति नेतृप्रभृतयो युध्यन्तोऽपि दिने दिने।

प्रणालमचलं गन्तुं अन्तरं न प्रपेदिरे॥४०

इस प्रकार नेताजी आदि के प्रतिदिन लड़ते हुए भी उन्हें पन्हाळ किले की ओर जाने का मौका नहीं मिला।

निशम्य शिवभूपालश्चमूपालपराभवम्।

चुक्रोध जोहरायैव जम्भा एवाशु जम्भजित्॥४१

इस प्रकार सेनापति का पराजय सुनकर, शिवाजी राजा को, इंद्र को जंभासुर पर जैसा क्रोध आया था, वैसे ही जोहर के प्रति क्रोध आया।

स एकदा नृस्तत्र शयानः सुखसद्गनि।

प्रयतः प्रैक्षत स्वप्ने तुलजां वरदायिनीम्॥४२

एकबार सुव्यवहारी राजा के सुखागार में सोते समय, उसके स्वप्न में वर देने वाली तुकाजा भवानी ने दर्शन दिए।

महासत्त्वं महासत्त्वा प्रणमन्तमथाग्रतः।

तमेनमवनीपालं जगाद जगदीश्वरी॥४३

तब वह महासामर्थ्यशाली जगत् माता, सामर्थ्यशाली राजा को प्रणाम करते हुए बोली।  
तुळजोवाच -

एत्य ताम्राननैस्तत्र पुरी चक्रावती जिता।

अतस्त्वयात्र न स्थेयं प्रस्थेयं पुत्र सर्वथा॥४४

तुळजादेवी बोली - मुगलों ने आकर चांकण का किला जीत लिया है, इसलिए पुत्र तुम यहां मत रुको, कुछ भी करके यहां से निकलो।

सिद्धिक्वत्रेऽद्य ताम्राणं लग्ना चक्रावती तथा।

गरीयसेऽपकाराय तिमीनां बडिशं यथा॥४५

तिमि मछीले के जबड़े में फंसे हुए गले के समान, मुगलों के विजयरूपी मुख में फंसा हुआ चाकण का किल्ला बड़े अनर्थ का कारण होगा।

अरं राजगिरिं याहि पाहि राज्यं निजं नृपा।

ताम्यति त्वां विना तत्र जरती जननी तव॥४६

हे राजन्! शीघ्रता से राजगढ़ जाओ और अपने राज्य की रक्षा करो। तुम्हारी वृद्धमाता तेरे बिना दुःखी हो रही है।

सैन्यैः कतिपयैरेव प्रयातव्यमितस्त्वया।

जोहरं योधयिष्यन्ति त्वद्योकाः पर्वताश्रयाः॥४७

थोड़ी सेना के साथ तुम यहां से निकल जाओ, किल्ले पर तुम्हारे योद्धा जोहर से लड़ लेंगे।

अहं तु निजयोगेन मोहयिष्यामि जोहरम्।

प्रथयिष्यामि भवने भवद्भुजयशोभरम्॥४८

४८. मैं अपनी माया से जोहर को मोहित कर दूंगी और संसार में तुम्हारे पराक्रम की अत्यधिक कीर्ति फैलाऊंगी।

गतायुरेष पापात्मा न चिरायुर्भविष्यति।

निमित्तान्तरमाश्रित्य मृत्युरेनं जिघृक्षति॥४९

इस पापी के दिन भर गये हैं ये ज्यादा दिन जीवित नहीं रहेगा, दूसरे रूप में मृत्यु इसे ग्रस लेना चाहती है।

एवमादिश्य तं देवी तत्रैवान्तरधीयत।

स तु प्रबुद्धस्तामेव पुनः पुनरनीनमत्॥५०

५०. इस प्रकार उसे आज्ञा देकर देवी लुप्त हो गई, परन्तु जाग जाने पर शिवाजी ने बार-बार उसी का वंदन किया।

ततः प्रत्यर्थिसैन्येन परितः कृतमण्डलात्।

घनाघनघटालोकलीलाशालिशिखावलात्॥५१

समन्ततस्तत श्यामतमकाननसंकुलात्।

जननीलीमिलत्पङ्कपिच्छलोपत्यकातलात्॥५२

गम्भीरगद्गनदन्तिःसरन्नैकनिर्झरात्।

प्रणालादचलादात्मबलान्निर्यातुमुद्यतः॥५३

प्रौढां पताकिनीं तत्र निधित्सुः शिवभूमिपः।

पर्यास्नातगुणं लोके नाम्ना त्र्यम्बकभास्करम्॥५४

निर्वार्यमग्रजन्मानमवधार्य धिया स्वया।

गर्हिताहितसन्दोहामर्हितां गिरमभ्यघात्॥५५

५१-५५. तदनन्तर चारों ओर से शत्रुसेना से घिरे हुए, घने बादलों के समूह को देखकर नाचने वाले मोर, सभी ओर फैले हुआ घना एवं काला जंगल, गदगद एवं गंभीर आवाज करने वाले झंरें जिससे बह रहे थे, ऐसे उस पन्हाळ के किले से अपनी सामर्थ्यानुसार बाहर जाने के लिए तैयार होकर बड़ी सेना को वहां रखने की इच्छा से त्र्यम्बक भास्कर नामवाला, लोकप्रसिद्ध, सम्मान्य धैर्यशाली ब्राह्मण को अपनी बुद्धि से सुनिश्चित करके, शत्रु समूह की निन्दा करनेवाले शिवाजी ने यथायोग्य भाषण किया।

राजोवाच -

पश्य युध्याद्धिरेवाहर्दिवमुद्यमितायुधैः।

मासाश्चैत्रादयोऽस्माभिरिह नीताः प्रभाविभिः॥५६

५६. राजा बोला -देखो! रात-दिन हथियारों से लड़ते हुए पराक्रम से युक्त हमने यहां पर चैत्र आदि चार महिने बीता दिए।

पञ्चमोऽयं तु संप्राप्तो नभाः श्यामनभाः शुभः।

शोभां सुमहतीं तन्वन् इह काननसंकुले॥५७

५७. जिस महिने में घने काले बादल छाए रहते हैं, ऐसा शुभ पांचवा श्रावण का महिना आ गया है।

हन्ताहार्यशिरस्यस्मिन् अहिताहार्यपौरुषैः।

हतो न जोहरोऽस्माभिरहो शैलतलस्थितः॥५८

५८. अरे! जिनका पराक्रम शत्रुओं के लिए अपरिहार्य है, ऐसे हमारे हाथों से इस दुर्जय किले के तलहटी में रहते हुए जोहर को हम मार न सकें यह आश्चर्य है।

भग्नाः सेनाधिपतयो नेतृप्रभृतयः किला।

नैनं परिधिमेतेषामीषत् क्षपयितुं क्षमाः॥५९

५९. नेताजी आदि सेनापतियों का मन परिवर्तित हो गया है, ऐसी लोकचर्चा है और इनकी यह घेराबंदी हमारे द्वारा समाप्त करनी अशक्य है।



बलशाली बर्बरोऽयं सुबाहुर्बहुभिर्बलैः।

अशक्यो जेतुमस्माभिरिदानीमिति मे मतिः॥६०

६०. इस बलशाली व पराक्रमी बर्बर को इस बड़ी सेना के सहायता से जीतना असम्भव है, ऐसा मुझे लगता है।

इहैव निग्रहायास्य चिरस्य मदवस्थितिः।

न स्थाने पुण्यविषयस्थाने ताम्रावृते सति॥६१

६१. पुणे प्रान्त पर मुगलों द्वारा आक्रमण किया जा रहा है, उनके नाश एवं पराभव के लिए मैं यहां पर ज्यादा समय तक रुकूं यह उचित नहीं है।

महती ताम्रवदनध्वजिनी साहसप्रिया।

तत्र मन्ये मदन्येन न पराभूतिमेष्यति॥६२

६२. उधर साहसी मुगल सेना की पराजय मेरे अलावा किसी और के हाथ से नहीं होगी, ऐसा मुझे लगता है।

अतोऽस्मि प्रस्थितस्तूर्णं ताम्राननजिघांसया।

परैरधर्षणीयोऽस्तु पर्वतोऽयं त्वदाश्रयः॥६३

६३. इसलिए मैं मुगलों का संहार करने की इच्छा से जल्द ही निकल रहा हूँ, तब शत्रुओं द्वारा दुर्जयी यह किल्ला तेरे आश्रित रहने दें।

त्वमत्र भव सेनानीः सेनानीर्भव विक्रमी।

उज्जासनाय परितः परिवेषकृता द्विषाम्॥६४

६४. तू यहां पर सेनापति हो, चारों ओर से घेराबंदी किए हुए शत्रुओं के नाश के लिए पराक्रमी हो।

भित्वनं विद्विषद्व्यूहं पार्थस्येव प्रयास्यतः।

प्रतियोद्धा न मे कश्चित् पतितोऽद्धा भविष्यति॥६५

६५. इस शत्रुसेना के व्यूह को तोड़कर अर्जुन के समान निकल कर जाने वाला, मेरे साथ लड़ने वाला कोई भी नष्ट योद्धा बिल्कुल नहीं मिलेगा।

इत्युदीर्य स तं धीरं धरे तस्मिन् निधाय च।

यामिन्याः प्रथमे यामे प्रस्थितः पृथिवीपतिः॥६६

६६. ऐसा बोलकर उस धैर्यशाली त्र्यम्बक भास्करदास को उस किले पर छोड़कर महाराज रात्री के पहले प्रहर में चल पड़े।

याप्ययानसमासीनं तमेनं स्वामिनं भुवः।

तदा बतानुयान्ति स्म पदगानां शतानि षट्॥६७

६७. आश्चर्य की बात यह है कि महाराज के पालखी में बैठकर जाते समय उनके पीछे छः सौ सैनिक भी गए।

प्रस्थानदुन्दुभिस्तस्य दध्वान मधुरं तथा।

ध्वनदम्भोघरभ्रान्त्या परैर्न बुबुधे यथा॥६८

६८. उनका प्रस्थान दुंदुभी के आवाज के समान मधुर ध्वनि ध्वनित हुई तो शत्रु ने उसे मेघगर्जना ही समझा।

कदम्बकेतकीकुन्दकुटजामोदमेदुरः।

परिस्फुरन्निर्झराम्भः कणसम्पर्कमन्थरः॥६९

तस्यानुकूलतां तत्र दधानः पवनस्तदा।

आत्मीयं दर्शयामास साहाय्यं स्वजनो यथा॥७०

६९-७०. कदंब, केतक, कुंद, कुटज इनके सुगंध से भरे हुए, तेजी से उछल कूदकर बहने वाले झरने के बर्फ के सम्पर्क से मंद, ऐसी वायु ने उस समय वहां पर अनुकूल होकर स्वबान्धव के समान उनकी सहायता की।

व्रजते भूतृतेऽमुष्मै चरदृष्टचरे पथि।

स्थलीं निम्नोन्नतां सद्यः सौदामिन्योऽप्यदर्शयन्॥७१

७१. महाराज के मार्ग पर प्रवास करते समय उनके लिए जासुसों ने पहले ही देखकर रखा हुआ पहाड़ी रास्ता उन्होंने उसी क्षण दिखा दिया।

अपि यान्तमदूरेण पथा तमवनीश्वरम्।

नाज्ञासिषुर्विद्विषतो भगवत्या विमोहिताः॥७२

७२. भवानी देवी के द्वारा मोहित किए हुए शत्रुओं के राजा के समीप से जाने पर भी राजा समझ नहीं पाया।

ततोतरान्तरास्रस्तप्रस्तरप्रोन्नतानतम्।  
प्रपातपातनिनदन्नदीनदसुदुर्गमम्॥७३  
नीलशैवलसंश्लिष्टसक्थिदघ्ननिषद्वरम्।  
नैकधातुद्रवमिलन्मृदुमृन्मसृणोदरम्॥७४  
पल्लवप्रोल्लसद्वीरुत्परिरब्धमहीरुहम्।  
वर्षाकुलितशार्दूलकुलसंकुलकन्दरम्॥७५  
वामलूरान्तरोद्रच्छदंशूकजिघांसया।  
कृतकोलाहलं कोपात् प्रचलद्भिः कलापिभिः॥७६  
अदृष्टजनसंचारं चरदृष्टचरं तदा।  
राजा राजगिरेरीशस्तमध्वानमलंघत॥७७

७३-७७. आगे बीच-बीच में गिरे हुए पत्थरों से उबड़-खाबड़ पर्वत से टुटे हुए तट से गिरते हुए गर्जना करने वाले, नदियों एवं झरनों के कारण अत्यन्त दुर्गम, नीले काई के कारण गाढ़ा कीचड़, जंघाओं तक पवित्र दिखनेवाली लताएं जो कि वृक्षों से लिपटे हुई हैं, गिरी हुई वर्षा के कारण शेरों की भीड़ गुहा के सामने हो गई, वल्मीक से बाहर आये हुए सापों को मारने की इच्छा से दौड़कर जाने के लिए तैयार खुले पंखों वाले मोर, जिस पर मनुष्यों की दृष्टि तक नहीं पड़ती थी, ऐसे गुप्तचरों ने पहले ही देखकर रखे हुए उस मार्ग को रायगढ़ का स्वामी राजा शिवाजी लांघकर गया।

अथ धरणिमणिर्विशालशैलम्,  
निजमधिरुह्य विलोकनीयशीलम्।  
वसतिमभिमतां विलंघिताध्वा,  
स्वकटकविश्रमहेतुकामकार्षीत्॥७८

७८. तदनन्तर मार्ग को पार करके आये हुए राजा शिवाजी ने दर्शनीय सभागृह एवं अपने बड़े किले पर चढ़कर वहां पर अपनी सेना को विश्राम मिले इसलिए इच्छानुसार विश्रामालय बनाये।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्रयां संहितायां स्वराष्ट्रावेक्षणं  
नामाध्यायः॥२६॥

## अध्याय:-२७

मनीषिण उचुः -

प्रणालभूधरादात्मनिहितानीकदुर्गहात्।  
समं पत्तिशक्तैः षड्भिस्तमज्ञातविनिर्गतम्॥१  
जोहरः कथमज्ञासीत् मोहितो योगमायया।  
प्रतीकारं च कं चक्रे स्वेन चक्रेण संवृतः॥२  
शिववीरयशः क्षीरनिधिप्लावितचेतसा।  
परमानन्द भवता तत्सर्वमभिधीयताम्॥३

१-३.पण्डित बोलें -

अपने रखे हुए सैनिकों के कारण, दूर्जयी पन्हाळ के किल्ले से शिवाजी छः सौ पदाति सैनिकों के साथ निकलकर चले गए, इसका अन्दाज योगमाया से मूढ हुए जोहर को कैसे समझ में आया एवं अपने सैन्यबल से उसने कोन-सा प्रतीकार किया, यह सब वीर शिवाजी के यशरूपी क्षीर समुद्र में तैयारने वाले हे परमानन्द तुम बताओ।

कवीन्द्र उवाच -

शिवः स्वयं प्रणालाद्रेर्यियासुरभवद्यदा।  
वीराय जोहरायेमं संदेशं व्यसृजत्तदा॥४

४.कवीन्द्र बोलें -

जब शिवाजी ने स्वयं पन्हाळ के किल्ले से जाने की इच्छा की तभी उन्होंने जोहर को इस प्रकार से सन्देश भिजवाया था।

शिवराज उवाच -

येदिलेन समाहूतैस्ताम्रैः स विषयो मम।

उपक्रान्तस्त्वाक्रमितुमतिक्रान्तिविकारिभिः॥५

५. शिवाजी बोलें -

आदिलशाह ने बुलाये हुए व मेरे आक्रमण के कारण क्रोधित मुगल मेरे देश पर आक्रमण कर रहे हैं।

अतस्तैरधुना योद्धुमितः प्रस्थीयते मया।

योद्धव्यं बत मे योधैर्युद्धविद्धिरिह त्वया॥६

६. इसलिए उनसे युद्ध करने के लिए मैं यहाँ से जा रहा हूँ, तब तू मेरे युद्धनिपुण योद्धाओं से यहाँ लड़ना।

यदि वास्ति मतिस्तेऽद्य द्वंद्वयुद्धे सकौतुका।

तर्ह्यलंक्रियतामेत्य प्रणालाद्रेरुपत्यकाम्॥७

७. या फिर मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध करने की उत्सुकता यदि तुम्हें आज हो तो पन्हाळ के किल्ले के तलहटी में आ जाता।

स्वेन स्वेन ह्यनीकेन विदूरादवलोकितौ।

योत्स्यावः सोत्सवं तत्र बत निस्त्रिंशधारिणौ॥८

८. अपनी-अपनी सेनाएं हमें दूर से देखें, हम दोनों तलवार से बाहों पर आनन्द से लटेंगे।

तमाकर्ण्यपि संदेशं कृती कर्णपुराधिपः।

अनाकर्णितवच्चक्रे चकितेन स्वचेतसा॥९

९. उस कर्णपूर के कुशल स्वामी जोहर ने वह संदेश सुनकर भी मन भयत्रस्त होने के कारण अनसुना कर दिया।

तदाप्रभृति तेनोच्चैर्भायीखानादयो भटाः।

संदिष्टाः सर्वतस्यस्य पर्वतस्य निरोधने॥१०

१०. तब से ही उस ने भाईजान आदि योद्धाओं को किले के चारों ओर कठोरता पूर्ण घेराबंदी करने को कहा।

अज्ञाता नैव निर्याति न चायाति पिपीलिका।

तथोपविविशुस्तत्र ततो जोहरसैनिकाः॥११

११.तब चिटी भी बिना पता चले अंदर या बाहर जा सके ऐसे तरीके से जोहर के सैनिकों ने वहाँ उस किल्ले की घेरबंदी की।

अंधीकृत्येव तांस्तत्र निविष्टान् प्रतियोधिनः।

शिवः स्वीयेन शौर्येण परिधिं तमलंघयत्॥१२

१२.वहाँ घेराबंदी करके बैठे हुए उस शत्रु योद्धाओं को मानों अंधा करके शिवानी अपने पराक्रम से वह घेराबंदी तोड़कर गया हो।

स ततः सप्तभिर्यामैः पंचभिर्योजनैर्मितम्।

अतीत्य किल पंथानं विशालं शैलमासदत्॥१३

१३.तदनन्तर वह सचमुच सात घंटों में ही ४० योजन मार्ग पर करके विशाल किल्ले पर पहुंच गया।

अथोदन्तविदश्वाराः शाहराजात्मजं नृपम्।

विनिर्गतं प्रणालाद्रेर्जोहराय न्यवेदयन्॥१४

१४.वह समाचार जानने वाले गुप्तचरों ने शिवाजी पन्हाळ के किले से चला गया, ऐसे जोहर को बताया।

संवर्तसागरावर्तवर्तीव स ततः स्वयम्।

तांतभावमधात्तत्र भ्रांतभ्रांतः सभांतरे॥१५

१५.तब मानों प्रलयकाल के सागर के भंवरे में फंसा हुआ जोहर स्वयं अत्यन्त दुःखी, मूढ़ होकर सभा में परेशान-सा था।

अहो रुद्धो विरुद्धो..यमस्माभिरिह भूधरे।

अस्मान् विमापयन्नस्मादकस्मादद्य निर्गतः॥१६

१६.अरे इस किल्ले पर हमारे द्वारा बंदी बनाया हुआ शत्रु चकित करके आज यहाँ से अचानक निकलकर चला गया, इसे क्या बोलें हमें।

अथ येदिलशाहाय दर्शयिष्ये कथं मुखम्।

अतः प्रभृति मे जन्म परिहासाय केवलम्॥१७

१७.अब मैं आदिलशाह को मुंह कैसे दिखाऊं, यहाँ से आगे मेरा जीना केवल उपहास के लिए ही होगा।

यवनान्तकरं ह्येनं मम हस्ताद्धिनिःसृतम्।

निशम्य किं वदिष्यन्ति शास्ताखानादयोऽपि माम्॥१८

१८.यवनों का नाश करने वाला यह मेरे हाथ से निकल गया, ऐसा सुनकर शाएस्ताखान आदि भी मुझे क्या बोलेंगे।

अनुतप्येति स चिरं विचिन्त्य च मुहुर्मुहुः।

जगाद दुर्मदं वीरं मसूदं नाम बर्बरम्॥१९

१९.इस प्रकार बहुत देर तक पश्चाताप करके एवं बारंबार विचार करके वह नशे में चूर वीर सीद्दी मसूदास बोला।

जोहर उवाच -

ग्रन्थिस्थेनेव रत्नेन सपत्नेनाधुनामुना।

निरोधपरिमुक्तेन बत मे दूयते मनः॥२०

२०.जोहर बोला -

थैली में स्थित रत्नों के समान अब यह शत्रु घेरे में से निकलने के कारण मेरे मन को अत्यधिक दुःख हो रहा है।

पश्यतां नः समस्तानां हस्ताद्योऽद्य विनिःसृतः।

द्रुतमेव महाबाहो मसूद तमनुद्रव॥२१

२१.हम सबके देखने पर भी जो आज हमारे घटों से निकल गया है, उसका हे महाबाहु मसूद, जल्दी से पीछा करो।

निजकार्यान्तरव्यग्रो विशाले च शिल्लोच्चये।

स चिरं बत न स्थाता त्वमतस्त्वरितो भव॥२२

२२.अपने दूसरे कार्य में व्यस्त होने के कारण वह शिवाजी विशाल किल्ले पर ज्यादा समय नहीं बितायेगा, इसलिए तू शीघ्रता करा।

स तेनेति विनिर्दिष्टो विशिष्टः शौर्यकर्मणि।

महत्या सेनया सार्धं अनुदुद्राव तं द्विषम्॥२३

२३. इस प्रकार उसके आज्ञा देने पर वह विशिष्ट पराक्रमी मसूद बड़ी सेना के साथ उस शत्रु का पीछा करने लगा।

आजानु तुरगास्तस्य ममज्जुः पथि पंकिले।

निपेतुः पत्तयश्चापि सांद्रशैवालसंकुले॥२४

२४. कीचड़ के कारण मार्ग में उसके घोड़े घूटने तक धस गए एवं पदाति सैनिक भी धने काई में गिर गए।

मसूदमागतं श्रुत्वा शिवराजः पराक्रमी।

ससज्जे संगरायोच्चैर्वसंस्तत्र शिलोच्चये॥२५

२५. मसूद आया हुआ सुनकर उस किल्ले पर रहने वाला पराक्रमी राजा शिवाजी लड़ने के लिए अच्छे से तैयार हुआ।

पल्लीवनपतिर्वीरो जसवन्तो नराधिपः।

प्रतापी सूर्यराजश्च श्रृंगारपुरपार्थिवः॥२६

अपरेऽपि च सामन्ताः शैलस्यास्य निरोधने।

नियोजितचरास्तेन जोहरेण दुरात्मना॥२७

युध्यमाना अपि मुहुः शिवं शैलाधिरोहिणम्।

निषेद्धुं न क्षमन्ते स्म पराभूताः पदे पदे॥२८

२६-२८. पल्लीवन पाली का राजा वीर जसवंत, श्रृंगारपुर का राजा पराक्रमी सुर्याजी और अन्य भी सामंत, उस किल्ले की घेराबंदी करने के लिए उस दुरात्मा दुष्ट जोहर ने पहले ही नियुक्त किए हैं, वे बार-बार लड़ते हुए पद-पद पर पराजय को प्राप्त होने के कारण किल्ले पर चढ़ते हुए शिवाजी को रोक नहीं पाए।

ते सर्वेऽपि मसूदेन ससैन्येनाभिमानिना।

समेत्य भूधरममुं भूयो रुरुधुरुद्धताः॥२९

२९. उन सभी घमंडी राजाओं ने, उस अभिमानी मसूद से सेना सहित मिलकर, उस किल्ले को फिर से घेर लिया।



अथ ते शिवराजस्य योधाः क्रोधारुणेक्षणाः।

अवरुह्य गिरेस्तस्मात् निःस्वनन्तो घना इव॥३०

धावमानाः सावधानान् रुंधानानभियायिनः।

शिताभिरसिधाराभिः कृतोत्पातमघातयन्॥३१

३०-३१तदनन्तर क्रोध से लाल आंखों वाले शिवाजी के योद्धाओं ने उस किल्ले से नीचे उतरकर बादल के समान गर्जना करके दौड़कर जाकर, बड़ी सावधानी से, घेरने वाले उन शत्रुओं पर हमला करके कूद-कूदकर तीक्ष्ण तलवारों से कांट दिए।

बहवो बर्बरास्तत्र बलिभिः शिवपत्तिभिः।

खण्डिताः खण्डधाराभिर्ययुः संयमिनीं पुरीम्॥३२

३२.वहाँ पर बहुत से बर्बर शिवाजी के बलवान पदाति सैनिकों के तलवारों की धार से काटने के कारण, उन बर्बरों ने यमपुर का रास्ता पकड़ लिया।

जसवन्तः सूर्यराजः सामन्ताश्चापि भूरिशः।

रयं धारयितुं तेषां न तत्र प्रभवोऽभवन्॥३३

३३.वहाँ पर जसवंत, सुर्याजी एवं अन्य बहुत से सामंत पराक्रम को सहन न कर पाए।

मसूदस्त्वपयान्तीं तां परावर्त्यात्मवाहिनीम्।

वेगवान् प्रतिजग्राह परान् ग्रह इव ग्रहान्॥३४

३४.भागकर जाने वाले, अपने सैनिकों को लौटाकर, शीघ्रकारी मसूद ने ग्रह-ग्रह पर जिस प्रकार हल्ला करता है, उसी प्रकार शत्रु पर हमला किया।

अथोभयेषां सैन्यानां संनिपातो महानभूत्।

असिभिः शक्तिभिश्चोच्चैर्निघ्नतामितरेतरम्॥३५

३५.तब तलवारों से एवं शक्तियों से एक-दूसरे को जोर से मारने वाले उन दोनों के ही सेनाओं में बड़ा युद्ध हुआ।

ततो भुजमदावेशनिघ्नान् विघ्नानिवागतान्।

बर्बरान् पातयामासुः परे प्रधनपारगाः॥३६

३६.तब बाहुबल के घमंड से उन्मत्त हुआ, विघ्नों के समान चलकर आये हुए उन बर्बरों को युद्धनिपुण शत्रुओं मराठाओं ने लुढ़का दिया।

तरुनिव तडित्वन्तो गरुत्मन्त इवोरगान्।

जगर्जुस्तान् विनिर्जित्य शैलाधिपतिपत्तयः॥३७

३७.विद्युतयुक्त बादल वृक्षों को तोड़कर व गरुड सांप को पकड़कर गर्जना करता है, उसी प्रकार शिवाजी के पदाती सैनिकों ने जीतकर गर्जना की।

परितः शीर्णशीर्षण्यं शीर्णपाण्यंघ्रिमस्तकम्।

शीर्णस्कन्धोरुयुगलं तदाभूद् रणमण्डलम्॥३८

३८.उस समय फूटे हुए शिरस्त्राणें टूटे हुए हाथ, पैर, शिर, कंधे, जंघाएँ, ये सब उस युद्धभूमि पर बिखरे हुए थे।

सा शादहरिताप्युच्चैर्विशालाद्रेरुपत्यका।

लोहितैः प्रतिवीराणामभूत् सपदि लोहिता॥३९

३९.ताजे घास से अत्यन्त हरी-भरी विशाल किल्ले की तलहटी की भूमि शत्रुओं के खून से शीघ्र ही लाल हो गई।

उरुभिर्जानुभिश्चापि तथा जंघाभिरन्ध्रिभिः।

शिरोभिश्च नराश्वानां दुष्प्रेक्ष्या वसुधाभवत्॥४०

४०.मनुष्यों व घोड़ों की जंघाएँ, घूटने, पैर एवं शिर इसके कारण भूमि अदर्शनीय दिखने लगी।

इत्थं मसूदः स्वं सैन्यं शिवरोषमहार्णवे।

समस्तमात्महस्तेन मज्जयित्वा विलज्जितः॥४१

परैः प्रधनपारीणैर्जीवन्मुक्तोऽनपेक्षितः।

पराचीनोऽभवत्तेभ्यः परं निर्वेदमागतः॥४२

४१.४२इस प्रकार से अपने सम्पूर्ण सैन्य बल को अपने हाथ से शिवाजी के क्रोधरूपी समुद्र में डुबोकर लज्जित हुआ मसूद, युद्धनिपुण शत्रुओं ने उपेक्षा कर जीवित छोड़ दिया एवं उसे अत्यधिक दुःख हुआ एवं अपनों के सामने खड़ा हुआ और वह शत्रुओं से परांगमुख हो गया।

प्रपलाय्य रणान्तस्मात् पुरस्तादात्मनः स्थितम्।

जोहरस्तमथामस्त परलोकादिवागतम्॥४३

४३.उस युद्ध से पलायन करके आया हुआ एवं अपनों के सामने खड़ा हुआ वह मसूद मानो परलोक से आया है, ऐसा जोहर को लगा।

अथ स्वविषयोपांतादानायितचरां चमूम्।

समादाय विशालाह्वात् पर्वतात् प्रस्थितः स्वयम्॥४४

४४.उसके बाद अपने राज्य की सीमा से पहले ही लाकर रखे हुए सैनिकों को लेकर वह स्वयं विशाल किले से चला गया।

उषित्वा वसतीस्तास्ताः सोत्सवे पथि पंचषाः।

सद्यो राजगिरि गत्वा राजा राजगिरीश्वरः॥४५

चंचन्मरीचिनिचयस्फुररत्नासनस्थिताम्।

कुलस्त्रीभिः परिवृतां कुलस्त्रीकुलदेवताम्॥४६

तत्तद्ब्रतवतीं नक्तंदिवमंचितदैवताम्।

ददतीमाशिषस्तास्ताः सत्यगम्भीरभाषिताम्॥४७

प्रमोदबाष्पप्रचयस्तिमितायतलोचनाम्।

समुच्चलिवात्सल्यरसां सदृशानोत्सुकाम्॥४८

संप्रस्नुतस्तनस्तन्यधाराभिरमृतात्मभिः।

स्नपयन्तीं महाबाहुर्जननीं स्वामवन्दत॥४९

४५-४९. आनन्दपूर्वक मार्ग में अनेक प्रकार के पांच-छः वस्तीयां बनाकर राजगड़ के राजा ने तुरन्त राजगड़ जाकर चमकने वाले किरणों के योग से चमकने वाले रत्नों से युक्त आसन पर बैठे हुए, कुलीन स्त्रियों से घिरे हुए कुलीन स्त्रियों के कुलदेवता, अनेक प्रकार के व्रतों को रखने वाली, रातदिन देवताओं की पूजा करने वाली, अनेक प्रकार के आशीर्वादों को देने वाले, सत्य एवं गंभीर भाषण करने वाली खुशी के आंसुओं से दीर्घ नेत्र जिसके नभ हो गए हैं, अंतःकरण में पुत्रप्रेम उमड़ गया है, जिसके दर्शनोत्सुक, स्तनों से बहने वाले अमृतमय दुध की धाराओं से मानो स्नान कराने वाली अपनी मां को वंदन किया।

ततस्तदान्तिके तत्तद् वृत्तमावेदयन्नयम्।

अनयत्तद्दिनं सर्वं विजयी शाहनन्दनः॥५०

५०. तत्पश्चात् अनेक प्रकार के सभी वृत्तांतों बताने में उस विजयी शिवाजी ने सम्पूर्ण दिन उनसे समीप बिताया।

आगतो विजयी राजा निजं राजगिरिं यदा।

प्राणदन्मृदुगम्भीरस्वनं दुंदुभयस्तदा॥५१

५१. जब विजयी शिवाजी राजा अपने किल्ले में आया, तब दुंदुभि, मृदु एवं गंभीर आवाज में बजने लगे।

तस्त्रथं परिभूय बर्बरबलं सद्यः स्वबाहोर्बलाद्,

आयाते शिवपत्तनं शिवमहीपाले प्रणालाचलात्।

सेनाभिः सकलाभिरेव सहितस्तत्तत्प्रयत्नाकुलः,

स्वेऽभीष्टे किल संशयालुरभवदिल्लीपतेर्मातुलः॥५२

५२. वहाँ स्थित बर्बर की सेना का, अपने बाहुबल से तुरन्त पराजय करके शिवाजी राजा पन्हाळ के किल्ले से अपने राजगड़ आया, तब सभी सैनिक साथ में होते हुए भी एवं अनेक प्रकार के प्रयत्नों में व्यस्त रहने पर भी दिल्लीपति के मामा शाएस्ताखान को अपना इष्ट हेतु प्राप्त होता है या नहीं, इस विषय में संदेह पैदा हुआ।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां

शतसाहस्र्यां संहितायां स्वपुरप्रवेशे

नामाध्यायः॥२७

## अध्याय:-२८

मनीषिण उचुः -

तस्मिन् भृशबलोत्तंसे राज्ञि राजगिरिं गते।

गतिः काऽभूत् प्रणालाद्रेः तदाचक्ष्व महामते॥१

पंडित बोलें -

१. उस भोसले कुल के राजा शिवाजी राजगड़ गये। तो पन्हाळ किले की क्या गति हुई? हे महाबुद्धिमान बताओं।

कवीन्द्र उवाच -

शास्ताखानः स्वयं ह्यत्र विषये तत्र जोहरः।

उभयत्रापि युद्धाय प्रभवामः कथं वयम्॥२

२. कवीन्द्र बोले -

स्वयं शाएस्तेखान इस प्रांत में है, उधर शिद्धी जोहर है। तब हम दोनों तरफ कैसे युद्ध कर सकते हैं?

तदद्य येदिलाधीनः प्रणालाद्रिविधीयताम्।

प्रस्थीयतां च भवता कार्यांतरमिह स्थितम्॥३

३. अतः आज पन्हाळ किले को आदिलशाह के अधीन कर दें और तू निकल जा। इधर दूसरे काम उपस्थित हो गये हैं।

अल्लीशाहात् प्रतिनिधिं तस्य शैलस्य सर्वथा।

आदास्यामः क्षणेनैव नास्मद्वचनमन्यथा॥४

४. आदिलशाह से उस किले का बदला हम एक क्षण में निश्चित लेंगे यह हमारा भाषण असत्य नहीं होगा।

निजदूतमुखेनेत्थं शिवेन प्रतिबोधितः।

परिचिन्त्य निजे चित्ते स्वयं त्र्यंबकभास्करः॥५

संगराभिनिविष्टोऽपि प्रभोराज्ञां प्रमाणयन्।

अल्लीशाहाय तं शैलं विततार विनीतवत्॥६

५-६. इस प्रकार अपने दूत के मुख से शिवाजी ने त्र्यंबक भास्कर को संदेश दिया सो उसने मन में विचार करके स्वयं युद्धोत्सुक होते हुए भी स्वामी की आज्ञा को प्रमाण मानकर वह किला विनम्रतापूर्वक अल्लीशाह को दे दिया।

ततः स जोहरं दृष्ट्वा तस्मै पृष्ट्वाप्यनामयम्।

सुतरां सत्कृतस्तेन शिवसौहृदकांक्षया॥७

७. तत्पश्चात् जोहर से मिलकर उसने उससे कुशलक्षेम पूछा और शिवाजी के स्नेह प्राप्ति की इच्छा से उसने उसका अत्यंत सत्कार किया।

बहुना स्वसहायेन सैन्येन परितो वृतः।

उपेत्य प्रणमन्मौलि प्रभुं निजमुदैक्षत॥८

८. अपने को सहायता करने वाली विशाल सेना के साथ समीप आकर मस्तक झुकाकर उसने अपने स्वामी की ओर देखा।

मनीषिण उचुः -

नायं त्वया निहतव्यो मंतव्यो मन्त्र एष मे।

निमित्तमन्यदेवास्य जोहरस्य विनाशने॥९

९. पंडित बोले – इसको मत मार’ इस मेरी बात को तू मान्य कर, इस जोहर के नाश करने के पीछे भिन्न ही निमित्त हैं।

भगवत्या समागत्य शिवराजाय धीमते।

उक्तपूर्वमिदं ह्यासीत् प्रणालाचलवर्तिने॥१०

१०. जब बुद्धिमान शिवाजी राजा पन्हाळ किले में था तब उसके समीप आकर उसको देवी भवानी ने यह बात पहले ही बता दी थी।

तर्हि येन निमित्तेन यथा स निधनं गतः।

तथा कथय नः सर्वं कवीन्द्रः कुशलो ह्यसि॥११

११. तब वह किस कारण से एवं किस प्रकार मृत्यु को प्राप्त हो गया वह सब हे कवीन्द्र! हमें बताओं, क्योंकि तुम कुशल हो।

वयं भागीरथीतीरे भवतो भारतीमिमाम्।

पायं पायं न तृप्यामः सुधां सुमनसो यथा॥१२

१२. जिस प्रकार देव अमृतपान करके भी तृप्ति को प्राप्त नहीं होते हैं, उसी प्रकार भागीरथी के तट पर आपकी वाणी को पुनः-पुनः सुनकर भी हमारी तृप्ति नहीं होती है।

कवीन्द्र उवाच -

भगवत्या समादिष्टे शिवभूषे महाभुजे।

ध्वजिनीं ताम्रवक्त्राणां पराभवितुमात्मना॥१३

बलिनं बर्बरव्यूहं सद्यो भित्त्वि निर्गते।

शिलोच्चये प्रणाले च दैवाद्धस्तमुपागते॥१४

अल्लीशाहोऽतिमन्दात्मा मन्यमानोऽन्यथात्मनि।

चिराय जोहरायैव चुकोप किल कोपनः॥१५

१३-१५. कवीन्द्र बोले – महाबाहु शिवाजी राजा को भवानी देवी ने आज्ञा दी तो वह स्वयं मुगलों की सेना को पराजित करने के लिए सिद्धि के बलवान सेना के व्यूह को भेजकर वापस आ गया एवं पन्हाळगढ़ के सौभाग्य से अधीन हो जाने पर तो अति महामूर्ख एवं क्रोधी अल्लीशाह के मन में वह बैठ गया तो अत्यधिक समय तक वह जोहर पर ही क्रोधित रहा।

ततो भूरि धनं लब्ध्वा बत लुब्धात्मना त्वया।

कुमते ज्ञायमानोऽपि स प्रस्थास्यन्नुपेक्षितः॥१६

१६. हे दुष्टबुद्धि! 'तुझ लोभी के पास से अत्यधिक धन लेकर वह जायेगा', यह ज्ञात होते हुए भी तूने उसकी उपेक्षा की।

भवता प्रतिरुद्धस्य भवतोऽनुमतिं विना।

दुर्गमो निर्गमस्तस्य नृपतेरिति मे मनः॥१७

१७. यदि तुने उसको कैद किया होता तो तेरी आज्ञा के बिना उसका वहाँ से निकल पाना कठिन होता, ऐसा मुझे लगता है।

तस्मादेहि धनं देहि यद्वत्तं तेन भूभृता।

मद्धस्तेनैव भवतो भवेन्निधनमन्यथा॥१८

१८. अतः तू यह और उस राजा द्वारा दिया हुआ धन दे, नहीं तो मेरे हाथ से तेरी मृत्यु होगी।

वर्णदूतमिमं तस्मै प्रेषयामास येदिलः।

तथापि न बिभायास्माद् बर्बरो बलिनां वरः॥१९

१९. इस प्रकार आदिलशाह ने उसको पत्र भेजा तथापि वह बलिश्रेष्ठ सिद्दी उससे भयभीत नहीं हुआ।

न यदा येदिलेनैष संपरायमपारयत्।

तदा कर्णपुरं सद्यः शिश्रिये दुर्गदुर्गमम्॥२०

२०. जब यह आदिलशाह के साथ युद्ध करने में असमर्थ रहा तो तब तुरंत दुर्ग की तरह दुर्गम ऐसे कर्णपुर का उसने आश्रय ले लिया।

अथ केनापि यत्नेन जोहराय स येदिलः।

हालया साकमज्ञातं हालाहलमदापयत्॥२१

२१. तत्पश्चात् उस आदिलशाह ने उसको ज्ञात हुए बिना ही प्रयत्न पूर्वक जोहर को शराब के साथ जहर दे दिया।

अहो येदिलशाहस्य महती मतिमंदता।

उपकारपरे येन जोहरेऽपनयः कृतः॥२२

२२. उपकार करने वाले जोहर के साथ जिसने अपकार किया उस आदिलशाह की यह कितनी बड़ी मूर्खता है।

अमानुषगतिर्देव्याः प्रसादेन सुदुर्धरः।



मोहयित्वा परचमूं परिवेषपरां पराम्॥२३

प्रयातो भूधरात्तस्माद् भूभृद् भृशबलो यदि।

मन्यामहे वयं तर्हि नापराधी स जोहरः॥२४

२३-२४. देवी की कृपा से वह अमानवीय गति एवं दुर्जेय राजा भोसले, घेरा डालकर स्थित हुई विशाल शत्रुसेना को मोहित करके यदि वह किले से निकल गया तो उसमें उस जोहर का अपराध नहीं है ऐसा हमें प्रतीत होता है।

अप्रस्तुतमिदं ह्यास्तां प्रथमप्रस्तुतं परम्।

सुधांशुदर्शनोद्वेल्लत्सुधांभोधिसहोदरम्॥२५

चरित्रं शिवराजस्य कथ्यमानं सविस्तरम्।

निशम्य विबुधैः सर्वैर्निजे हृदि निधीयताम्॥२६

२५-२६. किन्तु यह अप्रासंगिक है, प्रथम प्रस्तुत किये गये श्रेष्ठ, चंद्रदर्शन से उज्ज्वल होने वाले अमृत के सागर के समान, विस्तार के साथ वर्णन किये जाने वाले शिवाजी राजा के चरित्र को आप सभी सुनकर अपने हृदय में स्थापित करो।

बर्बरान् परिधीभूतान् परिभूय स्वतेजसा।

बली भृशबलो यावदायाति शिवपत्तनम्॥२७

तावत्ताम्राननबलैः सबलैः कृतविक्रमम्।

संग्रामदुर्गमाक्रान्तं कृत्वा संग्राममद्युतम्॥२८

२७-२८ घेरा डालकर बैठे हुए शिद्दी को अपने पराक्रम से तिरस्कृत करके बलवान् शिवाजी भोसले जैसे राजगड़ पर आता है, तो वही मुगलों का बलवान् सेनापति आश्चर्यजनक युद्ध करके पराक्रम से लड़कर संग्रामदुर्ग को अधीन कर लेता है।

तमुदंतं शिवनृपो निशम्य शिवपत्तने।

सर्वनीतिविदां वर्यः सचिवानिदमब्रवीत्॥२९

२९. वह वार्ता राजगड़ पर सुनकर, सभी राजनीतिज्ञों में श्रेष्ठ ऐसा वह शिवाजी राजा सचिवों से इस प्रकार बोला।

शिवराज उवाच -

कार्यान्तरप्रसक्तत्वात् मयि सांतरमास्थिते।

संग्रामदुर्गसहिता गता चक्रामती पुरी॥३०

३०. शिवराज बोला - अन्य कार्य में व्यस्त होने के कारण से चाक नगरी संग्राम दुर्ग सहित हाथ से निकल गई।

इदानीमेव तां दुर्गसहितां दुर्ग्रहामपि।

स्वयमभ्येत्य ताप्रेभ्यो गृहीतुमहमुत्सहे॥३१

३१. वह अधीन करने में कठिन होने पर भी उस पर स्वयं आक्रमण करके वह किले के साथ मैं अभी ही लेना चाहता हूँ।

परं त्वापतितं यद्धि कार्यान्तरमनन्तरम्।

प्रयतिष्यामहे तस्मै वयं सर्वेऽप्यतः परम्॥३२

३२. किन्तु जो यह दूसरा काम बीच में उपस्थित हो गया है, उसके लिए हम सब प्रयत्नपूर्वक आगे कार्य करेंगे।

सहायपरिहीनेन नरेणेह न केनचित्।

परीभावयितुं शक्या प्रतीपानामनीकिनी॥३३

३३. जिसका कोई सहायता करने वाला नहीं है, ऐसे किसी भी मनुष्य के हाथ से इस संसार में शत्रुसेना को पराजित करना असंभव है।

तस्माद्यत्नेन महता नरेन्द्रेण विपश्चिता।

संग्राह्यानीकिनी शश्वत् परनिग्रहकारिणी॥३४

३४. अतः बुद्धिमान् राजा के द्वारा शत्रुओं का नाश करने वाली सेना को बड़े प्रयत्न से सदा संग्रहित करना चाहिए।

बहुनार्थेनरहितो महानपि महीपतिः।

न तद्विधानां सेनानां संग्रहं कर्तुमर्हति॥३५

३५. जिसके पास बहुत धन नहीं है, ऐसे बड़े राजाओं को भी उस प्रकार की सेना का संग्रह करना नहीं आता है।

अर्थादर्थो भवत्युच्चैरर्थाद्धर्मोऽपि वर्धते।

अर्थादेव तृतीयर्ोऽथस्तस्मादर्थः प्रशस्यते॥३६

३६. धन से धन बढ़ता है, धन से धर्म भी वृद्धि को प्राप्त होता है, धन से काम भी प्राप्त होता है। अतः धन की प्रशंसा होती है।

कुलं शीलं वयो विद्या पौरुषं सत्यवादिता।

गुणज्ञता च गाम्भीर्यमर्थादेव प्रजायते॥३७

३७. कुल, शील, आयु, विद्या, पराक्रम, सत्यवादिता, गुणज्ञता गाम्भीर्य ये सब धन से ही उत्पन्न होता है।

अर्थादसौ परश्चोच्चैर्लोको लोकस्य निश्चितः।

पुमानर्थेनरहितो जीवन्नपि न जीवति॥३८

३८. धन से ही लोगों को इहलोक एवं परलोक निश्चितरूप से प्राप्त होता है। धनरहित पुरुष जीवित होते हुए भी जीवित नहीं हैं।

यस्यार्थास्तस्य सुहृदो यस्यार्थास्तस्य पौरुषम्।

यस्यार्थास्तस्य सर्वेऽपि सहायाः सम्भवन्ति हि॥३९

३९. जिसके पास विपुल धन होता है, उसके मित्र होते हैं, जिसके पास धन होता है, वही पराक्रमी होता है, जिसके पास धन होता है, उसके सभी सहायक होते हैं।

तद्गुध्वा स्म प्रभावेण पृथुवत् पृथिवीमिमाम्।

तमर्थमाहरिष्यामि यदधीनमिदं जगत्॥४०

४०. अतः पृथुराजा की तरह अपने सामर्थ्य से इस पृथ्वी से कर वसूल करके, जिस पर इस संसार का आश्रय है, ऐसे उस धन को लेकर आऊँगा।

तदनन्तरमेवोच्चैस्तत्र दिल्लीन्द्रमातुले।

करिष्यामि प्रतीकारमगस्त्य इव सागरे॥४१

४१. तत्पश्चात्, अगस्त्य ऋषि ने जिस प्रकार समुद्र से प्रतिशोध लिया, उसी प्रकार उधर दिल्लीपति के मामा से प्रतिशोध लूंगा।

इति ब्रुवाणमुचितं सचिवाः सदसि स्थितम्।

नयोपेतं विनयिनो व्याहरन्ति स्म भूपतिम्॥४२

४२. इस प्रकार राजा ने सभा में बैठकर उचित एवं राजनीति युक्त भाषण दिया तो विनयशील सचिव बोले।

सचिवा उचुः -

अर्थ समर्थ इति यद्भवानाह तदर्थवत्।

तन्नोति कः प्रतिब्रूते तिष्ठन् वैतण्डिकव्रते॥४३

४३. सचिव बोले - धन ही सब सामर्थ्य से युक्त है, ऐसा जो आप कहते हैं, उस प्रकार नहीं है।

अर्थः समर्थसामर्थ्याद् ब्रजेत्सामर्थ्यमात्मनि।

असमर्थाश्रितस्त्वर्थो नार्थोऽनर्थो हि केवलम्॥४४

४४. समर्थ व्यक्ति के सामर्थ्य के कारण से ही धन के स्थान पर सामर्थ्य आयेगा, किन्तु असमर्थ के पास में स्थित धन लाभकारी नहीं होता है, वह केवल अनर्थकारी ही होता है।

यर्थः सर्वेषु लोकेषु स तवैवेति विद्महे।

तद्याहि जैत्रयात्रायै शिवराज महाद्युते॥४५

४५. सभी लोगों के पास जो धन है, वह सब तेरा ही है, यह हम जानते हैं। अतः हे महातेजस्वी! शिवाजी राजा आप मुलुख गिरि पर जाओ।

किंच संप्रति सेनानीरिन्द्रप्रस्थेन्द्रमातुलः।

संग्रामदुर्गमव्यग्रो जित्वा भूत्वा महामनाः॥४६

प्रस्थाय वै पुरः पुण्यपुरमास्थाय च स्थितः।

निशम्य त्वां महाबाहो शिवपत्तनवर्तिनम्॥४७

भृशं विशंकमानोऽन्तः प्रायस्तेनैव वर्त्मना।

सह्यशैलावरोहाय सेनां सम्प्रेषयिष्यति॥४८

४६-४८ . किन्तु सम्प्रति दिल्लीपति का मामा सेनापति शाएस्तेखान यह संग्रामदुर्ग को जीतकर चिन्तारहित एवं गर्वयुक्त होकर आगे प्रस्थान करके पुणे आकर निवास कर रहा है। हे पराक्रमी राजा! तू राजगढ़ पर है, ऐसा जानकर वह मन से अत्यन्त भयभीत होकर प्रायः वह उसी मार्ग से अपनी सेना को सह्याद्री ने नीचे भेजेगा।

अभिद्रवन्ती सह्याद्रेर्यथा सा नावरोहति।

तावत्तथा विधातव्यमथान्यदपि सर्वथा॥४९

४९. सह्याद्री से चलकर आने वाली सेना जिस प्रकार से नीचे अवतरण न कर सकें, उसी प्रकार का प्रयत्न करना चाहिए। पुनः दूसरा सब कुछ करना चाहिए।

सचिवानामिति वचो निशम्य समयोचितम्।

स धन्यचरितः सम्यगमन्यत महामतिः॥५०

५०. सचिव के उस समयोचित वचन को सुनकर उस महाबुद्धिमान् एवं पुण्यशील राजा को वह सम्यक् प्रतीत हुआ।

मनीषिण उचुः -

सहस्रैः सप्तिवाहानां त्रिसप्तत्या समन्वितः।

शास्ताखानः किमकरोत् बत पुण्यपुरस्थितः॥५१

५१. पण्डित बोले - तिहत्तर हजार घुड़सवारों के साथ शाएस्तेखान ने पुणे में स्थित होकर क्या कर लिया?

कवीन्द्र उवाच -

स कारतलबं नाम यवनं कार्यकारिणम्।

पुरस्थितं समाहूय मिथः एतदभाषत॥५२

५२. कवीन्द्र बोला - सामने स्थित कारतलब नाम के कायकर्ता यवन को बुलाकर उसे एकान्त में इस प्रकार कहा।

शास्ताखान उवाच -

प्रतापी जसवंतस्ते जनकोऽजबडान्वयः।

भवानपि नयत्येतद्युद्धेनेव निजं वयः॥५३

५३. शास्ताखान बोला - तेरे पिता अजबड वंश के पराक्रमी जसवंत थे और तू भी अपनी आयु युद्ध में ही व्यतीत कर रहा है।

प्रबलं गालिबं जित्वा सम्प्रति स्वबलाश्रयात्।

प्रचण्डपुर मादाय मह्यं दत्तमिह त्वया॥५४

५४. प्रबल गालिब को जीतकर सम्प्रति अपनी शक्ति से प्रचण्डपुर को लेकर तुमने मुझे दे दिया।

सोऽधिपः सह्यशैलस्य दुर्धषः संगरे यथा।

करोत्यसुकरं कर्म तवापि विदितं तथा॥५५

५५. दुर्जेय वह सह्याद्री का अधिपति शिवाजी युद्ध में किस प्रकार से कठिन कार्यों को करता है, यह तुझे भी पता ही है।

सह्यजयः सह्यपतिः सह्यस्याक्रमणं विना।

नैवास्मद्भ्रशतां गन्ता हन्ताहंकारसंयुतः॥५६

५६. सह्याद्री पर आक्रमण किये बिना वह दुर्जेय एवं अभिमानी सह्याद्रिपति हमारे हाथों में नहीं आयेगा।

सेनया सहितः सद्यस्तदद्य त्वं ममाज्ञया।

बत प्रसह्य सह्याद्रेरवरोहे मतिं कुरु॥५७

५७. अतः मेरी आज्ञा से तू आज ही सेना के साथ तुरन्त सह्याद्री से बलात अवतरित होने का विचार बना।

अद्यप्रभृत्यहं वीर भविष्यामि भवद्वशः।

अवरुह्य धरं सह्यं मह्यं देहि महद्यशः॥५८

५८. हे वीर! आज से मैं तुम्हारे अधीन हूँ। सह्याद्री से उतरने पर मुझे महान् यश को प्राप्त करा दो।

चम्पावत्यथ कल्याणपुरं भीमपुरी तथा।

पणवल्ली पुनर्नागस्थानं कार्यं त्वयात्मसात्॥५९

५९. चौल, कल्याण, भिवंडी, पनवेल, नागस्थान, ये तू अपने अधीन कर लेना।

कच्छपाश्चाहुबाणाश्च महाप्राणा महायुधाः।

तथैवामरसिंहोऽपि मित्रसेनः सबांधवः॥६०

गाढान्वयः सर्जराजो राजव्याघ्री च दुर्धरा।

जसवन्तश्च कोकाटो यादवश्च महाभुजः॥६१

एतेऽति महिताः सैन्यसहिताः प्रहिता मया।

सैन्यास्त्वमनुयातारो विरोचनमिवासुराः॥६२

६०-६२. महान् बलवान् एवं पराक्रमी कच्छप एवं चव्हाण, अमरसिंह मित्रसेन एवं उसका भाई, सर्जेराव गाढे, दुर्जेय राजव्याघ्री, जसवंत कोकाटे, महाबाहु जाधव, इन अत्यन्त माननीयों को मैं सेनासहित प्रेषित करूंगा, विरोचन के पीछे से जैसे असु गये थे उसी प्रकार तेरे पीछे से ये आयेंगे।

अग्रह्यः समग्रसैन्यानां त्वमव्यग्रः पुरो भव।

परिपालयिता पृष्ठं तवाहं प्रेष्ठकारिणः॥६३

६३. सम्पूर्ण सेना का सेनापति बनकर तू आगे चिंतारहित होकर चल। अत्यन्त प्रियकारी तेरे पृष्ठभाग की मैं रक्षा करूंगा।

इत्थं नियुक्तमात्रोऽयं पृतनापतिनामुना।

वीरैः परिवृतो वीरः प्रतस्थे प्रथितक्रमः॥६४

६४. इस प्रकार उस सेनापति की आज्ञा होते ही उस विख्यात पराक्रमी वीर ने वीरों के साथ प्रस्थान कर दिया।

अथ पन्थानमाश्रित् लोहाद्रेर्दक्षिणोत्तरम्।

वीतभीः स बतारेभे सह्यशैलावरोहणम्॥६५

६५. तत्पश्चात् लोहगढ़ के दक्षिणोत्तर मार्ग का आश्रय लेकर वह निर्भयता के साथ सह्याद्रि से अवतरण करने लगा।

एकपद्या तया यान्ती नलिकायन्त्रतुल्यया।

अभूदतीव स्थगिता वाहिनी सा पदे पदे॥६६

६६. नलिका यन्त्र की तरह उस एकपदी मार्ग से जाते समय वह सेना पग-पग पर अत्यधिक संकुचित हो गई।

अस्मादवाङ्मुखीभूताः पताम इति निश्चिताः।

नरास्ताप्राननचमूचराः सह्यमवातरन्॥६७

६७. इस मार्ग से नीचे की ओर मुख करके जायेंगे, इस प्रकार निश्चित हो जाने पर मुगलसेना के लोग सह्याद्री से नीचे उतर गये।

अहंकारपरः कारतलबः स्वबलान्वितः।

हन्तारं नैव हन्तारं कान्तारं तु व्यलोकत॥६८

६८. अपनी सेना के साथ आने वाले उस अभिमानी कारतलब ने अपने शत्रु को शीघ्र नहीं देखा किन्तु वनमात्र देखा।

शून्यामिव परैः पूर्णां तां वन्यां सोऽविशद्यदा।

मित्रसेनादयस्तस्य पार्श्वं न विजहुस्तदा॥६९

६९. शत्रुओं से परिपूर्ण किन्तु मानो शून्य दिखने वाले उस वन में जब उसने प्रवेश किया तब मित्रसेनादि ने उसके कड़ अर्थात् कटिभाग को भी नहीं छोड़ा।

न यत्र पवनस्तत्र यवनः स महावने।

निवसन्नवने हेतुमात्मनो न व्यचिन्तयत्॥७०

७० . जहां वायु भी नहीं थी ऐसे उस महावन में निवास करते समय उसने अपने रक्षणार्थ उपाय भी नहीं सोचा था।

मनीषिण उचुः -

तां वन्यामाविशन्तस्ते द्विषन्तः शिवभूपतेः।

अनालोकमयं लोकं पश्यामः स्मेति मन्वते॥७१

७१. पण्डित बोले - उन झाड़ियों में प्रविष्ट होने वाले शिवाजी के शत्रुओं को हमने अंधकारमय लोक देख लिया, ऐसा प्रतीत हुआ।

सह्याद्रेरवरोहं तं प्रतिकूलमरुद्धतम्।

तावदेव शिवः कस्मान्नविरुद्धमरुद्धतम्॥७२

७२. प्रतिकूल वायु के प्रवाह में सह्याद्री से नीचे उतरने वाले उन शत्रुओं को शिवाजी ने तभी क्यों नहीं रोका?



विषयः शिवराजस्य स हि सहायतलाश्रयः।

परैर्न कथमाक्रांतस्तदा तद्ग्रहतत्परैः॥७३

७३. सह्याद्री के अधोभाग पर स्थित शिवाजी के उस प्रदेश को अधीन करने के लिए उत्सुक शत्रुओं ने तब उसको क्यों अधीन नहीं किया।

कवीन्द्र उवाच -

आदावेव हि रुद्धस्यात्स विरुद्धः शिवेन चेत्।

नापतिप्यत्समं सैन्यैस्तर्हि तस्मिन् वनार्णवे॥७४

७४. कवीन्द्र बोले - यदि आरम्भ में ही उन शत्रुओं को शिवाजी रोक देता तो वह सेनापति सेना के साथ आकर इस अरण्यसागर में नहीं गिरता।

इत्थमेव विनिश्चित्य स तं भुजमदोद्धतम्।

न्यरुणत्किल नो तत्र समर्थोऽपि महीपतिः॥७५

७५. इस प्रकार का मन में निश्चय करके ही स्वयं समर्थ होते हुए भी उस राजा ने बाहुबल का अभिमान करने वाले उस कारतलब को वहां नहीं रोका था।

अधस्तादथ सह्याद्रेः समायातं पुरः पुरः।

न्यरौत्सीदध्वनोमध्ये तं शिवो भ्येत्य विद्विषम्॥७६

७६. फिर सह्याद्री से उतरकर आगे आये हुए उन शत्रुओं पर शिवाजी ने चतुरता के साथ मार्ग में ही आक्रमण कर दिया।

तेन राजन्यवीरेण पूर्वमेव नियोजितान्।

तत्र तत्र स्थितानेत्य भागयोरुभयोरपि॥७७

सन्नद्धान् पत्तिमूर्धन्यांस्तां वन्यामन्तरान्तरा।

नाविदन्नुपकण्ठस्थानपि दिल्लीन्द्रसैनिकाः॥७८

७७-७८. उस वीर द्वारा पूर्व नियोजित पदातियों के सज्जनायकों के आकर उस घने अरण्य में दोनों तरफ से समीप ही स्थित हो जाने पर भी उन दिल्लीपति के सैनिकों को ज्ञात नहीं हुआ।

अथोदुम्बरखण्डाह्वबहनान्तरवर्तिनीम्।

वर्तनीं कारतलबः प्राविशत् पृतनान्वितः॥७९

७९. तत्पश्चात् उबरखंड नामक अरण्य के एकपदी मार्ग पर कारतलब अपनी सेना के साथ आ गया।

ततः सद्यः स्वनन्तीनां भेरीणां निस्वनो महान्।

उपागतः शिव इति प्रतियोधानबोधयत्॥८०

८०. फिर तत्क्षण बजने वाले रणभेरी की महान् ध्वनि को सुनकर शिवाजी समीप आ गया, ऐसा जान लिया।

तं श्रुत्वा कारतलबः शिवनिः साननिस्वनम्।

हन्त वीरसावेशे निदधे निजमानसम्॥८१

८१. उस शिवाजी के नगाड़े की आवाज को सुनकर कारतलब ने अपने मन को पराक्रम के आवेश से युक्त कर दिया।

तदा तुंगारण्यपतिर्मित्रसेनो महाभुजः।

अवतीर्य हयात्तूर्णमबलंब्योन्नतां भुवम्॥८२

स्वीयैः परिवृतो वीरैर्वीरो वीरासने स्थितः।

न्युब्जीकृतेषुधिस्तत्र शरसंधानतत्परः॥८३

चापमारोपयांचक्रे परांतकरणोद्यतः।

अन्येऽप्यमरसिंहाद्यास्तस्थुः स इव संयते॥८४

८२-८४. तब तुंगारण्य का अधिपति महाबाहु वीर मित्रसेन घोड़े से उतरकर, उन्नत स्थान पर स्थित होकर, अपने वीरों को साथ लेकर तथा वीरासन में स्थित होकर, धनुष को झुकाकर उन पर बाण लगाकर शत्रुओं के विनाश के लिए उनको सज्ज किया, उसी प्रकार अमरसिंहादि दूसरे योद्धा भी युद्ध में खड़े हो गये।

अथ सपदि कृशानुयन्त्रगोलैः

पदि पदि तत्र विनिघ्नतः प्रतीपान्।

सरभसमवगम्य स प्रभावी

बत यवनः स्वचमूं समुह्य तस्थौ। ८५

८५. तत्पश्चात् शत्रु शीघ्र तोपों के गोलों से पग-पग पर प्रहार कर रहा है, ऐसा तुरन्त जानकर वह प्रभावी यवन अपनी सेना को इकट्ठा करके खड़ा हो गया।

अथ भृशमविहस्तस्तत्र कांतारगर्भेऽ-

भिनवसुभटशोभाधाम धीरो धनुष्मान्।

प्रतिनरपतिसैन्यं सादयन् सायकौघैः

समरममरसिंहो भूषयामास भूरी॥८६

८६. तब उस अरण्य के मध्यभाग में उस युवा योद्धा के तेज का घर ही हो ऐसे धैर्यवान् धनुर्धारी अमरसिंह ने विचलित न होते हुए अरण्य के मध्यभाग में बाणों की वर्षा करके शत्रुसेना का संहार करते हुए युद्ध को सुशोभित कर दिया।

अनुवनमपयान्तीं यावनीं वाहिनीं तां

बत कथमपि मा भैः स्थैर्यमेहीत्युदीर्य।

निरुपमनिजचापारोपितैर्बाणवृन्दैः

द्रुतमरुणदमित्रानीकिनीं मित्रसेनः॥८७

८७. वन में पलायन करने वाली उस यवनसेना को किसी प्रकार से भयभीत न होते हुए धैर्य धारण करो, ऐसा बोलकर मित्रसेनादि ने अपने अनुपम धनुष पर चढ़ाये गए बाणों की वर्षा से तुरन्त शत्रुसेना को रोक दिया।

प्रसभममरसिंहमित्रसेन-

प्रहितशराभिहताः परस्य योधाः।

स्रवदसृगभिषिच्यमानगात्राः

कतिचन पेतुरुपेत्य मोहमुद्राम्॥८८

८८. अमरसिंह एवं मित्रसेन द्वारा वेगपूर्वक छोड़े गए बाणों के द्वारा मारे गए कुछ शत्रु योद्धा शरीर से बहने वाले रक्त से रंजित होकर मूर्च्छा आने से गिर गये।

प्रतिभयतमां वन्यामेतां सरोपषेमुयुषाम्,  
त्यजति न भृशं युद्धावेशं बलं बहलं द्विषाम्।  
सपदि भवता सर्वोऽप्यध्वा तदस्य निरुध्यताम्,  
इति शिवमहीपालः सेनापतिं स्वमवोचत्॥८९

८९. अत्यन्त भयंकर इस वन में क्रोध से आयी हुई शत्रुओं की सेना अपने प्रबल युद्ध के आवेश को नहीं छोड़ रही है, अतः शीघ्र ही उसके सम्पूर्ण मार्ग को तुम रोक दो, इस प्रकार शिवाजी ने सेनापति से कहा।

तदनुतुरगारुढस्तूर्णं वधाय विरोधिनाम्,  
जगति जनितोत्कर्षं कर्षन् करेण शरासनम्।  
ज्वलितहुतभुग्-ज्वालाजालावलेहितखाण्डवात्,  
किमपि न पृथासूनोरुनो व्यलोकि सुरासुरैः॥९०

९०. फिर शत्रुओं का वध करने के लिए घोड़ों पर चढ़कर संसार में उत्कर्ष को उत्पन्न करने वाले धनुष को हाथ से खींचने वाला वह शिवाजी प्रज्वलित अग्नि की ज्वाला के लपटों से खांडव वन को भस्मसात करने वाले अर्जुन के समान देवों एवं असुरों को दिखाई दिया।

शिवविततकृपाणपातितानाम्,  
रुधिरभरेण विरोधिसैन्धवानाम्।  
शिवसुभटवरैर्वनातरालम्,  
द्युतिमरुणादरुणामनीयतालम्॥९१

९१. शिवाजी के श्रेष्ठ वीरों के तीक्ष्ण एवं लंबी तलवारों के द्वारा गिराये गए, शत्रुपक्ष के घोड़ों के खून से पुराने अरण्य का मध्यभाग सूर्य से भी अधिक लालिमा को धारण करने लगा।

प्रतिपदमविहस्तैर्मित्रसैनादिभिस्तैः,  
अवितमपि तदिन्द्रप्रस्थसुत्रामसैन्यम्।  
प्रतिभटविशिखस्रक्पञ्जराभ्यंतरस्थम्,  
परिचितदुरवस्थं निर्व्यवस्थं व्यरंसीत्॥९२

९२. मित्रसेनादि वीरों के द्वारा अविचलित होकर पग-पग पर रक्षा करने पर भी शत्रु पक्ष के योद्धाओं के बाणों की माला के जाल में फंसकर उस सेना की दुर्दशा होने से वह रुक गई।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निधिनिवासकरकवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां नामाध्यायः ॥

२८॥

## अध्याय:-२९

कवीन्द्र उवाच -

अथ द्युतिपतौ देवे दिवो मध्यमुपागते।  
समेत्य शिवतेजोभिः सन्तापयितुमुद्यते॥१  
अवीक्षितवने तस्मिन् विपक्षविहितावने। बल  
अलभ्यमानपवने दूयमानं महावने॥२  
विलोक्यानीकमखिलं विषीदंतमनेकधा।  
जगाद कारतलबं राजव्याघ्री मदोद्धता॥३

१-३.कवीन्द्र बोले - तत्पश्चात् सूर्यदेव के दिन के मध्याह्न को प्राप्त हो जाने पर शिवाजी के तेज के साथ मिलकर पीड़ा देने लगा, वन में पूर्व में न देखे गये शत्रु के द्वारा रक्षित, वायु से रहित, ऐसे उस महावन में सम्पूर्ण सेना के दुःखी होकर धैर्य के त्यागने को देखकर मदमस्त रायबागीण कारतलब को बोली।

राजव्याघ्री उवाच -

अंकरोपितसैन्यस्त्वमकरोः कर्मगर्हितम्।  
प्राविशः सहसा येन शिवसिंहाश्रयं वनम्॥४

४.राजव्याघ्री बोली - शिवाजी रूपी सिंह के आश्रय से युक्त वन में सेना के साथ जो प्रवेश किया है, यह तू ने निन्दित कार्य किया।

बत त्वया समानीयं सैन्यं दिल्लीपतेरिह।  
अहो महोत्साहवता पंचाननमुखरेऽपितम्॥५

५. अहो! तुझ घमण्डी ने दिल्लीपति की सेना को यहां लाकर सिंह मुख में अर्पित कर दिया है।

अद्ययावद् यशो यावदिन्द्रप्रस्थभृतार्जितम्।  
तत्तस्य भवतामुष्मिन् विपिने विनिमज्जितम्॥६

६. आज तक दिल्लीपति ने जितना यश प्राप्त किया था, वह उसका सारा यश तूने इस अरण्य में डुबो दिया।

पश्चात् पुरस्ताच्च पुनः सव्यदक्षिणपार्श्वयोः।

स्थिता पश्य युयुत्सन्ते सोत्सवाः परिपन्थिनः॥७

७. देखो! आगे, पीछे, दाईं ओर एवं बाईं ओर खड़े हुए शत्रु आनन्द के साथ युद्ध करने के इच्छुक हैं।

अमी सर्वे सुप्रयोगसायकास्तव सैनिकाः।

तूष्णीमेवासते ह्यत्र बतालेख्यगता इव॥८

८. ये तीरंदाजी में निपुण तेरे सभी सैनिक यहां चित्र में स्थित मनुष्य की तरह स्तब्ध हैं।

अहो दिल्लीन्द्रसेनानीः शास्ताखानोऽल्पचेतनः।

परिपन्थिप्रतापाग्नौ ससैन्यं त्वामपातयत्॥९

९. अहो! दुःखपूर्वक दिल्लीपति के उस मूर्ख सेनापति शाएस्तेखान ने शत्रु के प्रतापरूपी अग्नि में तुझे सेना के साथ भेजा।

जीवग्राहं निगृह्याशु द्वेषणस्त्वां निनीषति।

त्वं त्वंध इव कांतारे रुद्धो युद्धं चिकीर्षसि॥१०

१०. शत्रु तुझे शीघ्र जीवित पकड़कर ले जाना चाहते हैं। तू अरण्य में कैद होने पर भी अंधे व्यक्ति की तरह युद्ध करना चाहता है।

सत्यां हि फलनिष्पत्तौ पुरुषस्येह पौरुषम्।

परथा परिहासाय तदेव खलु साहसम्॥११

११. फलसिद्धि हो रही है तो ही पुरुष के पुरुषार्थ का उपयोग है, नहीं तो साहस कार्य वास्तव में उपहास का ही कारण है।

तदद्य सद्य एव त्वं तं प्रपद्य महीभृतम्।

अये ससैन्यमात्मानं मृत्युपाशाद् विमोचय॥१२

१२. अतः तू आज तत्काल उस राजा शिवाजी की शरण में जाकर अपने को सेनासहित मृत्युजाल से बचा ले।

एवं स यवनस्तत्र राजव्याघ्रया प्रबोधितः।

विरराम महावीरः साहसी समरात्ततः॥१३

१३. इस प्रकार रायबगीन ने उस महावीर एवं साहसी यवन को वहां प्रेरित किया तो उसने युद्ध रोक दिया।

अथैष संदेशहरं पराभिप्रायवेदिनम्।

शिवाय प्रेषयामास प्रह्वभावमुपाश्रयन्॥१४

१४. तत्पश्चात् उसने विनम्रतापूर्वक अन्यो के अभिप्राय को समझने में निपुण दूत को शिवाजी के पास भेजा।

ततोऽतिसुन्दरोदग्रग्रीवे व्यायतवक्षसि।

शिक्षिते लक्षणोपेते महाकाये महौजसि॥१५

पार्श्वद्वितयसंसक्तनिषंगद्वयपक्षतौ।

सरत्नाभरणे सप्तौ ताक्ष्ये हरिमिव स्थितम्॥१६

आमुक्तवारबाणानां धन्वबाणासिधारिणाम्।

बहूनां वाहवाराणां व्यूहाभ्यंतरवर्तिनम्॥१७

पिनद्धाभेद्यवर्माणां वर्ण्यशीर्षण्यशालिनम्।

भव्यसव्येतरस्कंधविषक्तविशिखासनम्॥१८

वैकक्षिकीकृतोद्दामफलकोद्योतितांबरम्।

स्वर्गसारसनालंबिकौक्षेयकृतश्रियम्॥१९

दीव्यदक्षिणपाण्यग्रसंसक्तोन्नतशक्तिकम्।



अतिसौम्यमपि स्वेन प्रभावेणातिभीषणम्॥२०

पुरः प्रोत्सारणपरैर्हेमवेत्रधरैर्नरैः।

यथास्थानीकृतानेकसैनिकैः साधुसेवितम्॥२१

उग्रमुग्रादपि भृशं दुर्धरं दहनादपि।

निर्घृणं नैर्ऋताच्चोच्चैर्बलिनं मारुतादपि॥२२

वित्तेशादपि वित्ताढ्यं प्रभुं वज्रधरादपि।

दण्डहस्तादपि क्रूरं नीतिज्ञं वरुणादपि॥२३

चन्द्रादपि कृताह्लादं दुर्जयं मन्मथादपि।

नरैर्वेत्रधरैस्तत्र नमन्मौलिनिवेदितः॥२४

स तं राजानमाजानुभुजं दूरादलोकतः॥२५

१५-२५. तत्पश्चात् भालधारी लोगों द्वारा वहां पगड़ी देने पर उसने मस्तक झुकाकर आजानुबाहु शिवाजी के दूर से दर्शन किये। वह अतिसुन्दर एवं उन्नत गर्दनवाला, विस्तृत वक्षःस्थल से युक्त, सुशिक्षित, शुभलक्षणों से युक्त, महाकाय, महान् बलवान्, दोनों ओर बाणों से युक्त पंख की तरह दो तरकस वाला, रत्नजड़ित आभूषण धारण किया हुआ घोड़े पर या गरुड़ पर जैसे विष्णु बैठता है, वैसे ही आरुढ़ होकर शरीर में कवच धारण किया हुआ एवं हाथ में धनुष-बाण और तलवार से युक्त घुड़सवारों के समुदाय के मध्य में था, उसके शरीर में अभेद्य कवच था, उसके मस्तक पर उत्कृष्ट मुकुट था, वैकक्ष की माला की तरह एवं प्रचण्ड ढाल से सुशोभित दुपट्टा धारण किया हुआ था। स्वर्णयुक्त कमरपट्टे से अटकने वाली तलवार से वह सुशोभित था, उसके तेजस्वी दाएं हाथ में ऊंचा भाला था, अत्यन्त सौम्य होते हुए भी अपने तेज से वह अत्यन्त उग्र दिख रहा था, आगे जाकर लोगों को दूर हटाने वाले भालाधारियों द्वारा योग्य स्थान पर खड़े किये अनेक सैनिक उसका उत्तम सम्मान कर रहे थे, उग्र लोगों में अत्यन्त उग्र, अग्नि से भी अत्यन्त असहनीय, नैर्ऋत की अपेक्षा अत्यन्त निर्दयी, वायु से भी बलवान्, कुबेर से भी अधिक धनवान्, वरुण से भी अधिक नीतिज्ञ यमराज से भी अधिक क्रूर, इन्द्र से भी अधिक सामर्थ्यवान्, चन्द्रमा से भी अधिक आह्लादकारी और कामदेव से भी अधिक वह दुर्जेय था।

अमुं विनम्रमूर्धानं ताम्रदूतमुपागतम्।

सरोरुहसदृग्भ्यां स दृग्भ्यां देवोऽप्युदैक्षत॥२६

२६. मस्तक झुकाकर आये हुए उस मुगल दूत की ओर राजा ने भी कमल की तरह सुन्दर नेत्रों से देखा।

अथाज्ञप्तः शिवेनैष किञ्चिदुन्नमितभ्रुवा।

यत्संदेशहरस्तस्य व्याजहार स्वयं वचः॥२७

२७. तत्पश्चात् शिवाजी द्वारा कुछ भौओं को चढ़ाकर उसको आज्ञा देने पर उसने जिसका संदेश लाया था उसके संदेश को स्वयं बोला।

दूत उवाच -

यं कारतलबं नाम लंकापतिमिवापरम्।

अजय्यं जानते लोकाः स त्वां विज्ञापयत्यदः॥२८

२८. दूत बोला - जिस कारतलब नाम के सेनापति को लोग मानो दूसरा दुर्जय रावण समझते हैं, वह आपसे इस प्रकार निवेदन करता है।

शास्ताखाननियोगेन योगेन समयस्य च।

बतावलोकितोऽस्माभिः स एष विषयस्तव॥२९

२९. शाएस्तेखान के आदेश से एवं समय के योग से इस आपके देश को हमने देख लिया।

नह्यन्यवशतां गन्ता गुप्तोऽयं विषयस्त्वया।

मणिः फणाधरेणेव चिरं स्वयमुरीकृतः॥३०

३०. नाग द्वारा दीर्घकाल तक स्वयं धारण किये गए मणि के समान यह आपके द्वारा रक्षित देश दूसरे के अधीन नहीं हो पायेगा।

हंत द्वित्राण्यहान्यत्र मया लब्धं न जीवनम्।

तस्मादभयदानेन देहि मे मम जीवनम्॥३१

३१. क्या बताऊं! दो-तीन दिन तक मुझे यहाँ पानी भी नहीं मिला, अतः अभयदान देकर मुझे जीवनदान दें।

तलातलमिवासाद्य सहाचलतलस्थलम्।

विररामश्चिरं चित्ते विस्मरामश्च पौरुषम्॥३२

३२. सह्याद्री के पाताल के समान गहरे तल को प्राप्त करके हमारा मन दीर्घकाल तक स्तब्ध रहे एवं पराक्रम भी विस्मृत हो गया है।

तुंगारण्यादपि धनं सह्यारण्यमिदं तव।

महार्णवसमेऽमुष्मिस्त्वमस्मच्छरणं भव॥३३

३३. यह आपका सह्याद्री का अरण्य तुंगारण्य की अपेक्षा घना है। महासागर के समान इस अरण्य में आप हमारी रक्षा करें।

जनकः शाहराजस्ते महाराजो महामतिः।

यवनेऽप्यन्वहं स्नेहमपारमकरोन्मयि॥३४

३४. आपके पिता, महामति, महाराज शहाजी राजे उनका मैं यवन होते हुए भी मेरे पर अपार स्नेह था।

तत् सर्वमपि विस्मृत्य परप्रेष्यतया मया।

अग्रेरिव तवावज्ञा विज्ञायापि विनिर्मिता॥३५

३५. वह सब कुछ विस्मृत करके दूसरे के सेवाभाव से मैंने अग्नि के समान आपकी आज्ञा का जानबूझकर उल्लंघन किया।

तद् वितीर्य स्वसर्वस्वमात्मनमनवस्करम्।

चिकीर्षामि महाबाहो जीवन् जिगमिषामि च॥३६

३६. अतः हे महाबाहु! मैं अपना सर्वस्व आपको अर्पण करके अपने अपराध का प्रक्षालन करना चाहता हूँ और जीवित जाना चाहता है।

अनुमन्यस्व मां तस्मात् त्वमस्मिन् विषये नृप।

प्रपन्नपालनमरो भवानिव भवानिह॥३७

३७. अतः हे राजा! इस प्रदेश से बाहर जाने की आप मुझे आज्ञा दीजिए। इस संसार में शरणागत की रक्षा करने वाले आप जैसे आप ही है।

यथायथं गदित्वेत्थं दूते विरतिमीयुषि।

नृपः स्वसैनिकान् वीक्ष्य स तं प्रत्यब्रवीदिदम्॥३८

३८. इस प्रकार यथोचित दूत के बोलकर रूक जाने पर शिवाजी महाराज अपने सैनिकों की ओर देखकर उससे इस प्रकार बोले।

शिवराज उवाच -

यर्हि प्रपद्यसे तर्हि स्वीयया सेनया सह।

निर्याहि विषयादस्मादास्तेऽस्मदभयं तव॥३९

३९. शिवाजी बोलें - यदि तू शरण आया है तो इस प्रदेश से अपनी सेना के साथ निकल जा, हमारा तुझे अभय है।

अदो मद्वचनं तस्मै मद्भीताय दयार्थिने।

त्वमितस्त्वरितो गत्वा यवनाय निवेदय॥४०

४०. इस मेरे वचन को तू यहाँ से शीघ्रता से जाकर मेरे से भयभीत दया की याचना करने वाले उस यवन को बता दे।

इत्थं शिवनृपोदीर्णामाकर्ण्य रुचिरां गिरम्।

दूतः प्रतीक्षमाणाय स्वाधिपाय न्यवेदयत्॥४१

४१. इस प्रकार शिवाजी द्वारा कथित मधुर वचनो को सुनकर दूत की प्रतीक्षा करने वाले उस स्वामी को संदेश सुना दिया।

तस्मादभयमानीतं तेन दूतेन वै यदा।

शिवाय कारतलबः प्रजिघाय बलिं तदा॥४२

४२. वह दूत जब शिवाजी से अभय वचन लाता है तब कारतलब उसको कर भिजवाता है।

युध्यन्तोऽप्यभयं प्राप्य मित्रसेनादयो नृपाः।

शिवाय प्रेषयामासुः स्वं स्वं सद्यः स्वमंजसा॥४३

४३. मित्रसेनादि राजा युद्ध में व्यग्र होने पर भी उनके अभय के संदेश के प्राप्त हो जाने पर उन्होंने अपना-अपना कर शीघ्र शिवाजी के पास भिजवा दिया।

अभयं यावदायाति तावद् यवनसैनिकाः।

युध्यंतः शिवसैन्येन लुण्ठिताश्चावकुण्ठिताः॥४४

४४. युद्ध करने वाले उन यवन सैनिकों के अभयदान आने तक शिवाजी की सेना ने उनको लुट लिया एवं चारों ओर से घेर लिया।

परस्मै फलकं दत्वा कश्चिन्मुक्तोऽभवत् तदा।

अवरुह्य हयात् तूर्णं भयात् कश्चिदमुच्यत॥४५

४५. कोई उस समय अपनी ढाल दूसरे को देकर मुक्त हो गया तो कोई घोड़े से शीघ्र उतरकर भयमुक्त हो गया।

बत तत्र दधानेन वासो लोहितलोहितम्।

सद्यो विन्यस्तशस्त्रेण सन्यस्तमिव केनचित्॥४६

४६. रक्त से रंजित वस्त्रों को धारण करने वाले कुछ वीरों ने तत्काल शस्त्रों को परित्याग करके मानो संन्यास ले लिया हो।

कर्णाभरणलब्धेन छिन्नकर्णश्च कश्चन।

स्वकण्ठाभरणं सद्यो मुक्तामणिमयं जहौ॥४७

४७. किसी ने कर्णाभूषणों के लालच से कान छिन्न करवा लिए तो किसी ने शीघ्र मोतियों एवं रत्नों से जड़ित कण्ठाभूषण त्याग दिए।

वयं शिवनृपस्यैव भवाम इतिवादिनः।

अमोचयन् निजात्मानं केचित् तुरगसादिनः॥४८

४८. हम शिवाजी राजा के पक्ष के हैं, ऐसा बोलकर कुछ घुड़सवारों ने अपने को मुक्त किया।

कृपाणछिन्नमूर्धापि त्वरमाणोऽभिघातिनम्।

सद्यः सहचरं चक्रे चित्रं चक्रेण कश्चन॥४९

४९. किसी का मस्तक तलवार से कट जाने पर अपने मारने वाले पर शीघ्र आक्रमण करके उसका मस्तक तत्काल चक्र से अलगकर दिया और अपना सहचर बना लिया।

अत्रान्तरे सह्यपतेराज्ञया वेत्रपाणयः।

उर्ध्वीकृतकरास्तारस्वराः क्रोधपरा इव॥५०

तांस्तान् सैन्यपतीनेत्रू विपिनाभ्यंतरस्थितान्।

समन्ततः प्रतिभटप्रतियुद्धादवारयन्॥५१

५०-५१. इसी बीच हाथ ऊपर करके क्रोधी व्यक्ति के समान उच्चस्वर से चिल्लाने वाले भालधारी शिवाजी की आज्ञा से अरण्य के विभिन्न सेनापतियों के पास जाकर शत्रुओं से युद्ध करना बंद करो इस प्रकार बताया।

अथ लब्धाभयास्ताम्रसैनिकाः समया इव।

द्रुतं विनिर्ययुस्तस्मात् वनात् परकृतावनात्॥५२

५२ .फिर अभय को प्राप्त हुए वे मुगल सैनिक शत्रु द्वारा रक्षित उस वन से भयभीत की तरह तुरन्त निकल गये।

अथाशु ताम्रवक्त्रेषु प्रयातेषु यथागतम्।

गर्जत्सु निजसैन्येषु तूर्येषु निददत्सु च॥५३

पुरःसरेष्वनेकेषु विनटद्वेत्रपाणिषु।

जयघोषविशेषेण पूरयत्सु च पुष्करम्॥५४

भव्यांबरेषु भव्येषु भव्याभरणधारिषु।

उच्चैस्तरां यशोगाथाश्चारणेषु पठत्सु च॥५५

अपारकोषगर्भासु मंजूषासु निजैर्नरैः।

क्षिप्रमाहियमाणासु ताम्रक्षिप्तास्वितस्ततः॥५६

विमुक्तेष्वब्बीगर्भे रिपुभिः प्रपलायिभिः।

सैन्येरानीयमानेषु गजेषु तुरगेषु च॥५७

भारभीत्यावमुक्तानामपयातैररातिभिः।

स्थालानां चषकाणां च भृंगाराणां च भूरिशः॥५८

अन्येषां चाप्यमत्राणां सौवर्णानामनेकशः।

स्वभृत्यैः क्रियमाणेषु पर्वतेषु च सर्वतः॥५९

चण्डेन भुजदण्डेन दण्डितारातिमण्डलः।

शिवः समीक्ष्य नेतारं सेनापतिमवोचत॥६०

५३-६०. फिर मुगल जैसे आये उसी प्रकार चले गये, अपने सैनिक गर्जना करने लगे, ढोल बजाने लगे, अनेक भालधारी आगे नृत्य करते हुए चलने लगे, प्रचंड जयघोषों से आकाश प्रतिध्वनित हो गया, सुंदर वस्त्रों एवं सुंदर अलंकारों को धारण करने वाले श्रेष्ठ भाट यशोगाथा गाने लगे, मुगलों द्वारा इधर फेंकी हुई एवं अंदर अपार कोष से युक्त पेटियों को लोग शीघ्र लाने लगे, पलायन करने वाले शत्रुओं द्वारा अरण्य के मध्यभाग में छोड़े हुए हाथी एवं घोड़े सैनिक लेकर आ गये, पलायन किये हुए शत्रुओं द्वारा भार के भय से परित्यक्त अनेक हंडिया, ग्लास, श्रृंगार एवं सोने के अन्य अनेक पात्रों का पर्वत अपने सैनिकों ने सर्वत्र बना दिया, ऐसे समय में अपने प्रचण्ड भुजाओं से शत्रुसमूह को दण्डित करने वाले सेनापति नेताजी को देखकर शिवाजी बोलने लगे।

शिवराज उवाच -

यान्यहं येदिलायत्तराष्ट्रक्रमणकर्मणे।

इहैव तु त्वया स्थेयं ताम्रानननिबर्हणे ॥६१

६१. शिवाजी बोले - आदिलशाह के अधीन राष्ट्र पर आक्रमण करने के लिए मैं जाता हूँ किन्तु तू मुगलों का विनाश करने के लिए तुम इसी स्थान पर रहो।

परावृत्ता एव परे न परावृत्तिकारिणः।

इति त्वया न मन्तव्यं ताम्रास्ते ह्यभिमानिनः॥६२

६२. युद्ध में कभी भी पीठ न दिखाने वाले शत्रु वापस चले गये हैं, ऐसा मत समझो क्योंकि मुगल अभिमानी होते हैं।

प्रणालाद्रिप्रतिनिधिं द्रुतमादित्सतो मम।

उद्यमः सद्य एवायं फलितो भविता न न॥६३

६३. पन्हाळगढ़ का शीघ्र प्रतिशोध लेने का इच्छुक जो मैं उस प्रयत्न के तत्काल सफल हुए बिना स्थिर नहीं रहूँगा।

इति संमन्त्र्य सेनान्या समं तत्र स मन्त्रवित्।

अकारयज्जयी जैत्रप्रयाणपटहस्वनम्॥६४

६४. इस प्रकार वहाँ उस नीतिज्ञ एवं विजयी शिवाजी ने सेनापति के साथ मन्त्रणा करके विजययात्रा की दुंदुभी बजाने की आज्ञा दी।

अथ प्रगे प्रजानाथः स आस्थाय हयोत्तमम्।

अभूषयत् तमध्वानं वाहिनीव्यूहभूषितम्॥६५

६५. तत्पश्चात् प्रातः उत्तम घोड़े पर आरुढ़ होकर शिवाजी राजा ने सेना समुदाय के द्वारा सुशोभित उस मार्ग को अत्यधिक अलंकृत किया।

क्रमेण क्रममाणोऽसौ पुरग्रामाचलाटवीः।

पश्यन् रिपुभिरुत्सृष्टास्तुष्टिमाधत्त भूयसीम्॥६६

६६. क्रमपूर्वक आगे जाते समय नगरों, गांवों, किलों एवं अरण्यों को शत्रुओं द्वारा परित्यक्त हुआ देखकर वह अत्यन्त संतुष्ट हो गया।

ततो दाल्भ्यपुरं गत्वा नत्वा दाल्भ्येश्वरं नृपः।

आदौ तमेव विषयं व्यधत्त तरसात्मसात्॥६७

६७. तत्पश्चात् दाभोकास जाकर दाल्भ्येश्वर को नमन करके पहले उसी प्रान्त को शिवाजी राजा ने शीघ्र अपने अधीन कर लिया।

स तदा विषयस्तेन शिवेन स्ववशीकृतः।

साध्वसात् यवनस्पृष्टिसृष्टात् सद्यो व्यमुच्यत॥६८

६८. तब शिवाजी द्वारा अधीन किया गया वह प्रान्त यवनों के सम्पर्क से उत्पन्न भय से मुक्त हो गया।

तदा पल्लीवनपतिर्जसवंतो महाभुजः।

स्मरन् कृतचरां स्वेन जोहरसू सहायताम्॥६९



दुर्विनीतान्तकात् भीतः शिवादभ्यर्णवर्तिनः।

प्रपेदे शरणं सद्यः शृंगारपुरनायकम्॥७०

६९-७०. तब पाली को, राजा महाबाहु जसवंत स्वयं पहले की गई सिद्दी जोहर की सहायता को स्मरण करके दुष्टों के यमराज शिवाजी को समीप आया हुआ देखकर भयभीत होकर तुरन्त उसने शृंगारपुर के राजा का आश्रय ले लिया।

सोऽपि प्रभावलीपालः सूर्यराजः प्रतापवान्।

तं जुगोप शिवात् भीतमात्मानमिव सागसम्॥७१

७१. प्रभावली के उस प्रतापी राजा सूर्यराज की, उसके अपराधी होने के कारण से भयभीत जसवंत राजा ने अपने समान शिवाजी से रक्षण किया।

शिवस्तु सूर्यराजस्य जसवंतसू चापि तत्।

कर्म नामन्यतान्याग्रं परायत्तावुभाविति॥७२

७२. किन्तु सूर्यराजा एवं जसवंत राजा का वह कार्य शिवाजी को अनुचित नहीं लगा, क्योंकि वे दोनों ही पराधीन थे।

अथ दाल्भ्यपुरे राजा यथार्हमधिकारिणम्।

निधाय सज्जं युद्धाय वीरं च द्विसहस्रिणम्॥७३

व्रजन्नभयदानेन प्रीणयन्नभयार्थिनः।

अपश्यच्चित्रपुलिनं पुरं त्रिचतुरैर्दिनैः॥७४

७३-७४. तत्पश्चात् दाभोळ में योग्य अधिकारी को नियुक्त करके एवं युद्ध के लिए सज्ज ऐसे दो हजार वीरों को रखकर आगे बढ़ रहा था तो अभय मांगने वाले को अभयदान से संतुष्ट करके शिवाजी राजा तीन-चार दिन बाद चिपळुण चला गया।

स तत्र वरदं विश्वविश्रुतं चिरजीविनम्।

रैणुकेयं वर्णनीयचरितं निरवर्णयत्॥७५

७५. वहाँ उसने वरदाता, विश्वविख्यात, चिरंजीवी और वर्णनीय चरित्र से युक्त परशुराम का दर्शन किया।

अथासौ कालकामाभ्यां भ्रातृभ्यां परिवारितम्।

भक्तिमान् भृशमर्हाभिर्भार्गवं समभावयत्॥७६

७६. तत्पश्चात् जिसके दोनों ओर काल एवं काम ये दोनों भाई हैं, ऐसे परशुराम की उस अत्यन्त भक्तिमान् शिवाजी ने पूजा की।

अद्धा परशुरामोऽपि ध्वस्ताविद्धाधिपौजसे।

पृथुं प्रसादमकरोदमुष्मै पृथिवीभृते॥७७

७७. उस परशुराम ने भी अविंध्य के राजा की शक्ति को नष्ट करने वाले उस राजा पर बड़ी कृपा की।

स तत्र भार्गवक्षेत्रे दानशौंडो दयान्वितः।

क्षिप्रदत्तेन वित्तेन विप्रवृन्दमनन्दयत्॥७८

७८. उस दान निपुण एवं दयालु शिवाजी ने उस परशुराम क्षेत्र के ब्राह्मण श्रेष्ठ को तत्काल धन देकर संतुष्ट किया।

ततोऽधिकारिभिर्ल्लेच्छजनैस्तत्क्षणमुज्झितम्।

संगमेश्वरयोगेन संगमेश्वरसंज्ञकम्॥७९

नगरं स्ववशीभूतं प्रभूतद्विजदैवतम्।

दृष्ट्व मनुष्यदेवर्षिर्देवर्षिस्थानमीयिवान्॥८०

७९-८०. तत्पश्चात् मुगल अधिकारियों द्वारा तत्क्षण छोड़े गये संगमेश्वर के संबंध से संगमेश्वर नाम वाले एवं अत्यधिक ब्राह्मणों एवं देवताओं से युक्त नगर के अपने अधीन हो जाने से वे राजर्षि देवरुखास देवर्षिस्थान की ओर गये।

तदा तदाज्ञया नीलकण्ठराजात्मजो द्विजः।

मल्लसूरान्वयेनोच्चैः पदातिपृतनाभृता॥८१

तत्तद्युद्धप्रसिद्धेन योद्धा तानजिता युतः।

विपक्षाभ्यागमव्यग्रं संगमेश्वरमागमत्॥८२

८१-८२. तब उसकी आज्ञा से ब्राह्मण नीलकंठ राजा का पुत्र, विभिन्न युद्धों द्वारा प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ, पदाति सेना का अधिपति उच्चकुल वंशी, योद्धा, तानाजी मालुसरे इनके साथ शत्रु के आक्रमण के कारण से विचलित होकर संगमेश्वर आ गया।

गुप्त्यर्थमस्य देशस्य तिष्ठन्ती संगमेश्वरे।

अनीकिनी मामकीना शृंगारपुरवर्तिना॥८३

कामं त्वयावेक्षणीया यावदागमनं मम।

वैमत्यं परिहर्तव्यं कर्तव्यं मदुदीरितम्॥८४

इत्थं संदेशमाप्तेन दूतेन स नृपस्तदा।

प्रभावलीभृते भूमिपालाय समदेशयत्॥८५

८३-८५. शृंगारपुर में रहने वाला तू इस देश के रक्षणार्थ संगमेश्वर में रहने वाली मेरी सेना पर मेरे आने तक अच्छी प्रकार से नियन्त्रण रख शत्रुता त्याग दे एवं मेरे द्वारा बताए गए कर्तव्यों का पालन कर ऐसा संदेश विश्वासयुक्त दूत द्वारा प्रभावली के राजा को उस राजा ने उस समय भेज दिया।

अथ पुन्नागबकुलप्रसूनप्रायसौरभम्।

नागवल्लनीनाळिकेरक्रमुकप्रायभूरुहम्॥८६

दैवतप्रायभूभागं द्विजन्मप्रायमानवम्।

आरामप्रायभूमीध्रं तीर्थप्रायनदीनदम्॥८७

तं देशं सपदि स्वीये निदेशे विनिवेशयन्।

अयं राजवरो राजपुरं जित्वा व्यराजत॥८८

८६-८८. तत्पश्चात् पुनः एवं बकुल के फूलों से सुगंधित, नागलता, नारकी एवं केरेलु के घने वृक्षों से युक्त, अनेक देवताओं से युक्त, जहाँ बस्तियां ब्राह्मण परिवारों से युक्त हैं, उद्यानमय पर्वतों से युक्त, प्रायः तीर्थमय नदी एवं नदों से युक्त ऐसे उस प्रदेश को शीघ्र अपने अधीन करके एवं राजापुर को जीतकर वह श्रेष्ठ राजा सुशोभित होने लगा।

हत्वा म्लेच्छबलं स्वबाहुविभवैराक्रम्य तन्मण्डलम्।

शक्रश्रीः शरणागतायः सदयः सद्यः प्रदायाभयम्॥

धत्ते पोतवणिग्जनैर्धनदतां यस्यांतिके सागरः।

तस्मिन् राजपुरे व्यराजततरां राजाधिराजः शिवः॥८९

८९. अपने बाहुबल से यवन सेना का विनाश करके तथा उनके प्रान्तों को अधीन करके एवं शरणागतों को अभयदान देकर वह इन्द्र की तरह, दयालु, राजाधिराज शिवाजी समुद्र पर आश्रित व्यापारियों को समुद्र ने धनवान् बनवाया ऐसे राजपुर में वह विराजमान हो गया।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां स्वपुरप्रवेशो नाम  
एकोनत्रिंशोऽध्यायः॥२९॥

## अध्याय:-३०

कवीन्द्र उवाच -

अथाग्नियन्त्रसंधानविशेषोदग्नविक्रमान्।  
प्राकारयुद्धकुशलान् ऋध्या जितधनेश्वरान्॥१  
मयमायाधरान् अब्धिमध्यसंचारदुर्धरान्।  
उन्मार्गवर्तिनस्तांस्तान् फैरंगान् यवनावरान्॥२  
तथा नौसाधनपरान् मल्लवारान् अनावरान्।  
सांयात्रिकाननेकांश्च कृतद्वीपांतराश्रयान्॥३  
असंमतांश्च सामन्तान् मत्तानिव महाद्विपान्।  
बलैरानाय्य स बली तत्तदानाययद्धनम्॥४

कवीन्द्र बोले -

तत्पश्चात् तोपों द्वारा लक्ष्य संधान में विशेष पराक्रमी, प्राकार युद्ध में निपुण, संपत्ति से कुबेर को जीतने वाला मैं मयनामक असुर की तरह शिल्प कला में निपुण समुद्र संचरण में दुर्जेय, दुर्गम मार्गों का राही यवनों से नीच फिरंगी (पुर्तगीज़ और डच इत्यादि) अनाच्छादन नावों को चलाने में निपुण मलवारों को, अन्य द्वीपों के निवासियों को, अनेक समुद्री व्यापारियों को मदमस्त महान हाथी के समान शत्रु मांडलिक को उस बलवान शिवाजी ने बलपूर्वक लाकर उसको विभिन्न करों को देने के लिए बाध्य किया।

स बद्धमुष्टिभिस्तैस्तैरविद्धैश्चिरपालिताम्।  
स्वहस्तमनयत् सद्यः श्रियं राजपुरस्थिताम्॥५

उन-उन लोभी अविन्धों द्वारा दीर्घकाल तक संग्रहित की हुई राजपुर के संपत्ति को तत्काल उसने अधीन कर लिया।

निक्षेपस्वर्णसम्पूर्णकटाहजठरां धराम्।

खलान्तकः स खनकैरनेकैः समखानयत्॥६

सोने के निक्षेप द्वारा परिपूर्ण कढ़ाईयाँ भूमि में दबाकर रखी हुई थी ऐसी भूमि को उस दुष्टों का विनाश करने वाले (शिवाजी) ने अनेक खोदने वालों के द्वारा खुदवाई।

न यद्यपि नरेन्द्रस्य तत्र सिद्धांजनांचिते।

तदप्यद्धा निधानानि पश्यतः स्म विलोचने॥७

वहां उस राजा की आंखों में सिद्धांजन डाला हुआ नहीं था, फिर भी उसे दबाए गए खजाने दिख गए।

न्ययोजयदयं राजा यत्र यत्र निजे दृषौ।

तत्र तत्राभवन् मेरुसदृशाः स्वर्णराशयः॥८

उस राजा ने जहां जहां अपनी दृष्टि घुमाई वहां वहां मेरु पर्वत की तरह स्वर्ण राशि उत्पन्न हो गई।

महाजनेनोपहृतैरनेकै रत्नराशिभिः।

तत्र तस्मै विदूराद्रिरविदूर इवाभवत्॥९

वहां महापुरुषों द्वारा अर्पित की गई रत्न राशि से वह भी दूर रत्नों का पर्वत मानो समीप स्थित हो गया हो।

चिरस्थयवनस्पर्शवशादशुचितां गता।

सनिक्षेपां स तत्र क्षमां खनकैः किमशोधयत्॥१०

दीर्घ काल तक यवनों द्वारा निवास करने से अशुद्ध हुई एवं दबाई गई निक्षेप से युक्त भूमि को उसने खनकों द्वारा शुद्ध कर दिया हो।

जातरूपं तथा रुप्यमारकूटं च सीसकम्।

ताम्रं लोहं च वंगं च काचं च स्वर्णमाक्षिकम्॥११

मुक्तां मरकतं पद्मरागं वज्रं च विद्रुमम्।

खंगशृंगं चामरं च रदं स्तांबरं तथा॥१२  
कस्तूरिकां च काश्मीरं पाटीरं हिमवालुकाम्।  
कालागुरूं च कर्चूरं कंकोलं रक्तचन्दनम्॥१३  
एलां च देवकुसुमं त्वक्पत्रं चीनदारु च।  
कतकं नक्रनखरं नलदं नागकेसरम्॥१४  
जातीफलं मातुलानीमहिफेनं च पत्रकम्।  
राजादनं कंदरालं द्राक्षां खर्जूरकं तथा॥१५  
खर्बूरं मरिचं पूगं देवदारु च नागरम्।  
ग्रन्थिकं च पलां चव्यं कांचनीमथ सैधवम्॥१६  
सौवर्चलं यवक्षारं सर्जिकां च हरीतकीम्।  
वृकधूपं सर्जरसं सिलाजतु च सिक्थकम्॥१७  
ताक्ष्यशैलं शिखिग्रीवं चक्षुष्यां यामुनं पुनः।  
अजमोदां च बाह्लीकं जीरकं लोध्रकं तथा॥१८  
गुग्गुलं पावकशिखं मंजिष्ठां नागसंभवम्।  
पारदं हरितालं च गंधाश्मानं मनःशिलाम्॥१९  
लाक्षां गंधरसं चापि गोरोचनमथाश्रकम्।  
तांस्तान् विषविशेषांश्च तत्तन्निर्हरणानि च॥२०  
कौशेयान्यथ तार्णानि क्षौमाणि फलजानि च।  
रांकवाणि तथौर्णानि वासांस्यभिनवानि च॥२१  
एतान्यन्यानि च तदा वस्तूनि बहुशो नृपः।  
महाभारसहैर्वाहैर्वामीभिर्वृषभैस्तथा॥२२

भारयष्टिधरैश्चापि पुरुषैर्विष्टिकारिभिः।

वाहयित्वात्मदुर्गेषु तेषु तेषु न्यधापयत्॥२३

सोना, रुपए, पीतल, सीसा, तांबा, लोहा, कीथल, कांच, स्वर्णमाक्षिक, मोती, मरकतमणि, हीरा, गेंडे के सींग, चामर, हाथी के दांत, कस्तूरी, केसर, चंदन, कपूर, कृष्णागरु, पलाश, ककोल, लालचंदन, इलायची, लवंग, दालचीनी, चीनदारू, निर्माल्ली, मगरमच्छ के नाखून, वेणारमूल, नागकेशर, जायफल, भांग, महिफेन, तमाल पत्र, प्रियाल का वृक्ष, अखरोट, द्राक्षा, खजूर, खर्बूर, मिरी, सुफारी, देवदारू, सौंठ, ग्रंथि, पिप्पलामूल, जटामांसी, चवक, हल्दी, सेंधा नमक, सौर्वचल, शाल वृक्ष, हरितकी, तपन, शिलाजीत, मेण, मूली, नीला सुरमा, काला सुरमा, अजवाइन, मंजीटी, सिंदूर, पारा, हड़ताल, गंधक, मंछल, लाख, फुलसत्व, गोरोचन, अभ्रक, अनेक प्रकार के विष एवं विष उतारने के द्रव्य, रेशमी वस्त्र, शृण से उत्पन्न अट्टालिका फलज ऊन की चादरें ऐसे नवीन वस्त्र और अनेक अन्य पदार्थ उस राजा ने उस समय बड़े भार का वहन करने वाले घोड़े, घोड़ियों, बैलों, भार ढोने का वालों आदि के द्वारा वहन करवाकर अपने विभिन्न किलो में रखवा दिया।

शठवल्ली समदलं हरचीरी च नैवरम्।

नांधवाटं कंतवाटं केळिवल्ली कशेलिका॥२४

प्रांशुर्धामनसं बिल्ववटं च क्षारपत्तनम्।

अमून्यन्यान्यपि पुराण्यमुष्मै करमाहरन्॥२५

शैज्वली, सौंदेल (समदल), हरचेरी, नेवरे, नागवड़े, कोतवड़े केलवली कशेली उन्नत धामनस बेलवड़े क्षारपतन और अन्य गांव ने भी उसको कर ला कर दिया।

इत्थं स नीवृतस्तांस्तान् वशीकृत्य प्रतापवान्।

विविधं धनमाहृत्य स्वराष्ट्रं अभिमुखोऽभवत्॥२६

इस प्रकार विभिन्न प्रांतों को अधीन करके विविध करो को लेकर वह प्रतापी राजा अपने राष्ट्र की ओर चल दिया।

मनीषिण उचुः -

विद्राव्याविद्धपृतनां द्रुतं दाल्भ्यपुरं जितम्।

तथैव चित्रपुलिनं पुरं निजकरे कृतम्॥२७



गृहीतं चाप्रयासेन नगरं संगमेश्वरम्।

अहो राजपुरं सर्वमापातालं च खानितम्॥२८

गृहीताः संचयाः सर्वे निगृहीताश्च नागराः।

तथाक्रियत सामर्थ्यात् करदः सरितां वरः॥२९

शिवराजेन विद्वेषात् राष्ट्र..मेवमुपप्लुतम्।

अवेत्य येदिलस्तत्र कमुपायमचिंतयत्॥३०

पंडित बोले-

मुगलों की सेना को भगाकर शिवाजी ने दाभोल शीघ्र ले लिया उसी प्रकार चिपकूण अपने अधीन कर लिया और संगमेश्वर को तो अनायास ही ले लिया। अहो! संपूर्ण राजपुर को भी पाताल पर्यंत खोद डाला सभी खजाने ले लिए और नागरिकों को कैद किया उसी प्रकार अपने सामर्थ्य से समुद्र को अपने अधीन कर लिया इस प्रकार शिवाजी ने द्वेष से संपूर्ण देश व्याप्त कर लिया यह जानकर उस समय आदिलशाह ने कौन सा उपाय किया?

कवीन्द्र उवाच -

स विरोधी किलास्माकं व्रजन् राजपुरं प्रति।

न निरुद्धस्त्वया तस्मिन् वनमार्गे सुदुर्गमे॥३१

कविंद्र बोला-

वह हमारा शत्रु जब राजपुर की ओर जा रहा था तो उसको अत्यंत दुर्गम अरण्य के मार्ग में तूने क्यों नहीं रोका?

आस्तामिदमिदानीं तु त्वमस्मदपकारिणम्।

समुद्रुतं परावृत्तं निरुत्स्वाभ्यर्णमागतम्॥३२

ठीक है या इस समय रहने दो। अब वह हमारा उन्मत्त शत्रु लौटकर हमारे समीप आया है अतः उसे जानकर रोक दो।

इत्थमाज्ञां निजां तत्र येदिलो दूनमानसः।

श्रृंगारपुरभूपाय प्राहिणोत् सूर्यवर्मणे॥३३

इस प्रकार दुखी आदिल शाह ने श्रृंगार पुर के राजा सूर्या जी राव को संदेश भिजवाया।

मनीषिण उचुः -

स तदा येदिलस्तांस्तान् परिहृत्य चमूपतीन्।

कस्मात्तमेव नृपतिं कार्येऽमुष्मिन् न्ययोजयत्॥३४

पंडित बोले - उस समय उस आदिलशाह ने सभी सेनापतियों को छोड़ कर उस राजा को उस कार्य पर क्यों नहीं लगाया?

कवीन्द्र उवाच -

भग्नपूर्वाः शिवेनैव रुस्तुमाद्याश्चमूभृतः।

प्रभविष्यन्ति नो योद्धुमिति चिन्तयता स्वयम्॥३५

येदिलेनाटवीमध्यवर्ती पत्तिबलान्वितः।

स एव दुष्करेऽप्यस्मिन् कार्ये किल नियोजितः॥३६

कविंद्र बोला- शिवाजी ने पहले पराजित किए गए रुस्तम आदि सेनापति उनसे युद्ध करने में समर्थ नहीं होंगे, इस प्रकार से मन में विचार करके वन के मध्य भाग में रहने वाले एवं पदातियों से युक्त उस राजा को दुष्कर कार्य होते हुए भी नियुक्त कर दिया।

अथाभिमानैकधनः प्रभावी स भूपतियेदिलशासनेन।

दधौ धियं वैरमयीं मदेन करीव सिंहेन समं शिवेन॥३७

तब उस अत्यंत अभिमानी एवं पराक्रमी राजा ने आदिलशाह की आज्ञा से जैसे हाथी अभिमान से सिंह से द्वेष करता है वैसे ही अभिमान से शिवाजी से शत्रुता की।

दुरध्वसंचालनसंचिकीर्षया शिवेन विन्यासविदा निवेशिताम्।

अनीकिनीं तामधिसंगमेश्वरं स्थितां ससैन्यः स रुरोध सत्वरम्॥३८

शिवाजी ने दुर्गम मार्ग को साफ करने की इच्छा से संगमेश्वर में स्थापित सेना के साथ अपनी सेना को लेकर शीघ्र घेरा डाल दिया।

स पत्तिसंपत्तियुतो निशीथे निरुध्य सेनां महतीं शिवस्य।

दुर्दैवयोगेन युयुत्सुरुच्चैः जगर्ज मेघप्रतिमश्चिरस्य॥३९

विशाल बताई गई सेना की सहायता से शिवाजी की विशाल सेना को मध्यरात्रि में घेरकर दुर्भाग्य युद्ध करने का इच्छुक वह सूर्याजी राव बहुत देर तक मेघ की तरह गर्जना करने लगा।

उच्चकैः श्रवणगोचरीकृतं पन्नगारय इवाहिफूत्कृतम्।

तत्तदायुधभृतो न सेहिरे तानजित्प्रभृतोऽस्य गर्जितम्॥४०

गरुड़ जैसे नाग के फुंकार को सहन नहीं करता है उसी प्रकार कानों में पड़ी हुई उसकी प्रचंड गर्जना को उस समय तानाजी प्रवृत्ति योद्धाओं ने सहन नहीं किया।

तदातिभीतः किल नीलकण्ठराजात्मजो दैवहतः पिलाजी।

प्रभावलीशाय यशांसि दातुं अमंस्त युद्धादपयानमेव॥४१

तब अत्यंत भयभीत नीलकंठ राजा का पुत्र दुर्भाग्य चालीं पीला जी ने मानो प्रभावली के राजा को यश प्राप्ति कराने के लिए युद्ध की अपेक्षा पलायन को ही उत्तम समझा।

संजातवेपथुममुं भृशमुच्छसंतं,

विन्यस्तपाणिगकृपाणमपद्रवंतम्।

सद्यः स्वयं कतिपयानि पदानि गत्वा

धृत्वा करे न्यगकरोत् किल मल्लसूरः॥४२

कंपन से युक्त अत्यधिक श्वास प्रश्वास लेने वाले हाथ की तलवार को नीचे फेंक कर पलायन करने वाले और पिलाजी को शीघ्र कुछ ही पलों में माल सुरेश ने स्वयं हाथ से पकड़ लिया एवं उसका धिक्कार किया।

मल्लसूर उवाच -

तवाहमस्मिन् समरे सहायः।

पलायसे हा स्वजनं विहाय॥

आसन् पुरा यानि विकत्थितानि।

तानि क्व तेऽनीकपते गतानि॥४३

मालसुरे बोला-

इस युद्ध में मैं तेरा सहायक हूँ तू अपने लोगों को छोड़कर पलायन कर रहा है यह दुख की बात है पहले जो तू प्रशंसा करता था वह तेरी प्रशंसा कहां चली गई?

प्रदाय माहाम्यमभीष्टदेन

यः पालितोऽभूः शिवभूमिपेन।

सेनापतिः सोऽद्य विमुक्तसेनः

पलायसे हन्त विलज्जसे न॥४४

जिस इष्ट दाता शिवाजी ने तेरा बड़प्पन के साथ पालन पोषण किया और तू सेनापति उन्हें ऐसे छोड़ कर भाग रहा है और अरे तुझे लज्जा भी नहीं आती है।

इत्युक्त्वा दृषदि निबध्य रज्जुखंडैः

तं तस्तं निजसविधे स्थिरं विधाय।

आत्मीयां सपदि स तत्र शौर्यशक्तिं

शूरेभ्यः पदि पदि दर्शयन् ननर्त॥४५

इस प्रकार बोलकर उस भयभीत पिलाजी को अपने समीप रस्सी से पत्थर पर सुदृढ़ बांधकर वहां अपने पराक्रम को पग पग पर प्रदर्शित करता हुआ नाचने लगा।

प्रतिहतरिपुशूरप्रस्रवद्रक्तपूरः,

प्रचुरसमरशोभासुभ्रुवः कर्णपूरः।

स मृधमधिविरेजे तानजिन्मल्लसूरः

समजनि निशि तस्यां तेजसा यस्य सूरः॥४६

मृत्यु को प्राप्त हुए शत्रु पक्ष के वीरों के रक्त से परिपूर्ण एवं अनेक युद्ध रूपी सुंदरियों के कान का आभूषण वह तानाजी मालुसरे युद्ध में शोभायमान हो रहा था एवं उसके तेज से उस रात्रि में सूर्य उत्पन्न हो गया था।

अथ कृतजयघोषग्रस्तमेघस्वनानां

विलसदसिलतानां हन्तुमेवोद्यतानाम्।

प्रतिपदमविहस्ताः सन्निपाते रिपूणां

सुमहति कृतहस्ताः सैनिकास्तं ररक्षुः॥४७

तब स्वयं की हुई जयघोषों की ध्वनियों ने मेघ की गरजना को ग्रसित कर लिया जिनके हाथों में तलवारे चमक रही है एवं जो पग पग पर मारने के लिए उद्यत हैं ऐसे शत्रु के विशाल भीड़ में विचलित ना होने वाले एवं उत्तम धनुर्धारी सैनिकों ने उसकी रक्षा की।

आतिष्ठ प्रहर प्रयच्छ विरम व्यापारय प्रापय

त्रायस्व त्यज मुंच विद्रव नय व्यावर्तयालोकय।

भिद्धि च्छिन्द्धि गृहाण पातय जहीत्युच्चैस्ततो गर्जतां

योधानामभिधावतामुभयतः कोलाहलः कोऽप्यमूत्॥४८

तैयार हो जा, प्रहार कर दे, रुक जा, पहुंचो, बचाओं, छोड़ दे, भाग जा, ले जा, वापस दे, देख, फोड़ दे, तोड़ दे, ले, गिरा दे, छोड़ दे इस प्रकार की वहां उच्च ध्वनि में गर्जना करने वाले एवं एक दूसरे योद्धाओं पर दौड़कर आक्रमण करने वाले दोनों पक्षों के योद्धाओं का कोलाहल हुआ।

स्फूर्जद्रत्नांगुलीयद्युतिशबलनखद्योतिभिः पंचशाखैः

स्रस्तोष्णीषैः शिरोभिर्निगिडनिपतितैरन्ध्रिभिर्बाहुभिश्च।

अंगैरन्यैश्च हंत क्षणरुचिविलसत्खड्गवल्लीनिकृत्तैः

उत्कृष्टासृक्प्रवाहप्रचयिभिरथ सा दुर्गमाभूद्धरित्री॥४९

चमकदार रत्नों से जड़ित अंगूठी के चमक से जिसके नाखूनों की कांति चित्र विचित्र हो गई है ऐसे पगड़ी रहित मस्तक के पास में पड़े हुए हाथ पैर और आकाशीय विद्युत के समान चमकने वाली तलवारों से टूटे हुए एवं जिनके ऊपर अनेक रक्त प्रवाह का संचय है ऐसे दूसरे अवयव थे जिसके कारण से वह भूमि दुर्गम हो गई थी।

अथ प्रभवति विभावरीविरामे

तिमिरमिवार्यमरश्मिभिः समग्रम्।

शिवनृपसुभटैः प्रसह्य भग्नं

सपदि जगाम विराममन्यसैन्यम्॥५०

शिवरात्रि के समाप्ति पर सूर्य की किरणें जैसे अंधकार को मिटा देती है उसी प्रकार शिवाजी के योद्धाओं द्वारा पूर्ण पराजित हुई व शत्रु की सेना तत्काल समाप्त हो गई अर्थात् पलायन कर गई।

अथ विहितपलायनेषु तेषु

प्रतिनृपसैनिकपुंगवेषु सद्यः।

स्वनदभिनवमेघसाम्यभाजा

सह पटहेन जगर्ज मल्लसूरः॥५१

फिर उस शत्रु पक्ष के श्रेष्ठ सैनिकों के पलायन करने पर प्रवीण बादल की तरह गर्जना करने वाली दुंदुभी के साथ मालसुरे गर्जना करने लगा।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां त्रिंशोऽध्यायः॥३०॥

## अध्याय:-३१

कवीन्द्र उवाच -

अथ राजपुरात् तूर्णं परावृत्तं शिवं प्रभुम्।

प्रत्युद्गम्य समं सैन्यैर्मल्लसूरो व्यलोकत॥१

१. कवीन्द्र बोले - पुनः राजपुर से शीघ्र परावर्तित हुए शिवाजी राजा को मालसुरे सेना का सामना करना पड़ा।

तं भूरिणा प्रभावेण परिभूतारिसैनिकम्।

वंदमानं नृपः पश्यन् अभिमानधनं तदा॥२

उपकण्ठे नीलकण्ठराजात्मजनिवेदितम्।

प्रथीयसा प्रसादेन सानीकं समभावयत्॥३

२-३. जिसने बड़े पराक्रम से शत्रु की सेना को पराजित किया वह तानाजी आ गया, यह नीलकण्ठ राजा के पुत्र ने समीप जाकर बताया तो वंदन करने वाले उस अभिमानधनी तानाजी को देखकर राजा ने उसका सेना के साथ बड़े आदर से सत्कार किया।

ततः श्रुत्वा तदौद्धर्षं सूर्यराजकृतं शिवः।

तरस्वी तत्क्षणेऽत्यर्थं क्रुद्धोऽपि क्रोधमावृणोत्॥४

४. तत्पश्चात् सूर्यराज द्वारा किये उस अविनीत व्यवहार को सुनकर पराक्रमी शिवाजी राजा के अत्यन्त क्रुद्ध होने पर भी उसने अपने क्रोध को रोक लिया।

अथ वैवधिकस्तूर्णं विसृष्टः शिवभूभृता।

प्रोचे प्रभावलीपालमुपेत्य महितं वचः॥५

५. शिवाजी द्वारा शीघ्र भेजे गए दूत ने प्रभावली के राजा के पास आकर सारगर्भित वचन बोले।

वैवधिक उवाच -

यदा यदा येदिलस्य साहाय्यं समुपेयुषा।  
भवता शिवभूपस्य बहवो मन्तवः कृताः॥६  
यच्च सैन्ये शिवस्योच्चैः संगमेश्वरवर्तिनि।  
न्यपतः सैन्यसहितो वीतभीर्निशि सम्प्रति॥७  
प्रभावलीपते विश्वजयिना शाहसूनुना।  
कथं कथय सोढव्यः स तवापनयो महान्॥८

६-८. दूत बोला - आदिलशाह की सहायता करके तूने शिवाजी राजा के साथ बहुत अपराध किए और संगमेश्वर में स्थित शिवाजी की सेना पर रात में तूने सेना के साथ बड़ी निर्भयता से आक्रमण किए वह तेरे महान् अपराध है, ये प्रभावली के राजा विश्वविजेता शिवाजी द्वारा कैसे सहन किये जाए।

अतः स कुपितोऽप्युच्चैर्देवादात्तदयस्त्वयि।  
बतादिशद्यथाद्य त्वां तथा वक्ष्ये निशम्यताम्॥९

९. अतः वह अतिशय क्रुद्ध होते हुए भी सौभाग्य से तेरे पर दया करके उसने आज तुझे जो आज्ञा दी है, वह बताता हूं,

शिवराज उवाच -

वनद्विप इवोन्मतो मत्तो भीतः पलायितः।  
यः प्राप्तस्त्वां महाबाहो महाबाहुर्नराधिपः॥१०  
तस्य पल्लीवनपतेर्विमतेर्विहितागसः।  
उपवर्तनमाहतुमुद्यतोऽस्म्यहमंजसा॥११

११. शिवाजी बोला-

हे महाबाहो! वन के हाथी के समान उन्मत जो बलवान राजा मेरे से भयभीत होकर तेरे पास आया है उस दुष्ट बुद्धि वाले अपराधी पाली राजा के प्रांत को मैं अधिकृत करने के लिए सजग हो गया हूं।

अथास्मत्तो न भेतव्यमेतव्यमपि च त्वया।



तत्र पल्लीवने यत्र दातव्यमभयं मया॥१२

१२. तो तू हमसे भयभीत मत हो और पाली में तुझे अवश्य आना है क्योंकि तुझे मैं वही अभयदान दूंगा।

आगन्तासि न चेद्दर्पात् तहि गन्तासि तदशाम्।

न विद्यतेऽद्य मत्कोपात् कोऽपि गोपायिता तव॥१३

१३. यदि अभिमान के कारण तू वहां नहीं आया तो उसकी अवस्था तुझे प्राप्त होगी। मेरे क्रोध से तेरी रक्षा करने वाला आज कोई भी नहीं है।

ततो वार्तावहादित्थं निशम्य शिवभाषितम्।

शृंगारपुरभूपालो याहि यामीत्युवाच तम्॥१४

१४. तब इस प्रकार दूत से शिवाजी के वचनों को सुनकर 'तू जा मैं आता हूँ' इस प्रकार सिंगारपुर का राजा उससे बोला।

अथ पल्लीवनाभ्यर्णमुपेत्य शिवभूभृते।

विविक्ते सूर्यराजोक्तं वचनं व्याजहर सः॥१५

१५. फिर पाली जाकर उसने शिवाजी राजा को सूर्य राजा के वचनों को एकांत में बताया।

ततस्तं देशमाक्रम्य शिवः पल्लीवनाह्वयम्।

अन्वग्रहीदनुग्राह्यान् निगृह्यान् न्यग्रहीदपि॥१६

१६. तत्पश्चात् शिवाजी ने पाली नामक उस प्रांत को अधीन करके दया करने योग्यों पर दया एवं निग्रह करने योग्यों पर निग्रह किया।

विप्राश्च बाहुजास्तद्वदूव्याश्च जघन्यजाः॥

कांस्यकाराः कलादाश्च व्योकाराः शैल्विकस्तथा॥१७

तक्षाणः पलगंडाश्च नापिताः प्रतिहारिकाः।

मालाकाराः कुंभकाराः कारुकाश्च कुशीलवाः॥१८

तंतुवायास्तुन्नवाया रंगाजीवाश्च भूरिशः।

तांबूलिकाश्चाक्रिकाश्च रजकाः शौडिका अपि॥१९

अजापालाश्च गोपाला देवलाश्च कृषीवलाः।

गांधिकाश्च तथा कांदविकाः कांबविकाः पुनः॥२०

मार्देगिकाश्च वेणुध्माः पाणिवादाश्च वैणिकाः।

वाद्यविद्याविदग्धाश्च लुब्धकाश्चासिधावकाः॥२१

कुसीदवृत्तयः काण्डकारिणश्चाहितुंडिकाः।

पादूकृतः पुलिंदाश्च जालिकाश्च जनंगमाः॥२२

उपलब्धभयाः सद्यस्तमेत्य विषयं पुनः।

दिने दिने वर्धमानश्रियो नन्दन्नेकधा॥२३

१७-२३. ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र, अंसारी, सोनार, लोहार, ठेठरे, बढई, मिस्त्री, नाई, प्रतिहारी, माली, कुम्हार, शिल्पी भाट, तांति, दरजी, पुताईवाला, तांबोली, तेली, धोबी, महा विक्रेता, घनगर, गोपालक, देवल, किसान बंधुओं का हलवाई, कोमाती ढोल, बांसुरी वादक, मृदंग वाद्य विद्या में निपुण, शिकारी, शस्त्रों को पैदा करने वाला, ऋण से वृद्धि प्राप्त होने वाले, बांध बनाने वाले, सपेरे, चमार, भील, कोली चांडाल इस प्रकार के भयभीत लोग फिर तुरंत उसी प्रांत में आकर प्रतिदिन वृद्धि प्राप्त होकर अनेक प्रकार से आनंदित हुए।

अथो जनपदस्यास्य रक्षणाय भृशक्षमम्।

चिरदुर्गमितिख्यातमवलोक्य शिलोच्च्यम्॥२४

समंततः शिरस्युच्चैः प्राकारेण पटीयसा।

परिवारितमुत्साही स कारुभिकारयत्॥२५

२४-२५. तब उस देश की रक्षा के लिए अत्यंत समर्थ चित्रदुर्ग इस नाम से विख्यात निपुण गढ़ को देखकर उस उत्साही शिवाजी ने उसके मस्तक पर निपुण कारीगरों के द्वारा चारों ओर ऊंचा तट बनवाया।

अथ मण्डनमस्यैष मण्डलस्येति सूचयन्।

शैलमेनं महीपाले व्यदधान्मण्डनाह्वयम्॥२६

२६. और यह इस प्रांत का आभूषण ही है ऐसा सूचित करने के लिए इस गढ़ को मंडनगढ़ नाम दिया।

अथ दुर्गपतिस्तस्मिन् गिरिदुर्गे सुदुर्गमे।

निधायाधृष्यमध्यक्षं दक्षं रक्षणकर्मणि॥२७

सेनां च कांचिदव्यग्रः समग्रगुणशालिनीम्।

प्रभुः प्रास्थित शृंगारपुरभूपजिगीषया॥२८

२७-२८. उस घर के स्वामी ने उस अत्यंत दुर्गम किले के रक्षा कार्य में निपुण दुर्जेय अध्यक्ष को नियुक्त करके एवं सर्वगुण संपन्न कुछ सेना को रखकर वह निश्चित दक्ष राजा शृंगार के राजा को जीतने के लिए निकल गया।

मनीषिण उचुः

क्षणात् प्रभावलीपालं परिभावयितुं प्रभुः।

पुरैव न कथं यातः शिवः शृंगारपत्तनम्॥२९

कथं च साभिमानाय दधानाय प्रतीपताम्।

अभयं ते ददामीति दूतं तस्मै विसृष्टवान्॥३०

२९-३०. पंडित बोले - प्रभावली के राजा को एक क्षण में पराजित करने में समर्थ शिवाजी पहले ही शृंगारपुर क्यों नहीं गया? और शत्रुता धारण करने वाले उस अभिमानी राजा को अभय दान देता हूं ऐसा बोल कर उसके पास दूत क्यों भेजा?

कवीन्द्र उवाच -

जयवल्लीजयाद्येन कर्मणा प्रथितं शिवम्।

सूर्यराजः पुरा मत्वा पुरारिसमविक्रमम्॥३१

प्राज्यं प्रभावलीराज्यं पिपालयिषुरात्मना।

तव क्रीतसुतोऽस्मीति वाचिकेन व्यजिज्ञपत्॥३२

३१-३२. कविंद्र बोला- जयवल्ली के विजय के पराक्रम से विख्यात हुए इंद्र की तरह पराक्रमी शिवाजी को पहले मान्य करके सूर्यराज ने प्रभावली का समृद्ध राज्य स्वयं पालन करने की इच्छा से तेरा मैं कृतपुत्र हूं ऐसा संदेश भेजकर निवेदन किया था।

तदाप्रभृति तं भूपं शरण्यः शरणोन्मुखम्।

शिवतातिः शिवनृपश्चिरकालमपालयत्॥३३

३३. तब से लेकर उस शरण इच्छुक राजा का रक्षण शरणागत की रक्षा करने वाले शिवाजी ने बहुत समय तक किया।

अयुध्यदरिभिः सार्धं शिवराजो यदा यदा।

अकरोदस्य साहाय्यं सूर्यराजस्तदा तदा॥३४

३४. जब जब शिवाजी राजा ने शत्रुओं से युद्ध किया तब तब सूर्यराज ने उसकी सहायता की।

अथ दैवध्वस्तधिया परित्यक्तभियामुना।

अहंयुना धनारण्यवर्तिना जिह्मवृत्तिना॥३५

शिवराजविरुद्धानामविद्धानामनेकधा।

व्यक्तमव्यक्तमप्युच्चैर्व्यधीयत सहायता॥३६

३५-३६. तत्पश्चात् दुर्भाग्य से नष्ट बुद्धि वाले भयभीत, घने अरण्य में रहने वाले अभिमानी, कपटी सूर्यराज ने शिवाजी के शत्रु अरविंद की गुप्त तथा स्पष्ट रूप से अनेक प्रकार की सहायता की।

दृढव्रतः शिवोऽमुष्मै भूयो भूयः कृतागसे।

अपि निग्रहणीयाय निग्रहं न व्यचिंतयत्॥३७

३७. उसके बारंबार अपराध करने पर भी एवं वह निग्रह करने में समर्थ होने पर भी दृढ़ व्रती शिवाजी ने उसके निग्रह करने का विचार मन में कैसे नहीं लाया?

आहूतोऽपि समर्यादे नाययौ स यदा मदात्।

अकुप्यत् सूर्यराजाय भूभृत् भृशबलस्तदा॥३८

३८. समीप बुलाने पर भी जब वह अभिमान से समीप नहीं आया तब शिवाजी सूर्यराज भोंसले पर क्रोधित हुए।

अथासौ पृथिवीनाथ पदातीनां तरस्विनाम्।

युतो युतेन सार्धेन प्रयाणाभिमुखोऽभवत्॥३९

३९. तत्पश्चात् वह राजा वेगवान् पदार्थों को साथ लेकर आक्रमण करने के लिए निकल गया।

नृवाह्यं यानमारुह्य ब्रजन्नथ स सत्वरः।

समपश्यन्महासारः पुरं सारवरं पुरः॥४०

४०. वह महाबली शिवाजी पालकी में बैठकर शीघ्र जा रहा था तो उसने सामने सरवरनगर को देखा।

अथ श्रुत्वा रुषा स्पृष्टं शिवमभ्यर्णमागतम्।

प्रभावलीन्द्रो विमनाः स्वजनान् समवोचत्॥४१

४१. तब क्रोधित शिवाजी समीप आ गया है ऐसा सुनकर प्रभावली का राजा दुखी होकर अपने लोगों से बोला।

सूर्यराज उवाच -

कृतकर्मा महाबाहुः सुरासुरनरैर्नुतः।

सुतः शाहनेन्द्रस्य नैकसैनिकसंयुतः॥४२

शृंगारपुरमादातुमस्मत्तोऽद्य बतोद्यतः।

अज्ञात एव निकटे कूटयोधी किलागतः॥४३

४२-४३. सूर्यराज बोला देवो एवं राक्षसों द्वारा पूजित कपट युद्ध करने वाला कर्तव्य युक्त एवं बलवान् शिवाजी अनेक सैनिकों को साथ लेकर हमारे से सिंगारपुर को ग्रहण करने के लिए उद्युत होकर वह गुप्त रूप से समीप आ गया है।

समर्थेन समं तेन संपरायममुं वयम्।

अकूपारमिवापारं पारयिष्यामहे कथम्॥४४

४४. उस समर्थ से होने वाले युद्ध से अपार समुद्र की तरह कैसे पार पाओगे?

इत्युक्तवान् स तैस्तत्र स्वजनैरनुमोदितः।

रिरक्षयिषुरात्मानमपयाने मतिं दधे॥४५

४५. ऐसा बोलकर एवं अपने लोगों का अनुमोदन प्राप्त करके उसने अपनी रक्षा करने की इच्छा से पलायन करने का विचार किया।

मनीषिण उचुः -

आसीदवस्थितिर्यस्य वनदुर्गे सुदुर्गमे।  
अहन्यहनि च प्रायो मतिरायोधनोद्यमे॥४६  
सुदुर्धर्षस्य सहादिर्मनुते यस्य शासनम्।  
येनान्यदुर्लभं लब्ध बत पूर्वनृपासनम्॥४७  
स्वराष्ट्ररक्षणाकांक्षी येन दुर्दतचेतसा।  
कृतागसापि संधाय दौस्थ्यं तत्याज येदिलः॥४८  
कुर्वता स्ववशानेव हबसानवशानपि।  
अकारि विनयग्राही येन वै मकरालयः॥४९  
अनन्ददधिकं येन पारंपर्यागता चमूः।  
यः परेणानुभावेन परिभूतो न केनचित्॥५०  
सोऽपि प्रभावलीपालः क्षत्रधर्मविदां वरः।  
नायुध्यत कथं तेन शिवेनापचिकीर्षता॥५१

४६-५१. पंडित बोले- अत्यंत दुर्गम वन में निवास करता है जिसकी प्रायः प्रतिदिन युद्ध करने की इच्छा थी, जिस अजेय राजा की सत्ता को सहाद्री मान्य करता था जिसने अन्यो के लिए दुर्लभ ऐसे पूर्व राजाओं के सिंहासन को प्राप्त किया, अपने राष्ट्र की रक्षा के इच्छुक जिस अभिमानी आदिलशाह ने जिसके साथ संधि करके अपनी दुरावस्था को बचा लिया, जिसने हबशों के अधीन लोगों को अपने अधीन लाया, जिसने समुद्र को भी आज्ञाकारी बनाया, जिससे परंपरागत सेना अत्यधिक आनंदित हो गई जिसको किसी ने अपने श्रेष्ठ पराक्रम से पराजित नहीं किया ऐसे उस प्रभावली के राजा ने भी अपना अपकार करने के इच्छुक शिवाजी से क्यों युद्ध नहीं किया?

कवीन्द्र उवाच -

पुरा पुराग्निप्रतिमप्रतापं संगमेश्वरात्।  
प्रयातं शिवमाकर्ण्य पल्लीवनपुरं प्रति॥५२  
असपत्नमिवात्मानं मन्यमानोऽल्पचेतनः।  
लक्षयन् प्रधनाभावं हर्यक्षसमविक्रमान्॥५३  
पुंजीकृतान् स्वपृतनापतीन् भुवनपूजितान्।  
तांस्तान् स्वस्वनिकेताय सूर्यराजोऽनुजज्ञिवान्॥५४

५२-५४. कविन्द्र बोले – पहले प्रलयाग्नि के समान प्रतापी शिवाजी संगमेश्वर से पाली की ओर चला गया है ऐसा सुनकर उस मूर्ख सूर्य राजा ने अपना कोई शत्रु बचा नहीं है ऐसा समझकर एवं युद्ध का प्रसंग नहीं है देखकर सिंह की तरह पराक्रमी जगत वंदनीय, इकट्ठे हुए विभिन्न सेना नायकों को अपने-अपने घर जाने की अनुमति दे दी।

अथ पल्लीवनात्तूर्ण परावृत्तः शिवो यदा।  
सूर्यराजः समाहर्तुं सेनां नाभूत् प्रभुस्तदा॥५५

५५. फिर पाली से शीघ्र शिवाजी लौट आया तब सूर्य राजा अपनी सेना को इकट्ठा करने में असमर्थ रहा।

अमुना हेतुना नूनं दुर्मनाः स द्विजोत्तमाः।  
प्रभावलीपरिवृढो न मृधे निदधे मनः॥५६

५६. इस कारण से वास्तव में दुखी होकर ही अरे पंडितों! उस प्रभावली के राजा ने युद्ध करने की इच्छा व्यक्त नहीं की।

विष्वक्सेनावतारेण नैकसैनिकवर्तिना।  
दृप्यद्येदिलदोः स्तंभदार्ढ्यं दम्भापहारिणा॥५७  
दीर्णदिल्लीन्द्रसैन्येन वज्रप्रतिममूर्तिना।  
अतीवाव्यक्तमन्त्रेण स्वतन्त्रेणानुभाविना॥५८  
दुर्ग्राह्यविद्विषदुर्गग्राहिणा हठवाहिना।

चन्द्रराजभुजच्छेदकारिणाफजलारिणा॥५९

विरच्य विपुलं वैरं पलायनपरं मनः।

चकार सूर्यराजो यत्तन्न चित्रकरं मम॥६०

५७-६०. विष्णु के अवतार, अनेक सैनिकों के अधिपति, घमंडी, आदिलशाह के बाहुबल के सुदृढ़ीकरण के अभिमान को हरण करने वाला, दिल्ली पति की सेना का विनाश करने वाला, ब्रज के समान शरीर वाला, अत्यंत गुप्त मंत्रणा करने वाला, स्वतंत्र अनुभवी, शत्रु के दुर्जेय किलों को जीतने वाला, जिद्दी चंद्रराव मोरे के भुजाओं की चिंता करने वाला, अफजलखान के शत्रु शिवाजी से बड़ी शत्रुता करके सूर्य दादा ने पलायन करने का विचार किया इसमें मुझे कुछ आश्चर्यजनक प्रतीत नहीं होता है।

अथोन्नतानतशिलाशतसंकुलितांतराम्।

तरुकोटरसंविष्टघूकघूत्कारगर्भिताम्॥६१

महोरगविनिर्मुक्तानेकनिर्मोकभास्वराम्।

अपराविटपित्रातविटपव्याप्तपुष्कराम्॥६२

उपकण्ठनटनैकनीलकण्ठमनोहराम्।

नीडान्तरोत्पतत्कीरां किकीदिविकृतस्वराम्॥६३

परिश्लिष्टाचलतटामम्भोधरघटाकृतिम्।

प्रतिक्षणोच्चलच्छाखामृगांदोलितपल्लवाम्॥६४

स्तब्धरोमसमारब्धघर्घरस्वरघोषणाम्।

मृगादनवतीं माद्यदिभसंनिभसैरिभाम्॥६५

घनकर्मारकुंजांतर्निद्राणव्याघ्रपुंगवाम्।

अभीकानेकभल्लूककृतवल्मीकदारणाम्॥६६

विसंकटामपि कुटैरुत्कटैः कृतसंकटाम्।

विशन् सुभटश्रृंगारः स श्रृंगारपुराटवीम्॥६७



विविधास्कन्दनाकांक्षी सूर्यराजमपद्रुतम्।

निशम्यानीकसहितो विमनस्क इवाभवत्॥६८

६१-६८. जो सैकड़ों उन्नत एवं विस्तृत घोड़ियों के समूह से युक्त था, वृक्षों के कोटरों के गर्भ में बैठे हुए उल्लू दुत्कार कर रहे थे, जो बड़े-बड़े नागों द्वारा परित्यक्त अनेक केंचुलियों से चमक रही थी, जहां के वृक्षों की शाखाओं ने आकाश व्याप्त कर दिया था, जो तट पर नाचने वाले अनेक मोरों से मनोहर दिख रही थी, जिसके घोसलों से तोते उड़ रहे थे, जहां कुछ (पक्षी) आवाज कर रहे थे, जिसने किलो के तटों को घेर लिया, जो मेघ की तरह दिख रही थी, जिसके वृक्षों के पल्लव प्रतिक्षण कुंदन करने वाले बंदरों से हिल रहे थे, जहां सुअर घर घर की आवाज कर रहे थे, जिसमें लोमड़ी एवं मदमस्त हाथी की तरह नीलगाय थी, जिसकी घनी झाड़ियों में बड़े-बड़े सिंह छिपे थे, जिसमें अनेक निर्भय भालु वल्मीक खोज रहे थे, जो भयंकर होती हुई भी ऊंचे ऊंचे झोपड़ियों से सुशोभित थी, ऐसे उस सिंगारपुर की झाड़ियों में प्रवेश करने वाला विविध प्रकार से आक्रमण करने का इच्छुक वह शिवाजी, सूर्यराज भाग गया ऐसा सुनकर सेना सहित खिन्न हो गया।

अथ प्रसन्नाभयदायकेन दुर्दान्तदर्पापहसायकेन।

उपेत्य शृंगारपुरं शिवेन भुजस्मयावेशभृता व्यलोकि॥६९

६९. शरणागतों को अभय देने वाले, अभिमानियों के अभिमान को नष्ट करने वाले, महान बाहुबल के अभिमान को धारण करने वाले उस शिवाजी ने सिंगारपुर के समीप आकर उसको देखा।

नृवाह्ययानस्थित एव तूर्णं स्वसैनिकैस्तत्क्षणमेव पूर्णम्।

प्रविश्य शृंगारपुरं प्रपश्यन् स्वमप्यमंस्तैष परैरधृष्यम्॥७०

७०. अपने सैनिकों द्वारा तत्काल व्याप्त शृंगारपुर में पालकी में बैठकर शीघ्रता से प्रवेश करके देखते समय 'मैं भी शत्रुओं के लिए अजेय हूँ' ऐसा वह मानने लगा।

अजय्यमन्यैरिति विश्रुतं यत्,

स भूपतिर्वैरिनृपासनं तत्।

स्पृशन् भृशं स्वेन पदा तदानीं

अमानि लोकेन महाभिमानी॥७१

७१. शत्रुओं के लिए जो अजेय है ऐसा जिसका यश विख्यात है, उस शत्रु राजा के सिंहासन को उसने अपने पैरों से लात मार दी, उस समय वह लोगों को महाभिमान प्रतीत हो रहा था।

आदाय तस्मादभयं द्रढीयः समीयुषा पौरजनेन भूयः।

प्रविश्य शृंगारपुरं प्रभूय प्रभूतशृंगारपदं व्यधायि॥७२

७२. उसके पास से सुदृढ़ अभयदान लेकर इकट्ठे हुए पौर लोगों ने शृंगार में पुनः प्रवेश करके तथा समर्थ होकर उसको अनेक अलंकृत पद दिये।

अथ कतिपयसैनिकानुयातं प्रतिनृपमाशु दिगन्तमेव यातम्।

त्रिभुवनजनजित्वरप्रतापः स बत निहन्तुमपत्रपामवापत्॥७३

७३. तत्पश्चात् कुछ सैनिकों के साथ शीघ्र दिशाओं में पलायन किए हुए शत्रुओं को मारने में 'जिसका प्रताप त्रिभुवन के लोकों जीतने में समर्थ है' ऐसा शिवाजी लज्जित हुआ।

इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे कवीन्द्रपरमानन्दप्रकाशितायां शतसाहस्र्यां संहितायां स्वपुरप्रवेशो नाम एकत्रिंशो

अध्यायः ॥ ३१ ॥

## अध्याय:-३२

कवीन्द्र उवाच -

अथ शाहसुतः प्रभावलीविषयं सर्वमपि स्वतेजसा।

अकरोन्निजपाणिवर्तिनं नयवर्त्म प्रतनं प्रवर्तयन्॥१

१. कवीन्द्र बोला – तत्पश्चात् शिवाजी ने पुरातन राजनीति मार्ग को प्रारम्भ करके संपूर्ण प्रभावली प्रांत को अपने पराक्रम से अधीन कर लिया।

पटुसङ्गारकर्मकर्मठं प्रथितं त्र्यम्बकभास्करं शिवः।

सुमतिं सपदि प्रभावलीविषयाध्यक्षपदे न्ययोजयत्॥२

२. शक्ति एवं वेग के युद्ध में निपुण, विख्यात, बुद्धिमान, त्र्यम्बकभास्कर को शिवाजी ने तुरंत प्रभावली प्रांत के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया।

हृतराजपुरश्रियं रुषा जितशृङ्गारपुरं तथौजसा।

परसैनिकपुङ्गवाः शतं शतमेतं शरणैषिणोऽनमन्॥३

३. क्रोध से राजपुर की संपत्ति को हरण करने वाले एवं शक्ति से शृंगार पुर को जीतने वाले उस शिवाजी को शत्रु पक्ष के सैकड़ों शरणेच्छुक श्रेष्ठ सैनिक प्रणाम करने लगे।

अथ तस्य पुरस्य रक्षणे क्षणमालक्ष्य सदेशवर्तिनम्।

स गिरिं प्रथितं प्रतीत इत्यभिधानेन समन्वितं व्यधात्॥४

४. फिर उस नगर की रक्षा के लिए समीप में स्थित विख्यात एवं विशाल किले को क्षणभर देखकर उसने उसका नाम 'प्रतीतगढ़' रख दिया।

अथ चन्द्रमृणालचन्द्रिकामिहिकाचन्दनचम्पकादिभिः।

उपनीय मुदं तपर्तुना भृशामोदभृता न्यषेव्यत्॥५

५. चंद्रमा, कमलनाल, चांदनी, द्रव, चंदन, चंपक-पुष्प आदि से आनंद देकर आनंददायी उस ग्रीष्म ऋतु ने उसकी सेवा की।

श्रितकेसरकाण्डपाटलीसुमनोदम्भनिषङ्गवाहिना।

अपि विष्टपजित्वरेषुणा तनुनाहारि शिवस्य नो मनः॥६

६. आश्रय में स्थित केसर के कांड एवं पारूल के फूल के आधार को धारण करने वाले जिसके बाण है ऐसे कोमल कामदेव ने भी शिवाजी के मन को हरण नहीं किया।

तपतातितरां तपागमे तपनेनाशु कदुष्णतां गताः।

सरितस्ततसत्त्वसंश्रयं दधुरन्तः सलिलं सुशीतलम्॥७

७. ग्रीष्म ऋतु के आने पर अत्यधिक तप्त सूर्य से किंचित उष्ण हुए पानी के नीचे नदी में शीतल पानी होता है। वहां पशु आश्रय लेते हैं।

प्रतिवासरकल्पिताम्भसः सरसीः पङ्कनिषण्णसारसाः।

विरमज्झषकच्छपावलीर्विदधे तीव्रतरातपस्तपः॥८

८. अत्यधिक तीक्ष्ण धूप से युक्त ग्रीष्म ऋतु से प्रत्येक दिन तालाब के पानी के सूख जाने पर सारसपक्षी कीचड़ में बैठने लगे और मछलियां एवं कछुएं मरने लगे।

प्रतिफुल्लशिरीषपाटलीपटसौरभ्यभृता नभस्वता।

स्मरतापमबीभरन्मनः सुधियां निर्विषयात्मनामपि॥९

९. पुष्पित शिरीष एवं पारूल के गुच्छों की सुगंध से सुगंधित वायु का संयोग विरक्त एवं विद्वान् लोगों के मनों को भी कामज्वर बाधित करने लगा।